प्राचीन गूजराती गद्यसंदर्भ

संपादक

श्री जिनविजयजी



गूजरात विद्यापीठ

अमदावाद

पुरातत्त्व ग्रंथावली

प्राचीन गूजराती गद्यसंदर्भ

संपादक
श्री. जिनविजयजी
गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद

प्रकाशक
गूजरात विद्यापीठ
अमदावाद

सं. १९८६] प्रथम आवृत्ति [किंमत रु. ३
प्रत : ५००

પ્રકાશક :
મગનભાઈ પ્રભુદાસ દેશાઈ
મહામાત્ર, ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ
અમદાવાદ

મુદ્રક :
ચીમનલાલ ઈશ્વરલાલ મહેતા
વ સં ત મુ દ્ર ણા લ ય
ઘીકાંટારોડ :: અમદાવાદ

विज्ञापन

प्राचीन गूजराती गद्यसंदर्भनुं संपादनकार्य कर्या पछी प्रस्तावना लखवानी बाकी हती अने श्री. जिनविजयजी जर्मनी गया, एटले तेने प्रसिद्ध करवानुं काम अटकी पड्युं हतुं. जर्मनीथी आवीने तेमणे सत्याग्रहनी लडतमां झंपलाव्युं. एटले हाल तो संपादकनी प्रस्तावना विना गद्यसंदर्भ प्रसिद्ध करवामां आवे छे. आशा छे के गूजराती भाषाना प्रेमीओ तरफथी तेने घटित आवकार मळशे.

प्रकाशक

अनुक्रमणिका



प्राचीन गूजराती गद्य-संदर्भ

सम्यक्त्व तथा श्रावकना बार व्रत उपर कथाओ

(कर्ता—तरुणप्रभसूरि, संवत् १४११)

१. सम्यक्त्व उपर कथा.

समक्त्व गुणरहइं आविर्भावकु श्रीनरवर्म महाराज कथानकु लिखियइ[1]।। ईही जि जंबू द्वीप[2] माहि भरत क्षेत्र माहि मगध नामि जनपदु छइ। तिहां विजयवती नामि नगरी, तिहां नरवर्मु नामि राजा, रतिसुंदरी नामि पट्ट महादेवी हूंती। हरिदत्तु नामि पुत्तु हूंतउ। मतिसागरादिक अनेकि[3] महामात्य हूंता। अनेरइ दिवसि राजेंद्र आगइ सभामाहि धर्मविचार विषइ आलापु नीपनउ[4]। तत्र एकि कहिउं[5] धर्म्मु दाक्षिण्यौदार्यादिकहं गुणहं[6] करी हुयइ। तथा परोपकार-इतउ[7] लोक विरुद्ध त्यागइतउ पुणि धर्मु हुयइ। बीजइ कहिउं वेदोक्तु अग्नि होत्रादिकु धर्मु। त्रीजइ कहिउं कुल क्रमागतु धर्मु। चउथइ कहिउं धर्म्माधर्म्म प्रत्यक्ष प्रमाणि करी गगनारविंद जिम दीसइं[8] नहीं, इणि[9] कारणि नथी। इसी परि सभ्य धर्म-विवादु करता देखी[10]करी विवेकवंतु नरवर्मु राजा मनमाहि चींतवइ। दाक्षिण्यादिकहं गुणहं करी तं धर्मु न होइ। ति दाक्षिण्यादिक गुण पुरुषव्रतु। वेदोक्तु पुणि धर्मु नहीं। हिंसा दोष दूषितत्वइतउ। क्रमागतु पुणि धर्मु नहीं। इसी परि कुणरहइं[11] धर्मु न हुयइ। नास्तिक वचनु जगज्जंतु सुख-दुखादि दर्शन भावइतउ घटइ नहीं। सर्व दोष रहितु शुद्ध कनक जिम किसउ धर्म्मु हुयइ। इसउं मनमाहि जेतलइ नरवर्मु राजा चींतवइ, तेतलइ पडिहारु राजारहइं वीनवइ—' देव! महाराज! तुम्हारउ[12] बालमित्तु मदनदत्तु चिरागतु द्वारदेसि वर्त्तइ।' राजादेसइतउ मदनदत्तु माहि मेल्हिउ[13]। राजेंद्रि[14] समालिंगन[15] सन्मान बहुमान-दान-पूर्वकु पूछिउ—' मित्र! एतलउ कालु किहां[16] थाकउ, किसउ उपार्जिउं ?' सु पुणि राजारहइं प्रणामु करी वीनवइ—' महाराज !

---

१ ख प्रतिमां घणा भागे छेवटना इकार उपर अनुस्वार आपेलुं होय छे; तेनी ज रीते **माहि** ए शब्दना **हि** उपर पण अनुस्वार मुकेलुं होय छे. २ ख **द्वीपि**. ३ ख **अनेक**. ४ पूर्णविरामवाळा वाक्यना अंते जे **उ** होय छे ते उपर ख प्रतमां हंमेशां अनुस्वार मुकेलुं होय छे. ५ ख **उ** ६ आ शब्द ख प्रतमां नथी. ७ ख प्रतमां **तउ** नी पहेलांनो **इ** बधे ठेकाणे पडतो मुकवामां आव्यो छे. ८ ख० **इ**. ९ ख **इसि**. १० ख **देषी**. ११ ख मां **कुणहं रहइं** १२ ख **तम्हा**. १३ ख **उं**. १४ ख० **द्र** १५ ख० **सभा**. १६ ख **किहा**.

अनेकि २ देश अनेकि २ आश्चर्य दीठां। प्रभुतु धनु उपार्जिउं[1]। एउ नक्षत्र-श्रेणि-सहोदरु एकावली हारु महाराज मइं[2] लाधउ[3]।' राजा भणइ 'मित्र! एह हारनउ[4] लाभु मू आगइ आमूल-चूल कहि।' सु कहइ 'महाराज! तदा कालि हउं पुरुहूंतउ[5] नीसरिउ प्रभूत देशांतर भमतउ[6] हूंतउ द्रुपदिकाटवी माहि गयउ। तृषाक्रांतु तेह[7] माहिं ओरहउ परहउ घणउं भमिउ। तिहां फिरतइ हूंतइ गुणधर सूरि नामि आचार्यु भेटिउ। तेह महात्मा आगइ एकावली हार सारालंकार धारकु देवु एकु देवी सहितु, महात्मा तणा मुख हूंतउं धर्म्मु जिनप्रणीतु सांभलतउ मइं दीठउ। हउं पुणि वांदी करी तिहां बइठउ। [8]मूंरहइं पुणि धर्मु सांभलता तृस सर्वथा नाठी। आपणा बांधव जिम मूं देखतां हूंतां तेह देवरहइं मूं ऊपरि महांत प्रीति उल्लसी। तउ पाछइ तिणि देवि महात्मा पूछिउ—'भगवन्! मूंरहइ एह ऊपरि किसा कारण लगी स्नेह तणउ अतिशउ[9]।' महात्मा भणइ[10]—'एह भवतउ पूर्व भवि कौशांबी नगरी माहिं जयराजेंद्र तणा * तुम्हे विजय वेजयंत नामहं करी प्रसिद्ध पुत्र हूंता। तुम्हारी माता दैव जोगइतउ परलोकि गई। धात्री प्रतिपालीता हूंता तुम्हे यौवन प्राप्त हूया[11]। जयराजेंद्रु तुम्हरहइं यौवराज्य[12] पदु देणहारु जाणी करी उद्यान[13] वनि क्रीडा करिवा गयां[14] हूंतां मातानी सउकी विषु दिवारिउं। तदा कालि तिहां अशोकतरुतलि दिवाकर मुनि गरुडोपपाताध्ययन गुणतउ हूंतउ। तेहनइ प्रभावि तिहां गरुडेंद्रु[15] आविउ। महामुनि तेहरहइं सेवा परायणु हूयउ। गरुडेन्द्र तणा प्रभावइतउ तुम्हरहइं विषमु विषु प्रभविउं[16] नहीं। गरुडु[17] राजु तेह मुनिरहइं प्रणमी करी *आगइ आवी बइठा। गरुडेंद्रि कहिउं 'जइ दिवाकरु मुनिवरु इहां न होय तइ तुम्हे मूया हउत। तिणि कारणि एउ महात्मा तुम्हरहइं जीवितव्यदाता माता पिता समानु। एह महात्मा तणी भली परि सेव करिजिउ।' इसउं[18] भणी करी गरुडेंद्रु आपणइ थानकि पहुतउ। तुम्हे पुणि ज्ञात-तत्त्व तेह मुनि कन्हइ[19] संजमु ले करी दुष्कर तप नियम पर हूया।

१ ખ૦ उ. २ ખ૦ मइ. ३ ખ૦ उं. ४ ખ૦ उं. ५ ખ૦ पुर. ६ ખ૦ भ्रम. ७ ખ પ્રતમાં तेह पह અને जेह શબ્દના ह ઉપર હમેશાં અનુસ્વાર આપેલું હોય છે. ८ ખ પ્રતમાં હમેશાં मू હોય છે. ९ ખ૦ सउ. १० ખ ई. ११ ખ૦ हुआ. १२ ખ૦ यौवनिराज्य. १३ ખમાં આ શબ્દ નથી. १४ ખ गया. १५ ખ गुरु. १६ ખ प्रभाविउ. १७ ખ गुरुडु. १८ ખ૦उ. १९ ખ૦ई.

* ખ પ્રતિમાં प्रणमी करी એ શબ્દો પછી संतुष्टु हूंतउ गरुडोपपाताध्ययनु सांभलिवा लागउ। विषापहार प्रभावतउ विस्मितचित्तहूंता तुम्हें पुणि तेहं मुनिरहइं प्रणमी करी आगइ આટલો સંદર્ભ વધારે છે અને તે પછી क પ્રતિમાં મળી આવતો आवी बइठा गरुडेन्द्रि कहिउं जइ दिवाकरु मुनिवरु ईहां न होयतइ तुम्हे—એટલો વાક્યસંદર્ભ ખંડિત છે.

तुम्ह माहि ज्येष्ठु मरीकरी प्रथम देवलोकि विद्युत्प्रभाभिधानु देवु हूयउ। तउ लहुडउ विद्युत्सुंदरु नामि तिहांई जि देवु हूयउ। तिहां हूंतउ वडउ भाइ चवी करी विजयवती नगरी माहि मदनदत्तु नामि नरवर्म[1] राजेंद्रनउ मित्रु वाणियानउ पुत्रु हूयउ। सु पुणि इउ धन कारणि फिरतउ हूंतउ[2] हवडां[3] तइं दीठउ। तिणि कारणि पूर्वभवाभ्यास वसइतउ तूरहइं[4] एह विषइ स्नेहातिसउ।' इसउं[5] सांभली करी तिणि देवि एउ एकावली हारु मूरहइं दीधउ। महात्मा पूछिउ 'मूंरहइं[6] निद्रादिक अपलक्षण किसइ कारणि?' महात्मा कहिउं 'तूंरहइं मरणु ढूंकडउं वर्त्तइ।' तिणि पु[णि] भणिउं 'किहां मूरहइं उत्पत्ति, किसी परि बोधिलाभु'। महात्मा भणिउं 'तउं नरवर्म राजेंद्र तणउ पुत्रु हरिदत्तु नामि होइसि[7]। एउ[8] एकावली हारु देखि प्रतिबूझिसि।' इसी परि छिन्न संशय हूंतउ सूरि नमी करी स्वर्गि गयउ। तउ मइं गुरु पूछिउं[9] 'भगवन्! एउ हारु किसउ।' सूरि भणिउं 'पूर्विहिं नवोत्पन्नु चमरेंद्रु इंद्र स्थानि गयउ। इंद्रि हाकिउ नाठउ। अधोमुख नासता हूंता एउ हारु गला हूंतउ असंख्यात इ द्वीपि पाडिउ। इणि देवि लाधउ।' इसउं सांभली गुरु वांदी पंचवीस वरिस सीम देसांतरि परिभ्रमी धनु प्रभूतु उपार्जी करी हवडां हउं[10] स्वामिन्! आविउ। स्वामिन्! सु देवु तुम्हारु पुत्रु हूयउ कि[11] नहीं?।' राजेंद्रि कहिउं 'मित्र! हरिदत्तरहइं हारु दिखालउ।' हरिदत्तु तेडी हारु दिखालिउ। हारु दर्शनइतउ तेहरहइं जातिसमरणु[12] ऊपनउं। राजेंद्रि पूछिइ हूंतइ हरिदत्ति कुमारि तिमहिं जि पूर्वभव संबंधु कहिउ। जिम पूर्विहिं मदनदत्ति[13] कहिउ। राजा चित्तमाहि चींतवइ[14] जु[15] आगइ धर्म्म विषइ विवादु हूयउ सु विवादु एह पुत्रनइ चरित्रि करी उच्छेदिउ। एह विश्वमाहि धर्म्मु जिनप्रणीतु जु छइ भव्यरहइं भवभयछेदकु मोक्षसुखदायकु। एतलइ प्रस्तावि उद्यानपालकि राजेंद्रु वीनविउ–'देव! आजु पुष्पावतंसाकि उद्यानि बहु शिष्य परिवृतु चतुर्ज्ञानी सुरासुरनरेश्वरनमस्कृतु श्री गुणंधरु[16] नामि सुगुरु समोसरिउ छइ।' जिम मेघ तणउं गर्जितु सांभली करी मयूरु नाचइ तिम तेहनउं वचनु सांभली करी राउ हरषिउ। हस्तिस्कंध समारूढु पुत्रमित्रादि परिवार[17] परिवृतु महांत ऋद्धि–समुदय करी गुरुपाद वांदिवा राउ पुहतउ[18]। विधिवत् वांदी करी यथास्थानि बइठउ। अमृतरस सारणि–समान धर्म्म देशना सांभलइ। यथा "भो भव्या! सर्व धर्म्म मूल[19] शिवपुरद्वारु सम्यक्त्वु वर्त्तइ। सु सम्यक्त्वु देव-गुरु-धर्म्म-विषइ देव·गुरु·धर्म्म-बुद्धि स्वरूपु कहियइ। अदेव-अगुरु-

१ ख नरवर्म्मु. २ ख मां आ शब्द नथी. ३ ख हिवडां. ४ ख० तूरइ. ५ ख०उ. ६ ख प्रतमां मू अने तू उपर अनुस्वार नथी होतो. ७ ख होइसिइ. ८ ख मां आ शब्द नथी. ९ ख०उ. १० ख मां हउं हवडां एम छे. ११ ख मां कि नथी. १२ ख स्मरणु. १३ ख मां मनदत्ति. १४ ख चीत० १५ ख मां जु ना ठेकाणे जु पाठ छे. १६ ख गुणधरु. १७ ख वारि. १८ ख पहुतउ. १९ ख मूलु.

अधर्म्म-विषइ देव-गुरु-धर्म्म-बुद्धिस्वरूपु सम्यक्त्व-विपरीतु मिथ्यात्वु कहियइ। तत्र जित-राग-द्वेष-मोहु देवु जिनु। महाव्रत धरु गुरु। दयामूलु धर्म्म इति। इणि सम्यक्त्वि लाधइ नरकगति तिर्यंचगति गमनु न हुयइं। मनुष्य देव मोक्ष सुख जीवरहइ स्वाधीन हुयइ। तथा च भणितं—

सम्मत्तंमि उलद्धे ठइयाई नरय-तिरिय-दाराई।
दिव्वाणि माणुसाणि य मुक्ख-सुहाइं सहीणाइं॥

इसउं सांभली करी राजा पुत्र सहितु सम्यक्त्व-पूर्वु गृहि-धर्म्मु ले करी संतुष्ट हूंतउ आपणइ घरि गयउ। अनेरइ दिवसि सुधर्म्मा सभामाहि बइठउ सौधर्मेन्द्र नरवर्म्म राजेंद्र तणउं सम्मक्त्वु देवहींरहइं अचालनीउ कहइ। तउ पाछइ सुवेगु देवु इंद्र-वचन विषइ संदेहु धरतउ हूंतउ वैक्रिय[1] ऋद्धि विस्तार सहितु परीक्षा निमित्तु आविउ। तिणि देवि दिव्य शक्ति बलि मायामउ साधु-समूहु अकार्य करतउ राजेंद्ररहइं तिम दिखालिउ जिम जउ अनेरउ देखइतउ धर्म्म हूंतउ निश्चइसउं पडवडइ। नरवर्म्मु राजेंद्र पुणि तिम साधुवृंदु देखी मनमाहि चींतवइ—कषादिकहं करी हेम जिम शुद्धु जिनधर्मु एकु छइं किंतु ए पुण मुनि गुरु-कर्म-भार भावि करी विनडिया हूंता जिनधर्मरहइं लाघवु करइं। सु लाघवु जि मतिमंत हुयइं तेहे शक्ति हूंती अवश्यु राखिवउ। इसउं चींतवी करी समभाविहिं जि करी अकार्यहूंता[2] मुनि निवारिया। देवु सम्यक्त्व विषइ निश्चलु जाणी करी नरवर्म्म रायरहइं प्रणमी करी साक्षात्कारि होई कहइ 'महाराज! धन्यु तउं[3] जेह तूरहइं सभामाहि बइठउ इंद्र महाराजु सम्यक्त्व तणी स्तुति करइं।' इसउं भणी आपणउ मउडु आपी करी आपणइ थानकि गयउ। नरवर्म्मु महाराजु सम्यक्त्व-मूलु गृहि-धर्म्मु चिरकालु प्रतिपाली करी पुत्र-मित्रादिक सहितु दीक्षा ले करी सुगति पहुतउ।

नरवर्म्मनरेंद्रस्य दृष्ट्वा सम्यक्त्वजं फलम्।
स्वर्गापवर्गदं भव्याः सम्यक्त्वे सन्तु निश्चलाः॥

---

१ ख विक्रिय. २ ख हुता. ३ ख तू.

२. सम्यक्त्वविषयक शंका आकांक्षानां उदा.रण.

१. शंका विषइ उदाहरणु यथा—नगरि एकि सेठि एक[1] तणा बि पुत्र लेसाल पढइं। [2]तींहंरहइं आरोग्य बुद्धि वृद्धि निमित्तु माता सप्रभाव ओसही पेया एकांत स्थानिथिकी करावइ। तींहंमाहि एकरहइं मक्षिकादि शंकालगी मनि सूग उपजइ। मानसदुक्खपूर्वक सरीर दुक्ख, इणि कारणि तेहरहइं वल्गुली रोगु ऊपनउ; मूयउ। इहलोक सुखहूंतउ चूकउ। बीजउ पुत्रु मनमाहि चीतवइ 'माता अहितु कदाकालिहिं न चींतवइ, तिणि कारणि निःसंदेहु थिकउ[3] पेया पानकु करतउ आरोग्य बुद्धि वृद्धि सहितु चिरंजीवी हूयउ। इहलोक[4] सुख-भागी हूयउ। इसी परि सम्यक्त्व विषइ पुणि जु जीवु संदेहु परु हुयइ सु सासय-सुहु न लहइं। निसंदेहु[5] हूंतउ सासय-सुहु लहइ।

२. आकांक्षा विषइ उदाहरणु—राजा अनइ महामात्यु बे जणा अश्वापहारइतउ अटवी माहिगया। भूखिया हूया। वणफल खाधां। नगरि आविया। राजा सूपकार तेडी करी कहइ 'जि के भक्ष्य-भेद संभवइं ति सगलाई करउ।' सूपकारे कीधा। राजा आगइ आणिया। राजेंद्रि चीतविउं—मधुर मोदक पूपकादिक भक्ष्यभेद पाछेई भाविसिइं; इणि कारणि पहिलउं बाकुल[6] ढोकलादिक भक्ष्यभेद भषी करी पाछइ मधुराहार-भक्षणु कीधउं। किसइ कारणि, जिम सवहीं आहारतणा स्वाद लिउं। महतइ पुणि जीमी करी वमन-विरेचनादिकु कीधउं। राजेंद्रि पुणि सर्वाहार-भोग-लुब्धि[7] हूंतइ वमन-विरेचनादिकु न कीधउं। तिणि आहारि दोषि राउ मूयउ। इहलोक सुख चूकउ। महामात्यु जीविउ; इहलोक सुख-भागी हूयउ। तिम जीव[8] पुणि अन्यान्य धर्म्म तत्त्वबुद्धि करी वांछतउ मोक्ष-सुख हूंतउ चूकइ; अवांछतु[9] मुक्तिसुख-भागी हुयइ॥

---

३. धर्मफल संदेह उपर कथा.

धर्म्मफल-संदेह विषइ वाणिय तस्कर बिहुं[10] तणउं उदाहरणु। तथाहि—वसंतपुरनामि नगरु। जिणदासु नामि श्रावकु। तेहतणउ महेसरदतु नामि मित्रु। जिणदासु आगास-[11] गामिणी विद्यातणइ बलि नंदीश्वरि द्वीपि[12] शाश्वत चैत्य वांदिवा गयउ। आविउ हूंतउ महेसरदत्ति भणिउ 'मित्र! ताहरइ देहि अपूर्वु सुगंधु[13] गंधाइ। तिणि नंदीश्वर-यात्रा-वृत्तांतु कहिउ। तउ महेसरदतु भणइ 'मूरहइं पुणि आकाश-गामिनी विद्या आपि।' तउ अतिनिर्बंधि कीधइ

---

१ ખ માં આ શબ્દ નથી. २ ખ तीहं. ३ ખ थकउ. ४ ખ लोकि.
५ ખ० देह. ६ ખ बाकुला. ७ ખ लब्धि. ८ ખ जीवु. ९ ખ० तउ.
१० ખ बिहु. ११ ખ आकास. १२ ખ द्वीपि. १३ ખમાં [illegible] नथी.

हूंतइ जिणदासि[1] महेसरदत्तरहइं विद्या[2] दीधी। कृष्ण चतुर्दशी रात्रि समइ श्मशानि जाई हेठइ अग्निकुंडु ज्वलइ ऊपरि वृक्ष तणि शाखा छीकउं[3] बांधी करी आपणपइं तिहां चडी करी विद्या जपइ। जापि संपूर्णि हूंतइ एक-एक तणी खड्गघाइ करी छेदइ। जेती वार चउथी तणी छेदिवा वार हुयइ, तेती वार मनमाहि संदेहु उपजइ-विद्यासिद्धि होसिइ[4] किंवा नहीं होइ; पुण मूरहइं मरणु निश्चयि[5] होइसिइ। तउ वली वली छीकउं बांधइ; वली वली संदेहु करइ। एतलइ प्रस्तावि चोरु एकु चोरी करी तिहां आविउ। केडइ वाहर पुण आवी। चोरु श्मशान वन गहनमाहि पइठउ। वाहर बाहिरि वेढु करी रही। चोरि महेसरदत्तु चडतउ ऊतरतउ देखी करी बोलाविउ 'तउं ज विद्या साधइ छइ स मूरहइं आपि; एउ माहरउं धनु तउं[6] लइ'। तिणि चीतविउं-भलउं मूरहइं एतला फलतणी प्राप्ति छइं, इसउं भणी करी विद्या चोररहइं आपी। चोरतणउं धनु आपणपइं लीधउं। चोरि निःसंदेहि थिकइ एकवार रूडी परि जापु करी खड्गनइ एक घाइ करी चियारइ तणी छेदी करी[7] आकाशि ऊपरि मिउ[8]। प्रभाति चोरि पगि लागी वाहर वनमाहि आवी। महेसरुदत्तु वस्तु[9] संयुक्तु चोरु[10] करी बांधउ। मारिवा लीजतउ देखी करी चोरि आकाश-गाति विद्यागुरु भणी नगररहइं बीहावी करी मेल्हाविउ। इसी परि जु धर्म्म[11] विषइ संशयु[12] करइ सु महेस[र]दत्तु[13] जिम अपाइ[14] पडइ। जु संशयु न करइ सु चोर जिम सकल अनर्थहूंतउ छूटइ; मनो वांछितु लहइ॥

[साधु निंदा विपयइ दुर्गंधा[15] उदाहरणु। मिथ्या दृष्टि प्रशंसा परिहार विषइ सकटाल[16] महामात्युं उदारहणु] मिथ्यादृष्टि संस्तवु[17] मिथ्यादृष्टिसउं मैत्री कहियइ। तेह विषइ जिनदास उदाहरणु यथा-उजीणी[18] नामि नगरी। जिणदासु नामि श्रावकु। तिहां एकादशमी प्रतिमा वहतउ हूंतउ मुनिसरसउ विहार[19] करतउ सार्थभ्रष्टु हूंतउ बौद्धहंतणइ साथि मिलिउ। मार्गि मूयउ। आपणउ आचारु करी बौद्ध रक्तवस्त्र वेष्टितु करी तिहां मेल्हिउ। सु नमस्कार-समरण परायणु मरी करी देवु हूयउ। अवधिज्ञानि आत्म-देहु देखी बौद्धभक्त हूयउ। इणि कारणि मिथ्यादृष्टि परिचउ न कीजइं। बौद्धहंरहइं रत्नस्वर्णालंकारालंकृति हाथि करी अदृष्टु-हूंतउ भोजनु दियइ। लोकमध्यभागि इसउ अतिसउ बौद्धहंरहइं हूयउ-अहो धन्यु बौद्ध शासनु। श्रावकु लोकु लोके अवहेलियइ। अनेरइ दिवसि श्री धर्मघोषसूरि आचार्य मिश्र तिहां आविया। श्रावके वांदी करी तिहांनउ वृत्तांतु कहिउ। आचार्य उपयोगि दीधइ सगलु वृत्तांतु

---

१ ખ जिणिद्यासि. २ ખમાં विद्या શબ્દ નથી. ३ ખ शीकउ. ४ ખ होइसिइ. ५ ખ निश्चइ. ६ ખ तूं. ७ ખમાં करी શબ્દ નથી. ८ ખમાં ऊपमिउं. ९ ખમાં चोर वस्तु. १० ખ चोर. ११ ખ धर्मफल. १२ ખ संशउ. १३ ખ दत्त. १४ ખ आपइ. १५ ખમાં दुर्गछा. १६ ખ सकडाल. १७ ખ संस्तविषु. १८ ખ उज्जेणि. १९ ખ विहारु.

जाणी करी एकु साधु-संघाडउ मोकलिउ। भणिउं बौद्ध देवंकन्हा भिक्षा दिवारिसिइं। पुणि तुम्हे म लेजिउ[1]। हाथु साही इसउं भणिजिउ "गुज्झगा बुज्झ बुज्झ मा मुज्झ।" इसउं तेहे[2] कीधउं। देवरहइं शुभ कर्मोदय लगी प्रतिबोधु ऊपनउ। भवांतरु जाणिउ। गुरुपाद-मूलि आवी मिथ्यादुःकृतु दीधउं। वली साधुरहइं भक्ति करवा लागउ॥

४. प्रथम अहिंसाव्रत उपर कथा.

अथ[3] प्रथम व्रत विषइ चंद्र सूर राजपुत्र कथा लिखियइ।

हिंसा निरंतरं दुःखमहिंसा तु परमं सुखम्।
जंतोर्द्ददात्यहो सूरचंद्रयोरिव तद्यथा–॥

जय[4]पुरु नामि पुरु। शत्रुंजय नामि राजा। सूर चंद्र नामहं करी बि पुत्र[5]। ज्येष्ठानुरागि करी राजेंद्रि ज्येष्टु युवराजा कीधउ। वृत्ति करी। चंद्रु पत्तिमात्राई करी गणिउ नहीं। तउ अपमान वशइतउ[6] चंद्रि देशांतरु लीधउ। रत्नपत्तनु नामि नगरु तेहनइ उद्यानवनि शीतलि तरुतलि विश्रामि[7] निमित्तु बइठइं हूंतइं श्रुति सुधा-सारणि समानु स्वरु सांभली करी महाधनुर्धर शर जिम स्वरानुसारि जायतइ हूंतइ वनमाहि सुदर्शनु नामि मुनिवरु दीठउ। प्रणमी करी धर्म-देशना सांभली करी नियमु लीधउ। 'मइं कृतापधराइ जीव राजेंद्रादेशिहि सूर्य वृत्ति मुकी करी बीजी परि मारिवा नहीं।' तिणिहिं जि नगरि जयसेनु राजा ओलगिउ। शौच शौर्य दाक्ष्य दाक्षिण्यौचित्यादिकहं गुणहं करी राजेंद्ररहइं अतिवल्लभु हूयउ। अनेरइ दिनि जयसेनि राजेंद्रि एकांति[8] बइसाली चंद्रु भणिउ 'अनीति-मंदिरा-कुंभु कुंभु नामि चोरु एकु उत्कटु उठिउ छइ। अहो वीर-कोटीर! सु तू पाखइ अनेरइं[9] किणिहिं[10] मरइ नही। तिणि कारणि तूंउ[11] सु माहरा हियानउं शल्यु ऊधरि। यतः—

स्त्रीश्चगाश्च हरत्येष क्रूरो हन्ति यतीनपि।
चमूरुद्धो यमस्यापि दुर्गमं दुर्गमङ्गति॥

तिणि कारिणि प्रकटवृत्ति सु मारी न सकियइं[12] माहरइ कथनि गुप्तवृत्ति जाई करी सूताहूंता तेहरइं मारि। इसइ कथनि जयसेनि राजेंद्रि कहियउ हूंतइ चंद्रु भणइ 'महाराज! संग्राम पाखइ मूरहइं जीव मारिवा नियमु छइ। संग्रामिहिं नासता निरायुध[13] मारिवानउ

૧ ખ માં मिलिजिउ. ૨ ખ तेहें. ૩ ખ अत्र. ૪ ખ जइय. ૫ ખ માં प्रसिद्ध बि पुत्र. ૬ ખ માં नश्यतउ. ૭ ખ विश्राम. ૮ ખ एकांत. ૯ ખ अनेरइ. ૧૦ ખ માં નથી. ૧૧ ખ तउं. ૧૨ ખ सिकियइ. ૧૩ ખમાં છેવટનો ध લખતાં છુટીગયો લાગે છે.

निषेधु छइ । तउ पाछइ तेहनउ तिसउ निश्चउ जाणी करी राउ जयसेनु घणेरउं चित्तमाहि रंजिउ । अंगरक्षकहंमाहि महामात्यहंमाहि सु मूलिगउ कीधउ । अनेरइ दिवसि सु कुंभु चोरु देस माहि पसरिउ । तउ पाछइ राजादेसइतउ[1] सार सुभट परिवार सहितु चंद्रु तेह पूठि धायउ । आघइ जाई करी दुर्गनउ मार्गु रूंधिउ । सर्वदिसि मिलित सुभटहं वन माहि गज जिम वेढिउ । अशरण-भावइतउ तिणि चंद्रुरहइं आवी करी प्रणामु कीधउ । मुखि तृणउं पशु-भाव-संसूचकु लीधउं । चंद्रु उत्तम प्रकृतिता करी चित्ति चीतवइ—पादावनामांतु कोपु संतहंरहइं । तिणि कारणि उपशांतु हूंतउ चंद्रु तेह ऊपरि तूठउ । ऊठाडी करी भाई जिम सांई[2] लीधउ । आपण पा सरसउ रत्नपत्तनि आणिउ । देस-दापन पसाउ करावी राजेंद्र कन्हा मेल्हाविउ । जयसेनु राजा पुत्रहीं कन्हा राज्यलक्ष्मींहीं[3]कन्हा चंद्र अधिकु करी मानइ । चंद्रनउ वडउ भाई सूरु युवराज्य लक्ष्मी लाभिहि अतृप्तु हूंतउ राज्यलक्ष्मी लेवा कारणि शत्रुंजय राजेंद्रु आपणा बापरहइं मारण मनु हूयउ । अनेरइ दिनि सूतउ हूंतउ[4] विश्वस्तु शत्रुंजय राजेंद्रु तिणि मारिउ । मारीजायतउ देवीं दीठउ । 'घातकु जाइ जाइ' इसी परि वाहविउं[5] । आरक्षक द्वारपालकादिकहं धायतां हूंतां कंठागतु प्राणु राजा कहइ 'कउण तणउ एउ, इसी परि जाणिवउं, मारिवउ नहीं ।' इसउ राजादेसु सांभली करी तेहे सुतु जाणी करी देसहूंतउ निर्धाटिउ । रत्नपत्तनहूंतउ चंद्रु आणावी करी राज्यि बइसालिउ । शत्रुंजय राजा सूरपुत्र विषइ समत्सरु थिकउ मरी करी वनमाहि चित्रकु उपनउ । पितृवध—कलंक—पातकी सूरु पुणि देसांतर फिरतउ हूंतउ जिणि वनि बाप—जीवु[6] चित्रकु छइ तिहां आविउ । तिणि चित्रइ[7] पूर्वभव वैरइतउ मारिउ तिहांइ जि मरी करी भील्लु हूयउ । आहेडउ करतउ हूंतउ तिणिहिं जि चित्रकि बीजी वार पुणि मारिउ । सु चीत्रकु तेहतणा बांधवहं भिल्लहं मारिउ । तिहांई जि पर्वतवन माहि बे जीव शूकर हूया । त्रिहुं वरसहं तणां हूंता आपणपा माहि जूझता[8] पुलिंदे मारिया । तउ पाछइं अनेरइ किणिहिं वनि मृग[9] ऊपना । परस्पर समत्सर हूंता भीले मारिया । किणिहिं गज-जूथि गजपोत हूया । झु झु करता यूथभ्रष्ट हूंता भीले बांधी करी चंद्र राजेंद्र तणइ राज्यि[10]आणी वेचिया । तिहांइ युद्ध[11] करता हूंता पऊंतारे महाकष्टि राखियइं । एक[12] दिवसि तिहां केवलालोकु भास्करु सुदर्शनु[13] मुनि आविउ । भक्तिभार भासुरु सांतःपुरु चतुरंग सेना परिवृतु चंद्रु नरेंद्रु आवी करी प्रणतु हूयउ ।

---

૧ ખમાં राजा आदेशतउ. ૨ ખ साईं. ૩ ખમાં ही નથી. ૪ ખમાં આ શબ્દ નથી. ૫ ખ वाहाठिउ. ૬ ખ बापनउ जीवु. ૭ ખ अनइं. ૮ ખ झूझतां. ૯ ખમાં मृग શબ્દ નથી. ૧૦ ખ रायि. ૧૧ ખ जुद्ध. ૧૨ ખ पकि. ૧૩ ખ सुदर्शन.

देशनावसानि तीहं बिहुं वारणहं[1] तणउं दारुणु वैर कारणु पूछइ। केवली तींहंनउ[2] पूर्वभव वृत्तांतु कहइ। सु तींहंनउं चरित्रु सांभली करी चंद्रु राजेंद्रु अति वैराग्य संवेग हूंतउ पुत्रु राज्यि निवेसी करी दीक्षा प्राप्तु हूयउ। सुदुस्तपु तपुकरी चंद्रु देवलोकि गयउ। ति गजराज वर्द्धमान. विरोध बुद्धि हूंता मरी करी पहिलइ नरकि गया। तिहां हूंता उद्वृत्ती करी पापजोनि माहि अनंतु भवु भमिया। चंद्रु जीवु देवलोक हूंतउ चवी करी शुद्धु मनुष्यभवु लही करी दिक्षा लेकरि केवलज्ञान लाभ[3] क्रमि करी मोक्षि पहुतउ ॥

ये चंद्रसूरनरनायकयोरहिंसाहिंसाफले शिवभवास्थितिहेतुभूते।
श्रुत्वा त्यजंति समजंतु वधं दयार्द्रां वृत्तिं भजंति लघु ते सुगतिं लभंते ॥ १ ॥

॥ प्रथमाणु व्रत विषइ सूर चंद्र कथा ॥

---

५. द्वितीय व्रत उपर कथा.

अत्र मृषावाद परिहार विषइ हंसराजेंद्र कथा लिखियइ।

अणुव्रतं द्वितीयं तु यद्वाच्यं क्वापि नानृतम्।
भूकन्यागोधनन्याससाक्ष्येषु च विशेषतः ॥
जंतूनामहितं यत्तन्न वाच्यं सत्यमप्यहो।
सुधीभिर्धीं प्रपंचेन बोधनीयोऽत्र पृच्छकः ॥
इदृक् सत्यगिरां वक्ता यथा राजपुरीपतिः।
वैभवं विभरामास हंसः संश्रूयतां तथा ॥

राजपुरी नामि पुरी। हंसु नामि राजा। सम्यक्त्वमूल श्रावक धर्म्मधुरा धौरेयता धरतउ। अनेरइ दिवसि मास घस्र[4] लंध्यमार्गि रत्नशृंग गिरि पूर्वज कारिति श्री ऋषभदेव देवगृहि तीर्थयात्रा करिवा सकल लोक सहितु सत्यवचन महितु गर्व रहितु हूंतउ चालिउ। अर्धमार्गि संधि गयइ हूंतइ पाछा हूंतउ चरु एकु आविउ। राजेंद्ररहइं वीनवइ–'महाराज! तुम्ह चालियां [5]पाछइ दसमइ दिवसि अर्जनु[6] नामि सीमालु पुरी लेवा आविउ। तुम्हे जिके रक्षपाल मेल्हिया हूंता ति सर्व तिणि जीता, राजपुरी आपणी करी बइठउ। भयभीतु लोकु वेसासी करी तुम्हारइ सिंहासनि उपविष्टु वर्त्तइ। अनेरानइ[7] घरि नाठउ छइ। सुमित्रु नामि मंत्री, तिणि हउं तुम्ह कन्हइ मोकलिउ। इणि कारणि जु कांई[8] युक्तु हुयइ सु कीजउ।'

---

१ कमां **वारणहं** मांनो **ण** अक्षर लखतां पडी गयो छे. २ खमां आ शब्दने ठेकाणे **सकलु तेहंनउ** आम पाठ छे. ३ खमां **भाल**. ४ क प्रतमां **घस्र** शब्द उपर **दिन** आवुं टिप्पणु करेलुं छे. ५ ख **चलिया**. ६ ख **अर्जुन**. ७ ख **अनेरांइ**. ८ ख **काइ जुक्तु**.

तदाकालि समीपगत[१] जि छइं सुभट तेहे कहिउं 'महाराज! हवडां पाछां वलियइ; अम्हं हूंता कउणु[२] ताहरइ पुरि विस्फुरइ।' तींहं आगइ राजा कहइ।

संपदो विपदोपि स्युः पूर्वकर्म्मवशाद्भृशम्।
मूढा मुदं विषादं वा तत्संपात्तिषु तन्वते ॥

पुण्य प्राप्ति निबंधनु यात्रा करणु मेल्ही करी पुण्यलभ्य राज्यतणइ कारणि पाछउं वलनु युक्तउं नहीं। तथा सर्वनासिहिं यात्रा अकरी हउं वलउं नहीं। यदाहुः—

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्न चकिता विरमंति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजंति ॥

इसउं[३] भणी करी हंसु राजा आघउ चालिउ। परिवारु क्रमिक्रमि सगळ पाछउ वलिउ। एकु छत्रधरु आपणपापासि देखी करी वस्त्रालंकार तुरंगमादिवस्तु समस्तु दे करी पाछउ मोकलिउ। जउ एतलउ लोकु आवत तउ लोकु पुणि पुण्यविभागु लियत। लोकु पाछउ गयउ तउ हव मू एकलाइ जि रहइं पुण्यु होइसिइ। इसउं मनमाहि हर्षितु थिकउ चींतवतउ हूंतउ तीर्थाभिमुखु एकलउ पादचारिहिं जि चालिउ। कही एक अटवी माहि महीपतिरहइं देखताइं जि हूंता मृगु एकु पराहूंतउ नाठउ आवी करी लतावितान माहि पइठउ। तेहनइ पगि लागु[४] भील एकु धनुष्कि चडाविइ सरि सांधिइ आविउ। राजेंद्रकन्हा पूछइ 'महापुरुष! इणि पत्रच्छन्नि[५] वनि मृगतणउ पगु दीसइ नहीं। सु पुणि मृगु माहरउं भक्ष्यु किहां गयउ?' तउ पाछइ राजा चित्ति चीतवइ 'साचइ कहिइ मृगु[६] विनासु हुयइ कूडइ कहियइ द्वितीय व्रतभंगु हुयइ। तिणि कारणि बुद्धि करी एउ विप्रतारिवउ।' इसउं चीतवी करी राजा भणइ 'अहो माहरउं स्वरूपु पूछइ। मार्गभ्रष्टु हउं ईंहां आविउ।' भीलु भणइ 'मूढ! नाठउ मृगु किहां गयउ?' राजा भणइ 'हउं सुहंसु नामि पुरुषु।' आहेडी गाढइ स्वरि कहइ 'मृगनउ मार्गु मूर्ख मूरहइं कहि।' राजा भणइ 'राजपुरी माहरउं थानकु।' आहेडी कोपि चडिउ[७] भणइ 'जु तूरहइं बधिरताव्याधि गाढउ छइ, सु गाढेरउ होइजिउ।' इसउ भणी करी भील अनेरइ मार्गि[८] गयउ। मृगरहइं मतिप्रयोगि छोडवी करी आपणउं व्रतु अलीक वचन परिहार लक्षणु अखंडु प्रति पालइ। तिहां हूंतउ आघउ चालिउ। सांमुहा आवता[९] मुनिरहइं वांदी करी मार्गु मेल्ही करी आघउ चालिउ। यमकिंकर सरीषा भील बि कोपारुण लोचन धुणहि चडा-

१ 'પ सीमगत. २ 'પ कवण. ३ इसिउ. ४ 'પ लागउ. ५ 'પ छन्न.
६ 'પ मृग. ७ 'પ चडी. ८ 'પ थानकि. ९ 'પ आवतां.

विहू सरि सांधिइ[1] आवी करी राजेंद्र आगइ कहइं ‘ चिरकालइतउ चौर्य निमित्तु सूरु नामि पल्लीपति नीसरिउ। दूरइतउ एह वनमाहि मुंड पाखंडिक एकरहइं देखी करी अशुकुनु[2] एउ, इणि कारणि तेह माराविवा कारणि अम्हे मोकलिया। सु पाखंडिकु जइ तइं दीठउ तउ अम्ह आगइ कहि।’ तउ राउ मनि चीतवइ ‘ जउ हउं मौनु करी रहिसु। अथवा व्याज वचन भणिसु तउ भील सरल[3]मार्गि जायता हूंता मुनिरहइं विनास[4]हेतु होइसिइं। तिणि कारणि सांप्रतु असत्यु जइ कहियइ, तउ सत्य कन्हा अधिक पुण्यकारकु हुयइ।’ इति शब्दच्छलइतउ सत्यु असत्यु राजा कहइ ‘ जिणि मार्गि तुम्हे जाउ छउ तेह मार्गहूंतउ जु वामउ मार्गु तिणि मार्गि महात्मा जाइ छइ।’ विश्वजंतुजात रक्षिणि [5]करी दक्षिणु[6] मुनि तणउ दक्षिणु मार्गु मेल्ही करी ति भील वामइ सकल जीव विघातभावि करी वामइ मार्गि जिमपूर्विहिं ति भील जायता हूंता तिमहिं जि गया। मुनि कुशलि क्षेमि पहुतउ। ति भील बिहुं प्रकारहंकरी अमार्गि गया। राजा वचन सुधासेक समुल्लसित कीर्ति कल्पलता वितानु हूंतउ आघउ चालिउ। संध्यासमइ महाद्रुम एक अधो भागि वासइ रहिउ। “संघि समुद्रि धनवंति चउथइ दिवसि पडिसियां। धन सलिल माहि विलसियां। दारिद्रय धूलि ऊतारिसियां।” इसी वात करता वनांतरित[7] चोर राजेंद्रि तिहां जाणिया[8]। “किसी परि ए चोर संघविघात कारक नहीं हुयइं।” जेतलइ मनमाहि राजेंद्रु इसी परि चीतवइ तेतलइ दीपिका दीपिताशावकाश उदायुध महायोध तिहां अविया। राजेंद्र आगइ भणइं ‘ तउं कउणु? के एकि[9] चोर संघविघात कारक हेरकहं अम्ह आगइ ईहां कहिया छईं। जइ तउं जाणइ तउ कहि। जिम ति[10]चोर मारी करी संघ रक्षा करी यशु[11] अनइ पुण्यु बि वस्तु उपार्जों[12]। जिणि कारणि श्रीपुर नगर नायकि श्री गाधि नामकि जिनशासन तींहं चोरहं मारिवा निमित्तु अम्हे मोकिलिया छां।’ राजा पुनरपि चित्ति चींतवइ “साचइ भणिइ चोरघात पातकु लागइ। कूडइ भणिइ संघल्लंटन दूषणु लागइ।” इसउं चीतवी करी राउ भणइ ‘ तुम्हे संघि जायउ[13]। तिहां गया हूंतां तुम्हरहइं संघरक्षा पुण्यु अनइ यशु बे बोल होसिईं।’ ति पुरुष राजानइ वचनि करी रंजिया संघमाहि गया। लतावितान हूंता चोर नीसरिया राजेंद्रने पगे आवी करी[14] पडिया। इसउं वीनवइं ‘अहो महापुरुष! तइं अम्हे ईहां छता जाणिया पुण अम्हारी दया करी तइं न कहियाइं। तिणि कारणि तउं अम्हरहइं जीवितव्यदाता परमोपकारी पिता।’ इसउं भणी प्रणमी करी वली गया। प्रभाति राजा आघउ चालिउ केतली कल गया हूंता ऊतावला असवार के एकि राय रहिइं मिलिया। राय आगइ कहइं ‘ जिणि

१ ખ साधिइं. २ ખ अशकुनु. ३ ખ सरलइ. ४ ખ विनाश. ५ ખ रक्षणि. ६ ખ दक्षिण. ७ ખ० तरिता. ८ ખ जाणियां. ९ ખ कइएकि. १० ખ तिम. ११ ખ यासु. १२ ખ उपार्जीं. १३ ખ जाउ. १४ ખમાં આ શબ્દ નથી.

अम्हारउ ठाकुरु दंडिउ सु हंसु ईहां किहांई[1] दीठउ। जउ दीठउ तउ कहि जिम सु मारी-करी आपणा ठाकुर तणउं वैरु सोधउं।' इसउं सांभली करी राजा मन माहि चींतवइ "आपणा जीवितव्य तणइं कारणि कउणु विचक्षणु कूडउं बोलइ" इसउं चींतवी राउ भणइ 'हउं सु हंसु राजा।' आयुध लेकरी आगइ ऊभउ हूयउ। तउ एक गमइ अनेकि अश्वाधिरूढ प्रौढ सुभट[2]; बीजइ गमइ एकु हंसु राजा। तउ पाछइ धर्म्म प्रभावइतउ युद्ध करतउ राजा घणेई असवारे पाछउ करी न सकिउ। किंतु पंच परमेष्ठि महामंत्र समरण परायणु तेऊ जु एकु सर्वे निर्जिणी करी संग्राम भूमि[3] पीठि रहिउ "सत्यवादिन्! जय जयेति" वाद पूर्वकु देव दुंदुभिनाद करण समकालु पंचवर्ण कुसुमनी वृष्टि राजेंद्रनइ मस्तकि करतउ तेह वनतणउ अध्यक्षु त्र्यक्षु नामि यक्षु प्रत्यक्षु आगिलइ गमइ हूयउ[4]। ताहरइ सत्यवादि करी प्रसन्न चित्तु हउं त्र्यक्षाख्यु[5] यक्षु ताहरा वइरी सर्वे निर्जिणी करी तू आगइ इसउं कहउं—रत्न श्रृंगाभिधानि गिरि जिणि दिणि यात्रा हुयइ, आजु सु दिवसु, तिणि कारणि इणि विमानि माहरइ चडि; जिम हवडाई जि तिहां जाइयइ[6]। तउ राउ विमानि चडिउ। आपणपउं दिव्यालंकार श्रृंगार धारकु देखइ। आगिलइ गमइ दिव्य संगीतकु स्वकीय गुणतणइ गानि करी मनोहरु सांभलइ। गुह्य कनइ अर्द्धासनि समासीनु हूंतउ हंसु देवगृहि आविउ। दिव्य कुसुम गंधसार घनसार कस्तूरिकाऽगुरु वारहं करी जिन बिंबहं रहइं महापूज करी यात्रा संपूर्ण करइ। विमानाधिरूढु राजपुरीपति[7] परिसरोद्यानि आविउ। यक्षि अर्जुनुरिपु बांधीकरी पेगे आणी घातिउ। सु रिपु दया परिणाम वसइतउ मेल्ही करी हंसु राजा राजपुरी माहि आवी राजि बइठउ। दिव्यभोग राजेंद्ररहइ तुम्हे पूरिवा' इसउं आइसु दे करी चत्तारि यक्ष हंसरहइं अंगरक्ष त्र्यक्षु[8] यक्षु मेल्ही करी राउ मोकलावी आपणइ थानकि पहुतउ। हंसु राजेंद्रु राजपुरी जनरहइं महाहर्षु ऊपजावतउ सत्य प्रभावि पुरंदर जिम प्राज्यु राज्यु[9] प्रतिपाली करी देवलोकि गयउ।

हंसराजवतंसस्य सत्यवादफलं कलम्।
श्रुत्वा भव्यजनाः सत्यं ब्रूथ याथ महोन्नतिम्॥

॥ द्वितीयाणुव्रत विषइ हंस राजेंद्र कथा समाप्त॥

---

१ ખ **ईहांकिहांई.** २ કમાં **प्रौढ** અને **सुभट** શબ્દ લખતાં છુટી ગયા છે; તેમાં **प्रौढ** શબ્દ તો પાછળથી પાનાના હાંસિયામાં લખવામાં આવ્યો છે. ३ ખ **भूमि.** ४ ખ **हूयउ.** ५ ખ **त्र्यक्षा.** ६ ખ **जाईयइ.** ७ ખમાં આ શબ્દ નથી. ८ ખ **त्र्यक्ष.** ९ ખ **प्राज्यराज्यं.**

६. तृतीय व्रत उपर कथा.

अथ अदत्तादान परिहार विषइ लक्ष्मीपुंज कथा लिखियइ ।

अदत्तादान[1] विरतिव्रतनिश्चलनिश्चयः ।
लक्ष्मीपुंज इवाप्नोति सर्वः सर्वमचिंतितम् ॥

तथाहि -हस्तिपुरु नामि पुरु। महादारिद्रय मंदिरु सुधर्मु इसइ नामि धर्म्म कर्म्म कर्म्मठु श्रेष्ठि एकु हूंतउ। सु कउडां[2] वडइ वस्तु लेई करी वेचइ। केई एकि कउडा[3] ऊपार्जतउ हूंतउ कालु अतिक्रमावइ। धन्या नामि तेहनी गेहिनी। तिणि[4] अनेरइ दिनि रात्रि स्वप्नु लाधउं। दिव्यालंकार सार श्रंगार तार छइ। श्रीदेवी जिनेंद्र पूजा करती पद्महृद माहि बइठी जाणइ हउं देखउं छउं। ते तीहीं जि वार जागी हूंती हर्षरोमांच कंचुकित गात्र ऊठी करी प्रियतम आगइ आवी स्वप्नु कहइ। तिणि कहिउं 'प्रियतमि! श्रीमंतु धीमंतु धर्म्मवंतु तूरहइं पुत्रु होइसिइ। तिणिहिं जि दिणि तेहना प्रभावइतउ तेह सुधर्म्म श्रेष्टिरहइं बि गुणउ लाभु हूयउ। लाभोदय कर्मोदय लगी सु श्रेष्टि सुख लेसहंरहइं तेह[5] दिन लगी प्राहुणउ हूयउ। धन्या रहइं सुभकांति सौभाग्य दिकहं गुणहंकरी सु गर्भु भाग्यवंतु सुधर्मि संभाविउ। आग्रहायणीय दिणि सु सुधर्म्म श्रेष्टि धन चिंतातुं पादनइ अंगूंठइ करी घरनी भुइं खरवलतउ हूंतउ कल्याण मणि माणिक्य पूर्णु बिलु देखी निधि लाभइतउ आनंद मंदिरु हूयउ। तउ पाछइ जिसउं[6] इंद्रनउं विमानु हुयइ तिसउं मंदिरु कराविउं। रूपवंतु[7] सालंकारु सशृंगारु दासदासिका परिवारु[8] तिमहिं तेहनइ घरि सांपडिउ। आग्रहायणीय महोत्सुवु सवित्सरु कराविउ। तेहनइ मणि सुवर्ण[9] दानिकरी जि दातारहूंता तेई याचकु हूया। जिम जलि नीसरतेई[10] कूपु भरिओई जि दीसइ, तिम रत्न[11] काढीतेई सु बिलु तिमहीं जि भरिउ दीसइ। तिणि विभूति करी हृष्ट संपूर्ण दोहद कालि धन्या सुपुत्रु प्रसवइ। देवहींरहइं विस्मय कारकु दानु दियतइ हूंतइ श्रेष्टि पुत्र तणउ जन्म महोत्सवु कराविउ। इणि आवियइ अम्हारइ घरि लक्ष्मी तणा[12] पुंज हूया। तिणि कारणि अम्हारा पुत्ररहइं यथार्थु लक्ष्मीपुंजु इसउं नामु हुयउ। इसीपरि भणी करी वडइ विस्तारि लक्ष्मीपुंज नाम-करणु पितरे कीधउं। मनोवांछित वस्त्रालंकारादिकहं करी सु[13] बालकु जन्म लगी सुभभागी हुयउ। कलावंत जिम सकल कला कलापवंतु हूयउ। आठ दिसि संभूत जिसी आठ लक्ष्मी हुयइं तिसी स्वयंवर आवी काठ वर कन्या परिणिउ। देवावास समा निवास निवासि यथा काम सुख संभोग भंगी संयुक्तु

---

१ ખમાં दान શબ્દ પડી ગયો. २–३ ખ कवडां. ४ ખમાં णि નથી. ५ ખ तेहिं. ६ ખ जिसुं. ७ ખ०वंत. ८ ખમાં परि શબ્દ પડિ ગયો છે. ९ ખ सुवर्णि. १० ખમાં जिम जले नीसरे तोई. ११ ખ रत्नि. १२ ખ तणां. १३ ખ स.

हूंतउ सूर्यास्तोदय अजाणतउ हूंतउ जु जु इंद्रियानुकूल सु सु यथारुचि भोगवइ; जु जु दुक्ख करु सु सु सत्ताईं करी न जाणइं। पंचोत्तर सुर जिम सुख सागर निमग्नु हूंतउ सु कालु अतिक्रमावइ। अनेरइ दिवसि कांत[1] कांताजनांकशय्या सुतहूंता तेहरहइं जेतलइं चित्तमाहि इसी चिंता ऊपजइ "जु मूरहइं किसा कारण लगी इसी देवसमान ऋद्धि हूई।" तेतलइ आगिलइ गमइ दिव्यवस्त्रालंकार भासुरु जिसउ सुरु हुयइ[2] तिसउं पुरुषु प्रकटु हुई करी अंजलिकरण[3] पूर्वकु भणइ—'देव! धन्याकुक्षिसरोहंस! भाग्यसौभाग्यपात्र! जनावतंस! मणिपूरु इसइ नामि पुरु छइ। तिहां पुण्यधरु गुणधरु[4] इसइ नामि सार्थवाह[5] हूंतउ। सु अनेरइ दिनि विशदाभिधान मुनि समीपि वनमाहि गयउ।

जंतोः स्याद्दुक्खदं द्रव्यहरणं मरणादपि। अतः सुकृतिभिः कार्यं चौर्यचर्याविमोचनम्॥
एवमाकर्ण्य पुण्यात्मा स विद्याधरसंसदि। अदत्तादानविरतिं व्यधात्तत्र तदा मुदा॥

पुरमाहि आविउ हूंतउ व्यवसाय निमित्तु भूरि भांड सभारु लेकरी देसांतरि चालिउ। आपणा देस तणइ अंति[6] सार्थि अटवी माहि पइठइ हूंतइ आपणपइं सार्थवाहु घोडइ चडिउ आगइ थिकउ[7] जाइवा लागउ। पाछइ मार्ग्गु मूंकी करी प्रौढ पद प्रचारि किणिहिं दांडइ पडिउ। सुवर्ण लक्षमूल्य रत्नावली एक तिहां भुंइ पतित देखइ। व्रतभंग भय वशाइउ वली बीजीवार तिणि गमइ दृष्टि अकरतउ हूंतउ आघउ गयउ। सार्थ संचल भावतणा अलाभयतउ "किसउं[8] सार्थु दूरि गयउ?" इसी परि मनमाहि शंका ऊपनी। तउ पाछइ सार्थवाहु आपणउ वाहु आघउ ऊतावलउ चलावइ। खुरक्षुण्णि मार्गि स्वर्ण पूर्णु त्रांबानउ कुंभु देखइ। व्रतभंगइ तउ तिमहिं जि मूकी करी आघउ गयउ। ऊतावला जायता[9] हूंता सहसात्कारि वाहन वाहु मूयउ। पापभयभीतु चीतवइ "मू वाहता हूंता एउ मूयउ। हा! हतोस्मि। जु को एहरहइं जीवाडइ तेहरहइं एउ तुरंगमु हउं आपउं। अनइ ऊपरि घणउं धनु आपउं।" इसउं मनमाहि चीतवतउ हूंतउ सार्थवाहु पादचारिहिं जि आघउ गयउ[10]। तृषाक्रांतु[11] हूंतउ वृक्षशाखा निबद्ध वारि पूरित दीयडी देखइ। तउ अदत्तादान व्रतभंग[12] बीहतउ ऊंचइ स्वरि करी कहइ "कउण तणी ए दीयडी?" इसी परि वार वार भणतउ हूंतउ सांभली करी तीहीं जि तरुनी शाखा बाधउं छइ पांजरउं तिहां छइ सूयडउ, तिणि भणिउं "वनमाहि ओसही लेवा गयउ वैद्यपुत्रु,

---

१ ખ कंत. २ ખ हुइ. ३ ખ करणु. ४ ખ गण० ५ ખ वाहु. ६ ખમાં આ શબ્દ નથી. ७ ખ थकउ. ८ ખ किसुं. ९ ખમાં जाता. પ્રથમ य લખેલો પણ પાછળથી ભૂંસી નાખેલો. १० ખમાં चालिउ. ११ ખ क्रांत. १२ ખમાં भंग શબ્દ પડી ગએલો છે.

तेहनी ए दीयडी। हउं तेह आगइ कांई[1] नहीं कहउं। तउं शीतलु जलु पी।" इसउं शुकतणउं वचनु सांभली करी कर्ण हाथे ढांकी करी शुक आगइ सार्थवाहु कहइ। " तृस वरि; माहरा प्राण हरउ; पुण तोई वीधि अणदीधउं जलु पीयउं नही महा पापभय भावइतउ।" तउ पाछइ शुकनउं रूपु संहरी करी वृक्ष हूंतउ ऊतरिउ को एकु वरु पुरुषु। सार्थवाह आगइ हर्षितु[2] थिकउ कहइ– "वैताढिय नामि पर्वति, विपुला इसइ नामि नगरी। तिहांनउ हउं सूर्यु इसइ नामि विद्याधरु। अनेरइ दिनि ताहरइ मणिपूरु इसइ नामि करी प्रासिद्धि नगरि विशदाभिधानु माहरउ जनकु विद्याचारण मुनिवरु उद्यानवनि समोसरिउ हूंतउ हउं तेहरहइं वांदिवा [तिहां][3] आविउ। वांदी करी यथास्थानि बइठउ। तदा कालि मू उद्दिसी करी महात्मा भणिउं।

अनादानमदत्तस्यास्तेयव्रतमुदीरितम्। बाह्याः प्राणा नृणामर्था हरतातं हताहिते ॥ यथा

वरं विभववंध्यता सुजन भावभाजां नृणा-
मसाधुचरितार्जिता न पुनरूर्जिताः संपदः।
कृशत्वमपि शोभते सहजमायतौ सुंदरं
विपाकविरसा न तु स्वयथुसंभवा स्थूलता ॥

ताहरइ तउ धनु घणूं आगे[4] छइ; किसइ कारणि परद्रव्यापहारु करइ; इत्यादि चोरी परिहरण विषइ घणउं भणिउं। तथापि हिं हउं चौर्यव्यसनी फीटउ नही। तइं पुणि मू देखता तदाकालि परद्रव्य लेवा नियमु लीधउ। मूरहइं महा विस्मउ हूयउ[5]। जोयउ न ए वाणिया धनलव लाभ निमित्तु सरीरू सर्वस्वू जोषीमि घाती करी दूर विषम देशांतर पूर फिरइं। तींहं रहइं अदत्तादान विरति नियमु किसी परि प्रति पालइ। तिणि कारणि एह तणी हउं परीक्षा करिसु। इसउं चीतवी अदृष्टु थिकउ तू पाखती[6] फिरिउ। फिरतइ हूंतइ आजु मइं अवसरु लाधउ। तउ मइं तूरहइं स्वर्ण लक्ष्यमूल्य रत्नावली पतित दिखाली। निधानु पुण दिखालिउं। अनइ घोडउ मूयउ दिखालिउ। मइं तउं पुण लोभि जीतउ नहीं। तृसिया हूंता तू रहइं पाणीभरी दीयडी दिखाली। शुकनइ रूपि तू रहइं जलपान विषइ प्रेरणा कीधी। तइं पुण मोटेई प्राणरक्षण लक्षणि कार्यि उपस्थितइ[7] हूंतइ मइ अल्पु पाणी पानमात्रु अदत्तादानु करावी न सकिउई।" इसउं भणी करी सूर्यि विद्याधरि आपणा सेवक विद्याधर तेडिया। ति अदृश्य हूंता सर्व दृश्य हूया। तींहं कन्हा मणिमाला अणावी निधानु अणाविउं। अनेरउं घणउं[8] धनु अणाविउं। मूयउ हूंतउ जु घोडउ सु जीवाडिउ।

---

१ ખ काई. २ ખ हर्षित. ३ કમાં પડી ગયો છે. ४ ખ घणउ आगइ. ५ ખ हूयइ. ६ ખમાં આ શબ્દના ઠેકાણે रूपा० આવો ભ્રષ્ટ પાઠ છે. ७ ખમાં त પડી ગયો છે. ८ ખ घणुं.

सार्थवाह आगइ सूर्यु विद्याधरु भणइ 'सार्थवाह ! एउ ताहरउ घोडउ आपणउसाति' इसउं भणी करी सार्थमाहि आणी सार्थवाहु मेल्हिउ। धनु सार्थवाह आगइ मेल्हिउं। सार्थवाहु भणइ 'किसउ एउ धनु ?' सु भणइ 'कांई एकु माहरउं, कांई एकु कउतिग लगी परहूंतउं अपहरिउं। तदा कालि राजऋषि विशदमुनि वचनि ज मूरहइं चोरी तणी निवृत्ति न हूईयइ। स हवडां ताहरा साहस दरसनइतउ मूरहइं चोरीनिवृत्ति ऊपनी। तिणि कारणि तुम्ह[1]रहइं मइं धर्म्मगुरु भणी धनु पादभेट कीधउं।' इसउं कहता सूर्य विद्याधर आगइ गुणधरु भणइ—'जु धनु जेहनउं तइं हरिउं छइ, सु तेहरहइं पाछउं दइ। तिणि तिमइ जि कीधउं। पाछिलउं माहरउं धनु गुणधर [2]तउं लइ।' इसउं भणता सूर्य आगइ गुणधरु कहइ—'अहो विद्याधर तउं एउ माहरउं धनु[2] सगलूं लइ। जिणि कारणि इसउं मइ मानिउं हूंतउं "जु को माहरउ घोडउ जीवाडइ तेहरहइं हउं सगलूं आपणउं धनु आपउं।" तइं माहरउ घोडउ जीवाडिउ, तिणि कारणि तउं माहरउं धनु लइ। किंच दान[3]पात्रि दीजइ। हउं पुण दानयोग्यु पात्रु नही; तिणि कारणि ताहरउं धनुं कथमपि हिं लिउं नहीं।' इसउं भणता गुणधर[4] आगइ विद्याधरु भणइ—'हउं ताहरा उपदेशरहइं इणि भवि ऊरिणु नहीं हुउं। मइं मायालगी ताहरउ घोडउ मूयउ दिखालिउ तिणि कारणि किसी परि ताहरउं धनु हउं लिउं? माहरउं धनु तउं न लियइं, ताहरउं धनु हउं न लिउं। तउ पाछइ एह धनरहइं कउणु धनिकु होइसिइ?' सार्थवाहु कहइ—'धर्मु जेहरहइं देसिइ तेउ[5] धनिकु होइसिइ। तिणि कारणि आवि, जिम सर्वज्ञदेसिति धर्म्मि वेचां, लक्ष्मी कृतार्थ नीपजावां।' तेहनइ वचनि विद्याधरि अंगी करियइ[6] हूंतइ तेहे[7] बिहुं आपणी लक्ष्मी सप्तक्षेत्री माहि वावी। तउ पाछइ गुणधरु मरी करी तउं लक्ष्मीपुंजु हूयउ। हउं पुण ताहरा उपदेशइतउ सुपात्रि धनु दियतउ आयु पूरी करी व्यंतरु ऊपनउ। ताहरइ पुण्यि करी हउं पुण आवर्जितु हूंतउ तूरहइं आजन्मु[8] हितु कालोचितु वस्तु पूरउं।' इसउं व्यंतर वचनु सांभली करी मूर्च्छा गयउ हूतउं सीतोपचारइतउ मूर्च्छापगमइतउ जातिसमरणु लही करी लक्ष्मीपुंजु प्रमोदपुंजु हूयउ[9]। यावज्जीवु विशुद्धु[10] जिनधर्म्मु प्रतिपाली करी अंतकाली अनसनु करी समाधिसउं मरी अच्युत देवलोकि देवु होई। पुनरपि मनुष्य भवु लही, दीक्षा ले, केवल ज्ञानु उपाडी, मोक्षि पहुतउ ॥

लक्ष्मीपुंजकथां श्रुत्वा भव्याः स्तेयविवर्जनम्। कुरुध्वं येन वस्तूर्णं पूर्णं भवति मंगलम् ॥

॥ अदत्तादान परिहार विषइ लक्ष्मीपुंज कथा ॥

---

१ क तुम्हे. २ ख प्रतमां आ बंने बगडाओ वच्चेनो पाठ लखतां छुटी गयो
३ ख दानु. ४ ख ०धरु. ५ ख तउ. ६ ख करिइ. ७ ख तेहं. ८ ख आजन्म.
९ ख हूउ. १० ख विशुद्धि.

७. चतुर्थ व्रत उपर कथा.

चतुर्थ व्रत विषइ नागिल कथा लिखियइ।

अहो ब्रह्मव्रतं मुक्तेः संमुखीकारकारणम्।
गीयते नागिलस्येव विपदामुपदाहकृत्[1] ॥

तथाहि–महापुरु नामि पुरु। भोजु नामि राजा। लक्ष्मणु नामु श्रेष्टि जिन धर्म्मु सर्व सारु मानइ[2]। तेहनी नंदा नामि विवेकिनी नंदनी[3]। स पुण सतीमतल्लिका परिणयन योग्य हूंती पिता आगइ कहइ—

'निरंजनं देशोन्मुक्तं निस्नेहव्ययमन्वहम्।
धत्ते विवेकं दीपं यः परिणेता ममास्तु सः ॥

इसउं तेहनउं वचनु सांभली करी पिता चिंताकुलु हूयउ। जु जु तेहरहइं वरु आवइ तेह तेह आगइ 'निरंजनं' इत्यादि श्लोकु पढइ। को[4] एकु श्लोकु परमार्थ वृत्ति करी परीछइ नहीं। बाह्यार्थ वृत्ति करी परीछइ। तिणिहिं जि नगरि नागिलु नामि जूयारी[5] एकु छइ। सु पुणि रूपि करी जिसउ कंदर्पु हुयइ तिसउ छइ। तिणि नागिलि अनेरइ दिनि अनेकि लंघन करी विरूपाख्यु[6] यक्षु आराधिउ हूंतउ[7] प्रत्यक्षु हूयउ कहइ–'अहो! वरु मागि।' तिणि भणिउं–'जउ तउं मूरहइं तूठउ तउ जिसउ[8] दीपु नंदा कहइ छइ तिसउ दीपु तउं[9] माहरइ घरि था।' यक्षि कहिउं[10]–'होइसु।' तउ पाछइ लक्ष्मण श्रेष्टि तणइ घरि जाई करी नंदा मागइ। श्रेष्टि भणइ–'नंदा जिसउ दीपु भणइ तिसउ दीपु जउ थाहरइ[11] घरि हुयइ तउ नंदा लहइ।' तिणि भणिउ–'आवी माहरइ घरि जोयउ।' श्रेष्टि जोयइ तउ तिमहीं जि परि दीपु देखइ। नंदा तेहरहइं परिणावइ। यक्ष प्रभावि दरिद्रिता भावु नाठउ। लक्ष्मी प्रभूत आवी। तथापि नंदा तिसइ दीपादि दर्शनाश्चर्यिहिं करी निरानंदाई जि हुयई। सु पुण नागिलु स तिसी देवता समान रूप नायिका लहिऊ करी द्यूतव्यसन तणी निवृत्ति न करइं। जिम जिम धनु हारइ तिम तिम नंदा स्नेह लगी लक्ष्मणु श्रेष्टि पूरइ। जदपिहिं[12] धनु हारी बाहिरि अपर पणांगना रमी घरि मउडउ आवइ, तथापिहिं नंदा सानंद थकी[13] तेहरहइं परिचर्या करइ। तउ पाछइ नागिलु आपणइ मनि चीतवइ–'हउं एहरहइं प्रिउ[14] नहीं, जु एवडेई अपराधि मूं ऊपरि रोषु[15] न करइ।' अनेरइ दिवासि तिणि नागिलि घणउं धनु हारिउं।

१ ખ ०द्दापहृत्. २ ખ नमइ. ३ ખમાં नंदिनी. કમાં એ શબ્દ ઉપર पुत्रिका આવું ટિપ્પણ લખેલું છે. ४ ખ कोइ. ५ ખ जुयारी ६ ખ ०पाक्षु. ७ ખ तउ. ८ ખ जिसु. ९ ખ तूं. १० ખ भणिउ. ११ ખમાં जउ किमइ ताहरइ. १२ ખ यद्यपिहि. १३ ખ थिकि. १४ ખ प्रिय. १५ ખ क्रोधु.

कितवहं कन्हा नाठउ वन माहि पइठउ । तिहां ज्ञानवंतु मुनि धर्म्मध्यानि वर्त्तमानु तिणि दीठउ । वांदी करी प्रस्तावि पूछिउ—' भगवन् ! माहरी भार्या सुभ सद्भावइ हूंती मूंरहइं चित्ति कांई[१] न करइं ।' इसइ पूछिइ हूंतइ महात्मा मनि चीतवइ 'योग्यु छइ, एउ प्रतिबूझिसिइ; ' तिणि कारणि महामुनि कहइ—' स विवेकिनी कांतु[२] पुणि विवेकवंतु परिणिवा कारणि विवेकु निरंजनादि गुणु तिणि कहिउं । तउ विवेकु दीपु जु धरइ, सु मूरहइं वरइ । इसउ तेहनउ अभिप्राउ हूंतउ । सु अभिप्राउ को जाणइ नहीं । तइं दीपु निरंजनादि गुणु दिखाली करी परिणी ।

यतः—निगद्यतेऽञ्जनं माया नवतत्त्वच्छितिर्दशा ।
स्नेहव्ययः प्रेमभंगः कंपः सम्यक्त्वखंडनम् ॥

तेहे मायादिके दोषे विवर्जितु विवेक[३] दीपु जु धरइ सु मूरहइं वरइ । तिणि पुण जेतीवार तिसउ दीपु यक्ष विरचितु दीठउ, तेतीवार मौनवंत हूंती तइं परिणी । जेतलइ सती तेतलइ तूरहइं अपराधवंत ही विषइ न रूसइं । जेतलइ तउं अविवेकी एतलइ तू ऊपरि न तूसइं । तूरहइं चित्तिहिं न करइं ।" महासतीनउ सु समाचारु साधु भणितु अनइ विवेकु सांभली करी प्रति बूझइ । महात्मा कन्हइ जिसउ विवेकु पूर्विहिं कहिउं तिसउ विवेकु अनइ स्वदार संतोषव्रतु तदा कालि नागिलि अंगीकारिउ । घरि आवी स्नानु करी विधिवत् देवपूजा करइ । सुपात्रहंरहइं दानु प्रवर्त्तावइ । यथेच्छ काम सुख भोगवइ । तउ पाछइ विवेकवंतु कांतु देखी करी नंदा सानंदा हूंती भणइ—' शील सलिल परिसिक्त हूंती जिन भक्ति कल्पलता आजु मूरहइं सफलु हुई । कांत जु मइं तउं विवेकवंतु दीठउ । ' नागिलु भणइ—' प्रियतमि ! जु मइं व्यसनु मेल्ही करी विवेकु अंगी करिउ, तेह अर्थ विषइ गुरुनउ आदेशु कारणु ।

यत उक्तम्--मनो न निश्चलं तावद्यावत्तत्त्वं न विंदति ।
विदिते तु परे तत्त्वे मनो नौकूप-काकवत् ॥

तेह दिवस हूंती तीहंरहइं एक चित्तता हुई । नागिल नंदा बिहुं आधि-रहितहं समाधि-सहितहं समान-धर्मरूप-कला-यौवनवंतहं तीहं तणी कायकांति अतिशय प्राप्त हुई । अनेरइ दिनि किणिहिं पर्वि नंदा पीहरि गयई[४] । नागिलु आपणा घरतणी सातमी भुइंनइ माणि कुट्टिमि देवपल्यंकोपमान शयनीय ऊपरि सूतउ चंद्रबिंबि-दत्तलोचनु वर्त्तइ । कइ[५] एक विद्याधरी प्रिय-विरहिणी आकाशमार्गि जायती नागिलरहइं देखी करी सकाम हुई हूंती नागिल आगइ

१ B काइं. २ B कांति. ३ B विवेकु. ४ B गई. ५ B केइ.

आवी करी भणइ–'कामाग्नि संतप्त गात्र[1] हूंती हउं अहो महापुरुष ! तूरहइं शरण[2] आवी। स्वामिन् ! स्वांग-संग-सुधा-तरंग-रंग-केली[3]-सुखु मूरहइं करावि। हउं पुण, विद्याधर-शिरोमणि छइ हंसु विद्याधरु तेहनी गेहिनी, तइं दीठइ तेह हूंतउ माहरउं मनु ऊबीठउं हूयउं। चंद्र नाम खेचरेश्वरनी हउं दीकिरी। नामि करी आगइ लीलावती, तइं आद्दरी तह हउं कर्म्मिहिं करी लीलावती होइसु। अथ मूरहइं जइ किमइ नहीं अंगीकरइ तउ तउं[4] नहीं हुयइ; अथवा हउं नहीं हुउं। ते तीवार धर्मज्ञ ! तउं किसउं स्त्री-हत्या-पातकी नही हुयइ। पतितणी विद्या, पितातणी विद्या हउं सर्व्वइ जाणउं। ति विद्या तूरहइं देसु; पाति अनइ पिता तूरहइं साध्य करिसु। तिणि कारणि तउं[5] मूरहइं अंगीकरि। माहरउं वचनु अन्यथा म करिसि।' इसउं भणी करी तेहना पाद आपणइ मस्तकि धरिवा कारणि जेतलइ धाई तेतलइ परस्त्री संस्पर्शु माहरां पगहींरहइं म हुउ इणि कारणि नागिलि जिम दहन हूंता दाझता पाछा कीजइं तिम कीधा। तउ पाछइ स विद्याधरी कोप वशंगत हूंती आकाशगत अतीव रक्तलोचन थिकी अग्निवर्णु लोह-गोलु अतिविलोलु विकुर्वी करी नागिल तणा मस्तक ऊपरि मूंकइ। 'दाधउ रे ! दाधउ रे !' इसी परि गगन-गत हूंती वाहवइ। तेहरहइं बीहावइ। तउ पाछइ नागिलु पंचपरमेष्ठि-नमस्कारु मनमाहि समरइ। नमस्कारनइ प्रभावि लोहगोलउ विलइ गयउ। स विद्याधरी पराजित हूंती लाजी करी अदृश्य हुई। नागिलु हर्ष-रोमांच-कंचुकितु गात्रु हुयउ। 'तुम्ह पाखइ पितृ मंदिरिहिं मूरहइं रति नहीं' इसउं भणती हूंती नंदानइ रूपि नंदानइ स्वरि स खेचरी गृह-द्वारि आवी। परिवार कन्हा द्वारु ऊघाडा[6]वइ। नागिलु स्वरि करी नंदा ओलखतू हूंतउ खेचरी कपटा[7]शंका करी। संकीर्ण स्थानस्थु होईतउ नंदा बोलावइ–'हे अरविंदाक्षि दाक्षिण्य निधे ! यदि त्वं नंदासि तदा मामेहि। अथान्या कापि तदा धर्मनृप[8]-प्रभावाद्भग्नगतिर्भव।' इसा कथन कथनांतरु धर्म्मनइ प्रभावि स खेचरी स्तंभित गति हूंती, तेहनइ चरित्रि करी विस्मयापन्न हूंती विद्याधरी आगइ ऊभी रही। नागिलु कपटांतराशंकी शीलरक्षा कारणि आपहे व्रतु लियइ। सासन-देवता-दत्तु वेसु धरतउ हूंतउ गृहस्थितु जु छइ यक्षु दीपु तेह आगइ इसउं[9] कहइ–'अहो आराध्य ! नंदानइ लोभि मइं तउं गृह दीपंता पमाडिउ हूंतउ। सांप्रतु हउं कृतकृत्यु हूयउ। विरूपाल्य[10] यक्ष तउं आपणइ थानि पहुचि।' तउ दीप हूंती भाषा नीसरी 'जां तूं[11] जीविसि तां हउं तू सरिसउ[12] रहिसु।' तथा शील महिमा देखी करी स खेचरी अति रंजित चित्त हूंती प्रभात समइ महाविस्तरि दीक्षा महोत्सवु करावइ। सूर्योदयहिं[13] दीप्र-

१ ખમાં गात्र નથી. २ ખ शरणइं. ३ ખમાં केवली. ४ ખમાં तउं નથી. ५ ખ तूं. ६ ખ ऊघडा. ७ ખમાં कपटा શબ્દ નથી. ८ ખમાં नृप શબ્દ નથી. ९ ખ इसुं. १० ખ विरूपाक्ष. ११ ખ तउं. १२ ખ सरसुओ. १३ ખ सूर्योदिहिं.

भासु जु छइ यक्षदीपु तिणि अनुगम्यमानु विस्मय-स्मेर-विलोचनहं लोकहं विलोक्यमानु नागिलु भवसमुद्रकूलि गुरुपाद-मूलि पहुतउ । नंदा सहितु दीक्षा ले करी दुस्तप-तप क्रिया-कलाप करतउ हूंतउ गुरु सरसउ[1] विहरिउ । राति[2]हिं यक्ष-दीप तणइ प्रद्योति श्रुत पाठु करतउ थोडे दिवसे ज्ञात-ज्ञातव्यु[3] गीतार्थ-शिरोमणि हूयउ । संजम ग्रहण पूर्विहिं आयुः कर्म्मु बांधउ[4] हूंतउं, तिणि कारणि हरि वर्ष क्षेत्रि कल्पवृक्ष तलि नंदा स्नेह लगी जुगलियउ हूयउ । सु जुगलु भाग्यशेष तणइ प्रभावि स्वर्गभोग भोगवी करी महाविदेही क्षेत्रि मनुष्यता लही सिद्धिइं गयउं ।

शीलं सुवर्णाभरणं परीक्षाहीरान्वितं नागिलवन्निधाय ।
आ संसृतिं साररमामवाप्य श्रेयः श्रियं भव्यजना लभध्वम् ॥

॥ चतुर्थव्रत विषइ नागिल द्यूतकार कथा समाप्ता ॥

८. पंचम व्रत उपर कथा.

परिग्रह परिमाण करण[5] विषइ विद्यापति महीपति कथा लिखियइ ।

परिग्रहपरिमाणाख्यव्रतकल्पद्रुरद्भुतः ।
निषिध्यमानमप्यर्थं दद्याद्विद्यापतेरिव ॥

पोतनपुरि नगरि धनद जिम धनपति विद्यापति इसइ नामि श्रेष्ठि अति विख्यातु हूयउ । तेहनइ[6] श्रृंगारसुंदरी इसइ नामि श्रेष्ठिनी रूपि करी जिसी सुरसुंदरी हुयइ तिसी । ति बे जिन-भक्त अनंतफल लाभ वांछा करी सप्तक्षेत्रीतलि[7] धनबीजु वावतां हूंता यथाकामु वृष-पोषणु करइ । धनु ऊपार्जतां[8] जिनधर्म्मु विधिवत् करतां सुखमय हर्षमय विस्मयमय समय नीगमतां हूंतां तीहंरहइं अनेरइ दिवसि रात्रि समइ स्वप्नमाहि विद्यापतिरहइं का एक स्त्री कहइ—'हउं ताहरा घरनी लक्ष्मी, एतला दिवस ताहरइ पुण्य गुणि करी बांधी हूंती तूरहइं वशि[9] हूंती । ' हव[10] हउं दैवि मोकली[11] तिणि कारणि आजु हूंती दसमइ दिवसि ताहरा घरहूंती जाइसु । ' इसउं दुःश्रवु वचनु तेहनउं विद्यापति सांभली करी जागिउ । 'दरिद्रु हउं होइसु[12] ' इसी-परि चिंतावस्थु हुयउ । प्रभात समइ श्रृंगारसुंदरी विद्यापति चिंतापतितु देखी करी भणइ[13] 'कांत ! रवि बिंबजिम तुम्हारइ मुखि मालिन्यु अदृष्टपूर्वकु किसइ कारणि आजु दीसइ ।' स्वप्नस्वरूपि विद्यापति भणिइ हूंतइ पुनरपि श्रृंगारसुंदरी भणइ[14]—'निर्वाण नगर प्रदेशि निषे-

१ ખમાં सरिसउ. २ ખમાં रातिहिंના બદલે तिहिं શબ્દ છે. ३ ખમાં ज्ञातव्य. ४ ખ बांधतउं. ५ ખમાં करण શબ્દ નથી. ६ ખ तइं. ७ ખ तालि. ८ ખ ०र्जता. ९ ખ वश. १० ખ हिव. ११ ખ मोकिली. १२ ખ होइसिउ. १३ ખ भणइं. १४ ખ भणाइं.

धागेला लक्ष्मी संतहंरहइं हृदय-शल्य-तुल्य जइ जाइ तउ जाउ। विवेकु एकु सर्व-समी[1] हित-संपादकु तुम्हकन्हा म जाइजिउ। तथा धनतणउं फलु सुपात्र-दानु[2] सु[3] तुम्हे भव्यपरि[4] एतला दिवस सीम लीधउं। मोक्षमार्ग भंगविषइ वाडि ए लक्ष्मी जइ भाग्यवशि भागी तउ ताहरी पुण्यवृत्ति जागी। तिणि कारणि हर्ष[5]स्थानि किसइ कारणि विषादु करउ। किसी परि ए लक्ष्मी दसमइ दिवसि जाइसिइ। आत्मायत्त हूंती आजू[6] जु सप्तक्षेत्री माहि वावउ। परिग्रह परिमाणु व्रतु करउ। असुभकाल तणउं हरणु करउ।' इसी प्रियतमा भाषा सांभली करी हर्षितु हूंतउ प्रभातिहिं जि समस्त लक्ष्मी सप्तक्षेत्रीं वेचइ। देहमात्रोपयोग्यु स्वल्पु धनु राहवी करी मध्यं[7] दिनि जिन-पूजा करी इसउं कहइ—'एक श्रृंगारसुंदरी भार्या, एक शय्या, वि वस्त्र, पात्रु एकु, आहारु दिन-भोजन मात्रु मूकी[8] करी अपर समस्त वस्तु परिग्रह करण नियमु। जिनेंद्र सेवा निमित्तु घणूं वस्तु धरउं।' इसी परि परिग्रह प्रमाणु करी समस्तु दिवसु धर्म्मध्यान परायण थिकउ नीगमइ। 'धन पाखइ प्रभाति किसी परि याचकमुख देखीसिइं। इणि कारणि रात्रि समइ लोकि सूतइ हूंतइ देशांतरि गमनु करिवा युक्तु।' इसउं श्रृंगारसुंदरीसउं आलोची करी सूतउ। रात्रि प्रहर द्वय समइ देशांतरि चालिवा जउ ऊठिउ तउ घरु तिमिहिं[9] जि धन-भरिउं देखइ। तउ विस्मयापन्नु हूंतउ विषापति प्रियतमा प्रति भणइ—'दसमइ दिनि दैवि आकर्षितइ[10] जि हूंति श्री जाइसिइ, दस-दिवस-सीम दीयमानइ हूंती माहरा घर हूंती नहीं जाइ। तिणि कारणि "धनदानु धनक्षय-हेतु, धनतणउं अदानु धन-संचय-हेतु" इसउं मुग्धजन मुधा बोलइ।

न याति दीयमानापि श्रीश्चेद्दीयत एव तत्।
तिष्ठत्यदीयमानापि नो चेद्दीयत एव तत्॥

इसी वार्त्ता तणइ विस्मयरासि वर्त्तमानहं हूंता तीहं[11] रहइं सूर्यु ऊगिउ। बीजइ दिनि पुणि तिमहिं[12] जि लक्ष्मी सुपात्रि देवी करी परिग्रह परिमाणु करी सूतउ। प्रभाति तिमहिं जि श्री देखइ। वली तिमहिं जि ऋद्धि सुक्षेत्रि वावइ। इसी परि नव-दिवस-सीम करइ। इसउं कांई[13] एकु सुपात्र[14]दानु प्रवर्त्ताविउं जिसइ कल्पद्रुमाधि देवीरहइं पुण विस्मउ ऊपनउ। 'पूर्व-पुण्य-पयःपंकु मुक्ति-मार्गरहइं दूषकु श्रीनउ पूरु मूरहइं[15] प्रभाति शोषि जाइसिइ' इसी परि हर्ष-पूरितु हूंतउ रात्रि सूतउ। स्वप्न माहि श्री आवी करी भणइ—'अहो महापुरुष! ताहरां[16] दान-धर्म्महं करी दुष्टु दैवु दूरि कीधउ, हउं[17] जायती वली थाहरावी।

१ ખ सामी० २ ખ दान. ३ ખમાં સુ નથી. ४ ખ पदि. ५ ખ हर्षि. ६ ખ आजू. ७ ખ मध्य. ८ ખ मुंकी. ९ ખ तिमहीं. १० ખ कर्षीतइ. ११ ખ तीहं. १२ ખ तिमहीं. १३ ખ इसुंकाइ. १४ ખ सुपात्रु. १५ ખ मू. १६ ખ ताहरा. १७ ખ हुं.

अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते ।
इति सूक्तं त्वयाकारि मतिसार ! यथातथम् ॥
कदाचन न मुंचामि तदहं सदनं तव ।
यथेच्छं भाग्यभंगीभिरुत्संगीकृत भुंक्ष्व माम् ॥

तदा कालिहिं जि जागिउ हूंतउ भार्या आगिलइ गमइ स्वप्न-विचारु कहइ । प्रतिज्ञा निर्वाह निमित्तु कहइ–' प्रियतमि ! भोगमात्र फलि श्रीदान-व्यसनिहिं जि हा माहरउं जन्मु जाइसिइ । मुक्तिफलि तपि किसी परि प्रवर्त्तिसु । कदा कालिहिं लोभ-लोलितु मनु नियम-भंगु पुण कराविसिइ । तिणि कारणि श्री-पूर-पूरितु मांदिरु मूंकी[1] करी किणिहि देशांतरि जाइयइ । तउ श्री प्रहतइ[2] छूटियइ ।' इसउं भार्यासउं आलोची करी जिनबिंब करंडिका ऊपाडी करी श्रृंगार-सुंदरी मात्र परिवार हूंतउ बाहिरउ नीसरिउ । पंच परमेष्ठि नमस्कार समरणा करतउ नगरइतउ चालिउ । नगरि एकि जाई करी सूतउ । तिहां अपुत्रु राउ विणठउ । प्रधान पुरुषे पांच दिव्य अधिवासिया,[3] जिहां विद्यापति हूंतउ तिहां आविया । घोडइं हेषारवु कीधउ । छत्रु आवी माथइ रहिउं । चामर बिहुंगमे[4] ढलिवा लागा । पट्टहस्ति गलगर्जिकरण पूर्वु[5] तीर्थजलपूर्ण कलसे करी, राज्याभिषेकु करी, भार्यासहितु ऊपाडी करी, शुंडादंडि करी, कुंभस्थलि चडाविउ । तउ पाछइ मंत्रि सामंत मंडलेश्वर विसर[6] परिवृतु राजसौध ऊपरि आवतउ मनमाहि[7] चींतवइ 'जिम पूनिमनउ चंद्रमा मेह-पटल[8] हूंतउ नीसरिउ राहुग्रस्तु हुयइ, तिम हउं अल्प-धन-पंक हूंतउ[9] कथमपि हिं नीसरिउ, प्राज्यराज्य महा-पंक माहि[10] पाडिउ ।' भद्रासनि बइसाली करी महामात्य राज्याभिषेकु करावइं । विद्यापति भणइ–'[11]मूरहइं राज्य माहि[12] कार्यु नहीं ।' प्रधान कहइं–' इम किम हुयइ । देवता [13]तूरहइं राज्यु दियइ ।' विद्यापति भणइ–' तथापि हिं मू राज्यि कार्यु नहीं ।' इसी परि वार वार राज्याभिषेक-निषेधु करतइं हूंतइ आकाश-भाषा ऊछली–' अजी भोग-फलु प्रभूतु कर्मु छइ, तिणि कारणि राज्यलक्ष्मी-पाणि-पीडनु करि ।' इसउं निज-भाग्य-देवता-वचनु सांभली करी सिंहासनि जिनेंद्र-प्रतिमा बइसाली करी तेहनइ पादपीठि आपणपइं बइसी करी जिनप्रतिमा रहइं राज्याभिषेक तणइ व्याजि आपणपारहइं त्रिभुवनाधिपत्य निमित्तु अभिसिंचावइ । जेतलउं अंगी करिउं छइ तेतलउं आपणइ लेखइ करी बीजउं समस्तु वस्तु शस्त्र[14] हस्ति तुरंगम भांडागारादिकु जिन नामांकितु करइ । सदा तीर्थयात्रादि प्रभावना करावइ । देवगृह करावइ । जिनबिंब भरावइ । अभय-घोषणा अमारि-घोषणा करावइ ।

---

१ ખ मूकी. २ ખ तउ. ३ ખ वासियां. ४ ખ बिहु. ५ ખ पूर्व.
६ ખમાં આ શબ્દ ઉપર समूह આવું ટિપ્પણ કરેલું છે. ७ ખ मांहि. ८ ખ पडल.
९ ખ हंतउ. १० ખ मांहिं. ११ ખ मूं. १२ ખ मांहिं. १३ ખ तूं.
१४ ખ માં शस्त्र શબ્દ નથી.

लोककन्हा करु न लियइं। कहइ ‘ अहो ! लोकउ जु राज[1]भागु आवइ सु धनु धर्म्मि हिं जि वचउ।’ तउ पाछइ जिनधर्म्मनइ एकातपत्रि राज्यि प्रवर्त्ततइ[2] हूंतइ ‘ मारि ’ इसा अक्षर कंदर्पनाम मूंकी करी अनेरइ थानकि, न केवलं जीवविषइ को[3] न कहइ अजीव छइं जि द्यूत-माहि सारि तींहीं आगइ को न कहइं मारि। जिमजिम विद्यापति राजा धनु वेचइ तिमतिम तेहनी भाग्यदेवता राजमंदिरि धनु वरसइ। अनेरइ दिनि समीपगत राज्येंद्र मिली करी तेहना राज्य रहइं लेवा आविया। विद्यापति धर्म्म मूकी बीजी वात जाणइ नहीं। जिनाधिष्ठायक छइं यक्ष तेहे तींहंरहइं रोग ऊपजावी करी नासविया। विद्वेषियां[4] तणउं विकटु कटकु देखी करी विद्यापति चित्ति चीतवइ ‘ अहो ! शक्र-विक्रमवंत शत्रु राजेंद्र छइं, तेई धर्म्मतणइ प्रभावि भाजी गया। मूरहइं अल्प परिग्रहता देखी करी महापरिग्रह शत्रु लोक जिणिवा कारणि आपणा सेवक[5] भणी धर्म्मि निश्चइ साहाय्यु कीधउं।

तदहं यद्यमुं सेवे त्यक्त्वा शेषपरिग्रहः।
तदंतरायभंगेपि भवत्ययमुपक्रमः ॥

इसउं चीतवी करी श्रृंगारसुंदरी-संभवु श्रृंगारसेनु सूनु राज्यि बइसाली करी संजमसूरि समीपि संजमु ले करी कल्याणमउ आपणउ आत्मा तपोग्नि तापि सूझवी करी विद्यापति राजऋषि देवलोकि गयउ। मनुष्य देव भव पंचकि हूयइ हूंतइ मुक्ति गयउ।

विद्यापतिं कृतपरिग्रहमानयामं श्रुत्वा बुधा भवत संपदि निस्पृहा भोः।
येन स्वयंवरवधूः शिवसंपदेषा जातस्पृहा क्षिपति वः स्रजमाशु कंठे ॥

इति परिग्रह परिमाण करण व्रतफल विषइ विद्यापति राजऋषि कथा समाप्त ॥

---

९. षष्ठ व्रत उपर कथा.

दिक्परिमाणव्रत करणाविषइ सिंह कथा लिखियइ।

गतौ संकोचयत्येव यः स्वदिग्विरतिव्रतम्।
संसारलंघनोत्ताल[6]फालारंभः स सिंहवत् ॥

तथाहि:—वासंती नामि नगरी, कीर्त्तिपालु नामि राजा, भीमु नामि तेह तणउ पुत्रु। पुत्रही[7] कन्हा अति वल्लभु सिंहु नामि श्रेष्ठि। सु पुणु[8] परम श्रावकु जिन-भक्ति-वंतु वर्त्तइ। अनेरइ दिनि सभामाहि कीर्त्तिपालु राजा सिंह[9] श्रेष्ठि मुख-कमलु भ्रमर जिम जोयतउ हूंतउ

---

१ ख राजु. २ ख प्रवर्त्तिइ. ३ ख कोइ. ४ ख द्वेसिया. ५ ख सेव तणी. ६ ख फला. ७ ख हीं. ८ ख पुण. ९ ख सिंहु.

वर्त्तइ। तेतलइ प्रस्तावि प्रतीहारु आवी राजेंद्ररहइं वीनवइ—'महाराज ! तुम्हरहइं देखण-हारु एकु[1] पुरुषु दिव्याकारु द्वारि आविउ छइ।' राजा भणइ 'माहि मेल्हि।' तउ पाछइ प्रतीहारि मुक्तु हूंतउ सु पुरुषु माहि आवी राजेंद्र रहइं प्रणमी करी, आसनी समासीनु वीनवइ 'महाराज ! नागपुरु नामि नगरु, तिहां चंद्रु नामि नरेंद्रु, रत्नमंजरी नामि राज्ञी। तीहंनी गुण-माला नामि दीकिरी। स त्राहरा पुत्र भीमरहइं देवा कारणि स्वामिन् ! तुम्हकन्हइ[2] हउं पाठिविउ[3]। तिणि कारणि, अहो महीपाल ! स राजपुत्रिका रूप शोभा करी रतिरहइं दत्तजय[4] पत्रिका वर्त्तइ। रूप-लक्ष्मी करी जित-लक्ष्मी-पुत्रु जु छइ भीमु नामि तुम्हारउ पुत्रु तेहरहइं प्रमाणु करउ।' इति इसइ अर्थि वीनविइ हूंतइ सिंहश्रेष्ठि मुख सामुहउं जोयतउ हूंतउ कीर्त्ति-पालु राजा भणइ—'सिंह श्रेष्ठिन् ! आपणपां[5] रहइं आगे भेदु को नहीं। तिणि कारणि माहरइ थानकि थाई, तुम्हे भीमु नागपुरि लेकरी पुहुचउ[6]। बांधव ! एउ संबंधु करउ।' दिग्विरति-विरति-व्रत-भंग अनइ अनर्थ-दंड-विरति-व्रतभंग भयभीतु हूंतउ सिंहु अधोमुखु थाई रहिउ। राजेंद्ररहइं ऊतरु न दियइं। लगार एक कुपित-लोचनु[7] हूंतउ राउ भणइ—'किसउं बांधव[8], एउ संबंधु बंधुरु नहीं जु तउं ऊतरु कोई न दियइं।' आकार इंगितादिकहं चिन्हहं करी सकोपु राउ जाणी करी सुधाशीतल वाणी राउ जिम शीतलु थाइ, तिणि कारणि सिंहु बोल्हइ 'ईहां हूंतउं जोयण सउ अधिकेरउं नागपुरु हुयइ। इणि कारणि व्रतभंग-भ[illegible]-वशइतउ हउं नागपुरि न जाऊं।' इसइ भणिइ हूंतइ सिंह ऊपरि कीर्त्तिपालु राउ कोपि चडिउ। जिम घृत सेकी करी वैश्वानरु ज्वलइ, तिम प्रज्वलिउ। तउ राउ कोपवशि हूंतउ भणइ 'जइ किमइ जोयण सय ऊपरि नहीं जाइ, तउ हउं तूरहइं बांधी करी जोयण सहस्र ऊपरि निक्षिपाविसु।' तउ सिंहु समुत्पन्नमति हूंतउ पुनरपि भणइ—'महाराज ! ताहरउ विरहु हउं सही सकउं नहीं; तिणि कारणि अहंकार रहितु हूंतउ जोयण सय ऊपरी हउं जाउं नहीं; इसा ऊतर तुम्हं आगइ कहिउं[9]।' इसइ वचनि राउ उपशांत कोपानलु[10] हूंतउ सरसउं प्रबलु बलु दे करी भीम सरसउ[11] सिंहु चलावइ। कटक आगइ, कुमार भीम आगइ भणिउं—'जं काई सिंहु कहइ तं तुम्हे करिवउं।' तउ पाछइ राजाभियोगि अकामूथिकउ सिंहु भीमकुमार सरसउ चालियउ[12] हूंतउ कुमार आगइ संसाराऽसारता[13] गुप्तवृत्ति करी कहइ।

बहिरंतर्विपर्यासः स्त्रीशरीरस्य चेद्भवेत्।
तस्यैव कामुकः कुर्याद् गृध्र गोमायुगोपनम्॥

---

१ પ્ર માં एकु पुरुषु શબ્દો નથી. २ પ્ર तुम. ३ પ્ર पाठविउ. ४ પ્ર जयदत्त. ५ પ્ર आपणपा. ६ પ્ર पहुचउ. ७ પ્ર लोचन. ८ પ્ર बांधवुं. ९ પ્ર कहवुं. १० પ્ર ०नल. ११ પ્ર सउं. १२ પ્ર चालिउ. १३ પ્ર માં ऽसार આટલા અક્ષરો પડી ગયા છે.

यकृत्शकृन्मलश्लेष्ममज्जास्थिपरिपूरिताः ।
स्नायुस्यूता बहीरम्याः स्त्रियश्चर्मप्रसेविकाः ॥

तउ भीम कुमाररहइं महोपशम वशइतउ भववासना त्रूटी गई । मुक्तिकन्यानुरक्त चित्तु हूंतउ भीमु कुमारु श्री[1]अनइ स्त्री तृणही सरीषी न देखइं । जोयण शत मार्गि आविउ हूंतउ सिंहु आघउं पीयाणउं[2] करइ नहीं । जेतीवार बीजा महता पूछइं तेतीवार कूडा ऊतर करइ। जउ दिन ५–६ हूया तिहां तउ पाछइ बीजे महते भीमकुमार आगइ कहिउं 'कुमारवर ! राजेंद्रि अम्ह आगइ सिंहछानउं इसउं[3] कहिउं छइ–" जइ किमइ किहांई गयउ हूंतउ सिंहु आघउ न चालइं तउ तुम्हे बलात्कारि सिंहु बांधी करी आघउं पियाणउं कराविजिउ । " तिणि कारणि जउ तुम्हे भणउ, तउ सिंहु बांधी करी चलावियइ । भीमु कहइ–'आजु जउ पियाणउं आघउं[4]सिंहु न करइं तउ कालि तुम्हे राजादेशु कारिजिउ ।' इसउं मंत्रिवचनु एकांति भीमु सिंह आगइ कहइ । संसार निरास बुद्धि हूंतउ सिंहु भीम आगइ कहइ–

न किं चिदत्र संसारे निस्सारेऽस्य शरीरिणः ।
शरीरमपि न स्वीयं स्वीयमस्तीह कस्य चित् ॥

इत्यादि वैराग्य कारकु बहु भणी करी कटक हूंतउ रात्रि समइ प्राहरिक लोकि सूतइ हूंतइ नीसरिउ, कुमारु पुण सरसउ नीसरिउ । किणिहिं गिरिवणोद्देसि जाइ करी पादपोपगमनु अनशनु[5]करिसु । तउ ति महामात्य माहरउं किसउं करिसिइं । किम मूरहइं बांधी लेसिइं । जु शरीरु लेसिइं, सु हउ पहिलउं मूंकी[6]रहिसु ।' इसउं भणी करी भीम आगइ आघउ जाइवा लागउ । भीमु भणइ 'मूरहइं तुम्हेई जि शरणु ।' इसउं भणतउ सरसू जु चालियउ[7]। गिरिएकि जाई शुद्ध शिलातलि बिहुं पादपोपगमनु अनुशनु कीधउं । प्रभाति प्रधान महामात्य कुमार भीम सिंह श्रेष्ठि बिहुंरहइं अदेखता हूंता पादानुसारि नीसरिया । घणी भुइं गया । किणिहिं पर्वति शिलातलगृहीतदिक्ष कृतपादपोपगमन सिंह भीम देखी करी विलक्ष वदन थिका प्रणमी करी चाटुकारकरणपूर्वु घणउं खमावइं । पाये[8]लागी मनावइं–'पसाउ करी अम्हारु अपराधु खमिजिउ । ऊभा थाउ, जिम नागपुरि जाईइ[9]। एउ वृत्तांतु जाणी करी तिल्हं जिम घाणइ घाती राउ कीर्त्तिपालु अम्हरहइं पीडाविसिइ । तिणि कारणि तुम्हे कृपासमुद्र अम्ह ऊपरि कृपा करी अम्ह सामुहउं कांइं देखउ नही ? कांइं[10]अम्हसउं बोलउ नहीं ?'

---

१ ખમાં श्री નથી. ૨ ખ पया० ૩ કમાં આ શબ્દ પડી ગયો છે. ૪ ખમાં આ શબ્દ નથી, કમાં પણ પાછળથી હાંસિયામાં લખવામાં આવેલો છે. ૫ ખમાં अन અક્ષરો પડી ગયા છે. ૬ ખ मूकी. ૭ ખ चालिसउ. ૮ ખ पाप. ૯ ખ जाइयइ. ૧૦ ખ काई.

इत्येवमादिकु बहुधा भणी करी महामात्यहं विलक्षहं पाछा वली सु वृत्तांतु कीर्तिपाल महीपालरहइं जाणाविउ। सिंह[1] बध्यु, कुमारु परिणाविवउ[2]। इसउं राउ मनि चीतवतउ हूंतउ, विहलउ तिहां आविउ। इसइ महाविरुद्धइ मनि हूंतइ[3] राउ ति महापुरुषु महासत्त्व सिंह-व्याघ्र-चित्रक-शूकर-वृक-प्रमुख-दुष्ट-स्वापद-संसेव्य पद देखी करी मनि चीतवइ 'महासप्रभाव ए महासत्त्व, मइं ए पराभवी नहीं सकियइं। किंतु भक्ति सेवा योग्य ए।' इसउं ध्यायतउ हूंतउ[4] राउ तींहं कन्हइ गयउ।

स्वापदैर्दत्तमार्गं तं मार्गंतं वीक्षणान्यपि।
नमंतं चाटुमंतं च नेक्षां चक्रतुरप्यमू॥

मासोपवासावसानि सुरासुर-नराधीश-संसेव्यमान शुक्लध्यानानल-दग्धकर्मेंधन-वितान मुक्तिपद प्राप्त हूया।

न योजनशतादूर्ध्वं यामीति तव निश्चयः।
असंख्यैर्योजनैर्मित्र मां मुक्त्वा किमगाः शिवम्॥

इसीपरि विलपतउ हूंतउ राउ सिंह अनइ भीम बिहुं रहइं संस्कारु करी आपणपइं शोकानल दह्यमान-मानसु हूंतउ देवे संबोधिउ, भणिउं[5]—'महाराज! शोकु तींहंनउ कीजइ जि अकृत कृत्य हुयइं। ए महात्मा स्तुत्यपाद' इसीपरि तउ पाछइ, पाछउ वली राउ वासंती नगरी गयउ।

संकोच्य सिंह इव सौवगतिं यथाप श्राद्धाग्रणीर्झगिति भीमयुतः ससिंहः।
उच्चैः पदं प्रमदमंदिरमिद्धशर्म्म भव्यास्तथैव विलसंतु वसंतु तत्र॥

॥ दिग्व्रतविषइ सिंहश्रावक कथा समाप्ता॥

---

१ ख सिंहु. २ ख परिणाविवा. ३ खमां हूंतइ पछी मनि शब्द छे. ४ खमां आ शब्द नथी, कमां पण पाछळथी उमेरवामां आव्यो छे. ५ खमां आ शब्द नथी.

१०. सप्तम व्रत उपर कथा.

भोगोपभोग परिमाण करण व्रत विषइ धर्म्म तणी कथा लिखियइ ।

कृती मितीकृताहारः सप्तमव्रतलीलया ।
मुच्यते संचितेनापि कर्मरोगेण धर्म्मवत् ॥

तथाहि—श्रीनिवासकमलु श्रीकमलु इसइ नामि नगरु । दूरीकृताऽसत्यु सत्यु इसइ नामि राजा । जेहनउ खड्गु जिसउ शत्रु-कालरात्रि तणउ दर्प्पणु हुयइ इसउ लोके दीसइ । सु पुण गुणवंतु कलावंतु लक्ष्मीवंतु भोगी त्यागी जिम स्वर्गि शक्र राज्यु करइ तिम राज्यु करइ । अनेरइ दिवसि राजसभा माहि नैमित्तिकु ए[कु][1] कहइ—'महाराज ! इणि वरसि[2] इसउ ग्रहयोगु दुष्टु पडिउ-छइ, जिसइ बारहवरस दुर्भिक्षु पडिसिइ।' राजा प्रधानहं सामुहउं जोयइ। प्रधान भणइं—'महा-राज ! एहना वचननउं संवादु आगइ अनेकि वार अम्हंरहइं हूयउ। तउ पाछइ तिणि नैमित्तिकि[3] वचनि करी, जिम वाति करी तृणु धूजइ तिम, राजेंद्रनउं मनु धूजिउं । तउ पाछइ राजेंद्रि तृण कण संग्रहु कीधउ । तथा कण-तृण-संग्रहण-व्यग्रि समग्रि जनि हूयइ हूंतइ तदाकालि[4] का एक दुर्भिक्ष्यवर्णिका[5] आवी । तउ राउ मनि[6] चीतवइ—'हा ! निर्धान्य निर्धन जन किहां जाइ-सिइं, किम थाइसिइं[7] ।' इसी चिंता करी संतप्तचित्त राजेंद्ररहइं वर्त्तता हूंता प्रमोदनिमित्तु आसाढमासनइ पहिले जि पक्षि दिवससमइ पूर्व वातु वाइउ । सुभक्ष फलहं विषइ छइ फलदु जलदु तेहनउ जिसउ[8] अंकूरु हुयइ, इसउ जलदलवु पूर्व दिसि[9] समुदितु राजेंद्रि दीठउ । जिम भाग्यवंत पुरुषरहइं श्री प्रवर्द्धइ तिम सु जलदलवु विस्तरिउ । बीजइ भणित अंगुली हुई, तिणि करी दुर्भिक्ष्य हेतु जि छइं दुष्ट-ग्रह तीहंरहइं तर्जतउ हूंतउ बीहावतउ हूंतउ; बला-काई भणित दंत हूया, तींहंकरी जोइसी यणां वचन हसतउ[10] हूंतउ दर्शनमात्रिहिं जि दूर्भिक्षु भांजी करी गाजतउ हूंतउ; धारा भणित मुशल नीपनां तेहेकरी जनतणां दुक्ख-कण खांडतउ हूंतउ; दक्षिणोत्तर लक्षण बिहुं समुद्रहं तणउं जिसउं जलाकर्षकु नालु हुयइ इसउं धनुष्कु ताडी करी सु मेघु वूठउ । जाणियइ किरि दुर्भिक्ष्यरहइं दैवु रूठउ । लोकरहइं तूठउ । इणि एकहिं जि[11] वृष्टि करी काल निष्पत्ति हुई, इसउं लोकु तदाकालि बोलतउ सांभली करी सज्जन जिम काजुकरी गुणस्तवन-कीर्त्तिभय बीहतउ जाणे मेहु तिरोहितु हूयउ । निवृत्त-चिंता-संताप महीपतिरहइं बीजइ दिवसि उद्यानपालु वीनवइ—'देव महाराज ! तुम्हारइ क्रीडोद्यानि चउमासि रहियाहूंता श्रीयुगंधर सूरिवररहइं आजु[12] केवलज्ञानु ऊपनउं । उद्यानपालरहइं पारितोषिकु[13]

---

१ कमां **कु** पडी गयो छे. २ ખ **वरिसि.** ३ ખ **नैमित्तिक.** ४ ખમાં **कालि** શબ્દ નથી. ૫ ખ **पर्णिणका.** ६ ખમાં **मनि** નથી. ७ ખ **थाइसि.** ८ ખમાં **जिसइ** નથી. ९ ખ **विदिशि.** १० ખ **हंसतउ.** ११ ખ० **हौंजि.** १२ ખમાં **आजु** નથી. १३ ખમાં આ શબ્દ નથી.

प्रभूतु दानु दे करी, तउ राउ उद्यानवनि चालिउ। त्रिन्हि प्रदक्षिणा दे करी मुनिवररहइं वांदी करी उचितस्थानि समासीनु देसना सांभलइ। तउ पाछइ प्रस्तावि राजा कृतांजली हूंतउ पूछइ—'भगवन्! तीहं नैमित्तिकहंनउं वचनु किसीपरि विघटिउं।' केवली कहइ—'ग्रह दुर्योगि करी द्वादश वार्षिकु दुर्भिक्ष्यु हूंतउ, पुण जिण[1] कारणि सु दुर्भिक्षु न नीपनउं सु कारणु ईंहनी मति-रहइं[2] गोचरु नहीं।

तथाहि[3]—पुरिमतालु इसइ नामि पुरु। तिहा प्रवरु इसइ [नामि] गुणहं करी प्रवरु नरु एकु हूंतउ। सु पुण नवइ यौवनि कर्म्म वशइतउ रोगु[4] पीडितु हूयउ। सु पुण रसणिंदिउ जिणी सकइ नहीं। पाछइ जु जु आहारु आहरइ, सु सु आहारु तेहरहइं आधारु हुयइ। तउ पाछइ प्रवरु नरु आपणा मन माहि चीतवइ—'जु आहारु शरीररहइं अहितकारकु तेहनउं हउं प्रत्याख्यानु कांइं करउं नहीं। अनाहार प्रत्याख्यानतणउं फलु कांइं लिउं नहीं। इसउं चींतवी करी, गुरुनी साखि इसउं भणइ—'जि स्निग्ध लवण मधुर आहार ति हउं आहरिसु नहीं; जि तिक्त कटुक कषाय आहार ति हउं आहरिसु। ऊनोदरता व्रति वर्त्तमानु हूंतउ जेहतणा संग वशइ-तउं ईर्ष्यालुथिकी मुक्ति पुरुषहंरहइं सामुहूं[5] न जोयइं, स स्त्री सर्वथा परिहरउं। इसउं अंगीकृतु व्रतु सु अखंडु पालतउ हूंतउ धर्मतणा प्रभाव वशइ[6]तउ इह लोकिहिं रोगमुक्तु हूयउ। अथवा धर्म्मरहइं किसउं कांईं असाध्यु छइ। नीरोगु हुयउ हूंतउ सु प्रवरु नरु आप-णपउं[7] व्रतु अम्हेलहतउ हूंतउ, स्वयंवर प्रभूत लक्ष्मीवरु हूयउ। जाणियइ तेहनी विभूति आगइ स्वर्गु अल्पविभूति जाणी करी दासीतणइ मिषांतरि तेहनइ धरि देवता सेवावृत्ति करिवा कारणि आवी। तथापि हिं सु विषयाशक्तु न थिओई। मार्गनी कोटिकरी जु तेहनइ घरि धनु आवइ सु धनु सुपात्र[8]दान दयादान उचितदान लक्षण छइं गरूयां[9] त्रिन्हि मार्ग तेहेकरी नीसरइ। अनेरइ वरसि रंकलोकहंरहइं दुःप्रेक्षु दुर्भिक्षु[10] नीपनउं। जिम निदाघ समइ जलासय सुसइं तिम यदाकालि सामान्य जन[11] दान धर्म्म खिसइं, तदाकालि प्रवरना दान धर्म्म घणेरउं उल्लसइं।

ग्रीष्मे सरांसि शुष्यंति सत्कल्लोलश्च वारिधिः।
दुष्काले स्तब्धतां यांति नीचा उच्चाश्च दानिनः॥

तउ पाछइ जिम संसार भयभीतहं एकू जु जिन धर्म्मु सेवियइ, तिम दुर्भिक्ष्य भयभीतहं जनहं एकू जु प्रवरु नरु सेविउ। दिगंत-समागत साधु शत-सहस्र-लक्ष-संख्य प्रासुकेषणीय पक्वान्न

---

१ ખ जिणि. २ ખમાં ईंह नैमित्तिकरहइं આવું વાક્ય છે. ३ ખમાં આ શબ્દ નથી. ४ ખ रोग. ५ ખ लहउं. ६ ખમાં આ શબ્દ નથી. ७ ખ आपणउं. ८ ખમાં पात्र. ९ ખ व्याइं. १० ખમાં આ શબ્દ પડી ગયો છે. ११ ખમાં जन નથી.

दधि दुग्ध घृतादिकहं करी विहरावइ। श्रावक पुण वयनइ अनुसारि पितृ मातृ भ्रातृ समान देखतउ हूंतउ घरहिं जि रहावइ,[1] वस्त्र भोजनादि आपणपा समू जु करावइ। इसीपरि सुपात्र दानैकव्यसनु पोषी करी अखंडु व्रतु प्रतिपाली करी कालयोग वशइतउ प्रवरु मरी करी देवलोकि सुरवरु हूयउ। जिसउ इंद्रु हुयइ ऋद्धि करी तिसउ इंद्र-सामानिकु हूयउ। शाश्वताऽर्हत यात्रादि सुकृतहंकरी आयु पूरी चित्ति चीतवइ–'प्रधानि श्रावकनइ कुलि हउं ऊपजिजिउं; मिथ्यात्वि कुलि राजेंद्रू म होइजिउं।' तउ पाछइ ताहरा नगर समीपि छइ चित्रशालु इसइ नामि विचित्रशालु पुरवरु तिहां छइ शुद्ध-बुद्धि इसइ नामि श्रावकु जिणि इसीं[2] दुर्भिक्षवार्त्ताइं धान्य तणउ संग्रहु[3] न कीधो। तेहनइ विमला इसइ नामि गुणहं करी अति विमला श्राविका; तेहनी कुक्षिसंभूतु सु देवु पुत्रु हूयउ। तेह महाभाग तणइ जन्मि द्वादश वार्षिकु दुर्भिक्षहेतुक ग्रह[4] निर्जिणी करी सुभक्षु कीधउ। इसउं केवलीवचनु सांभली करी केवलीरहइं वांदी करी राउ चित्रशालि नगरि जाई सु बालकु उत्संगि करी इसीपरि स्तुति करइ–

दुर्भिक्ष्यपंकमग्नोर्व्याधार वीर नमोस्तु ते।
राजा त्वमेव मे राज्ये तलाराख्योस्मि तावकः॥
मूर्त्तिमानिव धर्म्मोयमित्थं दुर्भिक्षभंगकृत्।
इति तस्याभिधा धर्म्म इति धात्रीभृता कृता॥

तउ पाछइ सु बालकु जातमात्रू[5] हूंतउ प्रसिद्धउ हूयउ। अनेराई जि के पाखतियां राजा छइं तेहे[6] पुण आपणइ आपणइ राज्यि धर्म्मनी आण प्रवर्त्तावी करी मेह वरसाविया। समस्त राजमंडलतणां कालोपचित्त वयोचित प्राभृत दिनि दिनि तेहरहइं आवइं जिम मंदर-कंदरागतु कल्प-पादपु निरुपद्रव थिकउ प्रवर्द्धइ तिम सु बालकु प्रवर्द्धइ। यौवनि आविइ हूंतइ जिम समुद्ररहइं नदी स्वयंवर आवइं तिम सवहीं दिसि तणा जि छइं राजेंद्र तींहंनी दीकिरी स्वयंवर आगत अनेकि सु धर्म्म बालकु परिणिउ। धर्म्मु समस्त-मही-मस्तक-विहिताज्ञ देवगुरु-भक्तिवंतु धर्मवंतु नवां कर्म अबांधतउ पूर्व पुण्य-फल-भोग भोगवतउ प्रस्तावि संयमु ले करी केवलज्ञानु ऊपाडी करी मोक्षि पहुतउ।

भोगोपभोगविरतिं प्रतिपाल्य पूर्वं धर्म्मो यथा शिवमवाप निरस्तपापः।
यूयं तथेह भविकाः प्रतिपद्य सद्यः सिद्धिश्रियं वृणुत तिष्ठत लोकमौलौ॥

॥ भोगोपभोग परिमाण व्रत प्रतिपालन विषइ धर्म्म राजेंद्र कथा समाप्ता॥

---

१ ᐅ रहाविउ. २ ᐅ इसीं. ३ ᐅ संग्रहणु. ४ ᐅ हेतुग्रह. ५ ᐅ मात्र. ६ ᐅ तेहे.

११. अष्टम व्रत उपर कथा.

अनर्थदंड विरति-व्रत विषइ सुरसेन कथा लिखियइ।

अनर्थदंडवीराम[1] व्रतधीरा महोदयम्।
लभंते सुरसंभारभासुराः सुरसेनवत्॥

वसुंधराबंधुरा बंधुरा इसइ नामि नगरी। तिहां वीरशिरोमणी वीरसेन नामि राजा। सुरसेन महासेन नाम बि पुत्र। अनेरइ दिनि महासेन तणी जीभ सूणी। जिम इंधनहं करी वैश्वानरु प्रज्वलइ तिम ओषधहं करी सु शोफु रोगु वृद्धि गयउ। 'धर्म्मु एकु एहरहइं ओसहु।' इसउं भणी वैद्यहं सु मेल्हिउ। क्रमि क्रमि तेहनी जीभ कुही। माखिए मधुमंडप जिम बंवाली। उग्रु दुर्गंधु इसउ ऊछलिउ जिसइ मातृ-पितृ-भार्यादिकहं बंधु-जनहं मेल्हिउ। तेह कन्हइ भाडाई वडइ को रहइ नहीं। तदाकालि सुरसेन भाई भाईनइ स्नेहि दुर्गंधु जिणी करी कन्हइ राहिउ। तथा च भणितम्—

विसणे मित्त-परिक्खा दाण-परिक्खा य होइ दुक्काले।
विणए सीस-[2]परिक्खा सुहड-परिक्खा य संगामे॥

सुरसेनु महासेन आगइ कहइ—'भ्रात! जां तू रहइं एउ जीभरोगु छइ तां तउ प्रत्याख्यानु करि—हउं कांई[3] तउ आहरउं जउ मूरहइं रोगु जाइ। अन्यथा न आहरूं। तिणि पुण तिमहीं जि कीधउं। पुनरपि सुरसेनु कहइ—'भ्रात महासेन! जइ किमइ इणि प्रत्याख्यानि थिकइ तउं मरिसि तउ अनशनतणउ फलु लहिसि।' इसउं भणी करी भाई आगइ आघा थई[4] सुरसेनु वस्त्रांचलि करी माखी वींजइ[5]। निश्चल थिकउ[6] पंच परमेष्ठि नमस्कारु गुणइ। नमस्काराऽभिमंत्रिति जलि करी महासेननी जीभ सींचइ। महासेनकन्हा नमस्कारु समरावइ। जिम जिम जीभ माहि सु नीरु परिणमइ तिम तिम रोगोपशमु हुयइ।

निर्व्यथं निर्व्रणं नीरुग् निर्दुर्गंधं सुगंधि च।
मुहूर्त्तांते मुखं जज्ञे क्व न धर्म्मः प्रभावभाक्॥

रोगमुक्तु महासेनु देखी करी लोकु सहर्षु हूयउ। ति पुण सुरसेन महासेन बे सहोदर धर्म्म विषइ अति सादर हूआ[7]। श्रीभद्रबाहु नामि श्रीमदाचार्य मिश्र एकवार तिहां समोसरिया। अवधिज्ञान वलि करी ति महात्मा अनेक भविक-लोकहं तणा संदेह ऊतारइं। सुरसेन महासेन वांदिवा आविया। त्रिन्हि प्रदक्षिणा देकरी वांदी करी धर्म्म-देशनामृतु[8] पानु करइं। देशनावसानि सुरसेन महासेन जीभ-रोग-कारणु पूछिउ। मुनि भणइ—'मणिपुरु नामि पुरु, तिहां जिनधर्म्माधि-

---

१ કમાં **वीराम** શબ્દ ઉપર **विरमणं** આવું ટિપ્પણ કરેલું છે. २ ખ **सिस्स.** ३ ખ **काई.** ४ ખમાં આના બદલે **थाई** શબ્દ છે. ५ ખ **वीजइ.** ६ ખ **थकउ.** ७ ખ **हुया.** ८ ખ **मृत.**

वासितु मदनु इसइ नामि सुभटु एकु हूंतउ। तेहतणा [1]धीरवीर इसां[2] नामहं[3] प्रसिद्ध बि पुत्र हूंता। जिनवचनामृत-पान-व्यसन-भावइतउ मिथ्यात्व-विष-मूर्छा-गोचर न[4] हूयाई। कदाकालिहिं ति उद्यान वनि गया। वसंताभिधानु मुनि-प्रधानु निज मातुल मुनि भूमिपतितु तेहे तिहां दीठउ। "किसउं हूयउं" इसी परि आकुलइ धीरि पूछतइ[5] हूंतइ पुरुषु एकु तिहां वर्तमानु कहइ–'प्रतिमा-वर्तमान मुनि[6]रहइं देखी करी दुष्टु भुजंगमु एकु मुनिरहइं डसी करी बिलि पइठउ, जिम चोरु चोरी करी दुर्गि पइसइ।' तदा कालि मातुलमोह-वशइतउ वीरु कहइ–'रे रांकउ सु सांपु नासतउ[7] तुम्हे मारिउ कांइं नही।' धीरु तेह आगइ कहइ–'सार्पि जीवतइ गयइ आ महापुरुष किसइ कारणि जीभ करी पापु बांधइ।' कोप लगी वीरु वली कहइ–'जिणि महामुनि डसिउ तिणि मारिएइं[8] धर्म्मू जु हुयइ, किसी परि पापु हुयइ? । क्षत्रिय तणउ धर्म्मु एहू जु जु दुष्टु निग्रहियइ, शिष्टु पालियइ। इसउं किमइ असत्यु वचनु तु[9]मूरहइं जिव्हा पातकु आवउ।' धीरु तेहनउं वाक्यु चीतवतउ हूंतउ अपार कृपारस-सागरु मणि-मंत्रौ-षधी-बलि करी मुनिरहइं जीवाडइ। मुनींद्र जीवनइतउ सुभटरहइं अतिवल्लभ हूया। धीर वीर बे सुत सर्व-जन-स्तुत शुभधर्म्म पालता पातकु प्रज्वालता कीर्त्ति करी आपणपउं ऊजालता सुचिरु कालु नांदिया। धीरु पूर्णायु हूंतउ सुरसेन तउं हूयउ। अनालोचित तादृग्वचन पापकर्म्मा वीरु ताहरउ भाई महासेनु हूयउ। सर्व वैद्यहं रहइं असाध्यु सर्प्प-घात-वचनपापइतउ तेहरहइं जिव्हारोगु हूयउ। भवांतरि जु तइं यति जीवाडिउ तेहनइ प्रभावि तू रहइं रोगभंग लब्धि हुई। तिणि कारणि नमस्काराभिमंत्रित जलि करी तइं भाई जीवाडिउ, रोगु नसाडिउ। इसउं पूर्व[10] भवु सांभली करी बिहुंरहइं जाति-स्मरणु ऊपनउं। बिहुं व्रतु लीधउं। तीव्रु तपश्चरणु कीधउं। तिणिहिं जि[11] भवि केवल ज्ञानु उपाडी[12] करी मुक्ति पहुता।

अनर्थदंडस्य फलं दुरंतं श्रुत्वा महासेननरस्य भव्याः।
शिवं निवृत्तेः सुरसेनपुंसस्तं वर्जयध्वं कुशलं लभध्वम् ॥

॥ अनर्थ दंड विरति व्रत विषइ वीर जीव महासेन कथा समाप्ता ॥

---

१ ખ तेहं तणा. २ ખ इसइ. ३ ખ नामि. ४ ખમાં न નથી. ५ ખ पूछितइ. ६ ખમાં मुनि શબ્દ પડી ગયો છે. ७ ખ नासतु. ८ ખમાં मारिइं. ९ ખ तउ. १० ખ पूर्वु. ११ ખમાં जि નથી. १२ उपार्जि.

१२. नवम व्रत उपर कथा.

सामायिक व्रत विषइ केसरि नाम श्रावक-पुत्र कथा लिखियइ।

क्रूराचारोपि संसारकारया मुच्यते द्रुतम्।
केसरीवत् त्रुटत्कर्म्मदामा सामायिकव्रतात्॥

तथाहि—कामपुरु नामि पुरु। तिहां विजउ नामि राजा, सिंहदत्तु नामि श्रेष्ठि। अनेरइ दिवसि सिंहदत्तु श्रेष्ठि राजेंद्ररहइं प्रणमी करी वीनवइ—'महाराज! केसरी नामि माहरउ पुत्रु चोरु छइ; पाछइ मूरहइं दूषणु म देजिउ। हउं तुम्ह आगइ वीनवी करी निरुत्तरु हूयउ[1], राजा केसरीरहइं देसवटउ दियइ। सु पुण केसरी राजेंद्रतणा भयलगी नगर हूंतउ नीसरिउ, देसांतरि गयउ। श्रांतु हूंतउ किणिहिं वनगहनि स्वच्छ शीतल स्वादु जल सरोवर तीरि बइठउ चीतवइ—'मइं जन्म लगी चेतना संभवि हूयइ हूंतइ अचोरिउं पाणी ऊ[2] पीधउं नहीं! अहो अकार्य! धिग्[3] मूरहइं आजु मइं सु[4] अचोरिउं पीवउं। [इसउ][5] मनमाहि चींतवतउ हूंतउ सु चोरु श्रांतु कांतार-सरोवरि जलु पियइ। स्नानु पुण करइ। तउ पाछइ श्रमरहितु हूंतउ सरोवर-पालि-स्थितु चूततरु ऊपरि चडिउ फल खाई[6] तृप्तउ हूयउ[7] हूंतउ मनमाहि चीतवइ—'हहा मूरहइं किम आजू नउ दिवसु चोरी पाखइ जाइसिइ। इसउं तिणि चोरि चीतवतइ हूंतइ एकु गो[8] योगींद्रु मंत्र-सिद्ध-पादुकु आकाश हूंतउ सरोवरि ऊतरिउ। पादुका तीरि मूकी [ओरहउ[9] परहउ जोई] करी भूमि लागता पगहंकरी सरोवरमाहि पइठउ। तदाकालि तिणि चोरि वृक्ष ऊपरि बइठइ थिकइ[10] इसउं चीतविउं—'एह योगीरहइं गगन गमन विषइ ए पादुकाइं जि[11]कारणु; नहीत किम ईहं पाखइ भूमि-गतिहिं जि हींडइ। तिणि कारणि ए पादुका चोरउं, दिनु सफलु करउं।' इसउं चीतवी चूत हूंतउ ऊतरी पादुका पादे पहिरी गगनि[12]गमनु करइ। तउ पाछइ दिनु किणिहिं वनि गहनि रही करी राति समइ ति पादुका पादे पहिरी आपणइ घरि गयउ। जनक सिंहदत्त श्रेष्ठि आगइ कहइ—'राउ वीनवी करी तइं हउं नगर हूंतउ कढावियउ।' इसउं भणी करी तां दंडे करी मारइ, जां मरइ। मूयउ बापु मूकी करी जि जि महर्द्धिक घर तींह तींहं हूंतउं सारु सारु अपहरइ। इसी परि त्रिन्हि पहर रात्रि सीम स्वेच्छाचारि तेह पुरमाहि विचरइ। रात्रि तणइ चउथइ पहरि पुनरपि दुर्गमारण्य-मंडनि तिणिहिं जि सरोवरि[13] गयउ। इसी परि राति राति सु चोरु तेऊ जु नगरु विविध प्रकारहं करी लूंटइ। पापबुद्धि हूंतउ साधु सती मुख्य[14] लोक रहइं संतावइ। तउ पाछइ जिम जमागमु भयंकरु हुयइ तिम तिणि नगरि निसा-

---

१ ખ हुअउ. २ ખમાં ऊ નથી. ३ ખમાં धिग् धिग् બે વાર છે. ४ ખમાં सु मइं. ५ કમાં इसउ શબ્દ પડી ગએલ છે. ६ ખમાં काईं. ७ ખમાં આ શબ્દ નથી. ८ ખ कोई. ९ કમાં આ પાઠ નથી. १० ખ बइठउ थिकउ. ११ ખ पादुकाहिजि. १२ ખ गगनविषइ. १३ ખ सरोवरोवरि. १४ ખ सतीहं मनुष्य.

गमु हुयइ। तेहनउं स्वरूपु नगराधिपति जाणी करी तलारु बोलावइ। तलारु विलक्ष्य वदन हूंतउ अधोमुखु होई करी वीनवइ—'महाराज! जे भूमि-गोचरु चोरु हुयइ तउ माहरइ पाडि हुयइ। एउ खेचरु चोरु माहरइ पाडि नही। तउ पाछइ राउ कोपाग्नि ताप संतप्तु आपणउं मुक्खु दुक्खितलोक दर्शनि करी हुई छइ कृपा तेह लगी नेत्रहं हूंता नीसरइ छइ जि अश्रुजल तींहंकरी शीतल करइ। तपोधनहंतणा जि छइं तपोधर्म्म; शीलवती जि छइं युवती तींहंतणा छइं शीलधर्म्म; तींहंतणइ प्रभावि सु चोरु मूरहइं दृष्टिगोचरु होइजिउ।' इसउ भणी करी अल्प परिवारु राउ आपणपइं पुरी माहि फिरी चोरु जोयइ। जि के देवकुल, जि के आश्रम पद, जि के जन-समवाय पद, जि के वेश्या पाटक, जि के कलाल पाटक, तिहां सगले जोइउ जउ न लाधो[1] तउ राउ[2] नगर बाहिरि नीसरिउ। वापी कूप तडागारामादि स्थानि फिरिउ जउ तिहांई न लाधो तउ राउ वनमाहि[3] गइउ। तिहां दिव्यु गंधु उपलभी करी[4] गंधानुसारि जायतउ हूंतउ वन बहुमध्यि चंडिका-भवनु देखइ। तेहमांहि चंडिका-मूर्त्ति चंपकादि दिव्य कुसुम संभार संपूजित देखइ। धूपोत्क्षेपु करतउ हूंतउ पूजारउ राय कन्हइ आविउ। राइ तेहतणां दिव्य वस्त्र देखी करी विस्मयापन्नि हूंतइ पूछिउ—'आजु किसइ उच्छवि,[5] किसइ पर्वि, किणि भावियइं इसी पूजा करावी छइ। इसी विभूषा देवीरहइं करावी छइ। तूरहइं देव दूष्यावतार तार वस्त्र किणि दीधां?" इसइ राइ पूछतइ हूंतइ पूजा कारकु भणइ—'महाराज! मू दुक्खितरहइं देवी चंडिका तूठी। प्रभाति देवी पूजा निमित्तु आवउं अनइ देवी तणां पादहं आगइ वर्त्तमान स्वर्ण-रत्न-संतान लहउं। तिणि कारणि त्रिहुंकाले देवीरहइं पूजउं। देवी प्रभावि धनद धनजय कारकु धनु लहउं।' तउ राजा चित्ति चीतवइ—निश्चइंसउं रात्रि समइ देवी पूजा निमित्तु चोरु ईहां आवइ। देवी आगइ सुवर्ण रत्न मूकइ[6]। इसी परि चोर-संचारु तिहां संभावी करी प्रभात समइ राउ वासर कृत्य करिवा कारणि आपणइ आवासि आविउ। रात्रि समइ सारु[7] परिवारु सहितु भयरहितु निज नगरहितु राउ चंडिका देवकुलि आविउ। शूरशूर सुभट पूर[8] दूर रहावी करी आपणपइं स्तंभांतरितु होई करी देवकुल माहि रहिउ। बिहुं पहर राति समइ पादुकासिद्ध तेह तस्कररहइं तिहां आविया हूंता राउ देखइ। पादुका युगलु ऊतारी, वामि करि लेई, देवकुल माहि जाई सु चोरु प्रधान रत्नहं करी देवीपूजा करइ। पूजा करी देवी आगइ कहइ—'स्वामिनि! चोरी कारिया स्वेच्छाचारिया मू रहइं प्रभूत धनदा क्षणदा रूदा होइजिउ।' इसउं भणी पाछउ वली सु महाबली जायतउ हूंतउ द्वारु रूधी करी रहितु हूंतउ राउ तिणि बोलाविउ—

१ ખ ०धउ. २ ખમાં राउ નથી. ३ ખમાં राउ नगरबाहिरि वनमाहि આવો પાઠ છે. ४ ખમાં આ વાક્ય પડી ગએલ છે. ५ ખ उत्सवि. ६ ખ मुंकइ. ७ ખ सार. ८ ખ पूरइ.

'रे जीवतउ नहीं जाइ।' इसी परि राइ धर्षितु हूंतउ बोलाविउ हूंतउ सु चोरु प्रस्तावोचितु हथियारु पादुका-युगलु रायना भालस्थल उद्दिसी करी लांखइ। तेहनइ प्रहारि करी वेदनाक्रांति राइ हूंतइ[1] "एउ हउं जीवतउ जायउं छउं।" इसउं भणतउ सु चोरु बाहिरउ नीसरिउ। क्षणांतरि राइ वेदनारहिति हूयइ हूंतइ "जाइ, जाइ" इसी परि राइ भणतइ हूंतइ पाखतियां राहविया हूंता जि उद्भट सुभट ति तेह रहइं केडइं धाया। आकाशगति हेतु पादुका-युगलु मंत्रि वचनइतउ ले करी राउ पुणि चोर पूठि द्रवडिउ। सु चोरु गतिवेगि करी दूर-मुक्त शूरपूरु पुर ग्रामांतर मार्गांतर लोक संचार माहि पग गोपविवा कारणि गयउ। भयवशइतउ कांई एकु वैराग्यि गयउ हूंतउ चीतवइ "आजु माहरउं पापु निश्चइसउं फलिउं।" कहीं[2] एक ग्राम तणइ आरामि ध्यान तत्त्वु उपदिशतउ छइ मुनि तेह तणउं इसउं वचनु सांभलइ—

सर्वत्र ध्यानसमतारुचिर्मुच्येत पातकैः।
जनः सद्योपि तिमिरैः कृतदीप इवालयः॥

जिम दीवइ कीधइ आलउ घरु तिमिरहं अंधकारहं मेल्हियइ तिम जन लोकु ध्यान वशइ-तउ सर्वत्र[3] समता रुचि—किसउ अर्थु, सर्व भाव विषइ समानबुद्धि-परिणामु; न कहीं[4] विषइ सरागु, न कही विषइ सद्वेषु जु जुयइ सु सर्वत्र समतारुचि कहियइ। इसउ समता वर्तमानु जनु पातकहं पापहं, सद्यः—किसउ अर्थु, ते तीही जि वार मुच्येत मेल्हियइ। इसउं ध्यान तत्त्वु सांभली करी सु चोरु तिहांई जि रहितु सार वस्तु ति असार वस्तु, निंदा विरहितु, मध्यस्थ भाव निमग्नु, शेष रात्रि आगामिउं दिनु ध्यानस्थितु थाकउ। तिम, जिम परमात्मानइ विषइ मनु स्थिरु हूयउं। घातिकर्म्म क्षयवशइतउ शुक्लध्यानांतरिका वर्त्तमान हूंता संध्या समइ केवल ज्ञानु ऊपनउं। तथा च भणितं—

तव तविए जव जविए बहु-विह-कालेण हुंति सिद्धीओ।
निद्दहिय-पुन्न-पावं झाणेण ततक्खणा सिद्धी॥

तथा ध्यान समता ऊपहरउं संसारि सुखु पुण काइं नथी। तथा च भणितं—

जं च कामसुहं लोए जं च दिव्वं महासुहं।
वीयरायसुहस्सेहंऽणंतभागं न अग्घई॥
अज्जं वा कल्लं वा केवलनाणं भवेइ का तत्ती।
समरसतत्ते पत्ते किं अहिअं भणसु मुक्खे वि॥

तेतलइ प्रस्तावि राउ पुण सर्वत्र जोयतउ हूंतउ तिहां आविउ। तउ पाछइ एक

१ ખભા राइ हुयइ हुंतइ. २ ખ कहीं. ३ ખ सर्व जीव.

गमा सार-सुभट-संभार परिवृतु 'मारि मारि' करतउ राउ तेह कन्हइ आवइ। बीजा गमा विमानाधिरूढ देव विद्याधर तेह महात्मारहइं केवल ज्ञान महिमा करिवा कारणि तेह कन्हइ आवइं। तउ पाछइ देव-निर्मित हेम-कमलोपरि बइठउ देव-सेवितु सु चोरु देखी करी राजादिक मारिवा आवता हूंता ति सगलाई सेवा कारिया हूया। तउ पाछइ [1]साधु केसरी दंतकांति करी चंद्रकांति सुभिक्षु करतउ हूंतउ धर्म्मदेशना करइ। देशनावसानि राजा पूछइ— 'भगवन्! किहां सु तुम्हारउं चोर चरित्र, किहां एउ साधु-चरित्रु। तत्रापि हिं किहां एउ केवल ज्ञान समुदउ?'। तउ पाछइ केवली कहइ—

राजन्ना जन्मतस्तादृक्पापभाजोप्यभून्मम।
श्रीरियं मुनिवाग्लब्धसामायिकमनोलयात्॥
यद्वर्षकोटितपसामप्यच्छेद्यं तदप्यहो!।
कर्म्म निर्मूल्यते चित्तसमत्वेन क्षणादपि॥

इसी परि राउ स्तुति करी पाछउ वली आपणइ नगरि गयउ। अनेक भविक लोक प्रतिबोध करतउ केसरी केवली वसुंधरातलि विहरिउ।

पितृघातकरे सर्वजनसंतापकारिणि।
चोरेपि दत्तनिर्वाणं सेव्यं सामायिकं बुधैः॥

॥ इति सामायिक व्रत विषइ केसरी चोर कथा समाप्त॥

१३. दशम व्रत उपर कथा.

देशावकाशिक व्रत विषइ सुमित्र मंत्री कथा लिखियइ--

देशावकाशिकं यावत् कुरुते श्रद्धया सुधीः।
तदन्यत्रात्मनां तेनाभयं दत्तं भवेदिति॥
प्रभावात्तस्य नश्यंति विघ्नाः शुद्धात्मनामिह।
सुमित्रस्यैव जायंते परत्र च शुभश्रियः॥

तथाहि—मालव्य देश मंडन[2] चंद्रिका नामि नगरि। तारापीडु इसइ नामि राजा तिहां राज्यु करइ। सुमित्रु नामि तेह तणइ मंत्री। सु पुणि जिन-धर्म्म-काचकर्पूर-पूर-वासित-सप्त-धातु परम सुश्रावकु। शास्त्र-रत्न-दीप-दीपिति जेहतणइ हृदय-मंदिरि जीवाजीवादि वस्तु स्फुटइ जि वर्त्तइ। तारापीडु राजा नव तारुण्यवंतु पुण्यकर्म्म-पराङ्मुखु हूंतउ, सुमित्र

---

१ ખમાં साधु केसरी सुकेसरी दंतकांति करी चंद्रकांति આ જાતનો ગડબડતો પાઠ છે. २ ખ मंडनदेशि.

मांत्रि प्रति भणइ–' देवपूजा गुरुपाद-वंदना दानादि धर्म्म करी किसइ कारणि मुधा आपणउं जन्मु नीगमइ। तू जिम विफलहं ईंहं धर्म्म हं करी सुवर्णु आपणउं देहु कउणु दहइ?'। इसी परि राइ भणतइ हूंतइ सुमित्रु मंत्री विकसित-वदनु हूंतउ राजेंद्र प्रति भणइ–' महाराज ! इसी परि अनुचितु वचनु तुम्हे कांइं बोलउ। हउं तुम्हहींरहइं धर्म्म विषइ उद्यमु कराविवा वांछउं, तुम्हे पुण मूहींरहइं धर्म्मोद्यमु राखिवा वांछउ। हा महा विषादो मम। सु धर्म्मु किम विफलु हुयइ, जेह तणा प्रसादइतउ स्वर्ग मोक्ष तणां सुख पुण जीव हेलाईं लाभइं।' अथ[1] राजा प्राह–'महामात्य! मूरहइं विपत्ति-निवृत्ति संपात्ति-प्रवृत्ति लक्षणु धर्म्म-फल प्रत्यक्षु दिखालि।' मंत्री प्राह–'महाराज ! तउं राजा, अनेरा ताहरा सेवक लोक,एउ प्रत्यक्षु धर्म्मतणउं फलु किसउं न हुयइं।' तउ राउ मांत्रि प्रति भणइ–' एकि पाखाणि बि खंडि कीधइ हूंतइ एकि खंडि देवता मूर्त्ति हुयइ, बीजइ खंडि सोपानु हुयइ। भणि[2] महामात्य! किसउं एकि खंडि पुण्यु कीधउं, बीजइ खंडि किसउं[3] पापु कीधउं छइ। तिणि कारणि स्वभावही जि तउ विश्वरहइं भव्याभव्यता व्यवस्थापिवी।' इसइ वचनि राइ भणिइ हूंतइ मंत्री भणइ–' राजन् ! पाषाणु अजीवु, तेह तणउ दृष्टांतु न हुयइं,[4] कांईं जउ धर्म्मी जीवु हुयइ तउ धर्म्म पुण्य पाप हुयइ। तथा जइ सजीवु पाषाणु कहियइ–' पुढवि चित्तमंतमक्खाया '; ' अणेगे जीवा पुढो सत्ता '; ' अन्नत्थ सत्थ परिणएणं ' इसा आगम वचनइतउ। तउ तींहिं जि आगम वचनइतउ[5] अनेक-जीवरूपु सु पाषाणु; न पुनरेक-जीवरूपु। तउ पाछइ तींहिंरहइं भव्याभव्यता धर्म्माधर्म्म विनिर्मितइ जि जाणिवी।' तउ राउ भणइ–' महामात्य ! तइं हउं वचनि करी[6] निरुत्तरु कीधउ। तथापि हिं प्रत्यक्ष दृष्टि हिं जि धर्म्मि फलि करी हउं निःसंदेहु धर्म्मु मानउं। अनेरइ प्रकारि मानउं नहीं।' इसी परि राइ अनइ मंत्रिरहइं नितु धर्म्मविषइ विवादु हुयइ। तउ सु विवादु प्रसिद्धउ हूयउ। एक वार सर्व वासर-कर्म्म नीपजावी करी पाक्षिक प्रतिक्रमण करिवा कारणि संध्या समइ आपणइ आवासि आविउ। मंत्री गृहावधि देशावकाशिकु व्रतु करइ। प्रतिक्रमणु विधिवत् सामाचारी करी शुद्ध धर्म्म-ध्यान-परायणु पंच परमेष्ठि नमस्कार परावर्त्तनु करिवा लागउ। तदा कालि राइ-प्रतीहारु आवी मंत्री आगइ कहइ–' महामात्य ! गुरु कार्य [7]कारणि राउ तुम्हरहइं तेडइ। तउ मंत्री प्रतीहार आगइ कहइ–' प्रभातसीम मंत्री गृह वाहिरि जाइवा नियम-निश्चल-चित्तु हूंतउ रहिसिइ घरि हि जि। प्रभाति राजासमीपि आविसिइ।' इसउं भणी करी पडिहाररहइं मोकलइ। पंचपरमेष्ठि महामंत्र संस्मरण सुधासेकि करी मनुष्य जन्मु कल्पवृक्षु मंत्री तदा कालि विशेषि करी सींचइ। अथ पुनरपि पडिहारु

१ ખમાં अथ નથી. २ ખ भणइ. ३ ખમાં આ શબ્દ પડી ગએલ છે. ४ ખ हुइ. ५ ખ वचननउं. ६ ખમાં આ શબ્દ નથી. ७ ખમાં कार्य करिवा.

आवी करी भणइ–' मंत्रिन् ! तुम्हारउं कथनु सांभली करी आज्ञा-भंग-करक जिम तुम्ह ऊपरि राउ रूठउ । वली हउं मोकलिउ । मंत्री न आवइं तउ म आवउ । तउं माहरी सर्वाधिपत्य मुद्रा ले आवि । इणि कारणि हउं मोकलिउ ।' इसउं प्रतीहार तणउं वचनु सांभली करी हसतउ हूंतउ जिम दुःशील दासी आपणा घरहूंती बाहिरि कीजइ तिम राजमुद्रा मोकलइ । मंत्रि-मुद्रा कौतुकी हूंतउ करि पहिरी करी प्रतीहारु हर्षितु हूंतउ आपणां पायकहं आगइ कहइ– ' हउं[1] मंत्री हूयउ ।' ' मंत्रि-मस्तक-मुकुट शनैः शनैः पाउधारउ '–इसउं भणतां भट्टहं परिवृतु घर हूंतउ प्रतीहारु राजमंदिर ऊपरि चालिउ जेतलइ, तेतलइ दैव जोगइतउ कीहीं एकहं सुभटहं निःकासिताऽसिदंडहं कूटी करी पाडियउ । यम-मंदिरि मोकलिउ । जि नाठा सि नाठा, जि केतलइ रहिया, प्रतीहार तणा जण हूंता तेहे वैरी पुण मारिया । 'प्रतीहारु मारिउ २ '–इसउ कोलाहलु ऊछलिउ। राजा कोलाहलु सांभली करी क्रोधांध-लोचनु हूंतउ चित्ति चीतवइ–'प्रतीहारु अम्हारउं काजु करतउ दुष्टि मंत्री मारिउ । एह मंत्रीतणउं मस्तकु आपणइ हाथि छेदी करी ऊलालउं दडानी परि, तउ मूरहइं बलवंत पणउं सफलु[1] हुयइ; निवृत्ति पण हुयइ ।' इसउं बोलतउ कोपाटोप-संयुक्तु गोपति जिहां ति प्रतीहार घातक घातार्त्त कंठ-गत-प्राण पडिया छइं तिहां आविउ । 'महामात्य तणा ए घातक अथवा[2] अनेरा के वैदेशिक सुभट होइसिइं'–इसउं ध्यायतउ हूंतउ राउ दीप-दीपिताशावकाशु ति देखी करी बोलावइ–' कउणि तुम्हे, किसइ कारणि प्रतीहारु मारिउ ।' तउ पाछइ ति भणइं–'महाराज ! अम्हे वंठ कंठागत प्राण हूया, अम्हरहइं किसउं[3] पूछइ; दैवु दुराचारु पूछि जिणि अम्हारा स्वामीतणउ मनोरथु विफलु कीधउ । जिणि कारणि धरावास नगराधीश सूरसेन रायतणा अम्हे सेवक; तिणि अम्हे सुमित्र मंत्रीरहइं मारिवा कारणि मोकलिया हूंता । जिणि कारणि सु मंत्री सुमित्रु नामि करी छइं; अम्हारा स्वामीरहइं पुणि आमित्रु । नितु दंडइ वरसि २ । तउं अम्हारा प्रभु तणउ वइरी तेहरहइं सुमित्रु सदा पोषइ । तिणि कारणि अम्हे स्व-स्वामि-आदेशइतउ सुमित्रु तणउ मार्गु बांधिउ[4] हूंतउ । किहां हूंतउ एउ प्रतीहारु सिंहतणइ[5] ओडइ जंबुक जिम पडिउ ।' इसी परि बोलता हूंता ति चियारइ सुभट प्रतीहार-घातक पंचता प्राप्त हूया । तउ राजा पश्चात्ताप संयुक्तु हूंतउ पुरलोक राजलोक सहितु सुमित्र मंत्रि[6] रहइं खमावइ । बाहु साही करी इसउं कहइ–' महामात्य ! तूं तात समान प्रति मइं पापिष्ठि जु अपराधु चींतविउ सु पसाउ करी क्षिमि[7] । तात, जे किमइ तउं व्रतु न करतइ तउ न जीवतइ । तू पाखइ प्रभूत विभवु राज्यु मूंरहइं न होइतइ[8] ।

---

१ ખ માં આ શબ્દ નથી. २ ખ માં આ શબ્દ નથી. ३ ખ માં किसइ कारणि.
४ ખ बांधिइउ. ५ ખ तणउइ. ६ ખ માં मंत्री શબ્દ નથી. ७ ખ क्षमि. ८ ખ होयत.

तिणि कारणि आजु कल्याणकारक पुण्य कर्म्म तणउं फलु प्रत्यक्षु[1] मइं दीठउं। चिरकाल संचितु धर्म्म विषइ मोहु मूरहइं ऊतरिउ।

सुकृतं जीवितव्यं ते व्रतेनानेन पोषितम्।
शोषितं त्वत्कृतेनाद्य दुष्कृतं दुर्यशश्च मे॥
तत्सहस्वापराधं मे प्रसीद वद सात्विक!।
धर्म्मं कारय मां तात! तारयाशु भवार्णवम्॥

इसी परि राइ खमावतइ हूंतइ मंत्री भणइ—'महाराज! जु तूरहइं एवडउ अनुतापु हूयउ, तिणि करी तूरहइं अपराधु को नहीं।' तउ पाछइ राउ तूठइ हूंतइ पुनरपि सर्वाधिकार मुद्रा सुमित्ररहइं दीधी। सुमित्र प्रेरिति हूंतइ राइ पूर्णचंद्र गुरु समीपि गृहिधर्म्म-मुद्रा लीधी। अथवा युक्तउं छई, राइ अधर्म्मि हूंतइ संसारांगदेश-मुद्रा महामात्यरहइं दीधी। महामात्यि सधर्म्मि हूंतइ प्रत्युपकार करण वांछा करी रायरहइं मोक्षांगदेश-मुद्रा गुरुकन्हा दिवारी। तउ धर्म्म विषइ एक चित्तता हुई हूंती तींहंरहइं धर्म्म प्रोत्सर्प्पणा करतां [2]कालु जायइ। सु वृत्तांतु जाणी करी अनेरइ दिनि शूरसेनु सुमित्र–भयभीतु हूंतउ कांधि कुहाडउ करी रायनी सेवा करिवा आविउ। राइ सन्मानितु हूंतउ भक्तु सेवकु हूयउ। राजा देवार्चा दान सुध्यान तीर्थयात्रा तीर्थ-प्रभावनादि धर्म्म-कर्म्महं मंत्रि-प्रदर्शितहं करी आपणउं जन्मु जीवितु पवित्रु करइ।

तत्र स्वामिनि बालोपि चंडालोपि न सो भवेत्।
न यो जिनाधिनाथोक्तधर्म्मकर्म्मठतां गतः॥
इत्थं मंत्री च भूपश्च कृत्वा धर्म्मं विशुद्धधीः।
महाविदेहे मर्त्यत्वं प्राप्य लेभे शिवांश्रेयम्॥
ततः सुमित्रदीपेन गमितेऽस्मिन् प्रकाशताम्।
देशावकाशिकपथे संचरंतु सुखं बुधाः॥

इति देशावकाशिक व्रत विषइ सुमित्र मंत्रिवर कथा समाप्त॥

---

१ ખ માં આ શબ્દ નથી. २ ખ करता.

१३. एकादश व्रत उपर कथा.

पौषध व्रत फल विषइ मित्राणंद नाम मंत्रीश्वर कथा लिखियइ—

तच्च शुद्धोक्तचारित्रव्रतवत्परिपाल्यते ।
अहोरात्रमथाशेषां रात्रिं यावत् जितेंद्रियः ॥
भवोरग-गदच्छेदे पौषवत्पौषधव्रतम् ।
आपत्तापभिदे मित्रानंदमंत्रिपतेरिव ॥

यथा—पुष्पपुरु इसइ नामि पुरु । जिणि आपणी कांति करी भानु जीतउ सु भानु इसइ नामि तिहां राजा । तेह तणइ मित्राणंदु इसइ नामि मंत्री अति विख्यातु हूंतउ; जिणि आपणइ बुद्धि-बलि करी बृहस्पति जीतउ। एक वार सभामांहि राजेंद्र मंत्रींदहं[1] रहइं पुण्य व्यवसाय विषइ विवादु हुयउ । यथा—राजा कहइ—'व्यवसाऊ जु सर्व समीहित संपादकु ।' मंत्री कहइ—'पुण्यू जु समस्त मत संपूरकु ।' तउ पाछइ मंत्रि वचनि करी सकोप[2] गोपति मंत्रि-पति प्रति[3] भणइ—'जइ किमइ व्यवसायु प्रमाणु नहीं, पुण्यू जु प्रमाणु; तउ महामात्य ! पुण्य-बल-गर्जितु हूंतउ तउं[4] माहरउं राज्यु छइ[5]। जि[6] को तूरहइ अनुगमनु करिसि,[7] तेहना प्राण माहरउ खड्गदंडु अपहरिसिइ । जा महामात्य, तुच्छ-मति-मंदिर आपणउं वचनु प्रमाणु करि; घरि जाइवउं नहीं; ईहांई[8] जि हूंतउ अनेरइ थानकि जा[9] । माहरउ देशु मेल्हि ।' इसी रायतणी आण लही करी महामात्यु आपणा वचन विषइ सनेठाहु हुंतउ तिहांई जि हूंतउ पादचारिहिं जि एकल्लु जु देशांतरि चालिउ । जेहे पाए आगइ भुइं छिवी न हुंतीइ तेहे पाए भूमि माथइ[10] नहीं; हींडतउ[11] पुण्य प्रमाण प्रकटिवा तणइ कारणि रायतणी अग्र महिषी छइ मही, तेहनइ माथइ जाणे पगधर[इ][12] छइ । इसी परि जायतउ हूंतउ मध्यं-दिन समइ श्रांतु हूंतउ तृसियउ[13] हूयउ हूंतउ जिसउं चंद्रकला कोटिहिं करी घटितु[14] हुयइ इसउं महासरोवरु एकु देखइ । भृंग-भृंगारव शब्दहं करी सहित[15] छइं कमल तेई भणित मुखर बोलता मुख हूया; चालता छइं लोल कल्लोल तेई भणित हाथ हूया; तेहे करी तृषित लोकरहइं जाणे सु सरोवरु करुणाकर पुरुष जिम हकारइ छइ । तिणि सरोवरि स्नानु पानु करी पालि तरुवर-तलि रहितु आकाशहूंतउ अतिवेगि ऊतरतउ आपणपा आगइ आविउ दिव्यु पुरुषु एकु देखइ । "संध्या समइ मनोवांछितु सैन्यु तू रहइं एउ मणि देसिइ ।

१ ख मंत्रीरहइं. २ ख सकोपु. ३ ख मंत्रि प्रति. ४ ખમાં નથી. ५ ख लहइ. ६ ख जु. ७ ख करिसिइं. ८ ख ईहांई. ९ ख जाहि. १० ख माथिइ. ११ ख हींडइ. १२ કમાં इ નથી. १३ ખમાં तृसिउ. १४ ખમાં આ શબ્દ નથી. १५ ख तहिं.

पाछइ पूजितु समाराधितु हूंतउ प्रभूत लक्ष्मी पुण देसिइ"—इसउं भणी चिंतामणि हाथि दे करी 'किसउं किसउं' इसउं[1] आश्चर्यु चित्ति चीतवतइ[2] मंत्री तेह आघउं कांई अकहिऊ जु करी सु पुरुषु आकासि ऊपरमिउ। अथानंतरु चंपकादि-तरु-कुसुमे चिंतामणि पूजी करी मित्राणंदु सानंदु संभृतु हूंतउ चतुरंगु सैन्यु करावी करी संध्या समइ गज वाजि रथ पदाति लक्षण चतुरंग दळ सहितु प्रबल निस्वान निस्वनहं करी दस-दिसि-मुख मुखर करतउ आपणा पुर[3] प्रति पाछउ आविउ। जिम महोरगु उंदिररहइं वेढु घातइ तिम पुररहइं वेढु घाती रहिउ। 'कउणि पुर वेढु घातिउ'—इसउं भणी करी राइ हेरक मोकलिया हूंता, हेरक कटक माहि आविया। मित्राणंदि मंत्रिपतिइं देखी करी ओळखिया। भणिउं—'अहो हेरकउ! भुजागर्व-गर्वितु छइ भूपति, सु तुम्हे माहरइ वचनि भणउ "पुण्य प्रभावि संप्राप्त सैन्य-संभारु मित्राणंदु मंत्रींदु बाहिरि आविउ छइ। जइ किमइ तउं विक्रमाक्रांत समुद्रांत महीतलु छइ, तउ विहलउ[4] प्रहारु करिवा निमित्तु ढूकि।" इसी परि हेरक आभीषी करी वस्त्रालंकारहं संभूषि करी राजेंद्र कन्हइ मंत्रींद्रि मोकलिया। ति पुण हेरक पाछा नगर माहि आवी करी राजेंद्ररहइं तिमहिं जि वीनवइं। तउ पाछइ राउ अति विस्मय-रस संप्रेरितु हूंतउ सुस्थ-चित्तु होई करी केतलाई[5] लोकहं परिवृतु हूंतउ जिहां मित्राणंदु मंत्रींद्रु छइ तिहां आविउ। मित्राणंदु पूर्व प्रतिपन्नता लगी रायरहइं सामुहउ ऊठिउ। "इष्ट विरोधु तां हुयइं जां दर्शनु न होइं संतहं रहइं।" प्रणमी करी राउ सिंहासनि बइसालिउ महतइ। महतउ राइ बलात्कारि हिं बइसाली करी भणिउं—

वरेण्यं पुण्यमस्त्येव शौर्यादिव्यवसायतः।
पुण्यभाजां हि जायंते किंकरा व्यवसायिनः॥
भवद्भाग्योदयः कश्चिद् यस्मादीदृक् चमूचयः।
येनाहं तव भर्त्तापि भृत्यवद् भामि तेऽग्रतः॥

इसी परि राउ भणी करी पूछइ—'भणि मंत्रीवर! ए असंभृतिक विभूति तूरहइं किहां हूती हुई?।' मंत्री भणइ—'महाराज! पुण्यप्रभावि किसउं किसउं[6] न हुयइं।' दिव्य पुरुष तणउ वृत्तांतु कहिउ। तउ पाछइ राउ रुलियायितु थिउ। महामहोत्सवि मंत्रींद्र-सहितु राजेंद्रु साश्चर्य पुरलोक विलोकीतउ हूंतउ पुरमाहि आविउ। तेह दिवस लगी चिंतामणि प्रभावि पूर्ण मनोवांछित लक्ष्मीकु छइ मित्राणंदु मंत्री, तेहसउ रायरहइं महामैत्री हुई[7]।

---

१ આ બે શબ્દો નથી. २ ખ चींतवइ छइ. ३ ખ पुरु. ४ ખ वहि० ५ ખ केतलाई पकहं. ६ ખમાં બે વાર નથી. ७ ખ हुयई.

एक बार भानु भूपतिसउं सभामाहि बइठां हूंता महामात्यरहइं उद्यानपालु आवी रायरहइं वधावइ—'महाराज ! सीमंधरु इसइ नामि यथार्थाभिधानु गणधरु तुम्हारइ क्रीडोद्यानि समोसरिउ'। उद्यानपालरहइं सर्वांग-विभूषणु बहु द्रविण वितरणु करी भानु भूपतिसउं मित्राणंदु मंत्रीश्वरु मुनिवंदन-निमित्तु उद्यानि पहुतउ। तिहां नेत्रामृत-वृष्टिकारक मुनिवरहइं राजेंद्र मंत्रींद्र वांदी करी देशनामृत-पानविधान-निमित्तु उचित स्थानकि बइठा। देशनावसानि सर्वेंद्रु मुनि कन्हा पूछइ-'भगवन् ! मित्राणंदरहइं विपत्ति समइ[1] संपत्ति किसा पुण्यनइ प्रभावि हूई[2] ?'। मुनि भणइ-'महाराज ! जिसी लक्ष्मी भारि करी भूमि पतित अमरावती हुयइ इसी पद्मपत्रा नामि पुरी हूई। स पुण लोकमाहि अति प्रसिद्ध हूई। तिहां प्रतापि करी जिसउ ग्रीष्म ऋतु आदित्यु हुयइ इसउ आदित्यु नामि महीपति हूयउ। राजेंद्ररहइं प्रतिबिंब समानु सुदत्तु इसइ नामि श्रेष्ठि हूयउ। सु पुणु जिणधर्म-धुरंधरु हूयउ। पर्व-दिवासि पाप-संताप-निर्वाप[3] विषइ महौषधु पौषधु लेकरी बिहुं पहर राति समइ समता-वर्तमानु गृहतणइ एक देशि रहिउ छइ। तदाकालि को एकु तस्करु अवस्वापिनी-विद्या-विशारदु प्रभूत भूतभैरव सुभट परिवार परिवृतु तेहनइ घरि धाडि पइठउ। चोरनी विद्या करी बीजा लोकरहइं नींद्र वशि करी मूर्च्छा आवी। पंचपरमेष्ठि नमस्कार महा-मंत्रानुभावि सुदत्त श्रेष्ठि विषइ विद्या न प्रभवियइ। तेह सुदत्त श्रेष्ठि देखतारहइं अदेखता हूंता ति तस्कर गृह-सारु समस्तु हर्षित थिका[4] मुसइं। कपाट फाडिवा लागा, मंजूस ऊघाडिवा लागा, द्रव्य तणइ कारणि भूमिगृह पुण फोडिवा लागा।

अहो महात्मनस्तस्य धर्म्मावष्टंभयंत्रितम् ।
जातेऽप्युत्पातजातेऽपि न ध्यानाच्चलितं मनः ॥
अनागतेष्वथागत्य गृह्णत्सु धनपद्धतीः ।
तेषु यातेषु च ध्यानभेदोऽभूत्तस्य न क्वचित् ॥

प्रभात समइ धननाशु देखी करी सकलि गृहजनि शोकु करतइ हूंतइ श्रेष्ठि पोसहु पारी करी दिवस कृत्य विधिसउं करिवा लागउ। पुण्यानुभावि तेहनइ घरि वली [5]घणाई जि धन हूयां। अनेरइ दिनि सु अवस्वाप विद्याचोरु सेठिना घरहूंती ज वस्तु चोरी हूंती तेह वस्तु माहिलउ एकु अमूल्किु मुक्ताफलनउ हारु ले करी तिणिहिं जि नगरि वीकिवा आविउ। सु हारु सुदत्तु श्रेष्ठि तणइ वाणउत्रि ओलखिउ। सु चोरु धरी करी तलाररहइं आपिउ। सु चोर-धरण-वृत्तांतु सुदत्तु जाणी करी इसउं चीतवइ—

---

૧ ખમાં रहइ આવો પાઠ છે. ૨ ખમાં हुयइ. ૩ ખ निर्वापि. ૪ ખમાં थका.
૫ ખમાં घणां.

[1]न सत्यमपि भाषेत परपीडाकरं वचः ।
लोकेऽपि श्रूयते यस्मात् कौशिको नरकं गतः ॥

इसउं चींतवी वेगि आवी चोररहइं मेल्हावइ। किसी परि आपणा वाणउत्र ऊपरि कोपु करतउ हूंतउ तळार आगइ कहइ—'एउ अम्हारउ वाणउत्रु कांईं जाणइ नहीं। मइं पूर्विहि एकि दिनि एउ हारु एहरहइं मूलि दीधउ हूंतउ। एउ किसउं इसउं माणुसु छइ जिसउं चोरी करइ। एह वात माहि कांईं छइ नहीं। तुम्हे एउ परहउ मेल्हउ।' तळारि चींतविउं—'जु धणी जाणइ सु पाडोसी न जाणइं। तिणि कारणि सेठि साचउ, वाणउत्रु कूडउ। अनइ द्वादशव्रत-धारी श्रेष्टि कूडउं बोल्इं नहीं।' तिणि कारणि श्रेष्टिनइ कथनि तळारि चोरु मेल्हिउ। बुद्धिमंत तणी बुद्धिरहइं असाध्यु कांईं नहीं। श्रेष्टि चोरु आपणइ घरि आणी जीमाडी कापड पहिरावी मोकलिउ। कहिउं—'वली राखे चोरी करतउ। मइं दया लगी[2] मेल्हाविउ छइ। पुण बीजउ कोइ मेल्हावसि नहीं[3]।' इसउं भणी करी घरि मोकलिउ[4]। श्रेष्टिनइ उपकारि करी[5] चोरहीं[6] तणउं मनु भीनउं। तउ पाछइ अकृत्य-करण-भय-तणी जाणिवा वांछा ऊपनी। यदुक्तं—

जो जारिसेण संगं करेइ अचिरेण तारिसो होइ।
कुसुमेहिं संवसंता तिला वि तग्गंधया हुंति ॥

जेतलइ नगर बाहिरउ नीसरिउ तेतलइ उद्यानमाहि धर्म्मोपदेशामृत वृष्टि करी[7] भव्य पादपवनी सींचतउ शुद्धप्रभाभिधानु प्रधानु मुनि देखइ। वांदी धर्म्म-देशना सांभली कृत्या-कृत्य-विवेकु जाणी करी तीही, जि कन्हइ दक्षु दिक्षा-ग्रहणु करइ। सुद्ध चारित्रु प्रतिपाली करी अंतकालि समाधि सहितु आयु पूरी सौधर्म्म[8] देवलोकि महर्द्धिकु देवु हूयउ। सुदत्तु श्रेष्टि पुण आपणउं आयु पूरी महाराज! एउ तुम्हारइ मित्राणंदु मंत्री[9] हूयउ।

संपत्सु ह्रियमाणासु यद्भंज न पौषधम् ।
पदे पदे च तेनायं विचित्राः प्राप संपदः ॥
स तु चौरः सुरीभूतः स्मरन्नुपकृतीः कृती ।
चिंतार्त्ताय ददौ रत्नं प्रस्तावं प्राप्य मंत्रिणे ॥

राजा भणइ-'भगवन्! वली तेह देवरहइं मंत्री देखिसिइ।' मुनि भणइ-'मंत्रिरहइं जदा[10] कालि [11]जीवितांतु होइसिइ, तदा कालि तेह देवतणउं दर्शनु मुक्तिहेतु होइसिइ।

१ ખમાં આ શ્લોક નથી. અને એ પછીનું વાકય પણ નથી. २ ખ करी. ३ ખ को नहीं मेल्हावइ. ४ ખમાં આ શબ્દો છુટી ગયા છે. ૫ ખમાં નથી. ६ ખમાં हीं નથી. ७ ખમાં નથી. ८ ખમાં सौधर्म्मि. ९ ખમાં मंत्री मित्राणंदु. १० ખમાં यदा. ११ ખમાં तुम्हे०.

जिणि कारणि नंदीश्वरि तीर्थि देववंदना-मनोरथि मंत्रीरहइ हूयइ हूंतइ प्रस्तावज्ञ सु देवु विमानु आणी देसिइ। तिणि विमानि चडिया मंत्रिरहइं जायता हूंता शुद्ध शुक्ल ध्यानानुभावि लवण समुद्र ऊपरि थिका केवल ज्ञानप्राप्ति,आयु क्षिइ, मुक्ति होइसिइ।' इसउं मुनि वचनु सांभली करी राजादिक लोक महाधर्म्म-वास-वासित मानस हूंता सानंद निज निज मंदिरि गया।

श्रीमित्राणंदमंत्रींदोः श्रुत्वा पौषधसत्फलम्।
सुमेधसः स्थिरध्यानास्तत्कुर्वंतु सुपर्वसु॥

॥ इति पौषधव्रत विषइ मित्राणंदकथा॥

---

१५. द्वादश व्रत उपर कथा.

अतिथि-संविभाग व्रत विषइ सुमित्रा नाम परम श्राविका तेहतणी कथा लिखियइ–

तथाहि–एकावयवतोप्येतत्सेवितं श्रद्धयाधिकम्।
सुमित्राया इवोन्नत्यै जायते द्वादशं व्रतम्॥

श्रीवसंतपुरु इसइ नामि पुरु। अतिविक्रमवंतु[1] इसइ नामि अति विक्रमवंतु[2] राजा तिहां राज्यु करइ। तेह तणइ वसु इसइ नामि मंत्रीश्वरु हूयउ। सदा विकसिति जेहं तणइ बुद्धि-कमलि राज्यलक्ष्मी सुखिहिं वसी। जिनदासु नामि राजारहइं अति वल्लभु श्रेष्ठि हूयउ। सु पुण[3] जिण-धर्म्म-धुरा-धौरेउ, कल्याण-तणउं निधानु सकल-पौर-जन-प्रधानु वर्तइ। तिणि एतलाके सुवर्णरत्न उपार्जियां जेहे करी क्षितिमाहि अनेकि मेरु पर्वत अनेकि रोहण पर्वत उपाइयइं। "यक्षराजु धनाध्यक्षु" इसी परि जाचक लोकि भणिउ। धनदु जिनदासु एकु संस्तविउ। बाणारसी नगरी वास्तव्यु धनु नामि छइ सार्थवाहु, तेहतणी रत्नवती नामि दीकिरी कलावती लीलावती तिणि परिणी। जिनदासरहइं विश्वासपात्रु लक्ष्मीधरु इसइ नामि ब्राह्मणु जिसउ लहुडउ भाई हुयइ इसउ परम मित्रु हूयउ। राजेंद्र अतिविक्रमवंतरहइं तिम न मंत्री न पुत्रु न कलत्रु वल्लभु जिम जिनदासु वल्लभु। एह जिनदास मित्ररहइं राउ कदा कालि मंत्रिमुद्रा पुण आपिसिइ–इसी परि वसु सचिवेश्वरु मनमाहि संभावी करी जिनदासरहइं मारिवा विषइ मनु करइ। जिणदासु पुण दक्षतालगी चक्षुर्मनो-विकारादिकहं लक्षणहं करी आपणपा ऊपरि विरुद्धउ जाणइ। तउ पाछइ राजेंद्ररहइं मोकलावी करी तीर्थयात्रा-व्याजांतरि भार्या रत्नावती पीहरइ[4] मोकलइ। वसुमंत्रींद्रि पुण तेह माराविवा कारणि रात्रि तेहतणा घरतणउ मार्गु आपणां जणहं कन्हा रूंधाविउ। जिणदासु पुण मार्गु बाधुउ[5] जाणी करी अतिसंभ्रमाव

---

१ ખ अति विक्रम. २ ખમાં આ શબ્દ નથી. ३ ખ पुणि. ४ ખ परिहरि. ५ ખ बाधउ.

बहुमूल्य रत्न ले करी लक्ष्मीधर मित्र सहितु कर्म्मकर-वेषु करी पुरु हूंतउ नीसरिउ । मार्गु अजाणतो भयवशइतउ निरंतरु जायतउ हूंतउ आरिण्य[1] माहि पडिउ । तिहां जउ अतिश्रांतु तृषाक्रांतु हूयउ तउ वस्त्रांचल बद्ध सप्रभाव रत्न-परंपरा मित्र-लक्ष्मीधर-कारि आपइ । जिसउं साक्षात्कारि तेह तणउं जीवितव्यु हुयइ तिसी स रत्नपरंपरा छइ । तउ पाछइ आपणपइं किणिहिं कूपि पाणी जोयतउ हूंतउ रत्नतणइ लोभि तिणि लक्ष्मीधरि मित्रि पगे धरी ऊपाडिउ हूंतउ कूपि पडिउ। पडतउ हूंतउ 'कउणु इउ' इसइ वचनि करी बोलाविउ हूंतउ आपणी प्रियतमा रत्नवती ओलखी करी भणइ-'प्रियतमि! तउं पुण एह कूप माहि किसी परि पडी। सु ताहरउ[2] परिवारु किहां गयउ। हा हा धिग धिग्! विधि-विडंबनारहइं।' सा ई अवस्था पतितु कांतु संनिधि-संप्राप्तु देखी करी हर्षविषादासु-संकर-संकीर्णु लोचनु करइ । प्रियतम मेलापकइतउ धन्यु आपणपउं, तिहांई[3] मनती हूंती भणइ-'ए हउं रत्नवती ताहरी सुंदरी प्रिया। तिहां हूंती जायती हूंती अटवी माहि आवी सगळ सार्थु चोरे लसिउ। सु परिजनु नासी करी गयउ। चोरे जेतीवार माहरा शीलभंग करिवा कारणि समुद्यमु कीधउ, तेतीवार हउं धाई करी शील-रक्षाकारणि आकुली हूंती कृतांत-मुख प्रतिरूप एह कूपमाहि पडी । तुम्हारा वदनालोक भोक्तव्य कर्म्महंकरी जीवी। कहउ न, तुम्हरहइं एह कूपमाहि किसीपरि पतनु हूयउं। तिणि सचिवि विद्वेषियइ तुम्हरहइं विरोधइतउ किसउं कीधउं[4]।' जिनदासु कहइ तिणि सचिवि मारणोत्सुकि हूयइ हूंतइ हउं कर्म्मकर वेषि एकलउ नीसरिउ। निरंतरि विहारि ईहां आविउ। तृसिउ हूंतउ एह कूपमाहि पडिउ; पाणी देखतउ पादस्खलना वसइतउ।' निर्जल तेह कूपमाहि नाहि-प्रमाणु जलु हूयउं; पुण्य प्रभावइतउ। जिसुउं[5] खीरु हुयइ इसउं सु नीरु पी करी ति बे स्वेद खेद तृस उपसमावी करी अतिसुप्रीत चित्त हूयां। अथ क्षणांतरि तिहां[6] सार्थु एकु आविउ । जिसउ तीहं तणउ पुण्यकुंभु हुयइ तिसउ कुंभु रज्जु बांधी करी पाणी काढिवा कारणि तेह कूपमाहि किणिहिं मूकिउ । सु कुंभु माहि जेतीवार साहिउ तेतीवार तिणि पुरुषि माहि माणसु[7] जाणी[8] अपर पुरुष आणी ताणी करी बाहिरि, जिम जममुख हूंता काढियइं तिम, काढियां। बे जण जेतलइं ति कूया हूंतां नीसरियां तेतलइ आगिलइ गमइ रहितु छइ सार्थु सु "कूया हूंतउ मिथुनु नीसरिउं" इसउ कोलाहलु करइ। तेह शब्दइतउ कौतुकी सार्थवाहु पुण तिहां आविउ। भर्त्तार सहित दीकिरी देखी करी मनमाहि विस्मयापन्नु हूयउ। जिणदासु पुण 'सुसुरउ एउ' इसी परि धन सार्थवाहरहइं ओलखी करी चमत्कृत-चित्तु हूंतउ प्रणामु करइ। 'किसउं एउ' इसी परि सविस्मय थिका सार्थवाहरहइं

---

१ ખ अरण्य. २ ખ ताहरुं. ३ ખ तिहाई. ४ ખમાં આ શબ્દ નથી. ५ ખ जिसउ. ६ ખમાં નથી. ७ ખ माणुसु. ८ ખ जाणी करी.

पूछतां हूंता जिणदासि आपणउ वृत्तांतु मूल लगी सगळ कहिउ। तिणि स्वजनि संबंधि हूयइ हूंतइ व्यसन तणउं दुहेलउं सगळ गली गयउ। ति सव्वे पुटकुटी माहि सुखिहिं रहियां। आथमण मिसांतारि जाई करी आदित्यि तीहं तणइ आश्चर्य कारकि इसइ चरित्रि कहियइ हूंतइ जाणे जोएवा[1] कारणि उदयमिसि संध्या समइ शशी आविउ। अथ चंद्रोदय समइ जिनदासु देह-चिंता करिवा प्रचुरतरु वणांतारि गयउ। तिहां लक्ष्मीधरु सूतउ देखी[2] जोयइ, तउ मूयउ देखइ। अक्षितु[3] सु देखी करी मित्रवच्छलु सर्प्प-डंकु तेहरहइं जाणी करी दुक्खितु हूयउ। तेह कन्हा सुप्रभाव[4] रत्न ले करी पाणी ओहली तेहरहइं पाई जीवाडइ। तउ क्षणांतारि सु जीवितु देखी जिनदासु रलियायतु थिउ।

उपकृत्युपकुर्वाणा ध्रियंते धरया न के।
अपकृत्युपकारी यस्तेन तु ध्रियते धरा॥

लक्ष्मीधरु जीविउ हूंतउ जिनदासरहइं देखी करी लज्जावनम्रमुखु हूयउ। तउ पाछइ जिनदासु तेह आगइ कहइ—'मित्र! हउं तइं कूया माहि न घातिउ किंतु पदस्खलन लगी हउं आपहे कूया माहि पडिउ। तउं आपणा मन माहि किसीयइ लाज म करि। किसउं को कुणही मरता पूठि मरी सकइ छइ?। मूरहइं अधुना धनु सार्थवाहु मिलिउ। हउं तेहसउं बाणारसीं नगरीं जाइसु। तउं ईहांईं हूंतउ आपणइ थानकि जा। इसी परि परि ऊविउ हूंतउ सु लक्ष्मीधरु ब्राह्मणु सलज्जु थिकउ[5] वसंतपुरि गयउ। जिणदासु धनसार्थवाह सरसउ लाजतउ हूंतउ बाणारसी ऊपरि चालिउ। जेतलइ लक्ष्मीधरु वसंत पुरि गयउ तेतलइ जिणदास तणइ वियोगि दुक्खितु अतिविक्रमवंतु नामि महीरक्षितु देखइ। तउ पाछइ लक्ष्मीधरु जाई करी राय आगइ जिनदासु अनइ [महा][6] मात्य बिहुं तणउ संबंधु कहइ। सु वृत्तांतु सांभली करी अतिविक्रमवंति राजेंद्रि वसुनामि महामात्यु गुप्ति कीधउ। जेतीवार जिणदासु देखतउ[7] हुयइ जिम तेतीवार तेह तणउ वइरी मारउं—इसा कोपवशइतउ महा दुक्खि घातिउ।

अथ घडिया[8] जोयणी सांढि चडी करी पुरुप-द्वय-सहायु रायु आपणपइं बाणारसीं नगरीं जिणदास लेवा गयउ। जिम को[9] जाणइ नहीं तिम जाई जिणदासु मनावी सरसउ [ले][10] करी राउ वसंतपुरि आविउ। जिणदासु मन माहि चींतवइ वसु पुनरपि मइं[11] महामात्य पदि थापिवउ। तउ पाछइ राजेंद्र कन्हा जिणदासु सर्वैश्वर्य मुद्रा लही करी जण-नायकु[12] वीनवी करी मंत्रिपदु वसुरहइं अपावइ। अनेरइ दिनि उद्यानपालि आवी राउ वधाविउ-

---

१ ખ जोइषा. २ ખ देखी करी. ३ ખ अक्षतु. ४ ખ स्वभाव स्वकीय. ५ ખ थकउ. ६ કમાં महा શબ્દ પડી ગએલ છે. ૭ ખ देखतु. ८ ખ अथ घाडिया. ९ ખ कोई. १० કમાં પડી ગએલ છે. ११ ખમાં આ શબ્દ નથી. १२ ખ नाराउ.

'महाराज! तुम्हारइ क्रीडोद्यानि तपु तपता हूंता शंकरनाम महऋषिरहइं केवल-ज्ञानु ऊपनउं।' महांतु प्रीति-दानु उद्यानपालरहइं दे करी अतिविक्रमवंतु नरेश्वरु जिनदास सहितु उद्यान वनि पहुतउ। मुनि प्रणमी करी धर्म्मोपदेशु सांभली राउ पूछइ—'भगवन्! माहरा मित्र[1] जिनदासरहइं आपद सहित संपद किसा कारण लगी हुई।' मुनि भणइ—'कौशांबी नामि नगरी, तिहा मातृभक्तु धनदत्त[2] नामि वाणियउ। सुमित्रा नामि तेहनी माता। जया नामि दयिता। "दानु एकु गृहस्थहंरहइं धर्म्मु मुख्य-वृत्ति करी कर्त्तव्यु"—इसउं वचनु सुमित्रा तेह आगइ कहइ। एकदा तिणि मतिमंति मातातणउं मनु दानाभिमुखु जाणी करी भार्या सहिति हूंतइ माता आगइ कहिइं-'माता[3]! सुपात्रहं अनइ[4] कृपापात्रहंरहइं यथारुचि आपणइ हाथि करी दानु दइ।' तउ पाछइ वासना-परायण हूंती सुमित्रा श्राविका[5] कृपापात्रहं सुपात्रहं रहइं यथारुचि दानु आपणइ हाथि करी दियइ। जिम जिम माता दानु दियइ तिम तिम हर्षितु[6] चित्तु हूंतउ दत्तु कहइ-"दइ, दइ, ताहरइ पसाइ माहरइ [घरि][7] घणउं धनु धान्यु छइ।" तदनंतरु दानफलु निश्चितु जाणी करी सनियमु अभिग्रहु तिणि लीधउ। विधिवत् ज्ञान-दर्शन-चारित्र-पात्रहं अनइ कृपापात्रहं प्रति दानु दे करी तउ भोजनु करीसु। तथा चोक्तं—

अभयं सुपत्तदाणं अणुकंपा-उचिय-कित्तिदाणं च।
दोहिं वि मुक्खो भणिओ तिन्नि वि भोगाईयं दिंति॥

तउ पाछइ पुत्रि अनइ वहू बिहुं बहू-कृत भक्ति अनुमत हूंती निवारितारति समाधि-सहित निजु अभिग्रहु पूरती हूंती, स केतलु एकु कालु वोलइ। अनेरइ दिनि नैमित्तिके दारुणि दुर्भिक्षि कहियइ हूंतइ जयानामि वहू आपणा भर्त्तार दत्त आगइ कहइ—'धुरिहिं दारुणु दुर्भिक्षु दीसइ, ताहरउं घरु पुत्र पौत्रादि परिवार संपूरितु वर्त्तइ। तिणि कारणि आपणी जणणी, हे कुटुंबाधार! दान हूंती निवारि।' अथानंतरु दत्ति माता दान हूंती निवारी। अथवा स्त्री-वशंगत निसत्त्व सत्त्व किसउं किसउं[8] न समाचरइं। सुमित्रा पुण तदा कालि इसउ अभिग्रहु मनमाहि करइ—'जे मूरहइं प्राण मुक्ति हुयइ तोई भोजन मात्रहीं तणइ दानि अकीधइ हूंतइ हउं भोजनु करउं नहीं।' आठ उपवास जउ सुमित्रारहइं हूया, तउ पाछइ दुर्यशोवाद शंकित हूंती जया तेहनउ वृत्तांतु दत्त आगइ कहिउ। तउ पाछइ बंधु-वर्ग्गु सहितु दत्तु सुमित्रारहइं पारणा कारणि महा निर्बंधु करइ। तउ सुमित्रा पारणा करिवा[9] कारणि उपवेशिति हूंती चित्ति

---

१ ખમાં मित्ररहइं. २ ખમાં दत्त શબ્દ નથી. ३ ખ मात. ४ ખમાં આ શબ્દ નથી. ५ ખ सुश्रा० ६ ખ हर्षित. ७ કમાં આ શબ્દ છુટી ગએલ છે. ८ ખમાં किसउ એક જ વાર લખેલું છે. ९ ખમાં આ શબ્દ પડી ગએલ છે.

चींतवइ–' अभोजन विषइ पात्रदानाभावरूपु कारणु जाणतु हूंतउ पुत्रु मूरहइं दानु दिवारइ नहीं। धिग् धिग् माहरा कर्म्मविडंबनरहइं। जइ किमइ एह आपणा परीसिया भोजनमाहा कहीएक महाऋषि रहइं अथवा दयापात्र कहीएकरहइं संविभागु करावउं तउ माहरउं अभिग्रहु पूजइ,[1] अपि तु श्लाघनीउ हुयइ। पुत्रु पुण्यवंतु अश्लाघ्यु न हुयइं।' इसउं ध्यायती सुमित्रारहइं जिसउ मूर्त्तिमंतु पुण्यराशि हुयइ, इसउ महामुनि एकु गृहांगणि आगिलइ गमइ आविउ देखइ। तदाकालि रोमांच-कंचुकित-गात्रु हूंती हर्षास्रु-बिंदु वृष्टि नयन हूंती मूकती भाजनु बिहुं हाथे ऊपाडी करी सामुही उठी करी[2] महऋषि आगइ भणइ–' भगवन्! महांतु अनुग्रहु मू ऊपरि करउ, पात्रु धरउ। प्रासुकेषणीउ आहारु विहरउ।' महासत्तु प्रासुकेषणीउ जाणी करी विहरइ। तउ तेह तणइ सत्वि करी संतुष्ट हूंती श्री शासनदेवता गंधांबु वृष्टि गृहांगणि करी प्रत्यक्ष होइ करी कहइ–' धन्ये! मासोपवासी महऋषि जु तइं पारणउं कराविउ। तेह ताहरा सत्व प्रभावइतउ संभूतु दानु जु धर्म्मु[3] तेह तणा महात्मइ[4] तउ दुर्भिक्ष हेतुक ग्रह उपशांत हूया।' इसउ गलगर्जितु करी देवी मेहु वरसाविउ। दुर्भिक्षु प्रवासाविउ। राजा आवी करी महा महोत्सवु करावइ। सकल लोकु सनालिकेराक्षत-पात्र-पाणि दत्त-माता वधावइ। दत्तु जया सहितु पाए लागी सुमित्रारहइं खमावइ। ति त्रिण्हिइ अथानंतरु निरंतरु[5] उत्तरोत्तरु धर्म्मु समाचरी करी आपणउं[6] आयु संपूर्ण्णु भोगवइ। तींहं माहा सुमित्रा-जीवु महाराज तउं हूयउ। दत्तात्मा जिनदासु ताहरउ मित्रु हूयउ। जयात्मा रत्नवती जिनदास तणी युवती हुई। दान-धर्म्म निरोधइतउ ताहरा मित्ररहइं लक्ष्मी सांतर हुई।' इसी परि पूर्व भवु सांभली गुरु नमस्करी[7] राजादिक सकल लोक नगरि गया। धर्म्मध्यानपर अतिविक्रमवंत राजेंद्र जिनदास रत्नवती जीव तिणिहिं जि भवि संयमु प्रतिपाली केवल ज्ञानु ऊपाडी मोक्षि गया।

पात्रार्थया रचितया रमया सुमित्रा–श्राद्धया महानरवरेंदिरया सहेह।
लेभे महोदयरमापि तथा भवद्भिर्लभ्येत हंत भविका भविकाम्यपुण्याः॥

॥ इति अतिथि संविभाग व्रत विषइ सुमित्रा कथा समाप्त॥

---

१ ખમાં **भाजइ नहीं** આવું વાક્ય છે અને તે જ વધારે શુદ્ધ લાગે છે. કમાં **पूजइ** પછી **नहिं ही** આવો શબ્દ પ્રથમ લખેલો પણ પાછળથી છેકી નાંખવામાં આવ્યો છે. २ ખમાં આ શબ્દ નથી. ३ ખ **जु दानधर्म्मु.** ४ **माहात्म्यइ.** ५ ખમાં માત્ર **अथ निरंतरु** આવું વાક્ય છે. ६ ખ **आपणपउं.** ७ ખમાં० **स्करी करी.**

प्रकीर्ण कथा.

१६. एक क्षुल्लक शिष्यनुं उदाहरण.

यथा—गच्छि एकि लघु क्षुल्लकु एकु वरसालइ बाहिरि बालकहं माहि वाहलइ त्रेपणउं पेट हेठइ देई अनइ तरिवा लागउ। महात्मा आविया, चेला तरता देखी करी वढइं[1]ति। तेतलइं गुरु आविया। गुरि कहिउं—' महात्माउ चेलउ लहुडउ, भोलउ, भागडउ। म [2]अडवडाउ।' ते ती वार चेलउ परहंसिउ। गुरे भणिउं—' म वच्छ! उगउ रहि। को काई नही कहइ।' तउ चेलउ घणेरउं परहंसिउ। गलसरण भरिवा लागउ। गुरे माथइ हाथु देई करी आपणपा आगइ कीधउ। वसति आविया। गुरे इरियावही थिर थिका आखरि आखरि अर्थु चीतवतां हूंता पडिक्कमी गमणागमणउं आलोइउं। तउ पाछइ वर्ति ए पुणि आलोइउं। चेला आगइ गुरे कहिउं—' वच्छ! इरियावही पडिक्कमतां छप्पन्नसइं त्रीस मिथ्या-दुष्कृत पद जाणी करी सवहीं जीवहंरहइं मिच्छामि दुक्कडु दीजइ।' तउ पाछइ चेलउ गुरु वचन तणइ अनुसारि इरियावहीनउ अर्थु चीतवतउ सवहीं जीवहंरहइं मिच्छामि दुक्कडु देयतउ इरियावही पडिक्कमतउ शुक्लध्यानाधिरोहइतउ केवल ज्ञानु ऊपाडी अनेक भविकलोक प्रतिबोधी करी सिद्धि गयउ।

१७. समाधि विषये जिनदत्त कथा.

समाधिगुण प्रकटीकारकु जिनदत्त श्रेष्ठि कथानकु लिखियइ—वैशाली नामि नगरी। तिहां छद्मस्थु श्रीमहावीरु एकवार उद्यानवनि वर्षाकालि देवकुलमाहि काउसग्गि रहिउ। तिणि नगरी परम श्रावकु जिनदत्तु नामि हूंतउ। श्रेष्ठिपद-भ्रष्टु हूंतउ जीर्णश्रेष्ठि इसइ नामि सुविख्यातु हूयउ। भिक्षा भ्रमण तणइ अभावि करी श्रीवीरु उपोषितु जाणी करी वांदी करी घरि आविउ। इसी परि नितु नितु करतइ वरसालउ तिणि लांघिउ। आपणा मनमाहि चीतवेवा लागउ—'जइ किमइ आजु माहरइ घरि श्रीमहावीरु पारणउं करइ तउ हउं तारिउ हुयउं।' इसउं ध्यायतउ हूंतउ विशुद्ध भावि हर्षित चित्तु घर बारि रही करी चींतवइ [जइ][3] इहां श्रीमहावीरु आवइ जंगम कल्पद्रुम जिम, तउ हउं मस्तकि बद्धांजलि हूंतउ भगवंतरहइं संमुखु

---

१ ખ चिढइं. २ ખ वडवडा. ३ કમાં આ શબ્દ નથી.

जाउं, त्रिन्हि प्रदक्षिणा दे करी सपरिवारु थकउ[1] वांदउं। तउ पाछइ घर माहि पाउधारावउं।[2] जंगम निधानु जिम [जिन][4] प्रधानहं प्रासुकेषणीयहं पात्रान्नहं करी भक्तिवसइतउ भवसिंधु तारणउं पारणउं करावउं । [5]पुनरपि नमस्करी करी केतलाईएकि पग भगवंतरहइं अनुगमनु करउं । पाछइ आपणपउं[6] धन्यु मानतउ हूंतउ आपणपइं रोषु ऊगरिउं धान्यु हर्षितु थिकउ जीमिसु । इसी परि मनोरथमाला जिनदत्तरहइं मनमाहि करता हूंता अभिनव श्रेष्ठिनइ घरि भिक्षानिमित्तु श्रीमहावीरु आविउ । अभिनव श्रेष्ठि चेडी हस्तगत कोमासहं करी पाराविउ । सुपात्र दान प्रभावि पंच दिव्य तींहां हूयां । तिहां राजादिक लोक मिलिया । अभिनवु श्रेष्ठि प्रशंसिउ । भगवंतु श्रीमहावीरु पारणउं करी अनेरइ थानकि विहरिउ । जिनदत्तु देवदुंदुभि निनादु सांभली करी चिंतविवा लागउ–' धिग् मूरहइं ! अधन्यु हउं जु माहरइ घरि भगवंतु न आविउ ।' इसी परि महाविषादु करतउ जिनदत्तु लोकि जाणिउ । किं बहुना; राजेंद्रि पुणि जाणिउ । धन्यु जिनदत्तु जु[7] इसीपरि भावना भावइ । तदा तिणि नगरी केवली आविउ । राजादिके लोके वांदी पूछिउ–' भगवन् ! जिनदत्तु पुण्यवंतु; किंवा अभिनवु पुण्यवंतु ? ।' केवली कहइ–' जिनदत्तु पुण्यवंतु ।' लोकु कहइ–' भगवन् ! भगवंतु अभिनवि पाराविउ, जिनदत्ति न पाराविउ । ' केवली तेहनी भावना मूल लगी कही करी कहइ–-'भावइतउ जिनदत्ति पाराविउं; द्रव्यतउ पुणि अभिनवु; अच्युत देवलोक-योग्यु पुण्यु उपार्जिउं। जइ देवदुंदुभि निनादु सांभलत नहीं तउ तेतींहीं जि वार केवलज्ञानु ऊपाडत[8] । भावरहिति अभिनवि पुणि सुपात्रदान प्रभावि सुवर्णवृष्टयादिकु फलु लाधउं । समाधि रहितु जीवु ईहिकू[9] जु फलु लहइ । समाधि सहितु पुणि स्वर्ग मोक्षादिकु फलु लहइ । तउ पाछइ जिनदत्तनी प्रशंसा करी राजादिक लोक घेरे गया ।

॥ समाधि विषइ जिनदत्त कथा ॥

---

१ ખમાં આ શબ્દ નથી. २ ખ पाउधारउं. ३ ખમાં નથી. ४ કમાં આ શબ્દ પડી ગયો લાગે છે. ५ આ બે અંક વચ્ચેનો પાઠ ખ પ્રતિમાં છુટી ગયો છે. ६ ખમાં નથી. ७ ખ માં નથી. ८ ખ ऊपार्ज्जत. ९ ખ इहलोकि.

१८. शास्त्राभ्यास विषयक कथा.



एकि गच्छि गंगातटि वास्तव्य बि भाइ संयमधर हूंता विहरइं । तींहं माहा एकु बहुश्रुतु हूंतउ सूरि हूयउ । पाठक शिष्यहं तथा सूत्रार्थ वांछकहं सदा सेव्यमानु हूंतउ विश्रामु कदाचित्त ल्हइ नहीं । रात्रि समइ पुणि सूत्रार्थ चिंतन प्रच्छनादिकहं करी विश्रामु न ल्हइं । तेहनउ बीजउ भाई मूर्खु सदा सुखी रहइ । आचार्यु तेहनउं सुखु देखी दुर्बुद्धि-बाधितु हूंतउ चित्ति चींतवइ--अहो ! माहरउ भाई सुखिउ । ज्ञान-विज्ञान हीनता करी किणिहिं ऊद्वेगियइ नहीं । हउं पुणि पलास-कुसुम जिम[1] निष्फलि ज्ञानि करी दुक्खितु हूयउ । तथा च किणिहिं तेह सरीखइं पंडिति पढिउं--

मूर्खत्वं हि सखे ममापि रुचितं तस्मिन् यदष्टौ गुणाः
निश्चिंतो बहु भोजनोऽत्रपमना नक्तं दिवा शायकः ।
कार्याकार्यविचारणेंधबधिरो मानापमाने समः
प्रायेणामयवर्जितो दृढवपुर्मूर्खः सुखं जीवति ॥

इसउं पुणि न चींतवइं---

नानाशास्त्रसुभाषितामृतरसैः श्रोत्रोत्सवं कुर्वतां,
येषां यांति दिनानि पंडितजनव्यायामखिन्नात्मनाम् ।
तेषां जन्म च जीवितं च सफलं तैरेव भूर्भूषिता;
शेषैः किं पशुवद्विवेकविकलैर्भूभारभूतैर्नरैः ॥

इसी परि ज्ञान प्रद्वेषवशइतउ तिणि ज्ञानावरणीउ कर्मु निबडु प्रमादु लगी बांधउं । सु ज्ञानातिचारु अणआलोई चारित्रु पाली मुयउ । चारित्र प्रभावि देवलोकि देवु हुयउ । चवी करी भरतक्षेत्रि किणिहिं आहीर कुलि पुत्रु हुयउ । अनुरूप कन्या परिणिउ । तेहनी दीकिरी जाई । सुरूप-तरुण-पुरुष-लोचन-मनोहारिउं जूवनु[2] संप्राप्त हुई । गाडानइ धुरि स दीकिरी बइसारी तेहनउ पिता नगरि चालिउ । आहीरहं सरिसउ[4] घी विक्रय करिवा कारणि । तेहनउं रूपु देखतां हूंतां अनेरां आहीरहं तणा मनहं जिम गाडां पुणि अपमार्गि जायतां भागां । घी रेडायां । तउ विलक्षथका आहीर तेहना पिता आगइ कहइ--" अशकटा शकटापिता ।" इसउं उपहास वचनु वली २ कहइं । एहनउ किसउ अर्थु--जेहनइ शकटु न

१ ખ માં નથી २ ख जौवनु ३ ख बइसाली ४ ख सरसउ.

हुयइं स अशकटा; अथवा ए कन्या नामि करी शकटा नही इति अशकटा । तथा–अशकटा पिता, अशकटानउ पिता जनकु अशकटापिता । अथवा शकटापित–शकट प्रापित हूंता अम्हे इणि, अशकटापित–शकट रहित कीधा । इसउ अर्थु सांभली करी लघुकर्मता लगी वैराग्य प्राप्तु हूंतउ दीक्षिरी कहीइसउं[1] परिणावी करी धनु तेहरहइं दे करी व्रत-संप्राप्तु हूयउ । कही आचार्यकन्हइ योग वहता हूंता, आदर परायण पढता हूंता, जहिंवार उत्तराध्ययन सिद्धांतनउं चउथउं अध्ययनु "असंखउ" इसइ नामि पढिवा आरंभिउं; तेतीवार पूर्वभव[2]बद्ध ज्ञानावरण कर्म उदइ आविउं । बि दीह आंबिल करी पढतउ थाकउं तेहंरहइं वृत्त तोई आविगां नहीं । किंबहुना एकूपदु आविउं नहीं । बीजइ दिनि अनुज्ञा समइ गुरु कहइ –'किसानी अनुज्ञा तूरहइं दीजइ?' सु कहइ–' भगवन् ! किसउ तपु एहनउ ?' गुरु भणइ–' जां आवइ नहीं तां आंबिलु तपु ।' तउ सु भणइ–' भगवन् ! मूहरइं अनेरइ तपि करी सरिउं[3] । सिद्धांति पुणि अनेरइं सरिउं । जां एउ नहीं आवइ तां आंबिलइ जि करिसु ।' तउ पाछइ निश्चल चित्ति[4] हूंतइ बारह वरिस आंबिल समाधि पूर्वक कीधां; तउ तेह कर्मनउ क्षउ हुयउ । सुखिहिं सगलु श्रुतु पढिउं । श्रुतभक्ति करी इहलोकि परलोकि सुखभाजनु हूयउ ।

---

१९. गौतम अष्टापद गमन कथा.

तथा–चंपा विहारु करतइ श्रीमहावीरि साल महासाल राजऋषिइं सरसउ श्रीगौतमस्वामि गणधरेंद्रु पृष्ठचंपा मोकलिउ । तिहां गागलि राजा, पिठरु गागलि तणउ पिता, यशोमती माता । निजमातुल साल महासाल अनइ श्री गौतम वांदिवा आविउ । वांदी धर्म्मु सांभली पुत्रु राजि बइसाली मायबाप सहिति गागलि श्रीगौतम कन्हइ दीक्षा लीधी । श्रीमहावीर वांदिवा चंपा आवतां भावना भावतां मार्गि पांचहीं रहइं केवल-ज्ञानु ऊपनउं । समवसरणि श्रीगौतम स्वामि त्रिन्हि प्रदक्षिणा दे करी पाछउं जोयइ, तउ पांचइ केवलि-सभा ऊपरी जायता देखइ । तउ भणइ–'ओरहा आवउ; श्रीमहावीरु वांदउ ।' भगवंतु भणइ–' गौतम ! केवलि आशातना म करि ।' तउ गौतमि खमाविया ।

अथ श्रीगौतमस्वामि जनमाहि भगवंत श्रीमहावीर तणउं वचनु सांभलिउं—

उसहस्स भरहपिउणो तिउलुक्क-पयासनिग्गय-जसस्स ।
जो आरूहुं वंदइ चरमसरीरो य सो साहू ॥

---

१ ख कहीसउ. २ ख मां भव नथी. ३ ख सरिसउं. ४ ख चित्तसमाधि.

जु तपोलब्धि करी अष्टापदि चडी श्रीऋषभ जिनरहइं वांदइ सु चरम सरीरी–तिणिहिं जि भवि मुक्तिगामी हुयइ। तउ जेतलइ अष्टापद यात्रा मनोरथु गौतमस्वामि मनमाहि करइ तेतलइ भगवंति यात्रा विषइ आदेसु दीधउ। तउ गौतमु अष्टापदि चालिउ। जिनवचनु पूर्वभणितु सांभली करी अनेराई कौंडिन्य दिन्न सेवालि नाम पांच पांचसइं तापस मुक्ति-निमित्तु[1] तिहां चालिया। तीहंमाहि कौंडिन्यु कुलपति पांचसइ तापस सहितु एकोपवासकारी पारणइ आर्द्र-मूल-फलाहारी, पहिली मेखलां गयउ। दिन्नु कुलपति पांचसइं तापस सहितु बिउं उपवासकारी पारणइ शुष्क-मूल-फलाहारी, बीजी मेखलां चडिउ। सेवाली कुलपति पांचसइं तापस सहितु त्रिउं उपवासकारी पारणइ शुष्क-सेवालाहारी, त्रीजी मेखलां गयउ। त्रिन्हइ कुलपति ऊपहरा चडिवा असकता हूंता पूर्विहिं तिहांई जि रहिया छइ। तीहंरहइं तिहां रहिया हूंतां श्रीगौतमस्वामि मूर्तिमंतु जिसउ पुण्यरासि हुयइ तिसउ उपचित-सर्व-देहावयवु कायकांति करी दीपित-दसदिसावकासु आविउ। ति तापस सवइ गौतमरहइं देखी करी चित्ति चीतवइं–'अम्हे तपि करी सोसिय-काय ईंहां चडी नही सकता, एउ इसउ उपचिति देहि करी यथाकामभोजी[2] संभावीतउ किसी परि चडिसिइ।' इसउं तीहं त्रिहुं तापसहं रहइं चीतवतां हूंता श्रीगौतमु गणनायकु रविकिरण अवलंबी करी अष्टापदि पर्वति चडिउ। तीहंरहइ[3] मनि महांतु विस्मउ ऊपनउ। तउ पाछइ मनमाहि चीतवइं–'जइ किमइ पाछउ वलतउ अम्हमाहि आविसिइ तउ अम्हे एहना शिष्य होउसिउं[4]। श्रीगौतमस्वामि दक्षिणद्वारि संस्थित संभव, अभिनंदन, सुमति, पद्मप्रभ नाम चत्तारि जिन वांदइ। पश्चिमद्वारि संस्थित सुपार्श्व, चंद्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनंत नाम आठ जिन वांदइ। उत्तरद्वारि संस्थित धर्म्म, शांति, कुंथु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, वीर नाम दस जिन वांदइ। पूर्वद्वारि संस्थित ऋषभ, अजित नाम बि जिन वांदइ। चउवीसइ जिन निज-निज-वर्ण-प्रमाण-लांछन-सहित देव-दानव-विद्याधर नरेश्वर-महित विधिसउं वांदतउ संस्तवतउ हूंतउ विशिष्ट भावना भावतउ सगलु दिवसु सीम देवगृह सिंहनिषद्यायतन नाम प्रसिद्ध माहि रहिउ। संध्या समइ देवगृह बाहिरि शुद्ध शिलातलि बइठउ समाधिसउं प्रतिक्रमणु करी स्वाध्याउ करइ। तेतलइ प्रस्तावि चैत्यवंदना-निमित्तु समागतु धनदयक्षु श्री गौतमस्वामि देखी करी भावइतउ वांदी आगइ बइठउ। श्रीगौतमस्वामि तदाकालि साधुगुणस्तव संसूचकु पांचसइ ग्रंथ प्रमाणु पुंडरीकाध्ययनु वखाणिउं। धनद तणउ इंद्र-समानिकु पुंडरीकाध्ययनु सांभली करी मुखि अणावइ। अर्थु हियामाहि धरइ। सम्यक्त्वु तदाकालि तिणि उपार्जिउं। सु आयुः क्षयि मरी करी दश पूर्वधरु श्रीवज्रस्वामि हुयउ। बजिइ दिनि प्रभात

---

१ ખમાં આ વાક્ય નથી. २ ખં भोगी. ३ ખ तीहंनई. ४ ખ होइसइं.

समइ पुनरपि चउवीस जिन वांदी करी श्रीगौतमस्वामि तीणि हिं जि मार्गि आवतउ हूंतउ तापसहं माहि आविउ। तापसे वांदी करी वीनविउ—'भगवन्[1]! पसाउ करी अम्ह रहइं दीक्षा दियउ।' गौतमस्वामि योग्यता जाणी करी सर्वे दीक्खिया। पारणावसरि पूछिया—'वच्छउ! किसी इच्छा तुम्हरहइं छइ?' तेहे चीतविउं—अम्हारी आंत्र भूख करी दाधी छइं; जउ मागिउं भोजनु लाभइ तउ मनोवांछितु कांइं न मागियइं—इसउ चीतवी करी परमान्न भोजन मागिउं। श्रीगौतमस्वामि पात्रु प्रतिलेखना पूर्वु ले करी विहरिवा पहुतउ। किणिहिं संनिवेसि कुणही कुटुंबी[2] तणइ आपणइ भावि परमान्नु नीपनउं हूतउं तेतलइ प्रस्तावि तेह तणइ घरि श्रीगौतमस्वामि आविउ। तिणि कुटुंबी आपणपउं धन्यु मानतइ हूंतइ भावि करी श्री गौतमु परमान्नु पात्रपूरि विहराविउ। खीरि थोडी, टीला पुणि एतलीं खीरि अम्हरहइं नीपजइं नही। अथवा अचिंतनीय महिमा महात्मा तणउ छइ। इसउं चीतवी करी पारणा करिवा गौतमि अनुज्ञात हूंता बइठा। अखीण महाणसी लब्धि तणइ प्रभावि जांसीम आपणउ अंगूठउ बाहिरउ काढइ नही तांसीम पात्रु ठालउं थाइ नही; तिणि कारणि भगवंतु गौतमु तींहं रहइं परीसइ। तउ पाछइ जि त्रिहुं उपवासे करी पारणउं करतां सेवाली तापस तींहंरहइं पारणउं करतां गौतम गुण अनुमोदतां शुक्ल ध्यान-धारा वर्तमानहं हूतां केवलज्ञानु ऊपनउं। जि बिहुं उपवासे पारणउं करता दिन्न तापस तींहं रहइं मार्गि आवतां—जेह तणउ गौतमु शिष्यु इसउ लब्धिपात्रु छइ सु गौतम तणउ गुरु किसउ छइ—इसी परि चितवतां शुक्लध्यान धाराधिरोहइतउ केवल ज्ञानु ऊपनउं। जि एकि उपवास पारणउं करता कौडिन्य तापस तींहं रहइं समवसरणु देखी श्रीमहावीर देशनाध्वनि सांभली करी शुक्लध्यान लभइतउ केवलज्ञानु ऊपनउं। श्रीगौतमस्वामि श्रीमहावीरु वांदी करी पाछउं जोयइ तउ सवइ तापस केवलि सभा ऊपरि जायता देखी भणइ—'वच्छउ आवउ, श्रीमहावीरु वांदउ।' भगवंतु भणइ—'गौतम! केवलि आशातना म करि।' तउ गौतमस्वामि खमावी यथास्थानि पहुतउ। श्रीमहावीरि मुक्ति पहुतइ हूंतइ गौतमस्वामि छिन्न-गुरुस्नेह बंधनु हूंतउ केवलज्ञानु उपाडी बारे[3] वरसे पाछइ मुक्ति पहुतउ।

॥ श्री गौतम कथा समाप्त ॥

---

१ ५१ प्रभु. २ ५१ कुडंबी ३ ५१ बार.

२०. विद्या विषये काश्यप अने ब्राह्मण कथा.

विज्जाए कासवसंतीयाइ दगसूयरो सिरिं पत्तो ।
पडिओ मुसं वयंतो सुयनिन्हवणाइय अपेच्छा ॥

काश्यपु नावी तेहरहइं किणिहिं विद्याधरि तूठइं हूंतइ विद्या दीधी । तेहनइ प्रभावि तेहनी भांडी आकाशि थिकी तेह सरसी चालइ । अनेरइ दिवसि दगसूकरु–भणियइ ब्राह्मण तिणि दीठी । तउ तिणि ब्राह्मणि तेहनी सेवा कीधी । विद्या तेह कन्हा ब्राह्मणि लीधी । विद्या प्रभावि तेहनी धोयती आकाशि थिकी तेह सरसी चालइ । तउ लोकु आगेइ ब्राह्मणरहइं भक्ति करतउ, ते उ आश्चर्यु देखी करी घणेरउं तेह ब्राह्मणरहइं भक्ति-पूजा-सत्कार-बहुमान करिवा लागउ । इसीपरि ब्राह्मणु काश्यपनी विद्या करी श्रीप्राप्तु हूयउ । अनेरइ दिवसि अनेरइ किणिहिं पूछिउं सु ब्राह्मणु–' भगवन् ! महंतु तुम्हारउ प्रभावु, सु तपतणउ प्रभावु किंवा विद्यातणउ प्रभावु ? ' । ब्राह्मणु भणइ–' विद्यातणउ प्रभावु एउ । ' ' ए विद्या किहां हूंती लाधी ? ' विप्रु भणइ–'हिमवंत गिरि वर्तमानि गुरूयइ गुरि तूसी करी आपी । ' इसा कथन समकालिहिं जि आकाशि हूंती धोयती भूमि पडी । पाछइ सु ब्राह्मणु लघुता प्राप्तु हूउ ।

२१. लोभालोभ विषयक कथा.

अत्र महापरिग्रहारंभ निवृत्तानिवृत्तहं बिहुं श्रेष्ठिहिं तणउं कथानकु गुणदोष-विकासिकु कहियइ । नाशिक्यु नामि नगरु । तिहां नंद नामक बि श्रेष्ठि वाणिज्य-कला-कुशल हूया । तींहंमाहि एकु गृहि-धर्म्म-परायणु व्यवसाय सुद्धि जुक्तु हूंतउ आपणां गुणहंकरी धर्म्मनंदु इसी ख्याति प्राप्ति हूयउ । बीजउ लोभाभिभूतु कूट वाणिज्यकला लगी लोभनंदु इसी ख्याति प्राप्तु हूयउ । अनेरइ दिवसि सरोवरि खणीतइ पूर्व संगोपित सुवर्णमय कुसा नीसरिया । लोहमइ बुद्धि वसइतउ महंतइ खनकहंरहइं आपिया । तेहे पुणि ति कुसा ले करी धर्म्मनंदि रहइं दिखालिया । कहिउं–ईहंवडइं अम्हरहइं घृत तेल धान्यादि विसाहणउं आपि । ' तिणि पुणि अतिभारादि कारणि करी सुवर्णमय जाणी करी भणिउं–'एहे मूरहइं काजु नहीं । ' तउ पाछइ तेहे ति लोभनंदिरहइं दिखालिया । तिणि पुणि ति सुवर्णमय जाणिया । पाछइ शीघ्रु हाटमाहि लांखी करी तींहंरहइं विसाहणउं घणउं दीधउं । तीहं कन्हा कुशानी उत्पत्ति

पूछी करी कहइ–' मूरहइं लोहमाहि काजु छइ । तुम्हे कुशा मूहींजिरहइं देजिउ । हउं तुम्हंरहइं घणउं विसाहणउं देसु । ' तउ पाछइ ति ओड्ड हृष्ट तुष्ट हूंता तीहींजिरहइं नितु नितु कुशा आणी दियइं । विसाहणउं लियइं । अति लोभ वसइतउ अल्प मूल्य वडइं सुवर्ण कुशा लियतउ तृप्तउ न थाइं । पुत्रहं पूछताईं हूंतां कुशानउ परमार्थु कहइ नहीं । अनेरइ दिवसि कुशा ग्रहण विषइ शिक्षा पुत्रहंरहइं देकरी प्रत्यासन्नग्रामि मित्रनइ ।विषइ प्रेमु वहतउ वीवाहि गयउ । खनके कुसा बि आणी करी श्रेष्ठिपुत्रहं हाथि आपिया । तेहे कोप वशइतउ आस्फाली करी फोडिया । सुवर्णमय झलहलता देखी करी लोकु घणउ मिलिउ । तेतलइ श्रेष्ठि पुणि गाम हूंतउ आविउ । सु वृत्तांतु जाणी करी श्रेष्ठि अति विषादवंतु हूयउ । रीस वसइतउ श्रेष्ठिइं आपणाई जि पग पाहाणि आहणी भागा । किसइ कारणि, जइ ए न हुउतइ तउ हउं गामि न जायतइ । धिग हुउ ईहंरहइं । इति पाद-निंदा करतउ आर्त्त-रौद्र-ध्यान परु हूयउ । राज पुरुषहं कुशावृत्तांतु राजा आगइ सांभालिउ । राजेंद्रि खनक पूछिया । तेहे सगलु वृत्तांतु कहिउ । तदनंतरु धर्म्मनंदु पडिहार कन्हा तेडाविउ । लोभनंदु निग्रहाविउ । कृत-प्रणाम धर्मनंद आगइ राजेंद्रि कहिउं–' कुशा किसइ कारणि तइं न लीधाई । सुवर्ण तणा किसइ कारणि न कहियाई । तिणि भणिउं–परिग्रह-प्रमाण-व्रत-भंग-भय-वसइतउ तथा चोरित-वस्तु-ग्रहण-नियमइतउ न लीधाई । असत्य-वचन-भाषण-नियमइतउ न कहियाई । तओ राजा श्रेष्ठिगुण-रंजितु हूंतउ धर्म्मनंदनी प्रशंसा करइ–' अहो पाप भीरुता ! अहो निर्लोभता ! अहो विवेकिता !; श्रेष्ठिन् ! तउं सर्व ही पूज्यु ।' इसी परि वार वार सभामांहि वर्णवी करी वस्त्रालंकार-सत्कार-करण-पूर्वु आवासि धर्म्मनंदु पाठविउ । लोभनंद आगइ राजा कहइ–' रे पश्यतोहर ! अज्ञान खनक किसइं कारणि तइं मुसिया ? ' इसउं भणी करी सर्वस्व-हरणु विडंबनादिकु करी महाकष्टि लोभनन्दु राजेंद्रि मेल्हिउ । धर्म्मनंदु लोभ-वर्जितु इह परत्र कीर्त्ति सुपुण्य भाजनु हूयउ । लोभनंदु लोभाभिभूतु इह प[रत्र] अकीर्त्ति अधर्म भाजनु हूयउ ।

२२. जीवित मरण आशंशा विषय कथा.

जीविताशंशा मरणाशंशा विषइ धर्मघोष धर्मयश इसा नामहं करी प्रसिद्ध छइं महऋषि तींह तणी कथा लिखियइं–

इहीं जि भरतक्षेत्र माहि कौशांबी नामि नगरी हूंती । तिहां अजितसेनु नामि राजा । धारिणी नामि राणी । अनेरइ वरसि बहु श्रुत गुण विश्रुत धर्म्मवसु इसइ नामि आचार्य संजम

गुण समाहित तिणि नगरी वृद्धावासि रहिया। तींहं तणा बि शिष्य एकु धर्मघोषु बीजउ धर्मयशु बिहुं तींह महासत्तहं संलेखना करिवा आरंभी। तिहां विगतभया इसइ नामि यथार्थ नाम प्रवर्तिनी हूंती। तिणि संघु पूछी करी अणसणु लीधउं। चमत्कारकारिणी तेहरहइं प्रभावना संघि करावी। तिणि देवलोकि गई हूंती पुनरपि तेह तणा कलेवररहइं सज्जनानन्दकारिणी पूजा पौरजनहं करावी। सु पूजाडंबरु देखी करी धर्म्मघोषु ऋषि मनमाहि चींतवइ–'धन्य धन्य ए प्रवर्तिनी, जेह जीवतीही मृतहीरहइं इसी प्रभावना हुई। एह पुरीमाहि किमइ हउं हिवडां अणसणु करउं तउ मूरहरइं पुण इसी परि प्रभावना हुयइ।' इसउं चीतवी करी धर्मघोषि अणसणु लीधउं। बीजउ धर्मयशा मुनि चीतवइ–लोकि जाणावियइ किसउं छइ, हउं आपहे एकांति जाई साधना करउं। तथा च भणितं–

किं परजण बहु जाणावणाइ वरमप्पसक्खियं सुकयं।
इय भरहचक्कवट्टी–पसन्नचंदो य दिट्ठंता ॥

इसउं चीतवी करी गुरुनी अनुमति ले करी उज्जयिनी अनइ वच्छगा नदी अंतरालि गिरिकंदरि जाई करी पादपोपगमनि अनशनि रहिउ। जिम सिंहु निर्भीकु हुयइ तिम थाई एकाकी सुस्थिर चित्तु हुयउ। एतलइ प्रस्तावि उज्जयिनी नगरी-मंडनु चंडप्रद्योत-नंदनु धारिणी-कुक्षि संभवु पालकु इसइ नामि अवनिपालकु हूयउ। तेहनउ लहुडउ भाई गोपालु इसइ नामि युवराजा लघुकर्मभावइतउ सु सुगुरु-पादमूलि दीक्षा-ग्रहणु करइ। पालक तणा अवन्तिवर्द्धन राष्ट्रवर्धन इसां नामहं करी विख्यात बि पुत्र हूया। ति पुत्र राज्यि अनइ यौवराज्यि थापी करी पालकि पुण दीक्षा लीधी। धारिणी नामि राष्ट्रवर्द्धन तणी भार्या रूपि करी जिसी मभार्या हुयइ तिसी हुई। अवंतिसेनु इसइ नामि तेह तणउ पुत्रु हूयउ। अनेरइ दिनि उद्यानवनि क्रीडा करती धारिणी अवंतिवर्द्धनि ज्येष्ठि निजनेत्र-कौमुदीसमान रूप दीठी। तउ पाछइ सकामु थिकउ दूतिकामुखि प्रार्थिवा लागउ। धारिणी भणिउं–'महाराज! जे आपणी लाज नहीं तउ किसउं भाई तणी लाज नहीं।' तउ पाछइ अवंतिवर्द्धन कामातुरि हूंतइ आपणउ भाई राष्ट्रवर्द्धनु कूडु करी मारिउ। अथवा कामी किसउं किसउं न करइं।

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेन्द्रियाणां
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालंबते तावदेव।
भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथयुषो नीलपक्ष्माण एते
यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुखो दृष्टिबाणाः पतंति ॥

तदाकालि धारिणी गर्भ-धारिणी आसन्न-प्रसव हूंती निजशील-रत्न-सर्वस्व-रक्षा कारणि राष्ट्रवर्द्धन नाम मुद्रा सहित हूंती नासी करी तेतींहीजवार वेगिकरी कौशांबी नगरी गई। राय तणी

थानशाला माहि रही हूंती महासती तींहंकन्हइ दीक्षा लीधी। दीक्षा-विघ्नकारणि गर्भु कहिउ नहीं। पाछइ प्रवर्तिनी गर्भि जाणियइ हूंतइ प्रच्छन्नवृत्ति सराहवी। प्रस्तावि जिम मेरुभूमि कल्पतरु प्रसवइ तिम तिणि पुत्रु जाइउ। साध्वीरहइं पुत्रु अनर्थु जाणी करी जिम को जाणइ नहीं तिम राजगृहांगणि नाम मुद्रांकितु पुत्रु तिणि मेल्हिउ। प्रभात समइ अजितसेनु राजा जिसउ मणिपुंजु हुयइ इसउ सु बालकु कांतिमंतु देखी करी अपुत्र छइ आपणी राणी तेहरहइं हर्षितु थिकउ पुत्रु करी आपइ। गूढ-गर्भा राणी हूंती इसी परि प्रकाशी करी पुत्रजन्म महोत्सवु अजितसेनु राजेंद्रु करावइ। मणिप्रभु इसउं नामु यथार्थु नामु करइ। प्रवर्तिनी पूछी हूंती धारिणी भणइं–'मृतु पुत्रु जाइउ सु हवडांई जि लाखी करी हउं आवी। अथ पुत्रप्रेमभावइतउ राणीसउं धारिणी प्रीति करइ। अजितसेनि दिवंगति हूंतइ मणिप्रभु राजा हूयउ। सु अवंतिवर्द्धनु अनुज राष्ट्रवर्द्धनरहइं धारिणी तणइ कारणि मारी करी राष्ट्रवर्द्धन युवराजेंद्र अनइ धारिणी विहूं हूंतउ भ्रष्टु हूयउ हूंतउ अति वैराग्य भावइतउ भाईनउ पुत्रु अवंतिसेनु राज्यि बइसाली करी दीक्षा लियइ। अनेरइ दिनि अवंतिसेनि उज्जयिनी नायकि कौशांबीनायकु मणिप्रभु दूतमुखि भणाविउ–'मूरहइ क्रमागतु दंडु दे करी सुखिहिं निर्भयथिकउ राज्यु भोगवि।' तउ पाछइ मणिप्रभु भणावइ–'सव्याजु ताहरउं राज्यु हउं लेसु।' इसउं भणी करी तिणि दूतु पाछउ मोकलिउ। तउ पाछइ दूतमुखइतउ सु अवंतिसेनु राजेंद्रु सांभली करी जिम कलकलतउं घृतु जलबिंदु-पाति झाल मेल्हइ तिम कोपि करी प्रज्वलतउ हूंतउ सर्वाभिसारि मणिप्रभ ऊपरि कटकी करइ। त्वरित-गति आवी कौशांबी–विद्वंसबुद्धि हूंतउ स बिंहुगमा वेढु घाती रहिउ। मणिप्रभु पुण संग्राम-सज्ज सुभटवज्ज करी परसुभट तृणसमानइ अवमनतउ हूंतउ कोट्टमाहि प्रगुणु थाई रहिउ। तदाकालि नगर लोकु परकटक भयातुरु हूयउ। निखातोत्खात चिंता करी व्याकुल हूयउ। विहारोचार-भूमिरहइं संकीर्णता-भावइतउ यतिलोकु असमाहितु हूयउ। पदि २ संयम-विराधना आत्म-विराधना च होइवा लागी। तउ पाछइ जिणि धर्मघोष मुनि अनसणु कीधउं हूंतउं तेहरहइं सुख-तप सुख-संयम वार्तारहइं पूछणहारु को हूयउ नहीं। जीविताशंशी सु धर्मघोषु मुनि पूजा प्रभावना तणा अभावइतउ आर्तध्यानि वर्तमानु हूंतउ मूयउ। जिम पाषाणु लांखियइ तिम कोट ऊपरवाडइ ऊलाळीकरी लांखिउ। अथ धारिणी मणिप्रभु वृत्तांतु मूललगी कही करी प्रवर्तिनीरहइं वीनवइ–'ए सहोदर भाई बे अज्ञान भावइतउ राज्यकारणि विढइं छइं। जु उ तुम्हे भणउ तउ हउं वारउं।' तउ पाछइ प्रवर्तिनी अनुज्ञातु हूंती धारिणी साध्वी मणिप्रभ आगइ सर्व स्वरूपु कही करी भणइ–'तूरहइं वडा भाईसउं युद्धु कारिवा न बूझियइं।' इसी परि भणिउ हूंतउ अभिमान लगी जउ निवर्तइ नहीं तउ पाछइ धारिणी अवंतिसेन कन्हइ शीघ्रु गई। अवंतिसेनि प्रणमी करी पूछी हूंती धारिणी सगलु वृत्तांतु

कहइ-‘ वच्छ ! आपणा अनुज लहुडा भाईसउं किसउं झूझु। ’ तउ पाछइ संग्राम संरंभु मूंकी करी मणिप्रभ मिलिवा निमित्तु अवंतिसेनु ससेनु हूंतउ चालिउ। मणिप्रभु पुण अवंतिसेनु मिलिवा आवतउ सांभली करी साम्हउ आविउ। जेतीवार दृष्टिमेलावउ हूयउ तेतीवार बे वाहन हूंता ऊतरी करी आपणपा माहि हियामाहि जिम पइसणहार हुयइं तिम साई ए आविया। महाप्रवेशक महोत्सवपूर्वु नगरी माहि आविया। केतलाई दिवस प्रेमानुबंध वश हूंता तिहां रही करी अवंती ऊपरि चालिया। तींहं समा मंत्रित हूंती व्रतिनी पुण सरसी चाली। मार्गि जायतां हूंतां वच्छगा नदीनइ तटि कटक वासियां। ति महासती गिरिकंदर हूंतउ ऊतरतउ चडतउ लोकु अस्तोकु देखी पूछइं। लोक मुखइतउ धर्मयशा मुनि तिहां पादपोपगमनि अनसनि वर्तमानु सांभलइ। तेहे राजेंद्रहं आगइ कहिउं। तउ पाछइ राजेंद्र सहित हूंती व्रतिनी गिरिकंदरि पहुती। मुनि नमस्करिउ। महिमा महांत करावी। राजेंद्र चालणहार हूंता व्रतिनी पुण सरसी तेडइं। व्रतिनी भणइं-‘अम्हे अनसनी मुनि मूंकी करी नहीं आवउं।’ तउ पाछइ राजेंद्र पुण रहिया। नितु नितु महात्मारहइ वांदइं पूजइं। रास भास गीत नाच पूजा करावइं। महासती आराधनामृतपानु करावइं। पंच परमेष्टि महामंत्रु समरावइं। इसी परि धर्मयशा महऋषि रहइं निस्पृहवृत्ति भाविहिं हूंतइ धर्मानुभावि शून्यहिं स्थानि महिमा हूयउ। समाधि सहितु सु महाभागु स्वर्गसुख भाजनु हूयउ। जिणि धर्मघोषि महऋषि पूजा तणी स्पृहा कीधी तेहरहइं अपभ्राजना हुई।

छिन्नोर्वीरुहपातवन्निजवपुः कृत्वा मनोऽप्यस्पृहं
येनैवं मुनिपुंगवेन विदधे प्रायो व्रतं निस्तुषम्।
शून्येऽभून्महिमाऽस्य धर्मयशसोऽन्यस्याऽन्यथाऽन्यत्र तु
श्रुत्वेति क्रियतां तदित्थमसुमानुच्चैर्गतिं लभ्यताम्॥

॥ इति जीवितमरणाशंसा विषइ धर्मयश कथा ॥

२३. एक वृद्ध डोसीनुं उदाहरण.

ग्रामि एकि अति दरिद्रताकरी दुक्खित डोकरि एक हूंती। हंसउ इसइ नामि तेहनउ दीकिरउ एकु हूंतउ। सु आजीविका कारणि ग्रामलोक तणा वाछरू चारतउ। अनेरइ दिनि संध्यासमइ उद्यानवन हूंतउ वाछरू ले आवतउ हूंतउ सु सर्पि डसिउ, मूर्च्छा आवी; तिहां ई जि महाविषवेग संगतु हूंतउ हेठउ ढलिउ। जिम काष्ठु निश्चेष्टु हुयइ तिम थाई महीपीठि

पडिउ। किणिहिं एकि ग्राममाहि आवी करी डोकरी आगइ कहिउ—ताहरउ दीकिरउ सर्प्पि डसिउ। बाहि रि अचेतनु थाई पडिउ छइ। तउ पाछइ स डोकरी तेतींहीं जि वार मंत्र तंत्र यंत्र पंडित मेली करी रोयती हूंती दीकिरा कन्हइ आवी। मांत्रिक तांत्रिकादिक सु बालकु मृतकु इसउं जाणी करी जिम गया हूंता तिमहीं जि पाछा आविया। डोकरी पुण स एकलियं जि शोक शंकु संकीलित-चित्त हूंती तिहां रही। पुत्र तणइ कर्ण्णमूलि होई करी जिम दिगंगना रहइं पुण रुदनु आवइ तिम करुणस्वरि उच्चैस्वरि "हा पुत्र! हंस, हंस" इसी परि अश्रांत स्वांत बोलावती हूंती किणिहिं एकि महासंतापि संतापितांग हूंती सकल रात्रि अतिक्रमावइ। "सुत वत्स! हंस, हंस, ऊठि" इसी परि पुत्र आगइ भणती तेह डोकरिरहइं जिम एक गमइ पूर्वदिसिमुख-शोभावतंसु हंसु सहस्रकरु ऊगिउ; तिम तेहनउ पुत्रु बीजइ गमइ हंसु पुण ऊठिउ। तउ पाछइ कमळवण जिम तिणि समइ विहसइं तिम तेह डोकरितणां नयन पुण विहसियां। सु बालकु जीविउ इसउं सांभली करी ग्रामलोकु सगलो धाई तिहां आविउ। प्रभात समइ मांत्रिक तांत्रिकादिक पुण तिहां आविया। मनमाहि आश्चर्यु करता हूंता तेह डोकरि आगइ इसउं कहइ- 'तइं एहरहइं किसउं कीधउं?' वृद्धा भणइ—मइ "हंस हंस" इसी परि एहनइ कर्णि मूलि जपती रोयती थिकी रात्रि नीगमी। गारुड मंत्र माहि "हंस हंस" ए बीजाक्षर छइ। तींहंनइ प्रभावि विषु उपशमिउं। इसउं गारुडिके जाणिउ।

॥ इति वृद्ध डोकरि एकनउ उदाहरणु ॥



श्रावक व्रतादि अतिचार

[लेखन समय–विक्रम संवत् १४६६.]

॥ सर्वज्ञाय नमः ॥

नाणंमि दंसणंमि य०—ज्ञानाचारि दर्शनाचारि चारित्राचारि तपाचारि वीर्याचारि पंचविध आचारि जु को अतीचारु पक्ष-दिवस माहि सूक्ष्म बादर हूउ ते सवि हु मनि वचनि काइं करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

१. तत्र ज्ञानाचारि आठ अतीचार–**काले विणए**–ज्ञान थिरावली, पडिकमणसूत्र, उपदेश माला, कालवेला तथा काजु अणउधरिइं पढिउं, विनयहीन पढिउं, उपधानहीनु पढिउं, बहुमान-हीन पढिउं। अनेरा कन्हइं पढी अनेरु गुरु कहिउ। देववंदण वांदणइं, पडिक्कमणइं सज्झाउ करतां, पढतां, गुणतां कुडउ अक्षर कान्हइं मात्रि ओछओ आगलु भणिओ। कूडउ अर्थ वेकूडा कहिया। ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कमली, सांपुडां, सांपुडी, दस्तरी, वही, ओलीयां प्रति पग लागु, थूकु लागउं। थुंकिइ अक्षर मांजउ, सीसइ दीधउं। कान्हि छतइं आहार नीहार आशातन हुई। ज्ञानवंतसिउ प्रद्वेक्षितु प्रज्ञापराधि विणासिउ। विणसतउ ऊवेखिउ। हुंती शक्ति सारसंभाल [न] कीधी। ज्ञानवंतसिउं प्रद्वेष मत्सर चींतविउ। आसातन कीधी। पढतां गुणतां अंतराय नीपजावउ । प्रज्ञाहीनइतउ वितारिकिउ। आपणा जांणवानु गर्व चींतविउ। ज्ञानाचार विषइ जु को अती० ॥

२. दर्शनाचारि आठ अतीचार—**निस्संकिय**—देव, गुरु, धर्म तणइं विषइ निसंकपणउं न कीधउं। तथा एकांत निश्चय न कीधउ। धर्मसंबंधिया फलतणइं विषइ निसंदेह बुद्धि धरी नही। तपोधन तपोधनी मलि (?) मलिन देक्षी दुगंछ नीपजावी। मिथ्यात्वी तणी प्रभावना देषी मूढ दृष्टिपणउं कीधउं। संघमांहि गुणतणी अनवृंहणा अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति अभाक्ति आशातन, साधर्मिकसिउं कलह कर्मबंध कीधु। देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारणद्रव्य भाक्षितु ऊपेक्षितु। प्रज्ञापराधिइं विणासिउं। विणसतउ ऊवेखिऊ। हूंती शाक्ति सारसंभाल न कीधी। अपवित्र धोति विण मुखकोस पाखइ देवपूजा कीधी। बिंब प्रति वासकुंपी धूपधाणा कलसतणउ ठवकउ लागउ। बिंब हाथ विछूटउं। माल नेचा तणउ द्रव्य वाहिलुउ न पिउ। देहरइं पोसालइं मल श्लेष्मा छाहिउ। हासां खेड कतूहल विकथा कीधी। जिनभवनि चुरासी आसातन, गुरुप्रति तेत्रीस आसातन महि ज कांई हुइ। ठणहरी हारविउ, हाथ पाडिउ। पडिलेहवु वीसारिउ। पडिलेहतां आलस कीधउं। अनेरू जु को० ॥

३. चारित्राचारि आठ अतीचार—**पणिहाण जोगजुत्तो०**—ईर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदाननिक्षेप समिति, परिष्ठापनिका समिति—पांच समिति; मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति-त्रिणिगुप्ति; चारित्रनउ योग गुणवंत प्रति सदैव जोईइ वशेष सामाइकि पोसइं लीधइं। निश्चउ पालतां ज कांई खंडन विराधन हुइ, पक्षदिव० ॥

४. विशेषतश्चारित्राचारि तपोधनतणइ धर्मि—**वयछक्क कायछक्कं**—व्रतषट्कि पहिलइं प्राणातिपात विरमण व्रति सूक्ष्म बादर त्रस स्थावर जीवसंघ संघट परिताप उपद्रव हूउ। बीजइं मृषावाद विरमणव्रति क्रोध, लोभ, भय, हास्य लगइं जूठउं बोलिउं। त्रीजइ अदत्तादान व्रति—"स्वामि जीवादत्तं, तित्थयरदत्तं तहेव य गुरूहिं"—स्वामि अदत्त, जीव अदत्त, तीरथंकर अदत्त, गुरु अदत्त चिहुं अदत्तमांहि अणमोकल्याविउं कांइं लीधउं। चउथइ मैथुन परिहारव्रति—'वसहि कह०—' नव ब्रह्मचर्य गुप्ति तणइं विषइ खंडन विराधना हुई। पांचमइ परिग्रह विरमण व्रति—'इच्छा मुच्छा गहिय०'—धर्मोपगरण ऊपरि इच्छा मूर्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिक उपगरण पर्वतिथि पडिलेहुं नहि। छठइ रात्रिभोजन विरमण व्रति असूर पाणी वावरिउं। पात्रइं पात्राबंधि छांटु रहिउ, खरहंटु रहिउ, लेप ओषड संनिधि लागी हुइ। अनेरु छठइ व्रति ज को०॥ काय षट्कि गांम तणइं पइसारि नीसारि पग पडिलेहा नही। माटी मींठा पाषाण चातलीनु खेरउ चंपाणउ। अपकाय सूक्ष्म बादर मध्यम ठाघारी फोसणा लागां। जलावगाहुउ। ऊलषु हालिउ, लोटउ ढलिउ। ठार हरतण धूंहरिनी विराधना हुई। तेउकाय वीज देवा ऊजेही लागी। विहरतां ऊंबाड हालिउं छांटा लागा, तेउकाय विराधना हुई। वाउकाय ऊघाडि मुखि बोलिउं, फूंक दीधी, महावाय वाजतइ कल्प कांबलीना छेहडा ऊडिया हुइं। वनस्पतिकाय नालि फूलि सेवाल हरीका बीका फलफूल तणा संघट्ट हूया। त्रसकाय बेंद्री, तेंद्री, चउरिंद्री पंचेंद्री जीव दूहविउ हूइं। परिताप उपद्रव हुउ। काक बक बीहावियां। ढोर लंउंडिया, बिलाडां त्रासवियां हइं। कायषट्कि विषईउ अनेरु० ॥

५. अकल्पनीय पिण्ड शय्या वस्त्र पात्र भोगावियां। शय्यातर पिंड लागउ। उपयोग कीधा पाखइ विहरिउ। दात्री दोष त्रस बीय संसक्त पश्चात् कर्म पूर्व कर्म शंकित पिंड भोगविउ हुइं। गृहस्थनुं भाजन भांजिउं। वली पाछुं नापिउं। सूतां सुखार्थ अधिक उपकरण घातिउं। देशतः सर्वतः स्नान वांछिउं। मुषि भीनु हाथ लगाडिउ। सय(री)रनउ मल फेडिउ। नख रोम समारिया। अनेरी राढा विभूषा कीधी हुइ पक्षदिवस मांहि० ॥

६. **आवसइ सज्जाए०**—आवशक उभय काल पडिकमणुं सावधान पणइं न कीधउं। दिवसमांहि च्यारि वार सज्झाउ न कीधउ। पडिलेहण असूर सवारइ भणी कीधी, अस्तोवस्तइं

कीधी। धर्मध्यान शुक्लध्यान कीधउं नही। आर्त रौद्रध्यान ध्यायिउं हुइं। विहरतां ४२ दोषाहार सुधउ जोउ नही। असूज्झतउं भातपाणी लीधउं। हुंती शक्ति पर्वतिथि उपवासादिक न कीधउ। उपाश्रय पइसतां नीसरतां निसीही आवसीही प्रमुख दसविध चक्रवाल सामाचारी न साचवी। बइसतां अणुजाणह जस्सग्गहो संडासा कीडीनां नगरां सोधियां नही। केवली भूमि बइठा। संथाराविधि भणी नही। संथारा ऊत्रेटणु अणपडिलेहियां वावरियां। उघउ मुहपत्ती चोलपटउ संघटिउ। स्त्रीतिर्यंची तणा संघट हूया। साधु सामाचारी विषइ जु को अतीचार पक्ष दिवस माहीं० ॥

७. विशेषतः श्रावकतणइ धर्मि सम्यक्त्व मूल बार व्रत। सम्यक्त्व तणा पांच अतीचार–संका कंख विगंछा०–संका श्री अरिहंत तणा बल अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गंभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, जिनवचन तणउ संदेह कीधउ। आकंक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगउ, आसपाल, पाद्रदेवति, ग्रहपूजा इत्येवमादिक ग्रामि, गोत्रि, देशि, नगरि जूजूयां देव देहरांडां प्रभाव देषी रोगि आतंकि इहलोकि परलोकार्थ पूज्यां, पूजिवा विमासिआं। बौद्ध, सांख्यादिक,संन्ना(न्या)सी,भरडा, भगवंत लिंगिया,योगी, दू(द)रवेस, अनेराइ दर्शनीयानउं कष्ट, मंत्र–चमत्कार देषी परमार्थ जाणिया विणु भूलाव्या मोहिया। कूशास्त्र सीख्यां सांभल्यां। सिराध, संवत्सरी, होली, बलेव, माही पूनिम, धण तेरसि, आजा पडवे, आदित्यवार,ऊत्रायणि,नवोदकी जाग भोग ऊतारणां [कीधां]। पींपलि पाणी घालियां। घरि बाहरि, कूइ, तलावि, नदी, समुद्रि कुंडि पुण्यहेतु स्नान कीधां। अजाणतां अनेराइ व्रत व्रतूलां कीधां, कराव्यां। विचिगिच्छा, धर्म संबंधीया फल तणुं संदेह कीधु। जिन अरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकार, मोक्षमार्ग दाता, इअशा गुण भणी नइ पूज्या। इहलोक परलोक संबंधीया भोग वांछते पूजा कीधी। रोगि, आतंकि, कष्टि आविइ खण वचन भोग मानिया। महात्माना भात पाणी मल शोभा निंदा कीधी। कुचारित्रीया देषी चारित्रीया ऊपरि अभाव हूउ। मिथ्यात्वी तणु प्रभाव प्रभावना तपु देखी प्रशंसा कीधी। प्रीति मांडी। दाक्षिण्य लगइं तीहनउं धर्म मानिउ। श्री सम्यक्त्व विषइउ अनेरु जु को पक्ष दिवस० ॥

८. पहिलइ प्राणातिपाति व्रति पांच अतीचार–वहबंध छविच्छेए०–द्विपद चतुष्पद प्रतिं रीस वसि गाढइं घाउ घालिउ। गाढइं बंधनी बांधियां। घण भारि पीडियां। निर्लंछन कर्म कीधउं। चारि पाणी तणी सार संभाल वेलां न कीधीइ। लहिणइ देणइ कणहूं उहडिउ, लंघाविउं। तीणइं भूषिइं आपणि जिमिया। सुल्यां धान वस्तु रूडइं सोधी न वावरियां। अणगलि पाणी छांडिउं। गलणउं रूडउं न कीधउं। इंधण अणसोधिं ज्वालिं। साप, खजूरा, वींछी, सूलहला, जूया, गोगीडा मूआ। फेडाता दूषाणा। रूडइं न लांखियां।

कीडी, मंकोडी, ऊदेही, घीमेली, कात्रा, चूडेलि, पतंगीया, डेडिर, अलसलां, ईली प्रमुख जि के जीव विणासिया, चांप्या, दुहव्या हालतां चालतां पाणी छांडतां अनेराइ काजकाम करतां निद्रंधसपणउं कीधउं । जीव रक्षा न कीधीइ । प्राणातिपात व्रत विषइं अनेरू ज को पक्ष दिवस० ॥

९. बीजइ मृषावाद व्रति पांच अतीचार–सहस्सा रहस्स दारे०–सहसात्कारि कुणहं प्रति अयुक्तउं आल दीधउं । स्वदार मंत्र भेद कीधउ । अनेराइ कुणहइनउ मंत्र आलोच मर्म प्रकासिउ । कुणहिरउ उपाय पाडिउ । उपायि पाडिवा कूडी बुद्धि दीधी। कूडउ लेख लिखिउ । जूठी साषि भरी । थांपणि मोसउ कीधु । कन्या, ढोर, भूमि संबंधि लहिणइं देणइ व्यवसाय वाद विढवाडि करतां जूठउं बोलिउं । अनेरु ज को पक्ष दिवस० मृषावाद व्रति० ॥

१०. त्रीजइ अदत्तादानि व्रति पांच अतीचार–तेनाहडपयोगे०–घरि बाहरि क्षेत्रि खलइं पीयारउं अणमोकलाविउं लीधउं, वावरिउं । चोर पछाई वस्तु वउहरी । चोर धाडीत प्रतिं संकेत कहिउ । संबल दीधउं । तीहनी वस्तु लीधी । विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधउ । नवां पराणां सरस विरस जीव निर्जीव वस्तु तणा भेल कीधा । कूडइ तूलि मानिं मापि वुहरिउं । लेखइं पलेखइं कुणहूं बरांसाविउ । साटइ लांच दीधी । कूडउ करु विश्वासघात अनेरीइ पर-वंचना क(की)धी । अदत्तादानव्रति अनेरु पक्ष दिव० ॥

११. चउत्थइ स्वदार संतोष परस्त्री विरमणव्रति पांच अतीचार-अपरिग्गहिया इत्तर०-अपर-गृहीता गमन, इत्वर परिगृहीता गमन, विधवा वेस्या परस्त्री कुलांगना स्वदार सउकि तणइ विषइं दृष्टिविपर्यास कीधउ । सराग वचन बोलियां । विकल्प चींतविउ । अनंगक्रीडा हुइ । पराया वीवाह जोडीया । कामभोग तणइ विषइं तीव्राभिलाष कीधउ । अष्टमी चतुर्दशी पर्वतिथि तथा अनेराइं नियम भागा । चउथइ परस्त्री विरमण व्रति अनेरु जु को अतीचार पक्ष दिवस० ॥

१२. पांचमइं परिग्रह परिमाण व्रति पांच अतीचार–धण धन्न खित्त वत्थु०–धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुःपद–नवविध परिग्रह तणा नियम अपरांति वृद्धि देखी मूर्छा लगइ समासण नीपजावी । माता, पिता, पुत्र, कलत्र तणइ लेखइ कीधउं । परिग्रह परिमाण लेइ पढिउं नहि। पढी वीसारिउं, अलीढउं मेल्हिउं, नियम वीसारिया । परिग्रह परिमाण व्रति अनेरु जु को० ॥

१३. छठइ दिगु व्रति पांच०–गमणसउ परिमाणे०–ऊर्ध्वदिसि,अधोदिसि,तिर्यगदिशि जायवा तणउ नियम जु कोइ अणाभोगि भागउ विस्मृति लगइ अधिक भूमि गया । पाठवणी आवी मोकली । छठइ दिग्व्रति अनेरु जु को० अती० ॥

१४. सातमइ भोगोपभोग व्रति भोजनतः—पांच, कर्मतः पनर—एवं वीस अतीचार—सचित्ते पडिबद्धे०—सचित्त तणा नियम अपरांति सचित्त प्रतिबद्ध, अपक्व आहार, दुपक्क आहार, तुच्छोषधी तणां भक्षण, उला, ऊंबी, पहुक, पापडी, सलेयां धान, बावीस अभक्ष, बत्रीस अनंतकाय मांहि ज कांई भक्षण नीपजाविउं। असूर वियाळुं कीधउं। उदय विण जिमिया।

‘ सचित्त दव्व विगइ वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु ।
वाहण सयण विलेवण बंभं दिसि नाणुभत्तेसु ॥ ’

ए चउद नियम दिन प्रति संभारिया संक्षेपिया नही। विस्मृति लगइ भागा। ‘इंगाली वणसाडी, भाडी फोडीसु वज्जए कम्मं ’। एवं पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य। बहुरंगिणी लीहाला आगराणि ईट वाहक रंसण वृक्षच्छेद कीधा । गाडां वाहण दंताल हल नीपजावियां। भाडां कीधां, भूमि फोडी, शंख नख चीड चमर पोर मुक्ताफल दंतादिक आगारि वउहरिया। लाख गुली ढूण अरणेटउ आभूया मणसिल हरियाल संख सुहागउ सुलियां धान; वस्तु अनंतकाई; मीण मुहूडां प्रभृति मधु मांखण विस द्विपद चतुष्पद लोह विषादिकतणां विणज कीधां। यंत्र घाणी घरट्ट कोल्ह वाहिया। बल्द कीधा । नाक फोडियां फोडावियां। कर्ण कंबल छेद कीधा, आंक पाड्या। दव लगाडिया । कूया वावि सरोवर द्रह सोसिया। दास कमारां छोरुनां कुद्रव्य सातिया । मासी(छी) कसाई तेली वागुरीसुउं विवहार कीधा । दाण वउलावी गाम लीधां । आकरा कर कीधा । स्वान कुर्कट मांजार पोसिया। एहे पनर खरकर्मि बहु सावद्य अनेराइ जि काई अतीचार० ॥

१५. आठमइ अनर्थदंडि व्रति पांच अतीचार—कंदप्पे कोकइए०—अनर्थदंड कहीइ जि काज पाषइ मुहियां पाप लागइं। मुखि हास्य खेड कुतूहल अंगि कुचेष्टा कीधी । निरर्थक लोक रहइ करसण गाडा वाही गाम गामंतरां कमवायनी बुद्धि दीधी। कण कुवस्तु ढोर लिवारियां। अनेरु पापोपदेश दीधउ। खांडां, कटारां, कुसि, कुहाडा, रथ, ऊषल, मूसल, घरट्टी यांत्रिक काजु करी मेली मेल्हिवा मागियां आलियां। अंगोहलि न्हाणूइ दातणि पगधोआणि खलि पाणी अधिक छांडियां अथवा झीलिया। जू रमिया। हींडोले हींचिया। नाटक पेषणां एवंविध जोयां। पुरुष स्त्रीना हावभाव शृंगाररस वषाणिया। राजकथा, देशकथा, पराई ताति कीधी। कर्कश वचन बोलियां।....भइंसा हुड कूकडा मनक्ष झूझता कलह करता जोयां । लोकतणी उपार्जना सुख कीर्ति देखी अदेषाइ चिंतवी। खाधि लगइ पराइ वस्तूनां मूल अधिक उछां धरियां। अथवा अनेरीइ परिहाणि कीधी। लूंण माटी कण कपासिया काज विण चांपिया। आलिइं वनस्पति खूटी। वाउ अंगीठां कष्ट विणु कीधां। छासि पाणी रस घीउ तेल गुल

आमल वेतस बेरजी आदिक तणा भाजन ऊघाडां मेल्हियां। मांहे कुंथूआ कीडी माखी मंकोडा उंदिर घिरोली प्रमुख जीव विणठा । सूडा साल्ही क्रीडा हेतु अनेराइ जीव बंधि राखीया। रागद्वेष लगइं एकरहइं रिद्धि परिवार वांछियां, एकि रहइं मृत्यु हाणि विमासियां। अनर्थदंड विषइउ अनेरु जु को अतीचार० ॥

१६. नुमइ सामायक व्रति पांच अतीचार–तिविहे दुप्पणिहाणे–सामाइक लीधइं मनि आहट दोहट चिंतविउं। वचनि सावद्य बोलिउं। सयरु अणपडिलेहउं हलाविउं। छती वेलां सामाइक लीधउं नहीं। ऊघाडइ मुखि बोलिउं। ऊंघ आवी। विकथा कीधी। वीज दीवा तणी ऊजेई लागी। कण कपासिया माटी तणा संघट्ट हूया। स्त्री तिर्यंची आभडी। मुहपत्तीऊ संघट्टी। सामाइक अणपूगउं पारिउं। पारिवउं वीसारिउं। सामायिक व्रति अनेरु जु को अतीचार० ॥

१७. दसमइ देसावगासिक व्रति पांच अतीचार–आणवणे पेसवणे–नियमी भूमिका माहिला गमा कांइ बाहिर थकउं आपणकन्हइं अणाविउं। आपणपा कन्हलि थकउ बाहरि मोकलिउं। अथवा रूप दिखाडी, काकरउ लांखी, साद करी, आपणपउं छतउं जणाविउं। दसमइं देसावगासिक व्रति अनेरु जु को अतीचार० ॥

१८. इग्यारमइं पौषधोपवासव्रति पांच अतीचार–संथारुच्चारविही–पोसह लीधइं संथारा तणी भूमि बाहिरलां थंडिल स दीसइं सोधियां, पडिलेहियां नही। थंडिल वावरतां, मातरां परिठवतां चींतवणी न कीधी। 'अण(णु)जाणह जस्सग्गहो' न कहिउं। परिठविया पूंठिइं वोसिरइं भणिउं नही। पोसालमांहि पइसतां निसीही, नीकलतां निसीही (?) आवसीहीं कहिवउं वीसरिउं। पुढवि अप तेउ वाउ वनस्पति त्रस कायतणा संघट्ट परिताप उपद्रव कीधा। संथारा पोरिसि तणउ विधि भणिवउ वीसारिउ। अविधि संथारिउं। पारणादिकतणी चिंता नीपजावी। कालवेला देव न वंदाणा। पोसउ असूर लीधउ। सवारहि पारिउ। पर्वतिथि पोसउ लीधउ नही। पौषधोपवासि व्रति अनेरु ज को अतीचार पक्ष० ॥

१९. बारमइ अतिथि संविभाग व्रति पांच अतिचार–सचित्ते निक्खमणे–सचित्त वस्तु हेठि ऊपरि छतां तपोधन तपोधना प्रति असूझतउं दान दीधउं। देवा तणी बुद्धिं असूझतउं फेडी सूझतुं कीधउं। पराइ वस्तु धणीनेइं अणकहि अथवा आपणी भणी दीधी। अणदेवातणी बुद्धिइं सूजतुं फेडी असूज[तुं] कीधउं, आपणउं फेडी पिरायउं कहिउं। विहरवा वेला टली रहिया। असूर करी महात्मा तेडिया। मच्छर लगइ दान दीधउं। गुणवंत आविइ भक्ति न साचवी। सीदातउ साधर्मिक, अनेराइं धर्मक्षेत्र छती शक्ति उधरियां नही। दीण क्षीण प्रति अनुकंपा दान न दीधउं। अतिथि संविभागव्रति अनेरु ज को पक्ष दिवस० ॥

२०. संलेखणा तणा पांच अती०—इहलोए परलोए—इहलोकि धर्म तणा प्रभावलगइं राजारिद्धि वांछियां । परलोकि देवेन्द्र अहमिंद्र पदवी वांछी । सुखि जीविवानी, दुखि मरिवातणी वांछा कीधी । कामभोगनी प्रार्थना कीधी । अनेरु संलेषणा व्रत अतिचार पक्ष दि० ॥

२१. तपाचारि बार भेद:—छ बाह्य, छहिं आभ्यंतरि—अणसणमूणोदरिया—उपवासादिक कीधा नही । उणोदरी व्रत साचवि नही । द्रव्य संखेप विगइ परिहार आसनादिक कायक्लेश कीधु नही । संलीनता अंगोपांग संवृत कीधां नही । पाटलु डिगतु फेडिउ नही । पच्चखाण पारिवां वीसारियां । आंबिल नीवी एकासणां प्रमुष पच्चखाण भागउ । वमन हूउं । बाह्य तपि अनेरु ज को अतीचार० ॥

२२. आभ्यंतरि तपाचारि—पायच्छित्तं विणउ—गुरुकन्हइ सुधी आलोअण लीधी नही । गुरुदत्त तप सघट्ठ कीधउं नही । देवगुरु धर्मवंत प्रति विनउ साचवीउ नही । वृद्ध ग्लान तपस्वी प्रतिं वेयावच्च कीधउ नही । वाचना प्रच्छना परावर्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण स्वाध्याय कीधउ नही । धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नही । आर्त रौद्र ध्यान ध्यायां । कर्मक्षय निमित्त विशेष कायोत्सर्ग कीधउ नही । अनेरु जु को अतीचार पक्ष दि० अभिंतरि तपि हुओ ॥

२३. वीर्याचारि त्रिनि अतीचार—अणिगूहिअ बिल विरिउ०—पढवइ गुणवइ विनय वेयावच्चि देव पूजा सामायकि पोसहि दान शील तप भावनादिकि धर्मकृत्य मन वचन कायतणउं छतउं बल छतउं वीर्य गोपविउं । रूडां खमासण दीधां नही । वांदणाना आवर्त विधिइं साचविया नही । बइठां पडिक्कमणं कीधउं । वीर्याचारि अनेरु ज को अतीचार पक्ष दिव० ॥

२४. पडिसिद्धाणं करणे—जिन प्रतिषिद्ध जीवहिंसा, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्व शिल्य कीधां हुइं । कृत्य प्रतिक्रमण विनय दानादिक कीधां नही । जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दहियां नही । आपणी कुमति लगइं उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी । ए बिहु प्रकारि अनेरु जु को अतीचार पक्ष दि० ॥

२५. एवं कारइं श्रावकतणई धर्मि सम्यक्त्व मूल बार व्रत चउवीससउ अतीचार मांहि जु कोइ सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां पक्ष दिवस मांहि [हूउ] ते सविहुं मनि वचनि काइ मिच्छामि दुक्कडु ॥

॥ श्रावक अतीचार संवत १४६६ वर्षे ॥

उपदेशमाला ग्रंथमांनी केटलीक कथाओ

[कर्ता–सोमसुंदर सूरि; समय विक्रम संवत् १४५७–१४९९.]

१. परशुरामनी कथा.

[धर्म छे ते आत्म साक्षिए करेलो होय ते ज सुंदर फळ आपनार होय छे, अन्यने जणाववानी खातर करेलो धर्म सुफलप्रद थतो नथी, ए उपर ग्रंथकार दृष्टांतो सूचवे छे.–संपादक]

मूल गाथाः–किंपरजणबहुजाणावणाहिं वरमप्पसाक्खिअं सुकयं ।
इअ भरह चक्कवट्टी पसन्नचंदो अ दिट्ठंता ॥ १९ ॥

विवरणः—किंपर०–परजन अनेरा लोक तेहनी विद्या प्रामी तीणइं करी परशुराम नामिइं प्रसिद्ध हूउ । तीणइं अन्यायिणी भणी बेटा सहित आपणी माता रेणुका मारी । अनंतवीर्यइं आवी तेहनउ आश्रम विणासिउ । परशुरामिइं अनंतवीर्यनउं मस्तक छेदिउं । अनंतवीर्यनु बेटउ कार्तवीर्य गजपुरि राजा हूउ । तीणइं बापनइं वइरिइं आवी यमदग्नि मारिउ । परशुरामिइं कार्तवीर्य मारी राज्य लीधउं । इसिइ कार्तवीर्यनी एक कलत्र तारा साधान थकी नाठी । तापसनइ उडवलइ गई, भूंइहरइ राषी, तिहां बेटउ जायु । सुभूम नाम दीधूं । परशुरामि सात वार निःक्षत्रिणी पृथ्वी कीधी । इसिइ अवसरि परशुरामि नैमित्तिक पूछिउ । माहरुं केहनइं हाथिइं मरण हूसिइ । ए क्षत्रीनी दाढ भरी थाल मूंको; जीणइं आविइं दाढ फीटी खीर थाइसिइ; ते खीर जे जिमिसिइ तेहनइं हाथिइं मरण । पछइ परशुरामि सत्तूकार मंडावी ते थाल सिंहासन ऊपरि मूंकिउं । इसिइ मेघनाद विद्याधारि आपणी बेटीनु वर नैमित्तिक कन्हइ पूछिओ । तीणइ सुभूम वर कहिओ । तेह भणी ते विद्याधर सुभूमनी सेवा करइ, विद्या सीष(ख)वइ । सुभूम माय कन्हइ पूछइ–मात! भूमि एतलीइजि छइ । माताई रोतीइं पाछिलु सघलु वृत्तांत कहिउ । पछइ सुभूम असि(भि)मान लगइ । जणाविवइं किसिउं तेहे भलउ कहिउ, विरुउ कहिउ तेऊ कांई नहीं. (आ कथा आगळ ऊपर फरी आववानी छे तेथी अहिं प्रस्तुत प्रसंगना सूचन पुरती ज आपेली देखाय छे.–**संपादक**)

(१.) वरम०–सु सुकृत पुण्य आत्म साक्षिकइज भलुं । जिहां आपणउं मन साक्षि दिइ–ए रूडउं कीधउं मिइं; तेहू ज पुण्य सफल । एह ऊपरि भरथेश्वर चक्रवर्ति प्रसन्नचंद्र राजर्षिनु दृष्टान्त जाणिवु । भरथेश्वर चक्रवर्ति गृहस्थवेषि अन्तःपुरमाहि आदर्श भवनि रूप शोभा जोता अनेरे संसार भावि वर्ततउ गणिउ । तीणइं पुण मुद्रिका पडीइं आंगुली निःश्रीक देषी बीजां आभरण ऊतारतइं शरीरनी असारता चिंतवतइं वैराग्य भावथी केवल ज्ञान प्रामिउं ।

(२.) अनइं प्रसन्नचंद्र राजर्षि काउसग्गि रहिउ। आतापना लेतउ महाध्यानि वर्ततउ श्रेणिक महाराइं विस्मयथिकइं मोक्ष ऊपार्जितउ भणी वांदिउ। तेणिं पुण तेणी वेलाइं सुमुख दुर्मुखनां वचन सांभली आपणा बाला बेटानइं पराभव जाणी सीमाला रायसिउं मनि युद्ध करतइ रौद्रध्यान वर्ततइं सातमी नरक पृथ्वी जोगि ऊपार्जिउं। एह भणी बीजा लोकनुं जाणिउं कांई प्रमाण नही। आपणउ आत्मा जिहां साक्षि दिइ ते कर्त प्रमाण।

२. बाहुबलीनी कथा.

हिवइं धर्मानुष्ठान करतां शुभ ज भाव करिवउ; क्रोध अहंकारादि दूषित अशुभ भाविइं काज न सरइ; तेह ऊपरि बाहुबलिनु दृष्टान्त कहइ छइ—

मूलगाथाः—धम्मो मएण हुंतो न वि सीउन्हवाय विज्झडिउ।
संवच्छरमणसिओ बाहुबली तह किलिस्संतो॥ २५॥

विवरण—धम्मो०—जइ अहंकारिइं कीधइं धर्म हुइ; तो न वि सीओ०—तउ बाहुवलि राजर्षि, सीउ०—एवडां सीत टाढि उष्ण लूय वाय करी, विज्झडिउ—आहणिउ, संवच्छर—वरस दीस, अणसिअउ—आहारपाणी रहित उपवासी काउस्सग्गि रहिउ। कलि०—क्लेश दुःख न प्रामत; तत्काल जि केवलज्ञान ऊपार्जित। बाहुबलिनइं मनि दीक्षा लीधी पूठिइं इशुं अभिमान हूउं—जउ हवडां श्री आदिनाथ कन्हलि जाइसु तो माहारि लघु ९८ भाईए दीक्षा लीधी छइ ते वांदवा थासिं। तेह भणी केवलज्ञान ऊपना पाखइ नहीं जाउं। केवलज्ञान ऊपना पूठिइं केवली को केहनइं वांदइ नहीं; इसी व्यवस्था छइ। ईणइ अभिमानिं बाहुबलिनइं वरस दीस केवलज्ञान न ऊपनुं। जेती वारइं श्री आदिनाथनइं आदेसिइं ब्राह्मी सुंदरी महासती ए बिहुं बहिने आवी कहिउं—बांधव! हाथीथिकु ऊतरि। तिह्वारिइं तीणइं चींतविउं—अभिमान ज हाथीउ। ते मूंकी जेतलइं पग ऊपाडिउ तेतलइं केवलज्ञान ऊपनूं।

३. सनत्कुमार कथा.

सनत्कुमार चक्रवर्तिनउं रूप एक वार इंद्रि वखाणिउं। ते जोवा बि देव ब्राह्मणनां रूप करी आव्या। तेहे रूप वखाणिउं। चक्रवर्ति गर्वि गयो। तेतलइं चक्रवर्तिनइ शरीरि कर्म लगइ सात महारोग संक्रम्या। तिसिं ते ब्राह्मण रूप जोवा तेड्या। सभामाहि विशेष आभरण शोभा

करी चक्रवर्ति गर्विउ बइठउ छइ। तिहां ते देव सरोग सरीर देषी कालमुहा थआ। ताहरइ सरीरि आज लगइ क्षणि क्षणि सात रोगे करी रूपनी हाणि हुइ छइ। इसिउं तेह देवे कहिउं। अम्हे देव तम्हारुं रूप ज जोवा भणी आव्या हूता। पहिलुं जिसिउं इंद्रिं ताहरुं रूप वर्ण्णविउं तेहवूं ज हूतउं। हिवि क्षणि क्षणि विणसइ छइ। जे कांई जाणि ते करि; इम कही देव स्वर्गि गया। एतलइं वचनमात्रिइं चक्रवर्ति बूझउ। राज्य छांडी दीक्षा लीधी। सातसइ वरस रोग अहियासिया। तेह ज बिहुं देवे वैद्य रूप करी परीक्षा कीधी पुण न क्षुभिउ। तपनइं महात्मइं थूंकिं आपणी आंगुली सुवर्णमय करी लब्धि देषाडी पुण चकित्सा कराविवा ऊपरि मन न हवुं। रोग आफणी विलय गया। पछइ लाख वर्ष दीक्षा पाली सनत्कुमार ऋषि सनत्कुमारनामइं त्रीजइ देवलोकि पहुतु।

४. जासासानी कथा.

वसंतपुरि अनंगसेन सोनार [५००] स्त्री मेली, एकिनइं बाहरि नींसरवा न दिइ। एकवार मित्रिइं किसइ पगरणि घरि तेडउ, निवरुं देखी, सविहुं स्त्रीए स्नान विलेपन करी आभरण पहिरियां, हाथि आरिसा लेई बइठी; तेतलइं ते सोनार आविउ। तीणइं रीसाविइं एक स्त्री मर्मि आहाणी मूंई। बीजी ए बीहतीए तेह भणी आरीसा लेई नांख्या, ते सोनार मूंओ। लोकापवाद बीहती बीजी सघली जमहर करी मूंई। एकि पालिइं एकिं ऊणा पांचसइ चोर थयां। जे स्त्री पहिलुं मूंई ते एकिं गांमि कहिनु बेटउ थयो। सोनारनु जीव तेहनी बहिन हूओ। ते पाछिला भवनइं अभ्यासिं उत्कट रागिइं रोती रहइ नहीं। एक वार भाईनउ हाथ गुह्य देशि लागु, रोती रही। पेलइं ते उपाय जाणिउ। वली वली तिम करतउ देखी माय बापे काढिउ। तेहइ चोरमाहि मिलिउ, मूलगु चोर थउ। एक वार तेहे चोरे धाडि गए ते स्त्री यौवनवय प्राप्त दीठी, ते स्त्री आफणी आवी तेह चोरमाहि मिली पांचसइंनी कलत्र हवी। एक वार तेहनीं दयां लगइ चोरे बीजी स्त्री आणी। तीव्र राग लगइ तीणीइं नवी स्त्री सांसई नहीं, भोलवी कूइ पाडी। ते वात जाणी तेहनइं भाई पल्लीपतिइं चिंतविउं। इसी तीव्र रागि किसिउं; ते ए माहरी बहिन नहीं। इसिइ श्रीमहावीरि सर्वज्ञ पाउधारिया सांभली समोसरणि आवी पूछिउं—भगवन्! ते पापिणी ए माहरी बहिन न होई?। परमेश्वरि कहिउं—ए तेह ज। इसिउं सांभली वैराग्य लगइ बूझिउ। बीजाइं जीव घणा बूझ्या। इति कथा॥

५. मृगावतीनी कथा.

कोशांबी नगरीइ श्रीमहावीरनइ समोसरणि चंद्र-सूर्य आपणे मूलगे ज विमाने आविआ। तीणइं अजूआलइं मृगावती महासतीइ वेला न जाणी। बीजी चंदनबाला प्रमुख महासती वेलाइं ज उपाश्रइ आवी। चंदनबाला प्रवर्तिनी पडिक्रमणउं करी सज्झाय करी पोरिसी भणी संथारइ पुढी छइ, तिसिं चंद्रसूर्य गयां। पूठिं घाइंसिउं अंधारु प्रसिरिउं देखी मृगावती उपाश्रयिं आवी चंदनबालानइं पगि लागी। चंदनबालाइं शिक्षा दीधी तेहनइं। कुलीननइ एवडी रात्रि एकलां बाहीर रहिवुं न बूझीइ; पछइ मृगावती आपणउ दोष सम्यग् पडिवजी। आज पूठिइं वली एहवु अपराध नहीं करू। इसिउं कहती चंदनबालानइ पगि पडी तेतलइं चंदनबालानइं निद्रा आवी। मृगावतीनइं क्षमावतांइंज केवलज्ञान ऊपनूं। इसि अंधारइ संथारा ढूकडओ साप जातउ दीठउ। चंदनबालानु हाथ परहउ कीधउ। चंदनबाला जागी। पछइ पूछइ-तहे कां माहरु हाथ हलाविउ ? । मृगावतीइं कहिउं-साप जाइ छइ, तेह भणी। चंदनबाला साप न देखइ। मृगावतीनइं कहिउं-तुं किम देखइं ? । तुझनइं कांई ज्ञान छइ ? । तीणइं कहिउं-केवलज्ञान। पछइ चंदनबाला पश्चात्ताप करती मृगावतीने पगे लागी। खमावतां तेहनइं केवलज्ञान ऊपनूं। जिम मृगावतीनइं शिक्षा देतां कषाय न ऊपनु, इम बीजाइ जेहनइं कषाय न ऊपजइं ते उत्तम।

६. चिलातीपुत्र कथा.

राजगृह नगरि धनश्रेष्ठिनी बेटी सुंसुमा, तेहनु पालणाहार चिलातीपुत्र नामिं दास। ते विरूई चेष्टा करतउ देखी श्रेष्ठिं बाहिरु काढिउ। पालिं जई पल्लीपति चोर थओ। एकवार घणा चोर मेली राजगृहि धनश्रेष्ठिनइ घरि पइठउ। बीजा चोर लक्ष्मी लेई गया। तीणइं सुंसुमा बेटी ऊपाडी। मार्गि जातां केडां वाहर ढूकडी देखी सुंसुमानुं मस्तक छेदी लीधुं। धनश्रेष्ठि पांच बेटा सहित वाहरइं आवतु हूतउ ते पाछउ वलिउ। चिलाती पुत्रि आगलि माहात्मा काउस्सग्गि रहिउ दीठउ। खांडउं ऊगामी धर्म पूछिउ। माहात्माइं धर्म कहिउ। उपशम १, विवक २, संवर ३-त्रिहुं पदे धर्म कही आकाशि ऊडिओ। चिलाती पुत्र त्रिहु पदनु अर्थ विमांसतु खांडउं अनइ स्त्री मस्तक परहुं मूंकी तेह ज महात्माना पगलेई

काउसग्गि रहिउ। लोहीनी गंधिइं वज्रतुंड कीडी नींकली। तेहे खाजतउ अढाई दिन महा कष्ट सही आठमइ देवलोकि पुहुतउ।

७. ढंढणकुमार कथा.

जिम चिलाती पुत्रि आपणी प्रतिज्ञा निर्वही तिम अनेराइ विवेकीया निर्वहइ—तेह ऊपरि ढंढणकुमारनउ दृष्टांत कहइ छइ—

मूलगाथा—पुप्फिय फलिय तह पिउघरम्मि तण्हा छुहा समणुबद्धा।
ढंढेण तहा वि सढा विसढा जह सफलया जाया॥ ३९ ॥

विवरण—पुप्फिय०—ढंढणकुमारना बाप श्रीकृष्णनुं घर फूलिउं, धन धान्य लक्ष्मी करी समृद्ध दातार छइ। कृपणनुं घर लक्ष्मी करी फूलिउं हुइ, पुण दीजइ भोगवीइ नहीं; तेह भणी फलिउं न कहीइ। इहां बि वांनां छइ। एहवइ बापनइ घरि छतइ, तण्हा छुहा०—तृषा अनइ भूष, समणुबद्धा—निरंतर, ढंढे०—ढंढणकुमारि, तहावि०—तिम किमइ सही, विसढा०—निर्मायपणइं, जह स०—जिम सफल हुई।

कथा कहीइ—ढंढणकुमारि पाछिलिइ भवि पांचसइं हल ऊपरि रायनइं अधिकारीइं छतइ मध्याह्नवेलां भात चारि पाणी आवियां पूठिइं एकेकु चास आपणइ क्षेत्रि दिवरावतइ पनरसइं जीवनइं अंतराय कीधुं। ते कर्म ढंढणकुमारनइं भविं श्रीनेमिनाथ कन्हइ दीक्षा लीधा पूठीइं उदय आविउं। नव बारी द्वारिका नगरीइं माहि सूझती भिक्षा न लहइं। तउ अभिग्रह लीधउ—परायु आणिउ आहार मइं न लेवु। आपणी लब्धिइं जउ सूझतउ आहार लहउं तउ लिउं; नही तरि न ल्युं। इसिउ अभिग्रह पालतां घणउ काल गउ। एकवार श्रीकृष्णिं श्रीनेमिनाथ कन्हइ पूछिउं—एतला महात्मामाहि कुण गाढउ दुष्करकारक?। परमेश्वरिइं कहिउं—ढंढणकुमार। पछइ कृष्ण महाराय भक्ति लगइ नगरनी सेरीमाहि ढंढणकुमार वांदिउ। ते देषी एकइं श्रेष्टि मोटा भणी मोदक विहराविया। ढंढणकुमारि श्रीनेमिनाथ भगवन पूछिआ—माहरु अंतराय कर्म क्षय गउं?। परमेश्वरिं कहिउं—ए कृष्णनी लब्धि, ताहरी लब्धि नहीं। पछइं नमिाह मांहिं मोदक परठवतां कर्म क्षय गउं। केवल ज्ञान ऊपनूं। जिम ए ढंढणकुमार महात्मानइं आहारनइं विषइं प्रतिबंध न हूओ, अनइ काज सरिउं; तिम सवि हुं माहात्मानइं आहारादिकना प्रतिबंध ऊपरि अधिकार नहीं।

८. स्कन्दक शिष्य कथा.

श्रावस्ती नगरीइं जितशत्रु रायपुत्र स्कंदक । तीणइं आपणी बहिन पुरंदरयशानु भर्तार दंडकरायनु पुरोहित पालक धर्मनिंदा करतउ जीतउ । पछइ स्कंदक कुमारि पांचसइं पुरुक्ख सहित श्री मुनिसुव्रत स्वामि कह्हलि दीक्षा लीधी। आचार्य हूआ । बहिन बहिनेवी बूझविवा कुंभकारकृत इसिइं नामिइं नगरि आविआ । पालकि गुरु रहिवानइं थानकि भूमिमाहि हथियार संताविया । दंडकिरायनइं कहिउं–ए आचार्य चारित्र भागउ पांचसइ योधी सुभट लेई आविउ छइ । तुहारुं राज्य लेसिइ । न मानइ तु जोइं, हथीआर भुइंमांहिं सातिआं छइं । ते काढी देषाडिआं । पछइ राजां तेहजनइ आदेश दीधउ–तउं जिम जांणि तिम करि । पछइ तीणइ पालकिं अभव्यि पांचइसइं महात्मा घांणइं घाली पीलिआ । क्षमा लगइ केवलज्ञान ऊपार्जी मोक्षि पुहुता । छेहडइ श्रीस्कंदकसूरि एक चेलानइं इसिउं कहिउं–एकनइ पच्छइ घातजे । पहिलुं मुझर (?) नइं पीलि । तीणइं दुष्टिं पहिलुं चेलु ज पीलिउ । ते हू मोक्षि गयु । पछइ आचार्य पीलिआ । ते रीस लगइ अग्निकुमार देवता हूआ । ते हे पालक सहित देस सघलुइ बालिउ । तिहां दंडकारण्य हूउ । जीम श्रीस्कंदकाचार्यना शिष्य प्राणे जाते कुपिआ नहीं तिम बीजे ऊ महात्माए कोप न करिवु ।

९. हरिकेशीमुनी कथा.

पाछिलइ भवि पुरोहित ब्राह्मणनउ जीव जातिमदिइं करी हरिकेश बल मातंग थउ । जातिस्मरण प्रामी वैराग्य लगइं महात्मा थओ । महा तपनइ प्रमाणि देवताए सेवीइं । एकवार वाणारसी नगरी बाहरि यक्षना भवन ढूकडउ काउसग्गि रहि छइं । इसिं रायनी बेटीइं भद्रा यक्ष पूजिवा आवीइं दीठउ । मलिन देह भणी थूंकिउ । यक्षिइं रीसावि तेहनुं मुख वांकुं कीधउं । शरीरि महापीडा ऊपजावी । राजाइं अनेक उपाय उपचार कराव्या पणि गुण किमिहि न हुइ । तु पछइ यक्ष प्रत्यक्ष होई बोलइं–तउ ए साजी थाई, जउ एह ज ऋषिनुं पाणि ग्रहण करइ । राजां मानिउं । यक्षिइं महात्मानउं सरीर अधिष्ठीनइं परिणी विडंबी रातिइं महात्मा छांडी नाठओ । राजा ऋषिपत्नी भणी भद्रा पुरोहितनइं दीधी । केतलइं कालिं तीणइं पुरोहितिं याग मांड्या । ब्राह्मण घणा मिल्या छइं । दैवयोग लगइं तेह ज मातंग ऋषि भीक्षानइ अर्थि तीणइ यज्ञि पाटकि आविउ । मातंग मइलु कुरूप देखी ब्राह्मण मारवा लागा । यक्षइ रीसावइं लोही

वमता भुइं पाडिया । कोलाहल सांभली भद्रा तिहां आवी कहइवा लागी–रे पापीयाओ ! ए किशुं कीधुं ? न जांणु ए महा तपस्वी ते जीणइं हुउं रायनी बेटी तृणानीं परइं रोलवी रात्रि सघली भोगवी । एहनइं यक्ष सानिध्य करइ । पगिं लागी क्षमावु नहीं तु ए तुम्हनइ विगोसिं, चेटक मूंकसिं । पछी भयभीत ब्राह्मणे पगि लागी मनाव्यु । महात्मा कहइ–पहिलुंइं अनइं हवडांइं माहरइं मनिं नहीं कोप, यक्षजनउं कर्तव्य । पछइ ब्राह्मणे सर्व अन्न पान ते ऋषिनइं घातिउं । यक्षना हर्षनइ कारणि महात्माइ षाधुं । यक्ष गंधोदक पुष्पवृष्ट्यादि महोत्सव करइं, ते देषी घणा जीवनइं धर्मनउ प्रतिबोध हूओ ॥

१०. वयरस्वामि कथा.

पाडलीपुरि धन सार्थवाहनइं घरि रही महासतीनइं मुखि श्रीवयरस्वामिना गुण सांभली सार्थवाहनी बेटी इसी प्रतिज्ञा करइं-आंणइं भविं श्रीवयरस्वामि टाली बीजानउं पाणिग्रहण न करउं। इसिं एकवार श्रीवयरस्वामी तीणइ नगरि पाउधारिया । धन सार्थवाह अनेक सुवर्ण रत्ननी कोडि सहित आपणी कन्या लेई श्रीवयरस्वामि कह्नइ आविउ । भगवंति ते सार्थवाह बूझविउ । तेहनी बेटी बूझवी दीक्षा लेवरावी, लगारइ मनि लोभ नांणिउं ॥

११. नंदिषेण कथा.

नंदग्रामिं दालिद्री निर्नाम ब्राह्मणनु बेटओ नंदिषेण तेह जातमात्रनां माय बाप मूआं । माउलानइ घरि काजकाम करइ । माउलानइं सात बेटी छइं । माउलइ ते सातइ नंदिषेणनइं ओडवी; पुण कहि–वरि अम्हे प्राण छांडुं, पणि ए नंदिषेणनइं नहीं परणउं । इस्युं आपणउं दौर्भाग्य देषी नंदिषेणिं दीक्षा लीधी । पांच सईया गच्छनां वेयावच्च मिइ ज करिवां–इसओ अभिग्रह लीधओ । निरंतर छठ छठ पारणउं करइं । एक वार इंद्रिइं तेहनी प्रशंसा कीधी । ते अणसद्दहता देव २ परीक्षा करिवा आव्या । नंदिषेणनइं छठनूं पारणउं करिवा बइसतां एक देवइं महात्मानइं रूपिं आवी कहिउं–एक माहात्मा गाढओ अतीसारीओ ग्लान बाहिरि वनमांहिं छइ । तउं तउ एवडउ अभिग्रह लेईनइं निश्चिंत थिकु खावा बइसइ छिं ! । तु नंदिषेण

कवल परहु मुंकी ग्लाननइं कारणिं पांणी वहिरवा गिओ। देव पांणी असूझतुं करइं। त्रीजी वारइं फिरतइं सूझतुं पांणी लाधउं। ते लेईं ग्लान माहात्मा कन्हलि गओ। ते महात्मा अनेक कर्कश वचन बोलई; तु नंदिषेण आपणओ ज दोष मनमांहि चिंतवतओ ते महात्मानुं शरीर वस्त्र धोतइं तेहनइं षांधि चडावी नंदिषेण उपाश्रय भणी चालिओ। ग्लान महात्मा दुर्वचन बोल्तउ महा दुर्गंध विष्ठा मूंकइ। नंदिषेणनइं सरीरि रेला वहइं, तु हू नंदिषेण मनि इशुं चींतवइं—किम ए महात्मानइं समाधि करिसु, किम ए साजउ थास्थिं। देव तेहनूं मन देषी हर्षिओ। देवतानूं रूप प्रकट करी अशुचि परहुं संवरी कुसुमवृष्टि करतउ क्षमावइं। इंद्रनी प्रशंसानूं स्वरूप कही स्थानकिं जाइं। नंदिषेण वेयावचनउ अभिग्रह पालतओ १२ सहस्र वर्ष महा तप करी छेहडइं निआणूं करइं—हूं आवतइं भविं स्त्रीवल्लभ हुयो, इसउं कहइं। तिहां थिकुओ मरी समुद्र विजयादिक दसभाई दशार्ह मांहिं दसमु भाई वसुदेव नामिं हूओ। महा सोभागी तीणइं ७२ सहस्र कन्यानां पाणिग्रहण कीधां। ए तपनुं फल॥

१२. गजसुकुमाल कथा.

द्वारका नगरीइं श्रीकृष्णदेवनी माता देवकीनइं आपणा छ बेटा महात्मा समान रूप अने थिं वाध्या त्रिहुं संघाडे विहरवा आव्या देषी, स्नेह उल्लसिओ। श्रीनेमिं मुखिइं स्वरूप जांणी एक बेटओ आपणाइं हार्थि लालुं पालुं—इसी इच्छा ऊपनी। श्रीकृष्णमहारायइं हरिणेगमेषी देव आराधिओ। तेहनइं वचनिं देवकीनइं बेटउ हूओ। गयसुकुमाल नांम दीधउं। अपार रूपवंत भणी सोमल ब्राह्मणनी बेटी परणाविओ। पछइं श्री नेमिनाथनइं वचनि वैराग्य लगइ दीक्षा लेईं तीणइं ज दिनिं मसाण भूमिं काउस्सग्गि रहिओ। सांझनइं समइं सोमल ब्राह्मणि दीठओ। एणइं पापीइं माहरी बेटी परणीनइं मूंकी। एह भणी तेहनइं मनि रीस ऊपनी। गयसुकुमालनइं माथइं माटीनीं पालि करी ठीब भरी चहिना अंगार घाती नाठओ। गयसुकुमालनिं मनि कोप न ऊपनु। सरीर बलिउं अनइ कर्मइ बलिउं। केवलज्ञान ऊपनूं। गयसुकुमाल मोक्षि पुहतु। इम अनेरे महात्माए क्षमा करवी।

१३. सिंहगुहावासी मुनि कथा.

पाडलीपुरि श्रीसंभूतिविजय सूरिना शिष्य वरसालइं चतुर्मासानु अभिग्रह लिइं । एक सीह नी गुफां, बीजओ सापनइ बिलि, त्रीजओ कूआनइ विचिलइ भारवटिं, चउथओ श्रीस्थूलभद्र पूर्व परिचित कोशानइं धरिं रहइं । चउमासउं करी ते च्यारिं गुरु कन्हइं आविया । गुरे पहिलां त्रिहुंनइं 'दुष्करकारक आवु' इम कहिउं । श्रीस्थूलभद्ररहइं बि वार 'दुष्कर दुष्कर कारक आवउ' इम कहिउं । सीहगुफावासी महात्मानइं मनि ईर्ष्या ऊपनी । बीजइं वरसि श्री स्थूलभद्रनीं परिइं अभिग्रह लिइं । गुरे वारी, तुइं कोशानी बहिन उपकोशानइं धरिं गयु । तेहनां रूप देषी क्षुभिओ । वेश्या कहइ—अम्हारइ अर्थ जोईइं । तेहनइं वचनिइं वरसालामांहिं नेपाल देसिं जई गाढइं कष्टिं रायकन्हइं रत्नकंबल लेई आविओ । रत्नकंबल कोशारहइं आपिउं । कोशाइं अशुचि खालमाहिं घालिउं । माहात्माइं वारी । वेश्या वलतुं इंम कहइं—तुं आपणपउं नथी जोतओ । अह्मारां शरीर अशुचि खाल सरीखां तेहमांहिं आपणउं चारित्र रूपीउं रत्न नीगमइं छइं । तेहनइं वचनि बूझ्यो । घणउं मनि झूरइं । आवी गुरुने पगि लागी खमावइं । आलोअण लिइं ॥

१४. पीठ महापीठ कथा.

महाविदेह क्षेत्रिं चक्रवर्ति महात्मा श्रीवइरनाभ आचार्य १४ पूर्वधर हूआ । तेहना लहुडा भाई बाहु सुबाहु पीठ महापीठ ११ अंगना धारक हूआ । तिहमांहिं बाहु पांचसइं महात्मानइं भात पांणी आंणी दिइं । सुबाहु वीसामण करइं । बीजा तप सज्झाय करइं । एक वार गुरू बाहु सुबाहुना साचा गुणनी प्रशंसा करइं । पीठ महापीठ मनि मत्सर धरइं । पांचइ जण चारित्र पाली सर्वार्थसिद्धि विमानिं ऊपना । तिहांथी च्यवी वज्रनाभ गुरुनो जीव श्री आदिनाथ हूआ । बाहु सुबाहुना जीव भरत बाहुबलि हूआ । पीठ महापीठना जीव ईर्ष्यानइं कर्मि स्त्री ब्राह्मी सुंदरी हूआं । इम ईर्ष्या लगइं जीव हीनपणउं प्रामइं ॥

१५. तामली तापस कथा.

ताम्रलिप्ती नगरीइं तामलि श्रेष्ठि वैराग्यइं तापसी दीक्षा लिइं । नदीनइं तटिं साठि वर्ष सहस्र तप करिं पारणइं भिक्षा चिहुं भागिं करइं । एक भाग मत्स्यादिक जलचररहइं दिइं । बीजो भाग गोग्रास—स्थलचररहइं दिइं । त्रींजो भाग काकादिक खेचररहइं दिइं । चउथु भाग २१ वार पाणीइं धोई पारणउं करइं । एवडइं तपनइं क्लेशिइं अल्प कषाय भणी अनइं अनुकंपा पर भणी ईशानेंद्र थिओ । सम्यक्त्व लाधुं । छ जीव दया सहित जउ एवडउ तप करत [तओ] मोक्षिं ज जाओत, जओ अल्पकषाय न हुंत तओ एटलुइं न लहत, दुर्गति ज प्रामत ॥

१६. अवन्ति सुकुमाल कथा.

उज्जयनी नगरीइं भद्रा सार्थवाहीनइं धरि यानशालां श्रीआर्यसुहस्तिसूरि ऊतरिया । रातिइं नलिनीगुल्म-विमाननउं अध्य[य]न गुणतां भद्रानइं बेटइं अवंतिसुकुमालि सांभलिया । जातिस्मरण ऊपनूं । पाछिलइं भविं ते नलिनीगुल्म-विमानि देव हुंतओ । ते सांभरिउं । बत्रीस कलत्र मूंकी गुरुकन्हइ आवी दीक्षा लीधी । कंथेरिना वनमांहिं जई तत्काल पादपोपगमन अणसण लीधुं । अति सुकुमाल भणी मारगि जातां कांटा काकरा डाभसी करी पगे लोही नींकलिउं । तेणी गंधिइं घणां बालक सहित सीआलणी आवी तेह महात्मानूं सरीर षाधूं । लगारइ हालिउ नहीं । मरी नलिनीगुल्म-विमानि देव ऊपनु । इम अनेराइं महात्मा धर्मनइं कारणि सरीर छांडइं ॥

१७. मेतार्यमुनि कथा.

राजगृह नगरि मेतार्य महात्मा भिक्षानइं कारणिं सोनारनइं घरि पइंठओ । इसिं सोनार श्रेणिक महारायनिं देवपूजानइं कारणिं अष्टोत्तर सु सुवर्णना जव घडइं छइं । ते मेहली भिक्षा विहराविवानइं कारणिं घरमांहिं गिओ । तेतलइं ते यव क्रौंच पक्षीइं—कूकडइं चुणिया । सोनार भिक्षा लेई आविओ । यव न देखइं । मेतार्य महात्मानी शंका करइं । महात्मा दया लगइ पक्षीइं चुणिया इंम न कहइं । सोनारिं महात्मा घरमांहिं घाली नीलइं वाध्रिं मस्तक गाढउ

बांधिउं । आंषि नींकली पडी । महा दया लगइं कष्ट सहितओ केवलज्ञान ऊपार्जी मोक्षि पहुतओ । जिम ए महात्मा सोनार ऊपरि न कुपिओ तिम अनेरे ए न कुपिवुं ॥

१८. वज्रर्षिनी (बीजी) कथा.

श्री वयरस्वामि जातमात्रे छ मसवाडा रोई सुनंदा माता ऊभजाडी । तेणइं धनगिरि महात्मा-तेहना बापनइं बालिक आपिओ । तीणइं गुरुनइं समोपिओ । माहा सतीनइं उपाश्रयिं वाधइं । महासती गुणती सांभलतां तेहनइं ११ अंग आवडयां । माइं तेह पाछो लेवानूं कंदल कीधउं । तेह भणी गुरु रायसमक्ष लुहुडाइंरहइं दीक्षा दीधी । एक वार महात्मा विहरवा गिआ छइं । चेलु उपाश्रयिं छइं । गुरु बहिर भूमिं जै आविआ । चेलु महात्मानी वींटिमांडी तेह आगलि इग्यार अंगनी परिवाडि देतो दीठओ । गुरे जाणिउं एहनइं ११ अंग आवडइं । महात्मा रषे एनइं अवज्ञा करि–इम महात्मानिं जणाविउं । पछइं गुरु ढूकडइं गामिं विहार करिवा लागा । महात्माए पूछिउं—भगवन ! अम्हनइं वाचना कुण देस्यि । गुरे कहिउं–वयर चेलु देस्यि । ते वचन तेहे सुशिष्ये साचउं ज सुणि पडिवाजिउं । संदेह न आणिओ । गुरु चाल्या पूंठिं वयर चेलानइं गुरुनी पिरिं विनय करिवा लागा । चेलाइं ११ अंगनी परिवाडि दीधी । गुरु विहार करी आविआ । महात्मा पूछिआ–तुम्हनइं वाचना हूई । तेणे कहिउं–अम्हनइं वाचना घणी सांचरी । ए ज चेलु वाचनाचार्य करी आपओ । गुरे काहिउं–चेलइं योग नथी वहिया, ए तुम्हनइं जणाविवा भणी कीधउं ॥

१९. संगमसूरि कथा.

कुल्लइरि पुर नगरि श्रीसंगमसूरि गुरि दुर्भिक्ष भणी गच्छ देशांतरि विहार कराविओ । आपणपइं अजंगम भणी क्षेत्र अनइं उपाश्रय नव भाग करी तीणइ ज क्षेत्रि रहिया खरउं चारित्र पालिइं । केतलइं कालि दत्त नामिइं शिष्य गुरुनी सुद्रि जोवा आविओ । तीणइं ज उपाश्रयि गुरु देषी जांणइं गुरु ओसन्ना थया । तेह भणी आपणपइं ढूकडइं जूइं उपाश्रयि रहिओ । गुरु सार्थि विहरवा गओ । घरे फिरिओ; दुर्भिक्ष भणी विशेष वस्तु कांई लाभइं नहीं । पछइ ते देषी एक मोटइ घरि गिआ । तिहां बालक व्यंतरी-गृहीत निरंतर रोतुं । गुरे चापडी वजावी बालक रोतउं राषिउं । माय बापे हरिषे मोदक विहराव्या । ते मनमाहि चींतवइ

मूंरहइं मोकली अनइं ए गुरु सारउं विहरिस्यिं । सांझनइं पडिकमणइ गुरे कहिउं तइं धात्री-पिंड भोगविउ, ते आलोइं । मनमांहि चींतवइ ए गुरु माहरा सूक्ष्मइ दोष देषइं । आपणा नित्यवासादिक मोटाइं दोष देषतओ नथी । इसिउं चींतवतु पडिकमी आपणइं उपाश्रयि गिओ । गुरुभक्ता देवता महा अंधकार प्रबल वायु वर्षा विकुर्विओ । गुरुकन्हइं आवइं अंधारइ देषइं नहीं । गुरु लब्धिइं करी आंगुली दीवानी परिं झलहलती देखाडी दया लगइं । ते कुशिष्य चींतवइं—गुरुनइं दीवओ छइं । पछइं देवता प्रकट थई कहिउं—रे पापीया कुशिष्य ! इस्या चारित्रिया गुरु पराभवतु दुर्गतिं जाइसि । देवतानइं वचनइं बीहतउ गुरु खमाविया । प्रायश्चित्त पडिवजिउं ॥

---

२०. प्रदेशी नृप कथा.

श्वेतंबिका नगरी, प्रदेशी राजा नास्तिक । तेहनइं चित्र नामिं मुहुंतओ सुश्रावक । एकवार श्रीपार्श्वनाथना संतानीया केशी गणधर वनमांहिं पाउधारिया । चित्रगुप्त मुहुतइं घोडा खेलाविवा विश्राम लेतइं राजाइं धर्म देशना करता गुरु दीठा । कुतिगिं गुरु कन्हइं गिओ । नास्तिकमत प्ररूपतओ गुरे अनेक हेतु—दृष्टांत देषाडी जीव अनइं परलोक स्वर्ग मोक्षादिक पदार्थ मनाविओ । गाढओ सुश्रावक राजा कीधओ । एक वार राजाइं पर्वतिथइं पोसह लीधओ छइं । पारणानइं दिहाडइं सूर्यकांता तेहनी कलत्रइं—अन्य पुरुष ऊपरि आसक्तीइं विस—दीधउं । राजा मरी नइं देवलोकिं सूर्याभविमानि देव हूओ । आमलकल्पां नगरीइं आवि श्रीमहावीर तणइं समवसरणिं बत्रीस बद्ध नाटिक कीधउं । जओ ते प्रदेशी रायनइं केशी गणधरनु संयोग न हुंत तओ नरगिं ज जाओत ॥

---

२१. कालिकाचार्य कथा.

तुरुमिणी नगरीइं दत्त ब्राह्मणिइं मुहुंतइं राज्य आपणइ वसिं करी आगिलु जितशत्रु राजा काढी आपणपइं राज्य अधिष्ठिउं । धर्मनी बुद्धिं घणा याग यज्या । एक वार दत्तना माउला श्री कालिकाचार्य गुरु भांणेज राजा भणी तीणइं नगरि आविआ । मांमु भणी दत्त गुरु कन्हइं गयु । यागनुं फल पूछिवा लागु । गुरे कहिउं—जीवदया लगइ धर्म हुइं । दत्त कहइं—यागनुं फल

कहु। गुरे कहिउं—हिंसा दुर्गतिनु हेतु हुइ। पेलुं कहइ—आवडउं कां कहु; यागनूं फल कहु। गुरे मरण आंगमीनइं कहिउं—यागनूं फल दुर्गति कहीइं। दत्त कहइं—हूउं नरगि जाएसि। गुरे काहिउं—कुण संदेह; सातमइं दिहाडइं कुंभीमांहिं पचीतओ नरगि जाएसि। किसिउं अहिनाण ? । सातमइं दिहाडइं ताहरइं मुखि विष्टा पडिस्यि—ए अहिनाण ! दत्ति कहिउं [तउं] मरी किहां जाएसि ? । गुरे काहिउं—देवलोकि जाइसु। तउ दत्तइं रीसाविइं गुरु पाषती जण मूंक्या। चींतवइं छइं—सातमइं दिहाडइं गुरु ज मरस्यि। इसिउं चींतवी घरमांहिं पइंसी रहिओ। राजाइं मार्ग चोषलाविया। तिहां पुष्प प्रकर कराविया। एकइं मालीइं गाढइं काजि ऊपनइं विष्टा [मार्ग] मांहि करी ऊपरि फूलनूं डालुं लांषिउं। ते दत्त आठमा दिहाडानी भ्रांतिं सातमइं ज दिनिं गुरु मारिवा नीसरिउ। घोडानु पग विष्टा ऊपरि पडिओ। विष्टा ऊछली तेहनइं मुहुडइं पडी। बीहनु पाछओ वलिओ। सामंत मंडलीके तेह ऊपरि विरक्त हूते बांधि कुंभीमाहिं पचीतु नरकिं गिओ ! सामंते वली आगिलु जितशत्रु राजा थापिउ। तीणइं श्री कालिकाचार्य पूज्या। चारित्र आराधी देवलोकि पुहुता। जिम कालिकाचार्य साचउं बोलिउं तिम अनेरइं ऊं धर्म साचउं ज कहिवुं॥

२२. महावीर पूर्वजन्म कथा.

श्री महावीरनु जीव श्री आदिनाथनइं भरतेश्वरनउ बेटओ मरीचि नामि हुंतउं। श्री आदिनाथ कन्हइं मोकली दीक्षा लिवरावीओ। एक बार ग्लान थिओ। मनमांहिं जाणिउं—को सरवाईओ करउं। पछइं कपिल क्षत्रीरहइं धर्म कहइं। बूझ्या। पूंठि श्री आदिनाथ कन्हइ दीक्षा लेवा मोकलइं। ते पूछइं—तूं कहइ किसिउं धर्म नथी, श्री आदिनाथ कन्हइं कां मोकलइं। पछइं मरीचि कहिउं—कपिल धर्म इहांइं छइं; परइं छइं। इसिउं माइउं गोईउं वचन बोलिउं, तीणइं करी मरीचि कोडाकोडि सागरोपम भमिओ। पछइं श्रीमहावीर थिओ॥

२३. बलदेवमुनि कथा.

श्रीकृष्णदेव परलोकि पुहुता पूठि बलदेवि दीक्षा लीधी। एक गांमि भिक्षा जातओ हूंतओ कूआनइं कांठइं एक स्त्री बलदेवनूं रूप देषी मोही। जेह साहामूं जोती घडानइं थानकि

आपणा बालकनइं गलइं दोर बांधइं । बलदेव निवारइं । इसिउं चिंतवइं—ए माहरूं रूप अनर्थ हेतु । गाममांहिं आविवानु अभिग्रह लिइ । बाहरिथी भिक्षा लिउं, नहींतरि नहीं । तेहनइं तपिं घणा जीव बूझ्या । एक मृगलु जातिस्मरणनु धणी तेह ऋषिनी सेवा करइं । इसिं एक रथकार काष्ट लेवा आविओ । वनमांहिं ऊतरिओ छइं । बलदेव माहात्मा मास क्षपणनइं पारणइं तेहनी भोजननी वेलां गिओ । रथकार हर्षिओ । दान देवा लागओ । मृगलओ मनमांहि चींतवइं—ए भाग्यवंत रथकार; इसी अनुमोदना करइं छइं । इसिं प्रस्तावि अध-छेदी वृक्षनी डाल वायुइं करी त्रिहुं ऊपरिं पडी । त्रिण्हिइ मरी पांचमइ देवलोकि देव ऊपना ॥

---

२४. वारत्तक ऋषि कथा.

सुंसुमार नगर, धुंधुमार राजा, तेहनी बेटी अंगारवती । तीणइं परित्राजिका एक वादि जीती । तीणइं रीसाविइं तेहनुं रूप चित्र पट्टि लिखी चंडप्रद्योतनइं दिखाडीउं । चंडप्रद्योत मोहिओ । बलिइं मागइं । कटक करी सुंसुमार पुरि आवी गढ रोहिओ कीधओ । धुंधुमार राजा नैमित्तिकपाइं निमित्त जोवराविउं । तीणइं सेरीमांहि आवी बालक बीहाविआं । बालक नासतां नागदेवतानइं भवनि पइठां । तिहां वारत्तक महात्मा काउसगि छइं । तीणइं घाइंसिउं कहिउं—रे म बीहु; ते वचन लेईं नैमित्तिकइं रायरहइं कहिउं—तुम्हरहइं जय छइं । धुंधुमारि राजां रातिइं धाडउ दीधउ । चंडप्रद्योत धरी जीवतु उ घरि आणिउ । अंगारवती परिणाविओ । ते एक वार तीणइं पूछी—ताहरइं बापिइं थोडइं कटकिं किम हुं जीतओ । तीणीइं कहिउं—महात्मानइं वचनिं । मारगि जातउ वारत्तक माहात्मा देषाडिओ । चंडप्रद्योते—'नैमित्तिक महात्मा ! वांदिउं' इम कही हासइं नमस्कार कीधओ । महात्मारहइं सांभरिउं—मिइं वरांसइं बालकरहइं कहिउं 'म बीहउ' तेहनु दोष ए जे राय हसइं ॥

---

२५. चन्द्रावतंसक कथा.

तीणइं ए उपवासी हुंतइं रातिइं 'जां ए दीवउ उज्वालइ तां मईं काउसगि रहिवुं'—इसिओ अभिग्रह लीधओ अनइ काउसागि रहिउ । जेतलइं झामलु थाइं तेतलइं दासी 'माहरउ स्वामी अंधारइं किम रहस्यिं' ईणइं अभिप्राइं वली वली दीवइ तेल सींचइं । दीवउ सघलीइ

रात्रि प्रज्वलिओ। राजा सघली रात्रि काउसग्गि ज थाकउ। अनइ दीस ऊगतइ दीवउ ओल्हाणउ। राइं काउसग्ग पारिओ। सुकुमाल शरीर भणी प्राण ग्यां। मरी देवलोकि पुहुतओ। दढाई लगइं इम काज सरिउं॥

२६. सागरचंद्र कथा.

द्वारकां नगरीइं बलदेवना बेटानु बेटओ सागरचंद्र कुमार। तेहन्हइं नारदिं चित्रामि लिखी कमला देषाडी। तेहन्हइं अनुराग हूउ। ते कन्या आगइं नभस्सेन कुमाररहइं दीधी छइं। इसिं सांबकुमारिं पाछलि आवी सागरचंद्रनी हासइं आंखि ढांकी। सागरचंद्रि कहइउं 'कमलामेला मूंकि।' सांबिइं कहिउं 'हुं कमलामेला नहुं, हुं कमलामेलानुं मेलणहार।' सागर-चंद्र वचन छल लेई कहइं—हिवि कमलामेला मेलि। इसिं सांबकुमारि विवाहनी वेलां विघानइं बलि कन्या अपहरी। वनमांहिं आंणी। सागरचंद्र परणाविओ। श्री नेमिनाथनइं मुखिं धर्म सांभली सागरचंद्र सुश्रावक थिओ। एकवार पर्वदिनि मसाण ढूकडओ काउसग्गि रहिओ नभस्सेनि दीठओ। रीस लगइं सागरचंद्रनइं माथइं माटीनी पालि बांधी खइरना अंगार घाल्या। धर्मनी दढाई लगइं सागरचंद्र मरी देवलोकिं गिओ॥

२७. दृढप्रहारि मुनि कथा.

दढप्रहारि पल्लीपति धाडि सहित एकिं गामिं पडिओ। एक ब्राह्मणनइं घरि क्षीरनुं भोजन ब्राह्मणी अनइं बालक वाहावतां हूतां लीधउं। तेतलइं ब्राह्मण स्नान करिवा गिओ हूंतओ ते आविओ। तीणइं रीस लगइं भोगल लेई केतलाइ चोर विणासिया। पछइं दढप्रहारि रीसाविइं खड्गिं करी ते ब्राह्मण विणासिओ। तेतलइं तेहनइं घरिं नव प्रसूत गाइं छइं ते धाई, तेहइं विणासी। पछइं साधान ब्राह्मणी गालि देती आवी, तेहइं विणासी। तेहनु गर्भ फडफडतओ पडिओ। ते देषी पश्चात्तापिं पूरिओ पाछओ वलिओ वनमांहिं गुरुनइं वचनिं वैराग्य लगइं दीक्षा लीधी। अभिग्रह लीधु—जे मिं ईणइ ज गामिं रहिवुं। जां लगइ ए पाप सांभरइं तां अन्नपांणी मिं न लेवुं। इसिउं पछइं तीणइंज गामिं छ मसवाडा निरंतर लोकनां आक्रोश मा-रिवां कूटिवां सही, क्षमा लगइं निराहार थिकु पाप मल धोइं, केवलज्ञान ऊपार्जी मोक्षि पुहुतओ॥

२८. सहस्रमल्ल कथा.

एक रायनइं वीरसेन नामिइं पायक । तीणइ तेह रायनउ वइरी गाढओ दुर्जय कालसेन इसिं नांमिं जीवतओ बांधी आंणी रायनइं आपिओ । राजाइं हर्षिइं अनेक लाष गांम दीधां । सहस्रमल्ल इसिउं नांम दीधउं । तीणइं सहस्रमल्लि श्रीसुदर्शनसूरि गुरु कन्हइं दीक्षा लीधी । जिनकल्प पडिवजिओ । कालसेनिं वनमांहि काउसग्गि रहिओ दीठओ । रीस लगइं तीणइं अनेक परिं कदर्थाविओ । तेह महात्मान्हइं क्षमा ज आवी । कदर्थतां प्राण गिआ । मरी सर्वार्थसिद्धि विमानिं देव हूओ एकावतारी ॥

२९. स्कंदकुमार कथा.

श्रावस्ती नगरी कनककेतु रायनु बेटओ स्कंदकुमार । तीणइं वैराग्यइं श्रीविजयसेन सूरि कन्हइं दीक्षा लीधी । बाप मोहलगइं आपणा पुरुष पांइं सदैव छत्र धरावइं । पछइ ते महात्मा जिनकल्पी थई कांतीनगरीइं गिओ । तिहां ते महात्मानी बहिन घणा कालनी परिणी सुनंदा नामिं राणी छइं । ते महात्मा दीटओ । स्नेह लगइं वडी वार साहमुं जोइउं । महात्मानइं मनि लगारइं मोह न आविओ । अजांणतइं बहिनवी राइं इर्ष्या लगइं ते महात्मा मराविओ । तेहवु वृत्तांत जांणी बहिन गहिली थई । मंत्रीश्वरि घणे उपक्रमि करी साजी कीधी । महात्मा एहवा निर्मोह हुइं ॥

३०. ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती कथा.

कांपिल्यपुरि ब्रह्मराजा चुलणी राणी । तेहनइं चउद स्वप्न सूचित ब्रह्मदत्त बेटओ लहुडओ छइं । इसिं ब्रह्मराजा परलोकि पहुतओ । तेहना मित्र दीर्घ राजान्हइं राज्यनी सार करिवा रहिया हुंता चुलणीसिउं संबंध हूओ । ते जांणी ब्रह्मदत्त तेह देषतां काग कोइलादि-कसिउं संबंध करावइं । खल्हिइ विणासइं । अन्य जातीयसिउं संबंध-ए न्याय हुं सांसहुं नहीं । ते देषी दीर्घराय बीहतउ चुलणीन्हइं कहइं-जओ ताहरइं मिं काज, तु बेटओ विणासि । पछइ

चुलणीइं ब्रह्मदत्त एक कन्या परिणाविओ। लाषनउं धवलगृह करावितुं छइं। चुलणीइं तिहां ब्रह्मदत्त राषिओ। इसिं पट्टभक्त धनु महुंतइं नगर बाहरि थिकी लाष घर लगइ सुरंग खणावी मूंकी छइं। आपणा वरधन बेटान्हइं जणावी छइं। ते बेटओ ब्रह्मदत्तनओ अंग-ओलगू कीधओ छइं। चुलनीइं रात्रि तीणइं लाष घरि आगि लगाडी। ब्रह्मदत्तइं वरधनु मित्रनइं वचनइं भुंइं पाटू देई सुरंग प्रकट कीधी। कन्या सूती मूंकी बे जण नीकलियां। सणंगनइं मुहुडइं धनइं मुहुतइं बे तेजी घोडा राष्या छइं, तेहे चडी बे जण देशांतरि गया। भाग्यलगइं ब्रह्मदत्तिइं ६४ सहस्र कन्यानां पाणि ग्रहण कीधां। राज्य प्रामिउं। दीर्घराय संग्राम मांहि विणासी दिग्विजय करी छ खंड साधी कांपिल्यपुरि चक्रवर्ती हवओ॥

३१. कनककेतु राजानी कथा.

तेतलिपुर नगरि कनककेतु राजा राज्यनइं लोभिं जे जे आपणा बेटा जन्मइं ते ते विनंगी राज्यन्हइं अयोग्य करी मूंकइं; नाक कांन आंखि हाथ पगादिक अवयवनइं छेदवइं करी। तेह रायनी एकइं पद्मावती राणीइं आपणओ जातमात्र बेटओ प्रच्छन्न तेतलिसुत मुहतान्हइं आपिओ। ते मुहुंतानइं तीणिइं ज अवसरिं पोटिला भार्याइं बेटी जाई। ते राणीइं आंणी रायन्हइं देखाडी। मुहुंतइं ते रायना बेटान्हइं कनकध्वज नाम दीधुं। कनककेतु राजा मूआ पूंठिं ते राजा हूओ। तेतलइं मुहुतओ तेहनइं सर्व राज्यनओ धणी मांन हूउ॥

३२. कोणिक राजानी कथा.

राजगृह नगरि, श्रेणिक राजा, चिल्लणा पट्टरांणी। तेहनइं एक वार गर्भि पुत्र ऊपनओ। पाछिला भवनां वैरानुसंबंध भणी गर्भनइं महात्मइं भरतारनां आंत्रडां षावानु डोहलु ऊपनु। अभयकुमार मुहुतइं कारिमां आंत्र खवरावी डोहलु पूरिओ। जातमात्र बेटओ ऊकरडइं नखाविओ। तिहां तेहनी आंगुली कूकडइं लगारेक करडी। श्रेणिक महाराइं पाछओ अणाविओ। अशोकचंद्र नाम दीधउं। तेहनी आंगुली कुही, ते रोइं। आंगुली श्रेणिकराय पिरू वहती मोह लगइं मुहडइं घातइं। ते बेटओ रोतओ रहइं। आंगुली साजी थई। आंगुली कुही भणी तेहन्हइं बीजउं नांम कोणी इसिउं प्रसिद्ध हूउं। इसिइं अभयकुमार मुहुतइं दीक्षा

लीधी। पूठिइं श्रेणिक महाराय कोणीन्हइं राज्य देवा वांछतइं पहिलु ज सम्यक्त्वनी परीक्षा देवतानओ आपिओ हार १ कुंडल २ अनइं अवधिज्ञानी सेचनक हाथीओ–एतलां वांनां हल्लविहल्ल बेटान्ह[इं] आपिआं। कोणीनइं मनि मच्छर ऊपनु। सामंत सघलाइं आपणइं वसि करी बाप काष्टपंजरि घाती राज्य लीधउं। बापन्हइं नित्य पांच पांचसइं नाडीए मरावइं। इसिं कोणीरायनइं बेटओ जायु छइं। ते खोलइं लेई कोणीराय जीमवा बइठओ। बेटइं भांणामांहि मूंत्रिओ। ते परहुं करी जिमवा लागइं। कोणीराय चिल्लणा मायन्हइं कहइं–मात! दीठओ तइं माहरु बेटा ऊपरि स्नेह। चिल्लणा मात रोती कहइ–सिओ ताहरु स्नेह। ताहरा बापन्हइं तुं ऊपरि एवडउ स्नेह हूंतओ, ताहरी कुही आंगुली पिरू वहती आपणइं मुखिं घाततओ। ते वात जाणी कोणीरायनइं मनि पश्चात्ताप ऊपनु। कुठार लेई बापनीं अठील भांजवा गिओ। रखवाले आवतओ देषी श्रेणिकन्हइं कहिउं। श्रेणिकि महारायि चींतविउं–न जांणीइं ए वली कुणही कदर्थना मारास्यिं। एह भणी तालपुट विस खाई मूंओ। आगइं आऊषा बांध्या भणी पहिली नरक पृथ्वीइं गिओ। कोणीरायन्हइं महा पश्चात्ताप हऊओ। पछइं कोणीराय हल्ल विहल्ल भाईनइं कीधइं चेडा महाराय सार्थि महायुध करी पाप ऊपार्जी ६ नरक पृथ्वीइं गिओ॥

३३. चाणाक्य कथा.

चाणाक्य ब्राह्मणिं चंद्रगुप्त क्षत्रीपुत्र राज्य योग्य भणी संगठिओ छइं। अनइं एक पर्वतक राजा मित्र कीधओ छइं। तेहनइं बलिं चाणाक्यइं कटक करी पाडलिपुरि आवी नंदराय काढी राज्य लीधउं। पर्वतक अर्ध राज्यनु लेणहार भणी एक नंदरायनी बेटी लक्षणे करी विषकन्या जांणीनइं परणाविओ। चन्द्रगुप्त विसना उपचार करतओ वारिओ। तिम अनेराइं आपणां काज सरिया पूंठिं मित्रन्हइं अनर्थ करइं॥

३४. आर्यमहागिरि कथा.

श्री आर्यमहागिरि सूरि जिनकल्प विच्छित्तिं गइं हुंतइं विशेष वैराग्य लगइं श्री आर्यसुहस्ति सूरिन्हइं गच्छ समोपी* निःसंग थिका जिनकल्पनी तुलना करइं छइं। अनइं जे गाममांहिं

* 'સમોપી' શબ્દ ઉપર પાછળથી કોઇ વાચનારે 'આપી' આવું ટિપ્પણ, ઉપરના હાંસિયામાં કરેલું છે.

गच्छ रहइ ते गाम बाहरि रहइ–इम गच्छनी निश्रा रहइं। एक वार पाडलिपुरि आव्या। क्षेत्र ६ भागि करी पांच दिन एकेकइं भागि वहिरवा जांइं। छांडीती भिक्षा लिइं। एकवार श्री आर्यसुहस्ति सूरि अभिनव श्रावक वसूभूति श्रेष्टिनइ घरिं तेहनां कुटंब बूझविवा पुहता छइं । धर्म कथा कहइं छइं। इसिं श्री आर्यमाहागिरि सूरि भिक्षावृत्तिं तीणइ ज घरि पुहता। श्री आर्यसुहस्ति-सूरि तेहन्हइं घांइंसिउं अभ्युत्थान कीधउं। श्री आर्यमहागिरि सूरि पाछा वलिआ । वसुभूति श्रेष्टिं पूछिउं–भगवन् ! ए कुण महात्मा ?। श्री आर्यसुहस्ति सूरिं कहिउं–ए अम्हारा गुरु । गरूआ जिनकल्पनी तुलना करइं छइं। बीजइं दिहाडइं भक्ति लगइं घरि २ उज्झित भात पाणी कराविउं। श्री आर्यमहागिरिइं दीठउं । तेहेनुं गुरे न लीधुं । अनइं श्रीसुहस्तिसूरिन्हइं आवी कहिउं–तुम्हे विरूउं कीधउं। अम्हारइं भिक्षा असूझती कीधी। कालि जे अभ्युत्थान कीधउं तीणइं कीधइं। आज पूठिइं आपणपइं एकइं क्षेत्रि न रहिवुं। इम कही गुरे अनेरइ क्षेत्रि विहार कीधओ। गच्छनिश्रा मूंकी अनिश्रित तप कीधओ। इम अनेरे करिवुं ॥

३५. मेघकुमार कथा.

राजगृह नगरि श्रेणिक महारायनइं धारिणी रांणीनइं गर्भि बेटओ ऊपनु। अकालि मेघनु डोहलु ऊपनु। अभयकुमारिं देवता आराधी डोहलु पूरिओ। बेटओ जायु । मेघकुमार नाम दीधउं। यौवनवइं तीणइं आठ कन्या परणी, मेल्ही, श्री महावीर कन्हइं दीक्षा लीधी। ते स्थविर महात्मानइं सीषविवा आपिओ। सांकडइं उपाश्रयि संथारवानी वेलां मेघकुमारनु संथारओ बारणइं आविओ। तिहां अनेक महात्मानां पग हाथ दंडासणां वाजइं; रज माहिइं आवइं। सुकुमाल सरीर भणी निद्रा लगारइं न आवी। राती दोहिली विहांणी। मन भागउं । इसिउं चिंतविउं–श्री महावीर पूछीनइं वली गृहस्थवासिं जाइसु। विहाणइं स्थविर साथिइं समोसरणि श्री महावीर कन्हइं आविओ। कुलीन भणी वचन ऊचरी न सकइं । श्री महावीरइं बोलाविओ–हे मेघकुमार ! राति तूंहरइं दोहिली विहांणी। पुण ए किसिउं दुःख !। तइं एह भवथी पाछिलइं त्रीजइं भवि हाथीइं छतइं अनइं दवनइं तापिं तृषाक्रांत हूंतइं पांणि कारणि सरोवरमाहि पइठइं कादवमांहिं पइठइं, कादवमांहि कालिइं वइरी हाथीआनां मारिवां कूटिवां ७ दिन सहियां। मरी वली हाथीउ ज हूओ। दव देखी जाति स्मणरण ऊपनूं। त्रिणि स्थंडिल कीधां। एकवार दव लागइं ७ सइं हाथिणी सहित तिहां जई रहिओ। दवने त्रासवे

जीवे ते स्थानक भराणउं। इसिं कांन खंजूआलवा हाथीइं पग ऊपाडिओ। इसिं ससलु एक अणमातओ पगनइ थानकिं आवी रहिओ। तु तेहनी दया लगइं त्रिणि दिन पगलु ऊपाडिओ ज थकुओ। मरी श्रेणि करायनु बेटउ हूओ। इस्या पाछिला भव सांभली मेघकुमारन्हइं जातिस्मरण ऊपनूं। अभिग्रह लीधु। आजपूठिं महात्मानां हाथ पग दंडासणां लागओ मनि करी दूहवण न आंणउं। अभिग्रह पाली गुणरत्न संवत्सरादिक तप करी सर्वार्थसिद्धि विमानि पुहतो॥

३६. सत्यकि विद्याधर कथा.

चेडा महारायनी बेटीइं सुज्येष्ठा दीक्षा लीधी। अगासइं आतापना लिइं छइं। इसिं पेढाल विद्याधरिं आवी अंधकार विकुर्वी भ्रमर रूपिं तेहनी योनिं वीर्य मूंकिउं। बेटओ ऊपनु। तेहनूं सत्यकि इसिउं नाम दीधुं। महासतीमांहिं वाधइं। कानझटइं घणउ सिद्धांत पढिओ। एक वार कालसंदीपकि मोटइं विद्याधरिं श्री महावीर पूछिआ—भगवन्! मूंहन्हइं कहिनु भय? वीरिं कहिउं—सत्यकिनओ। तीणइं अवज्ञा करी ते सत्यकि बालक आपणइं पगि पाडिओ। सत्यकि तेह ऊपरि रीसाविओ। सत्यकिन्हइं पेढालिं विद्या दीधी। रोहिणी विद्या साधवा लागओ। कालसंदीपक उपसर्ग करतओ विद्याइं ज वारिओ। आगइं ते रोहिणी विद्या छइं भवे साधी हुंती; पुण थोडा आऊषा भणी सीझतीइ पडिवजी नहि। इसिउं कहिउं हूंतउं—तु आवतइ भवि सीझिजें; तेह भणी तत्काल सीधी। निलाडनइ मार्गि तेहनइ सरीरि पइठी। तिहां त्रीजउं लोचन हवुं। तीणइ महासतीनउं व्रत भंग कीधउं तेह भणी पेढाल बाप मारिओ। तीणइं काल संदीपक विद्याधर नासतओ तेहनूं विकूर्विउं मायारूप त्रिपुर बाली लवण समुद्रिं पाताल कलशिं पइंसतओ मारिओ। सत्यकिइं श्रीमहावीरकन्हइं सम्यक्त्व प्रामिउं। गाढउ देव गुरु भक्त हुइं। पुण तु ऊ विषयनु वाहिओ रायनी लोकनी रूपवंत स्त्री भोगवइं। बलीआ भणी, एकवार चंडप्रद्योतिं सभामांहिं कहिउं—को एहन्हइं मारस्यि। पडह वजाविओ। ओमानामिं नगरनायका मारिवउं पडिवजिउं। इसिं सत्यकिइं रूपचातुर्यनु वाहिओ ओमानइं घरि वसइं। ओमाइं पूछिउं—ए विद्या तुम्हथी केतीय वारइं अलगी थाइं? तीणइं वीससिइं हूंतइं कहिउं—कामसेवानी वेलां अलगी थाइं। ते वात ओमाइं चंडप्रद्योतनइं जणावी। तेहना उदर ऊपरि कमलपत्र छेदी देषाडिउं—तुंहन्हइ राखसिउं; तेहजन्हइ मारिसिउं। इसओ वीसास

ऊपजाविओ । ओमा रायन्हइं विषय सेवानी वेलां जणावी । राजा आपणा सनद्ध बद्ध प्रच्छन्न आगइं पुरुष राषिआ छइं । तेहे ओमा–सत्तिकि बे रायनइं ओदसि विणासिआं । सत्तिकिनइं शिष्य नंदीश्वर विद्याधरिं रीसाविइं नगर ऊपरि शिला विकुर्वीनइं लोक प.इं तेह बिहुंनी तीणइं ज अवस्था स्थानकिं २ मूर्ति करावीनइं पूजावी । लोके बीहते तिम कीधउं । सत्यकि मरी नरगि गिओ ॥

३७. चंडरुद्रनी कथा.

उज्जयनी नगरीइं श्रीचंडरुद्र गुरु प्रकृतिइं गाढओ रीसाल भणी महात्मा थिकु अलगाउ एकलउ ज बइंसिइं । इसिं एक व्यवहारीयानु बेटओ नव परिणीत तेवड तेवडे मित्रे परिवरिओ आवी महात्मा वांदइं । मित्रे हासइं कहिउं–एहन्हइं दीक्षा दिओ । महात्माए कहिउं गुरु कह्नलि जाओ । ते गिआ । गुरे नव परिणीतनइं माथइं लोच कीधु, दीक्षा दीधी । मित्र विलषा थिआ, घरि गया । नव दीक्षित चेलु गुरुप्रतिं कहइं–भगवन् ! अनेथि जईइ । माहरां संसारीयां आवतां हुस्यि । रातिं गुरुनइं वडा भणी खांधि चडावी चालिओ । अंधारइं ऊंचा नींचइं पग पडइं । गुरु रीसाविआ । माथइं दांडइं आंहणइं । लोही नीकलइं । ते सुशिष्य मनमांहि चिंतवइं–ए गुरुआ गुरुन्हइं माहरइं कीधइं एवडउं कष्ट आविउं । इम चींतवतां केवलज्ञान ऊपनूं । मारगि पाधरओ हिंडिवा लागु । गुरे पूछिउं–अंधारिं पाधरु किम हींडइ छइं ? । कांइं अतिशय ? । हा भगवन् ! । किसिओ–प्रतिपातीओ अप्रतिपातीओ ? । भगवन् ! अप्रतिपातीओ । पछइं गुरुन्हइं पश्चात्ताप लागु । खांध थिकु ऊतारी खमावतां गुरुन्हइं केवलज्ञान ऊपनूं । जिम तीणइं शिष्यिं विनय कीधउं तिम अनेरे शिष्ये विनय करिवु ॥

३८. अंगारमर्दकनी कथा.

श्रीविजयसेनसूरिने शिष्ये महात्माए सुउणामांहिं सूअर पांचसइं कलभे परिवरिओ दीठओ । प्रभाति स्वपन गुरुनइं कहिउं । गुरु तेहनु अर्थ कहइं–आज को एक अभव्य गुरु सुशिष्ये परिवरिओ आविस्यि । इसिंइ रुद्रदेव नामिं अभव्य आचार्य पांचसइं सुशिष्ये परिवरिओ आविओ । गुरे ते महात्मानइं परीक्षा देषाडवानइं कारणि मात्रा लेवानी भूमिकां लीहाला नखाविआ । महात्मा मात्रउं लेवा ऊठिआ । जेतीवारइं लीहाला चंपाइ, तेती वारइं

पश्चात्ताप सहित मिच्छामि दुक्कड दिइं। तिसिं रुद्रदेव आचार्य ऊठिओ मात्रानइं कारणि। लिहाला चंपाणा कसकसाट करइं। घाइंसिउं कहिउं-अरिहंतनां जीवडां मरइं छइं। ते वात सांभलीनइं महात्माए गुरु अभव्य जाणिओ। श्री विजयसेनसूरिइं ते बाहरि काढिओ। पांचइ सइं शिष्य तप करी देव लोकि पुहुता। तिहांथी चवी वसंतपुरि दिलीपरायनां पांचइसइं बेटा हूआ। एकवार गजपुरि नगरि कनकध्वजरायनी बेटीनइं स्वयंवरा मंडिपिं गिया। तिहां ते अंगारमर्दकाचार्यनु जीव ऊंट थिओ भार वहतओ वाहवतओ दीठओ। करुणा लगइं पांचसइं रायना बेटान्हइं जातिस्मरण ऊपनूं। पाछिला भवनु अभव्य गुरु जांणी मूकाविओ। तीणइं वैराग्यि पांचसइं दीक्षा लीधी। थोडइं कालिं मोक्षि जास्यि॥

---

३९. पुष्पचूला कथा.

पुष्पभद्र नगरि, पुष्पकेतु राजा, पुष्पवती रांणी। तेहनइं पुष्पचूल पुष्पचूला इंसिं नामिं बेटओ बेटी युगल जाइउं। तेह बिहुंइं परस्परइं महामोह देषी राजाइं बिहिं माहोमाहिं परणावियां। ते असमंजस देषी पुष्पवती रांणी दीक्षा लेई मेरी देवलोकि पुहता। ताहरां छोरू एहवु पाप करी नरगि म जाउ-एह भणी पुष्पचूला रांणीनइं सुउणा मांहि नरग देषाडइं। ते बीहती पुष्पचूल रायनइं कहइं। राजा सर्वदर्शनी कन्हइ नरगनूं स्वरूप पूछइं। ते कहइं पुण सुउणासिउं मीलइं नहीं। पछइं श्री अन्निकापुत्रि सूरि नरगनऊं स्वरूप कहिउं। जिसिउं रांणी सुणामांहिं दीठउं तिसिउं ज मिलिउं। वली देवताइं रांणीरहइं सुणामांहिं देवलोक देषाड्यां। तेहइं अनेरा दर्शनीकहिनां कहियां मिलियां नहीं। श्री अन्निकापुत्र सूरिनां कहियां मिलियां। वैराग्य ऊपनइं पुष्पचूला रांणीइं दीक्षा लीधी। रायना कदाग्रह लगइं रायनइं आवासिं ज रही दीक्षा पालइं। इसिं श्री अन्निकापुत्र सूरि जंघाबल परिक्षीण भणी तीणइं ज नगरिं रहिआ। बीजा महात्मा विहार कराविआ। गुरु वहिरी न सकइं। पुष्पचूला महासती सूझतु आहार आंणी दिइं। एक वार वरसतइं मेघिं भातपांणी लेई आवी। गुरे कहिउं-तुं किम आवी?। भगवन्! अचित्त पाणीमांहिं आवी। गुरे कहिउं-ए वात किम जाणी। तीणइं कहिउं-तुम्हारा प्रसाद लगइ मूअन्हइं केवलज्ञान उपनूं, तीणइं करी अचित्त पांणी जांणिउं। पछइं गुरे पूछिउं-मूहन्हई केवलज्ञान किम हुस्यि। तीणी महासतीइं कहिउं-गंगा नदी उतरतां हुस्यि। ते जांणी गुरु गंगा नदीइं जई बेडीइं चडिया। एक वइरी देवता जीणइं पासइं गुरु बइसइं तीणइं पासइं बेडी बोलइं। जओ गुरु विचालइं बइंठा तु बेडी सघलीइं बूडवा लागी।

अनार्यलोके गुरु पांणीमांहिं लांषिया । देवता हेठलि त्रिसूल धरिउं । गुरुनइं मनि दया-माहरी सरीरनइं खारिं करी आहा पांणीना जीव विणसइं छइं । इसिउं चिंतवतां केवलज्ञान ऊपनूं मोक्षि पुहुता ॥



४०. सुकुमालिकानी कथा.

वसंत पुरि सहस्रयोधी रायना बेटा बि ससग भसग इसिं नांमिं । तेहे दीक्षा लीधी । गीतार्थ हूआ । तेहे आपणी बहिनि सुकुमालिका अपार रूपवंति दीक्षा लेवरावी । तेहनां रूप जोवा अनेक तरुणा पुरुष आवइं । बीजी महासती राषी न सकइं; ते बिहिं भाई राषइं । एक बारणइ रहइं; एक भिक्षा लेई आवइं । इसी परिं भाई रहइं । एवडओ क्लेश देखी वैराग्य लगइं सुकुमालिका अणसण लीधउं । एकवार क्षीण सरीर भणी गाढी मूर्छा आवी । भाईए बिहुं महात्माए मुई जांणीनइं वनमांहिं परिठवी । तिसिं सार्थ सहित एक सार्थवाह तिहां आवी ऊतरिओ । महासतीन्हइं वनने टाढे वायुए करी मूर्छा वली । सार्थवाहिं स्त्रीरत्न भणी लीधी । आपणी कलत्र कीधी । आपणइं नगरि लेई गिओ । केतलइं एक कालिं ससग भसग बेई महात्मा फिरता तेह सार्थवाहनइं धरिं वहिरवा आव्या । ते स्त्री महात्मानइं पगे पडी वांधा । ओलषी तेह महात्माए सार्थवाह बूझवीनइं मूकावीनइं वली दीक्षा लेवरावी । तप करी देवलोकि पुहुती ॥



४१. मंगू आचार्यनी कथा.

मथुरा नगरी, मंगु इसिं नांमिं आचार्य । तीणइं नगरि वारू आहार रसवती भिक्षा लाभइं । तेह भणी जिह्वानइं रसिं वाहिओ ते आचार्य तीणइं नगरि नित्य वासिं रहिओ । केतले दिने मरी नगरना खाल ढूकडइं यक्षनइं भवनिं अधिष्टायक व्यंतर हूओ । विभंगज्ञानि पाछिलु भव जाणी पश्चात्ताप करइं । यक्षना भवन आगलि महात्मा बहिर्भूमि जांइं । तेहन्हइं पाषाणमइ यक्षनी मूर्ति मुंहुडइं जीभ काढी देषाडइं । महात्मा पूछइ । ते यक्ष कहइ-हउं तुम्हारु गुरु, जीभनइं दोषिं व्यंतर थिओ । तुम्हे रखे जीभ वाहो, एहवो अनर्थ रषे प्रांमओ । इम कही अदृश्य थिओ ॥



४२. बे शुकोनी कथा.

कादंबरी अटवीइं वटवृक्ष २ सूडा सगा भाई हूंता । एक सूडओ भीले लीधओ । पर्वत पालि मांहिं वाधिओ तेह भणी गिरि-शुक कहिवराइं । बीजओ सूडओ तापसे लीधओ तेहना तपोवनमांहिं वाधिओ तेह भणी ते पुष्प-शुक कहीइं । एकवार वसंतपुरनु स्वामी विपरीत शिक्षित घोडइं अपहरिओ । अटवी मांहिं आविओ । गिरिशुक रायन्हइं कहइं—भो ! धाओ, घोडा आभरण सहित राजा जाइं छइं; तुम्हे लिओ । ते वात सांभली राजा गाढओ बीहनु । राजा चाली ऊतावलु तापसनइं आश्रमि गिओ । तिहां पुष्पशुक कहइं—भो तापसो ! ऊठओ, तुम्हारइं अतिथि राजा आविओ; आसन मांडओ, परहुणाई करओ । तापसे आसन मांडिउं; वन फल वारू भोजन कराविउं । राजा सुस्थिओ थिकु पूछइ—तुम्हे बिं सूडा सरिषा ज देषु छुं; अनइं एवडउं बोलवानूं आंतरुं कांइं । पुष्पशुक कहिवा लागओ—राजन् ! ए संसर्गनुं विशेष । नहीं तु अम्हे बेहू सगा भाई । सांभलि, अम्हारूं स्वरूप—

> **माताप्येका पिताप्येका मम तस्य च पक्षिणः ।**
> **अहं मुनिभिरानीतः स च नीतो गवाशनैः ॥ १ ॥**
> **गवाशनानां स गिरः शृणोति, अहं तु राजन्! मुनिपुंगवानाम् ।**
> **प्रत्यक्षमेतद्वचनापि दृष्टं, संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ॥ २ ॥**

इसिउं सूडानूं वचन सांभली राजा हर्षिओ । वली आपणइं स्थानकि पुहुतु । एहवा बेहु सूडानइं उदाहरणि दृष्टांति संसर्गज दोष गुणनूं स्वरूप जांणत ॥

४३. शैलकऋषि कथा.

शैलपुर नगरे, शैलक राजा, मंडूक बैटान्हइं राज्य देई पांचसइं परिवारिओ दीक्षा दिइं । गीतार्थ हूओ । आचार्य पदि स्थापिओ । एकवार तेहनइं सरीरि रोग ऊपनु । मंडूक राज बेटइं आपणइं नगरि राषी पडीगाविओ । साजो थिआ पछी रस सुख लंपट पणइं प्रमादिओ हूंतु तीणइंज नगरिं रह्यु; विहार न करइं । बीजे शिष्ये सविहुं छांडिओ । पंथक इसिं नामिं शिष्य एक कन्हलि रहिओ । आगइं राज्यावस्थाइं ते तेहनइं मुहुतओ हूंतओ । एकवार चउमासानइं दिहाडइं ते गुरुवार करी सांझनइं समइं गाढी निद्रा सुतओ छइं । पंथक शिष्यइं चउमासी पडिकमणउं करतइं पगि लागी गुरु कन्हइं खामणउं कीधउं । गुरु जागिओ, रीसावओ—रे कुण-

इं पापीइं जगाडिओ । पंथक शिष्य कहइं–भगवन् ! आज चउमासा भणी पगि लागी खामणउं कीधउं । वली एहवओ अपराध नहीं करउं । इसिउं कहितओ पगि लागी खमाविं । इसिं गुरु-रहइं चेत वलिउं; इशुं चींतवइं–एह सुशिष्यनी एवडी क्षमा, इसी गुरु भक्ती; अनइं मूं पापी-यानु एवडओ प्रमाद; इसिउं निर्विवेकपणउं ! । इशुं चींतवइं वैराग्य प्रांमिउं। पंथकन्हइं कहइं वत्स ! तिइं आज संसारमांहिं पडतओ उद्धरिओ–इसिउं कही घणओ काल विहार करतओ खरूं चारित्र पाली पांचसइं परिवारि परिवरिओ । ते श्री शैलकाचार्य श्री शत्रुंजय ऊपरि सिद्धि गिओ ॥

४४. नंदिषेण कथा.

श्रेणिक महारायनु बेटओ नंदिषेण चारित्रावरणीय कर्म छता भणी देवता वारी तु दीक्षा लेई गीतार्थ हूओ । एकाकीआ पणानी तुलना करतओ एक वार वरांसइं गणिकानइं घरि वहिरवा पइंठओ । धर्मलाभ दीधओ । गणिका कहइं–अम्हारइं अर्थलाभ जोईइं । तेतलिं नंदिषेणिं कर्मनइं वाहिइं अभिमान लगइ आपणी लब्धि नेवनूं तृणउं काढी सुवर्णनी वृष्टि बार कोडिं पाडी जावा लागु । गणिका धरिओ; द्रव्य देई जावा न दिउं । पछइं नंदिषेण तेह गणिकानिं वचनिं भेदिओ तेहनइं घरि रहिओ । दिहाडी दिहाडीना दस दस प्रतिबोधी दीक्षा लिवरावइं--इशु अभिग्रह लीधु । बार वरस रहिओ । एकवार ९ मिल्या पुण दसमु न मिलि । भोजनवेला अतिक्रमइं । नगर नायका हसिउं–दसमा तुम्हेऊ ज हूआ । हविं भोजन करओ। तिसिं कर्म क्षयिं गिइं हूतइं बूझ्यो । ते नगरनाइका छांडी खरूं चारित्र आराधी मोक्षि पुहतु ॥

४५. कंडरीक पुंडरीक कथा.

पुंडरीकिणी नगरीइं कंडरीक पुंडरीक बेइ भाई राजा छइं। एकवार गुरुनी धर्म देशना सांभली पुंडरीक बूझ्यो, दीक्षा लेवा वांछइ । लुहडओ भाई कंडरीक कहइं--हुंउ दीक्षा लेइसि। पछइं पुंडरीक राज्यचिंता करइं । मन पाषइं रहिओ । कंडरीकिं दीक्षा लीधी । वर्ष १ सहस्र दीक्षा पाली । एकवार परीषह थिकु भागओ । कर्मि करी विषय-इच्छां वाहिओ । राज्य वांछ-तओ आपणइं नगरि आविओ । वनमांहिं वृक्षनी डालिं उपकरण विलाई बइंठओ । पुंडरीक

राजा वांदिवा आव्यु । तीणइं लक्षणे करी कंडरीक चारित्रि थिकु भग्न-परिणाम जांणिओ । राज्य तेहन्हइं आपीउं । दीक्षानु वेष तेहनु आपणपइं लेई राजा पुंडरीक गुरुभणी चालिओ । कंडरीक अतिलोभ लगइं स्निग्ध मधुर घणओ आहार जिमिओ पेटि व्यथा ऊपनी । गूढ विशूचिका हूई । दीक्षा छांडी भणी परिवारन्हइं अगमतओ हूंतओ वैद्यादिके कुणहइं सार न कीधी । ते ऊपरि रौद्रध्यानि वर्त्ततओ मरी ७ नरक पृथ्वीइं गयु । पुंडरीक गुरुकन्हइं जई निष्कलंक चारित्र पालिसुं–इशुं चींतवतओ मारगि भूष तृषा परीषह सहतओ शुभ ध्यानि वर्त-तओ सुकुमार देह भणी तीणइज दिहाडइं मरी सर्वार्थ सिद्धि देव हूओ । इसि परिं शुभाशुभ कर्मना विपाक कहिया ॥

---

४६. शशिराजानी कथा.

कुसुमपुरि नगरि, शशी सूरप्रभ बे भाई राजा हुंता । एक भाई श्रीविजयघोष सूरिनी धर्मदेशना सांभली सूरप्रभ बूझ्यो । बडा भाई शशीन्हइं कहइं–बांधव ! आपणपे धर्म कीजइं । शशी हसीनइं कहइं–कुणिहिं धूतारइं तउं विप्रतारिउं ! लाधां सुख छांडीनइं परलोकनां अदृष्ट सुखनइं विषइं कुंण अजांण खप करइं । सूरप्रभ कहइं–बांधव ! संदेह म आंणि । जगमांहि धर्म छइं; धर्म पापनां फल देखीइं छइं । एक जीव सुखीया, एक जीव दुखीआ दीसइं छइं । एक सरोग, एक नीरोग । एक जीव सुरूप, एक कुरूप । एक सधन, एक निर्धन । इत्यादिक भाव पुण्य पापइज थिका हुइं । इसिं परि अनेक प्रकारिं बूझविओ पुण शशी बुझइं नहीं । सूरप्रभिं दीक्षा लीधी । तप करी पांचमइं ब्रह्म देवलोकि देव हूओ । शशी अविरत हूंतओ मरी त्रीजी नरक पृथ्वीइं नारकी हूओ । भाई देविं स्नेह लगइं तिहां जई पाछिला भवनओ वृत्तांत तेहन्हइं जणाविओ छइं । शशी पश्चात्ताप करइं–मिं सरीरनइं सुखि वाहिइं तप अनइं अनेरीइ विरति न कीधी । बांधव ! ते सरीर माहरूं कदर्थि कष्ट सहविराविं; जिम आहा हउं नरकनां दुक्ख छूटउं । ए वात कहइं छइं–

नरयत्थोससिराया बहुं भणइ देहलाहणा सुहिओ ।
पडिओमि भए भाऊ अतो मे जाएह तं देहं ॥
को तेण जीवरहिएण संपयं जाइएण हुज्ज गुणो ।
जो इसि पुरा जायं तो नरए नेव निवडंतो ॥

नरय०---नरकि रहिओ शशी राजा बहु अनेक प्रकारिं भाईन्हइं कहइं, दह०--भाउअं--बांधव ! आपणा शरीरनउं जे छइं लालवुं तेणइं करी सुखिओ हूंतओ, पडिओमि भवे--नरकनां दुक्खमांहिं पडिओ छउं, तो मे जा०--तेह भणी माहरूं सरीर, जाएह--कदर्थी पीड सहिवरावि, इम कहइं छइं । भाई देव तउं कहइं छइं--को ते०--तीणइं ताहरइं जीविं रहित सरीरिइं ? जाइए०--कदर्थिइं हूंतइं कुण गुण हुइं--सिओ लाभ हुइं । कांई न हुइं । जइ सि०--जओ पहिलउं जीवतां हुंतां ते सरीर तप चारित्र कष्ट सहिवरावत, तो तु नरक मांहिं न पडत । इसिउं कही सूरप्रभदेव भाइनुं दुःख फेडिवानइं विषइं असमर्थ हूंतओ वली पाछओ देवलोकि गिओ ॥

---

४७. श्रेणिक अने नापितनी कथा.

राजगृह नगरि, श्रेणिक राजा, चिल्लणा पट्टराज्ञी । तेहन्हइं एक स्तंभ आवासनु डोहलु ऊपनु । ते अभयकुमारिं देवता आराधी तेहपाहिं सर्वर्तुक वनसहित एक स्तंभ आवास करावी डोहलु पूरिओ । इसिं एक मातंगनी कलत्रन्हइं अकालि आंबानु डोहलु ऊपनु । तीणइं मातंगिं अवनामिनी विद्यानइं बलिं सर्वर्तुक वनना आंबानी डाल नमाडी आंबा लेई डोहलु पूरिओ । ते आंबानु चोर अभय कुमारिं बृहत्कुमारीनी कथा कही बुद्धिनइं बलिं प्रकट कीधु । तेहन्हइं श्रेणिकराइं कहिउं-जइ विद्या दिइं तु मूकुं । तीणइं मानिओ । श्रेणिक सिंहासनिं बइठओ विद्या पढइं । घणी वार मातंगिं विद्या कही पुण आवइं नहीं । अभयकुमारिं कहिउं--मातंगन्हइं सिंहासनि बइसारी विद्या लिओ, तु आवइं । पछइं मातंग सिंहासनि बइसारी बे हाथ जोडी श्रेणिक महाराय आगलि ऊभु विद्या लिइं । एकवारनी पढी ते विद्या आवी । इम अनेरे ऊ विद्या लेते विनय करिवु ।

एक नापित विद्यानइं बलि आपणओ छरपलु आकाश मंडलि राषइं । ते कन्हइं एकइं त्रिदंडीइं ते विद्या लीधी । त्रिदंडीओ विदेशी जई तीणी विद्याइं आपणां त्रिदंड आकाश मंडलिं राषइं । ते देषी विस्मय हूंतु लोक तेहन्हइं पूजा भाक्ति करइं। एकवार लोके पूछिउं--ए विद्यानुं तुम्हारइं गुरु कुण ? तणिइं लाजतइं नापित न कहिओ । इम कहिउं--हिमवंतवासी माहरु विद्यानु गुरु । तीणइं गुरुनइं ओलविवइं करी त्रिदंड खडखडाट करतउं भुंइं पडिउं । लोके सहूए हसिओ । तेह भणी बीजे गुरुनओ निह्नव न करिवु ॥

---

४८. मेतार्यमुनिनी पूर्व कथा.

उज्जयिनी नगरीइं चंद्रावतंसकरायनइं बेटइं सागरचंद्रिं आपणा ओरमाई भाई गुणचंद्रऱ्हइं राज्य देई दीक्षा लीधी । एकवार उज्जयिनीथी आविओ महात्माए इम कहिउं–राय अनइं पुरोहितना बेटा* बेउ उज्जयिनीइं मुहात्माऱ्हं ऊचाटइं । ते सांभली सागरचंद्र महात्मा उज्जयनीइं गिउ । रायनइ पुरोहितना बेटा बिहुऱ्हइं शिक्षा देई बलिइं दीक्षा दीधी । पुरोहितनउ बेटउ ब्राह्मण भणी लगारेक जातिमद करइ । बेइ जण चारित्र पाली देवलोकि गिया । जे पहिलउं च्यविइ ते बीजइं बूझविवउ–इम संकेत करइं । पहिलउं पुरोहितना बेटा*नउ जीव च्यविउ । मेइणिनइं गर्भि अवतरिओ । राजगृह नगरि ते मेइणि एक सेठनइं घरिं बुहरइं विणजइं । सेठिणिनइं छोरु जीवइं नहीं । मेइणिइं प्रीतिइं आपणओ बेटओ जात मात्र सेठिणिऱ्हइं आपिओ । सेठिणिनी बेटी जाति मात्र आपणपइं लीधी, ते वात सेठ न जांणइं । ते बेटानूं मेतार्य नाम दीधूं । सोल वरसनु मित्र देवि बूझविओ, बूझइं नहीं । इसिइं आठ व्यवहारीयानी कन्या वरिओ । फूलके हुंते देवता मेअणिनउं सरीर अधिष्ठी–ए माहरु बेटओ असिरीषी कन्या कांइं परणइं–इम कहितइं शबिका थकउ ऊपाडी मेइणिइ घरिं आंणिओ । देवता कहइं–तुं बूझि । मेतार्य कहइं–तओ बूझउं जओ मूंहनइं महत्वि चडावइं । ते वात देवताइं पडिवजी । पछइं देवताइं मेइणिनइं घरि एक बोकडओ लींडीनइं थानकि रत्नइज मूंकतओ विकुर्विओ । मेइणि रत्ने थाल भरी त्रिणि दिहाडा रायनइं भेट करइं । अभयकुमारि मंत्रीश्वरिं कारण पूछिउं; कहइं–माहरा बेटारहइं रायनी बेटी दिओ । पछइं तेह पाइ राजाइं नगर पाखती सोनानु गढ अनइं वैभारगिरि पर्वतिं पाज करावी । पछइ क्षीरसमुद्रनूं पाणी अणावी मेतार्य नहरावी सूझाडी आपणी बेटी राजाइं दीधी । ते अनइं वली बीजीइं आठ व्यवहारीआनी कन्या परणी । हवडां मजऱ्हइं विषय सुख भोगविवा दिं । पछइं जे कांईं तुं कहिस्यि ते करेसि––इम कही देवताऱ्हइं मनावी २४ वरस गृहस्थवासि रही दीक्षा लीधी । जिम सोनारि उपसर्ग करतइं केवलज्ञान ऊपार्जीनइं मोक्षि पुहुतु ते वात आगइं कही+ ॥

---

* મુખ્ય પ્રતિમાં આ બે ચિન્હ વચ્ચેનો પાઠ લખતી વખતે છુટી ગયો છે.

× જુઓ પાન ૭૬.

४९. हरिकेशि मुनिनी पूर्व कथा.

मथुरा नगरीइं स्वामी शंखराजाइं दीक्षा लीधी । ते गीतार्थ हूओ। भिक्षावृत्ति हस्तिनागपुरिं आविओ। सोमदेव पुरोहित कन्हलि मार्ग पूछिओ । तीणई द्वेष लगइं व्यंतराधिष्ठित अग्निमय सेरी देषाडी । महात्मा तीणइंज मार्गि गयु । व्यंतरु महात्मानइं प्रभावि नाठओ । सेरी शीतल थई । सोमदेव पुरोहितनइं मनि धर्मनु प्रभाव देषी पश्चात्ताप थिओ । महात्माने पगि लागु खमावइं। तीणइं महात्मानु उपदेश सांभली दीक्षा लीधी । चारित्र खरउं पालइं। पुण लगारेक ब्राह्मणपणानी जातिनओ मद करइं । मरीनइं देव हूओ। तिहां थिकु च्यवी नीचगोत्र कर्मनइं उदयइं गंगातटि बलकोष्ट नामि मातंगनु ठाकुर तेहनी कलत्र गौरी तेहनु बेटओ हरिकेशी बल आंबानइं स्वप्ने करी सूचित । एकवार ते वसंतोत्सवि बालकमांहि रमतओ वढवाडिओ भणी बाहरि काढिओ। एकिं स्थानकिं तीणइं सविष साप लोके मारिओ दिठओ । निर्विष जीवतु मूकीओ दीठओ । हलूकर्मा भणी इसिओ विचार ऊपनइं--जीव सघलाइं आपणे ज दोष दुःखिआ थाइं; आपणे ज गुणे सुखिआ थाइं । इसिउं चिंतवतां महात्मा मिलिआ। धर्म सांभलिओ । वैराग्य ऊपनूं । दीक्षा लीधी । देवन्हइं सेवनीय थिओ । जिम यज्ञ पाटकि धर्मनु महिमा देखाडी ब्राह्मण बूझवी केवलज्ञान ऊपार्जी मोक्षि पुहुतु--ए वान आगइं पहिलइं ' सइं न कुलं इत्थ पमाणं' ईणइ गाथा कथा कही छइं *॥

---

५०. धूर्त ब्राह्मणनी कथा.

उज्जयनी नगरीइं अघोरशिव इसिं नामिं धूर्त ब्राह्मण चर्मकार देशि गिओ । चोररहइं मिलइं । इसिउं कहइ--हूं मुनिवेष लेई तपस्वी थाउं छउं । तुहूम्यो मुजन्हइं वषाणियो जिम सुखिं लोक वंचाइं । चोरे मानिउं । पछइं ते ब्राह्मण परिव्राजकनु वेष करी त्रिहुं गाम विचालइं वनमांहिं थई रहिओ। चोर लोक देषतां वखाणइं तेहनइं । ए मासोपवास करइं तापस--इम कही तेहनइं पूजा करावइं । लोक तेहनइं घरि तेडी जिमाडइं । महा तापस भणी मानता आपणा घरनी लक्ष्मीनूं स्वरूप तेहन्हइं कहइं अनइं आगामीया लाभादिकनउं स्वरूप पूछइं । पछइं ते लोकनी लक्ष्मी हेरीनइं रात्रिनइं समइं बीजां चोर साथिं लोकनां घर मुंसइं। एकवार तेह मांहिलओ एक चोर साहिओ । तीणइं मारीतइं बीजाइं चोर सघलाइं कहिया । लोके सघलाइं धरिया मारिया । परिव्राजक भणी आंषि काढी मूंकिओ । पछइं ते वेदनाक्रांत

---

* જુઓ પાન ૭૨.

हूंतओ लोके निंदीतु पश्चात्ताप करइं। मरी नरगि गिओ। इम अनेरु ऊ जि को वंचइं ते इम शोचइं-पश्चात्ताप करइं॥

५१. दर्दुरदेवनी कथा.

राजगृह नगरिं श्रीमहावीर समोसरिया। वांदिवा सपरिवार श्रेणिक महाराय चालिओ। इसिं नगरनइं पोलीइं आपणा सेवक सेडूआ ब्राह्मणऱ्हइं कर्मनइं विशेषि कोढिया थियाऱ्हइं द्वार-देवता आगलि जे बली ढूकी छइं ते यथेष्ट जीमाडीनइं-'तुं पोलि रहिजे, किहांइं अनेथि म जाइसि' इम कहीनइ पोलिइं राषिओ। पोलिओ समोसरणि गिओ। सेडूआ ब्राह्मणरहइं गाढी त्रस लागी। पोलि मूकी अनेथि पांणी पीवा जवराइं नहीं। तृषाइं जि मरीनइं ढूकडा वाविं डेडक ऊपनु। एक वार पाणीहारिनइं मुखि-श्रीमहावीरनइं अम्हे समोसरणि जाइसिउं-इसि वात पाणीहारि कहितां सांभळतां तेह डेडकऱ्हइं जातिस्मरण ऊपनूं। ते डेडकू समोसरण भणी चालिओ। वाटइं श्रेणिक महाराय असवार घोडानइं खुरि चंपाणु। श्रीमहावीरनइं ध्यानि मूंओ। प्रथम देवलोकि दर्दुरांक नांमिं देव थिंओ। श्रीवीरनइं समोसरणि आविओ। इसिं इंद्रइं श्रेणिक राजा सम्यक्त्व दढाई आश्री प्रशंस्यो छइं। ते परीक्षा जोवानइं कारणि तीणइं देविं कोढिआनूं रूप कीधुं। परमेश्वर ढूकडओ आवीनइं बइंठओ। आपणा सरीरनी रसी परमेश्वरनइं पगिं लगाडइं। इसिं अवसरि परमेश्वरनइं छींक आवी। तीणइं देवइं कहिउं-परमेश्वर मरि!। पछइं श्रेणिक महारायऱ्हइं छीक आवी। तेतलइं ज देवइं कहिउं-चिरं जीवि। इसिं अवसरि महामंत्रीश्वर अभयकुमारनइं पुण छीक आवी। तीणइं देविं कहिउं-जीवि भावइं मरि!। तणिइं अवसरि वली कालिक सूरीआ खाटकीनइं छींक आवी। तीणइ तेहऱ्हइं कहिउं- मां जीवि, मां मरि!। इसिइं श्रेणिक राजा ते कोढिआ ऊपरि रीसाविओ। ईणइं पापीइं श्रीमहावीरनइं मरि कहिउं; तेह भणी आपणा अंग ओलगूऱ्हइं कहिउं-कूटि मारिज्यो इसि आपणा सुभटरहइं आदेश दीधु। समोसरणनइं द्वारि नीकलतां ते अदृश्य थइ गिओ। सुभटे धराणु नही। श्रेणिक महाराय श्रीवीर पूछया-भगवन्! ए कुंण?। श्रीवीरिं तेहनु पाछिलु वृत्तांत सघलुऊइ कहिओ-ए ताहरी अह्म ऊपरि भक्तिनी परीक्षा जोवानइं काजइं कोढीआनूं रूप देषाडिउं। रसी काइं लगाडतु हूंतु?। परमेश्वर कहइं-ते गोशीर्ष चंदन लगाडतु हूंतु। श्रेणिक महाराय कहइ-तह्मरहइं 'मरि'कां कहिउं?। परमेश्वरइं कहिउं-एणइं

भक्तिइं करी कहिउं। तुह्मन्हइं संसारमांहिं छतां शरीर कष्ट छइं, मूंआ पूठिं मोक्षि गिआं अनंत सुख छइं; एह भणी 'मरि' कहिउं। अनइं तुह्मन्हइं इहां जीवतां सुख छइं, मूंआ पूठइं तु नरगि जाएसि; तेह भणी तुह्मनइं 'चिरंजीवि' कहिउं। महामंत्रीश्वर अभयकुमार मरी अनुत्तरि विमानि जास्यि; तेह भणी 'जीवि, भावइं मरि' कहिउं। कालकसोरिआनइं 'म मरि म जीवि' जे कहिउं—ए पापी षाटकी जीवतु घणा जीवनी हिंसा करस्यि अनइं मूंआ पछी तु सातमीइं नरगि जास्यि॥

५२. कालसौकरिकना बेटानी कथा.

राजगृह नगरिं कालसौअरिओ खाटकी दिनप्रतिं पांचसइं भइंसा मारइं। तेहनु बेटओ सुलस अभयकुमार मुहतानी संगतिं जीवदयानु मनि निश्चओ आणइं। कालसौअरिओ कृष्ण लेश्या वर्ततओ मरी सातमइं नरगिं गिओ। कुटुंब परिवार सहू मिली सुलसन्हइं कहइं—तुं आपणा बाप खाटकीनूं काम करि। सुलस कहइं—पाप लागइं, तेह भणी हूं न करउं। कुटुंब कहइं—पाप ताहरूं थोडउं थोडउं अम्हे विंहिचि लेसिउं। पछइं तेहे १ भइंसु दोरे बांधी पाडिओ। सुलस हाथि कुठारु आपिओ—तुं पहिलु घाउ दि; पछइं अम्हे सहू करिसिउं। सुलस फरसी लेई आपणु ज पग आंहाणिओ। कहिवा लागु—कुठार माहरा हाथ [illegible] पडिओ, मूहन्हइं गाढी पीड; तुम्हे थोडी थोडी वहिंची लिओ, विलंब म करु। कुटुंब कहइ—तुं [illegible] थिओ; पीडा कहिनी कुणहिं लेवराइं छइं? इसिउं सुलस कहइ—पीड लेई नथी शकता, पाप कि [illegible] लेसिओ? । इम कही कुटुंब परिवार सहू प्रीछव्युं। सुलस खरी जीवदया पाली देवलोक पुहतु॥

५३. आजीवक जमालिनी कथा.

आजीवगगणनेया रज्जसिरीए पहिऊण य जमाली।
हियमप्पणो करंतो, नय वयणिज्जे इह पडंतो॥

विवरण—आजीव०—बाह्य वेष मात्रिं ज जीवइं एह भणी आजीवग निन्हव कहीइं। ते निन्हवना गण—समूहमांहि नेता—नायक मूलगु। रज्जसिरिं० श्री महावीरनउ जमाई जमालि एवडी राज्यलक्ष्मी छांडी दीक्षा लेई सिद्धांत पढीनइं। हियमप्पणो०—जओ आपणउं हित करत, परमश्वेरनूं वचन ऊथापत नही, आपणइं अहंकारिं न वाहात, तओ; नय वयणिज्जे०—वचनीयतांइ लोकमांहिं अनइं शासनमांहिं न पडोत—निंद्यपणउं न लहत।

कथा—कुंडपुर नगरिं श्री वीर वर्धमाननु जमाई जमालि मोटो राजा राज्य छांडी पंचसइं सहित दीक्षा लिइं। तेहनी कलत्र अनोद्या श्री महावीरनी बेटी सहस्र परिवार सहित दीक्षा लिइं। जमालिइं ११ अंग पढिआं। श्री वीर पूछी परिवार सहित श्रावस्ती नगरीइं गिओ। तिहां तिंदुरु वनमांहि कोष्ट यक्षनइं भवनिं ऊतरिओ। एकवार तेहन्हइं ज्वर चढिओ। आसणिं बइसी न सकइं। संथारु घतावइं। महात्मान्हइं संथारु घाततां जमालि पूछइं—संथारओ घातिओ ?। महात्मा कहइं—घातिओ। जमालि आविओ, देषइं अध घातिओ; कहइं—तुम्हे कांइं कूडु बोलिउं ?। महात्मा कहइं—परमेश्वरि कहिउं छइं " कीजतां साहमुं कीधउं कहीइं। " ते वात सांभली जमालि कहिवा लागु—ए वचन परमेश्वरनूं कूडउं। महात्मा कहइं—गामिं जावा लागु पुरुष गामि गिओ कहीइं। थोडइं कटकइं भागइं भाजन भागुं कहीइं। छेहडइं मात्रिं फाटे वस्त्र फाटउं कहीइं। तिम अधूरइं ऊ कार्य कीधइ काज कीधूं ज कहीइं। इसी अनेक युक्ति करी प्रीछवइं, पुण प्रीछइं नहीं। पछइं महात्मा छांडी श्री महावीर पासिं गिआ। अनुद्या महासतीइन्हइं जमालिनु कदाग्रह लागु। ढंक कुंभार श्रावकनइं उपाश्रइं महासती रही छइं। वार करतां कांबली आडी बांधी। तीणइं कुंभारिं कांबली भणी अंगारुउ नांखिओ। कांबलीइं छिद्र पडिउं। महासती कहइं—श्रावक! अह्मारी कांबली कांइं बाली ?। श्रावक ढंक कहइं—श्री महावीरनइं मतिं बळी कहीइं; पुण तह्मारइं मतिं बलवा लागी छइं; पूरी बली हुइं तु बली कहीइं। तीणइं वचनिं महासती बूझी। मिच्छामि दुक्कड दिइं। महासती जई जमालिनइं बूझवइं पुण बूझइं नहीं। निन्हव थिओ। तप घणाइ कीधा तु ऊ अनंतउ संसार ऊपार्जिओ। महासती श्री महावीर कन्हइं जई चारित्र आराधी सुगतिं गई। इसी परी जमालिं विपरीत प्ररूपक निन्हव इसी वचनीयता प्रांमी मरी किल्बिषीओ देव हूओ। इम जीव उन्मार्गि वर्तता महत्वथी पडइं॥

योगशास्त्रमांनी केटलीक कथाओ.

[कर्ता—सोमसुन्दर सूरि]

१. द्रव्यमोह ऊपर बे भाईनी कथा.

आगइ एकइ गामि बि भाई हुंता । पहिली मेघनी वृष्टिइं एक भाई नदीनइ तीरी काष्ठादिक काढिवा गिउ । इसिइ पूर वही गिउं छइ नदीनइ तटि एक सोनीया भरी कडाहि दीठी । ते लेई कादम खरडिया भणी निवरइ द्रहमाहि धोवा लागउ । तेतलइं ते हाथ हुंती विछूटी । द्रहमांहि पडी । तेहनी मूर्छाइं करी पेलउ गहिलउ थिउ । इमइ जि कहइ " आंहां धोतां गई २ ।" पाछउ घरि आविउ । जि को बोलावइ तेहन्हइं " धोतां गई २ (धोतां गई)" इम जि कहइ । पछइ सगे ते ओरडी माहि घाती केतलाइ दीहाडा भूषिउ राषिउ । भूषइं करी ते गहिलपणउं गिउं । बडा भाई आगलि सोनईआ भरी कडाहिनउ वृत्तांत कहिउ । तेहन्हइं ते वात सांभलतां मोहइं करी गहिलपणउं थिऊं । इम जि कहइ–" तइं कांइं धोई " जि को बोलावइ तेह आगलि ईम जि कहइ " तइं कांइं धोई " । पछइ सगे ते हू ओरडी मांहि घाती भूषइं सूकविउ । तेहइनउं गहिलपणउं इम गमिउं । इम जीव अणछतीइं वस्तइं मोहइं करी गहिलउ थाइ । पछइ मरी दुर्गतिइं जाइं ॥

२. हिंसाना फल ऊपर सुभूम अने ब्रह्मदत्तनी कथा.

श्लोक—श्रूयते प्राणिघातेन, रौद्रध्यानपरायणौ ।
सुभौमो ब्रह्मदत्तश्च, सप्तमं नरकं ययौ ॥ १ ॥

व्याख्या—श्रूयते० सिद्धान्तमांहि इसिउं सांभलीइ । प्राणीया जीवनी हिंसाइं करी रौद्रध्यान–परायण हुंता आठमउ चक्रवर्त्ति सुभौम अनइ बारमउ चक्रवर्त्ति ब्रह्मदत्त–ए बेई चक्रवर्त्ति सातमी नरक पृथ्वीइं गिया ।

अत्र कथा—पहिलुं सुभौम चक्रवर्त्तिनी कथा कहीइ छइ ।–देवलोकि बि देव मित्र हुंता । एक देव वैश्वानर इसिइं नामिइं महासम्यक्त्वधारी । बीजउ देव धन्वन्तरि इसिइं नामिइं महामिथ्यात्वी तापसभक्त । बेई आपणउ २ धर्म वषाणता इम कहइं–धर्मनी परीक्षा कीजसिइ । इम कही ते बेई देव पृथ्वीमंडलिमाहि आवइं । इसिइं अवसरि मिथिला नगरीनउ पद्मरथ

राजा राज्य छांडी श्रीवासुपूज्य बारमउ तीर्थंकरदेव ते कन्हलि दीक्षा लेवा जातउ नवउ देषी पहिलउ तेहनी परीक्षा करिवा लागा । अनेक अन्न पाणी विशेष सरस दिषाडिया । भूषिइं तरसिइं तीणइं महात्माइं ते न लीधा । सत्त्वथिकउ चलिउ नहीं । पछइ वली तेहे देवे एकइं मार्गि कांकरा कांटा विकुर्व्या । एकइं मार्गि डेडकी विकुर्वी । ते महात्मा देडकीनउ मार्ग छांडी कांकरा कांटानइ मार्गि चालिउ । पग लोहिइं झर्झर हूआ तु हू क्षुभिउ नहीं । पछइ तेहे देवे गीत नाटक स्त्र्यादिक रूपि करी क्षोभवी जोइउ, पुण ते न क्षुभिउ । पछइ तेहे देवे नैमित्तिकनां रूप करी ते महात्मान्हइं कहिवा लागा—अम्हे नैमित्तिक शास्त्रनइं बलिं वात जाणउं । तम्हारउं आऊषउं घणउं छइ । हिवडां यौवन वयि छतइ भोग भोगवि । पछइ वडपणि तप लेयो । हिवडां तून्हइं सौख्यनी वेला । तेह्वे वचने महात्मा क्षुभिउ नहीं । वलतउं महात्माइं कहिउं—जइ मून्हइं घणउं आऊषउं, तउ घणउ काल चारित्र पालिसु । घणउं पुण्य हुसिइ । अनइ यौवन वयि जे तप कीजइ ते तप श्लाध्य । जरा आवी पुंठिइं शेष श्लाध्य न हुइं । तेहनी दढाई देषी हर्ष्या । जिनशासन प्रशंसवा लागा । पछइ जमदग्नि इसिइं नामिइं जूनउ तापस वनमाहि जटाधारी घणा काललगइ तप तपतउ ध्यानि रहिउ दीठउ । तेहनी परीक्ष्यानइं कारणि चिडकलउ चिडकलीनउं रूप करी ते बेई देव ऋषिना कूंचमाहि अंगीसलउ करी रहिया । इसिइ चिडकलइं मनुष्यनी भाषाइं चिडकली प्रतिइं कहिउं—हउं हिमवंत पर्वति जाउं छउं । चिडकली न मानइं । कहइ—तउं वलतउ नहीं आवइ । चिडकलउ गौहत्या बालहत्या स्त्रीहत्या ब्रह्मदत्यादिकना सम करइ । जउ वलतउ न आवउं तउ हुं एहे पापे लीजउं । चिडकली ते एकू सम न मानइ । चिकली कहइ—जइ न आवं तउ एह ऋषिनइं पापिं लीजइं; ए सम जु करइं तु जावा देउं । ते वात सांभली ते जमदग्नि ऋषि रीसाविउ । हाथ कुंचि माहि घाती ते बेई साहीनइ कहिवा लागउ—अरे कहउ हुं सिइं पापी ?। चिकली कहिवा लागी—हे ऋषि ! तुं कोप म करि । आपणां शास्त्र जोइ—'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति' अपूत्रीयान्हइं गति नथी । तउं अपूत्रीउं; तूंन्हइं गति किहां छइ । ते वचन सांभली ऋषि ते वात साची मानी क्षुभिउ । मनि इम जाणइ—पाणी ग्रहण करी पुत्र उपजावउं । तप मूंकी कोष्टकि नगरी जितशत्रु रायनइ घणी बेटी सांभली कन्या मागिवा चालिउ । धन्वन्तरि देव ते रिषि क्षुभिउ देषी जिनधर्म साचउ मानतउ श्रावक हूउ । जमदग्नि ऋषि जितशत्रु राय कन्हलि जई कन्या मागी । राजा कहइ—माहरइ सउ कन्या छइं; जे तह्मनइ वांछइ ते लेई जाउ । पछइ ते ऋषि कन्यानइ अंतःपुरि गिउ । कन्याए ते जटाधारी दूबलउ असंस्कृत देह देषी थूंकी २ गई । ऋषिं रीसाविइं तपनइं बलि ते सघलीइ कुत्सित कूबडी कीधी । रीसाविउ पाछउ वलिउ । आंगणइ धूलि माहि रमती रायनी बेटी एक दीठी । तेन्हइ बीजुरउं देषाडिउं । पेलीइं बीजउरा भणी हाथ अघउ कीधउ । ऋषिं कहिउं ए मून्हइ वांछइ । इम बोली ऊपाडी

लेई चालिउ । राजाइं शापभइं बीहतइं ते कन्या, सहस्र गाइनउं गोकुल, दास दीकोला सहित ऋषिन्हइं दीधी । बीजी सउ कन्या साली भणी थाकता तपनइं बलिइं साजी कीधी । इम तप सघलउइ नीगमिउं । पछइ ते बालिका वनमाहि लेई आश्रमस्थानक करी तिहां लाली पालीनइ यौवन वय प्राप्त करी पाणिग्रहण कीधउं । ऋतुकालि तेन्हइं कहिवा लागउ—एक वस्तु मंत्रिइं साधी तून्हइं आपउं । जिसिइं तान्हइ वारू ब्राह्मण बेटउ हुइ । रेणुका कहइ—मंत्रिइं करी बि वस्तु साधउ । जिसिइं एकइं क्षित्रिय बेटु हूइ । कांइं, क्षित्रिय बेटानी वस्तु माहरी बहिनी हस्तिनागपुरि परणी छइं तेन्हइं आपिसु । पछइ तीणइं ऋषिं बि वस्तु साधी आपी । पछइ रेणुकाइं माहरउ बेटउ शूर थाइ—तेह भणी क्षत्रिय चारु षाधउ । ब्राह्मण चारु बहिनिन्हइं हस्तिनागपुरि मोकलिउ । ते तीणइं षाधउ । रेणुकानइं राम इसिइं नामिइं बेटउ हूउ । बहिननइं कृतवीर्य इसिइं नामिइं बेटउ हूउ । तिसिइं एक विद्याधर अतीसारीउ तीणइं आश्रमि आविउ । ते रामिं पडीगिउ । तेहनी सार कीधी । तीणइं विद्याधरि हर्षिइं थिकइ परशुविद्या आपी । ते रामिं साधी । तीणइं करी परशुराम भणी प्रसिद्ध हूउ । देवताधिष्ठित कुठार ते हथीयार लीधइं हींडइ । रेणुका बहिननइं मिलिवा हस्तिनागपुरि गई । तिहां बहिनेवीसिउं तेहनइ संबंध मिलिउ । तिहां वली बेटउ जायउ । बेटा सहित जमदग्नि ऋषिं रेणुका पाछी आणी । परशुरामिइं रीसाविइं हुंतइं बेटा सहित ते मा मारी । पछइ अनंतवीर्य राजा रीसाविउ ते आश्रम आवीनइ विणासिउ । ऋषि मारिउ । पछइ परशुरामिइं कुठारनइं बलि आपणउ भाई कृतवीर्य मारी हस्तिनागपुरनउं राज्य लीधउं । इसिइं कृतवीर्य रायनी राणी एक साधान नाठी । वनमांहि तापसे आपणइ अड्डूइ भुइंहरामाहि घाती राषी । तिहां तीणइं चउद स्वप्न सूचित बेटउ जायउ । तेन्हइ सुभूम इसिउं नाम दीधउं । तेतलई परशुरामि क्षत्रिय ऊपरि बापनइ वइरि फिरी २ सातवार निःक्षत्रियाणी पृथ्वी कीधी । क्षत्रियनी दाढ लेई २ स्थाल भरी मूकिउं । इसिइं एकइं नैमित्तिकि परशुरामन्हइं कहिउं छइ—जीणइ पुरिषि आविइ ए दाढ खीर रूप थासिइ, अनइ ते जिमसिइ, तेहनइ हाथिं तूंन्हइं मरण छइं । पछइ ते वयरी ओलखवानइं कारणिं परशुरामिं सत्तूकार मंडाविओ । क्षित्रियनी दाढनउं स्थाल सिंहासन ऊपरि मांडी मूंकिऊं छइ । इसिइं अवसरि वैताढ्यपर्वति मेघनाद विद्याधरि आपणी बेटीनइ कारणि नैमित्तिक कन्हलि वर पूछिउ । नैमित्तिकिं सुभौम कहिउ । ते विद्याधर आपणी बेटी लेई आविउ । सुभौम परणाविउ । तिसिइ सुभौमिं भुइंहरामाहि छतइ माइ कन्हलि पूछिउं—पृथ्वी एतलीइ जि छ ? इसिउं माइं कहिउं—हे वत्स ! ताहरउ बाप मारी हस्तिनागपुरनउं राज्य परशुरामिइं लीधउं । तेहनइ भयइं आपण बे भुइंहरामाहि नासी रहिया छउं । ते वात सांभली सुभौम रीसाविउ । भुंइहरामांहि हुंतउ बाहरि नीसरिउ । मेघनाद विद्याधर सहित हस्तिनागपुरि सत्तूकारि गिउ ।

क्षत्रियनी दाढ क्षीररूप थई । तेह जि जिमवा लागउ । परशुरामना रषवाल मारिवा धाया । मेघनादि विद्याधरिं ते त्रासव्या । परशुरामिं ते वात जाणी आविउ । सुभौमनी दृष्टिं तेहनउ कुठार ओल्हाणउ । सुभूमिं परशुराम भणी थाल मूकिउं । ते थाल फीटी चक्र थिउ । तीणइं परशुराम पूरउ कीधउ । परशुरामनइं वइरिं एकवीसवार निब्राह्मणी पृथ्वी कीधी । चक्र रत्ननइं बलि छइ खंड साधी चक्रवर्त्ती हूउ । लोभनउ वाहिउ धातकीखंडनूं भरतक्षेत्र साधिवा भणी चर्मरत्न ऊपरि कटक चडावी लवणसमुद्रमांहि चालतउ देवताए मेल्हिउ । समुद्रमाहि बूडउ । मरी हिंसानइ प्रमाणिं सातमी नरक पृथ्वीइं गिउ ॥

बीजी ब्रह्मदत्तनी कथा लिषीइ छइ । कांपील्यपुरि ब्रह्मदत्त इसिइ नामिं बारमउ चक्रवर्त्ती हूउ । राज्य करतां इसिइ अवसरे पाछलि दीर्घरायनइ भयइ एकलां फिरतां अटवीमांहि तृषाक्रान्त ब्रह्मदत्तनइं एकइं ब्राह्मणइं पाणी पायउं हुंतउं; ते ब्राह्मण चक्रवर्त्ति कन्हलि आविउ। चक्रवर्त्तिइं घर २ प्रतिइ भोजन वस्त्र १ दीनार दक्षिणा दिवराविउ । इम काल जातइं एकवार तीण जि ब्राह्मणिं चक्रवर्तिन्हइ कहिउं—जे तउं भोजन करं, ते भोजन मून्हइं दिवारि । चक्रवर्तिइं कहिउं—ते भोजन बीजान्हइं जरइ नहीं । ते ब्राह्मण कहइ—तउं किसिउ कृपण छं; जिमण देई न सकं । पछइ चक्रवर्त्तिइं ते ब्राह्मण सकुटुंब आपणउं जिमण जिमाडिउ । घरि आविउ । रात्रि तीणइ आहारि करी काम विह्वल सघलाइ थिया । परस्परिइं पशुनी परिइं प्रवर्त्तिया । प्रभाति हूइ लाजता परस्परिइं एक एकन्हइ मुहडउं देषाडी न सकइं । ते ब्राह्मण चक्रवर्ति ऊपरि रीसाविउ । नगर बाहरि नीकलिउ । तीणइं एक पशुपाल गोला धणुहडी करी पीपलनां पान काणां करतउ दीठउ । पछइ ते पसूआलन्हइ गर्थ मानी इसिउं कहिउं—राजा मार्गि हाथीइ चडिउ जे जाइ, तुं गोला मूंकी तेहनी आंषि काढिजे । पछइ लोभ लगइ पसूआलिइं ते वात पडिवजी । किहांएक छांनउ थई रहिउ । इसिइ रेवाडीइं जातइ धनुहडीइ करी समकाल बि गोला मूकी चक्रवर्त्तिनी बेई आंषि काढी । राजपुरुषे पशूआल धरिउ । तीणइं मारीतइं ब्राह्मण देषाडिउ । रीस लगइ सकुटुंब ते ब्राह्मण मारी; बीजा ब्राह्मण सघलाइनी आंषि काढी थाल भरी मू आगलि मूकउ—इम आदेस दीधउ । तिवारइं बीजाइ ब्राह्मणनी आंषि काढीती देषी दया लगइ मंत्रीश्वरे लेसूआ गुंदानी कुलीआ स्थाल भरी चक्रवर्त्ति आगलि मूंकीइ । ते ब्राह्मणनां लोचननी बुद्धिइं मर्दतु हर्षीइ । इम सोल वरस रौद्रध्यानि प्रवर्तीनइ मरी सातमी नरक पृथ्वी गिउ । तीणइं सर्वायु सातसइं सोलोत्तर वरस सघलउंइ आऊषउं भोगविउं । ए हिंसानां फल कहियां ॥

३. कालक सूरिआ खाटकीनी कथा.

राजगृह नगरि श्री महावीर समोसरिया । श्रेणिक महराय अभय कुमार मंत्रीश्वर समोसरणि आविया । कालक सूरीउ षाटकी समोसरणि आविउ छइ । इसिइ अवसरि श्रीमहावीरनइं छींक आवी । तिसिइ अवसरि दर्दुरांक देव तीणइं इम कहिउं—परमेश्वर ! तउं मरि । तिसिइ श्रेणिकरायन्हइं छींक आवी । तिहां देविं कहिउं—चिरं जीव । एतलइ अभयकुमारन्हइं छींक आवी तेहन्हइं इम कहिउं—जीव भावइ मरि । एतलइ कालिसूरिया षाटकीन्हइं छींक आवी । देविइं कहिउं—म जीवि म मरि । तिसिइ धर्मदेशनानइ प्रांति ते देवता परमेश्वर वांदी गिउ । अदृश्य थिउ । श्रेणिक महाराइं श्री महावीर पूछिया—ईणइं देविइं तुम्हन्हइं मरि कांइ कहिउं ? परमेश्वर कहइ—ईणइं भक्तिइं कहिउं । जेह भणी, अम्हन्हइं आंहां संसारमाहि रहियां सयरनी अबाधाइं करी छइ; मूआ पूठिइं केवलां मोक्षनां सुखइ जि छइं । तेह भणी भक्तिइं ‘ मरि ’ इसिउं कहिउं । तुम्हन्हइं जे ‘ जीवि ’ इसिउं कहिउं । ते एह भणी—तुम्हन्हइं जीवतां आहां सुख छइं; मूआ पूंठिइं नरगि जाएसि । तीणइं करी दुःख । अभयकुमारन्हइं धर्म करतां जीविवउं मरिवउं बे रूडां । कालसूरीयान्हइं पाप करतां पांचसइं भइंसा मारतां ए जीविउं विरूउं, अनइ मूआ पूंठिइं सातमी नरकपृथ्वी जाइसिइं; तेह भणी एहन्हइं जीविवउंइ मरिवउंइ बेई विरूआं । ए वात सांभली श्रेणिक महाराय परमेश्वरनइं वीनवइ—स्वामी ! तइं ठाकुर छतइं नरकि काइं जाउं ? परमेश्वरि आइस दीधउं—तइं पहिलउं आगइं नरगनउं आऊषउं बांधिउं, पछइ सम्यक्त्व पामिउं । ते सम्यक्त्वनइं बलिइं आवती चउवीसीइं श्री पद्मनाभ पहिलउ तीर्थंकर थाएसि । तउ तेह भणी मनमांहि खेद म करसि । वली श्रेणिक महाराय कहइ—कांई उपाय कोई छइ, जीणइं कीधइं नरगि न जाउं ? स्वामी वली कहइ—ताहरइ घरि जे कपिला दासी छइ ते जइ भक्तिपूर्वक महात्मान्हइं दान दिइ, अथवा कालसूरिउ षाटकी दिनं प्रति पांचसइं भइंसा विणासइ छइ ते जइ न विणासइं तउ तून्हइं नरक टलइ । ए वात सांभली श्रेणिक महाराय हर्षिउ, उठिउ । कपिला दासी प्रतिइं इसिउं काहिउं—तउं महात्मानइं भक्ति दान दइ । कपिला कहइ—केती वारइं तुं मून्हइं सर्व सुवर्णमय करइ, अथवा तउं मून्हइं जइ निटोलइ मारइं तउ एह अकृत्य हुं न करउं ।

रूसउ सेणीराओ अहवा रूसउ जिणवरो वीरो ।
कपिला न देइ दाणं इह भवे परभवे चेव ॥१॥

पछइ राजाइ कालसूरीउ षाटकी बोलाविउ । तेहन्हइं कहिउं—भावइ तेतलउ द्रव्य मागि, पाणि जीवहिंसा परही मूंकि । कालसूरिउ षाटकी कहइ—ए आपणी कुलक्रमागत हिंसा

आवी ते मूकउ नहीं । एहमाहि सीउ दोष छइ, जे घणा जीवलोक वांछइं । पछइ राजाइं ते अंधकूपमाहि घाती अहोरात्र राखिउ । राजाइं परमेश्वर वीनविया–एक अहोरात्र ए मइं हिंसा करतउ राषिउ । परमेश्वरि कहिउं–ईणइं कूआमाहि माटीना पांचसइं भइंसा करी विणासिया, तउ ए जिमिउ । श्रेणिक महारायनइं मनि ते वात जाणी खेद थिउ । चींतविउं–नरग जावा-नूं कर्म अन्यथा न हुइं । पछइ ते कालसूरीउ मूकिउ । पांच पांचसइं भइंसानउ विणास संदैव करतां तेहनइं पोतइ पापनउ ढिग बांधिउ । छेहडइ दारुण रोग आविया । तीणइं पीडिउ–आक्रन्द करइ । जे जे सुखकारीया पदार्थ ते ते दुःखमय देषइ । सुलस आपणा बापन्हइ समाधि वांछतउ अभयकुमार मंत्रीश्वर कन्हइ बुद्धि पूछिवा गिउ । अभयकुमार कहइ–ताहरइ बापि जीवहिंसादिक अतिमोटां जि पाप कीधां तीणइं करी सातमी नरकपृथ्वीइं जाइसिइ । तेह भणी ते नरगनी लेश्या साही आवी । हिव जे जे विपरीत भक्ति करिसि ते ते रूडी भणी मानिसिइ । ए वात जाणी सुलसिइं कालसूरिउ कडूआ तीषा रस जिमाडइ । उन्हां दुर्गन्ध विरूआ पाणी पाईइ । दुर्गन्ध विष्टादिके विलेपीइ । उभा कांटाना झांषरां ऊपरि सूआरिउ । अनेरउं इ जिम जिम विपराति करइ तिम तिम ते रूडउं मानइ । इम जि करतां मरी सातमीइ नरगि गिउ । सुलसि मनि चींतविउं–बापन्हइं पापनउं फल देषी हुं हिव हिंसा नहीं करउं । पाणीवार हूआ पुंठिइं सगा सणीजा कुटुंब मिली सुलसन्हइं कहइं–तउं बापनउं पद अंगी करि । महिषनइं पहिलउ घाय तउ मूंकि । पछइ आपहणी अम्हे मारिसिउं । सुलस कहइ–जिम मारा प्राण मून्हइं वल्लभ तिम सबि हउं जीवन्हइं आपणा २ प्राण वल्लभ । तेह भणी आजीविकानइं कारणि एवडउं पाप कुण उपार्ज्जइ । सगा कहइं–जीव मारतां जे पाप लागिसिइ ते अम्हे थोडउं २ विहंची लेसिउं । इम कही बलात्कारिइं महिष मारवा भणी सुलस हाथि कुठार आपिउ । सुलसि ते कुठार ऊपाडी आंपणी जि जांघ छेदी । मूर्छा आवी पडिउ । मूर्छा वाली पछउं कहिवा लागउ–अहो स्वजनो, माहरइ पगि गाढी पीडा ते तुम्हे थोडी २ विहंची सघलाइ लिउ, जिसिइ हउं पीड रहित थाउं । सगा सणीजा कहइं–सुलस तुं भोलउ थिउ ! कहिनी पीड कुणहइं किम लेवराइ छइ ? वली सुलस कहइ–एतली पीडमात्र तुम्हे लेई नथी सकता, माहरउं पाप तुम्हे किम लेअत ? । कुटुंबनइं कारणि पाप करी एकलउ हउं नरगि दुःख सहउं, तुम्हे आंहां जि रहिसिउ । तेह भणी कुलक्रमागतइ आवी हिंसा हउं नहीं करउं । बाप जइ आंधलउ हुइ तउ बेटइं आंधलइं हवउं ? बाप जइ कुइ पडी मूंउ, तउ बेटइं कूइ पडी मरिवउं ? इसिइ अवसरि अभयकुमारि मंत्रीश्वरि आवीनइ सुलस प्रशंसिउ । धर्मनइ विषइ स्थिर कीधउ । सम्यक्त्वमूल बारव्रत आराधी सुलस देवलोकि पहुतउ ॥

४. वसुराजानी कथा.

शुक्तिमती नगरी, तिहां क्षीरकदम्बक इसिइं नामिइं उपाध्याय ब्राह्मण । तेह कन्हलि त्रिणि छात्र शास्त्र पढइं छइं । एक तेहजि उपाध्यायनउ बेटउ पर्वतक, बीजउ रायनउ बेटउ वसुनामिं, त्रीजउ ब्राह्मण पुत्र नारद । एकवार ते त्रिणिइ पाढनइं श्रमिइं थाका आवास ऊपरि सूता छइं। तिसिइ चारण-श्रमण महात्मा बि आकाशें जातां परस्परिइं इसी वात कहइं--ए त्रिहुंमांहि एक स्वर्गि जाइसिइ, बि नरगि जाइसिइं । क्षीरकदम्बक उपाध्याय ते वात सांभली-नइ तेहनी परीक्षा करइ । पीठाना कूकडा करी ते त्रिहुं छात्र-हइं आपइ । इसिउं कहिउं-जिहां कोइ न देषइ तिहां मारी आवउ । वसु पर्वतक बे मारी आविया । नारद कूकडउ आषउ लेई आविउ । गुरु प्रतिइं कहइ---

यतः---आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये धर्मो हि जानाति नरश्च चिन्हम् ॥१॥

ते स्थानक नथी जिहां कोइ न देषइ । ए मूं-हइं देषइ, हउं एहनइं देषउं । वली ज्ञानी देषइ । तेह भणी मइं जाणिउं गुरे मराविउ नथी । एह भणी आषउ जि आणिउ । गुरइं जाणिउं--दयावंत भणी ए स्वर्गि जासिइ । माहरउ बेटउ रायनउ बेटउ वसु ए बेई नरगगामी। तीणइं वैराग्यइं उपाध्याय अनइ अभिचंद्र राजाइं बिहु जणे दीक्षा लीधी । पर्वतक उपाध्यायनइ पदि बइठउ । अनेक छात्र भणावइ । रायनइ पाटि वसुराजा हूउ । सत्यवादी भणी लोकमाहि तेहनी क्षाति हुइ । एकइं आहेडीइं वनमाहि फिरतइं एक स्फटिक शिला देषाडी । ते राइं छानी अणावी आपणा सिंहासण हेठलि मंडावी । राजानउं सिंहासन आकासि रहिउं देषी लोकमाहि गाढेरी प्रसिद्धि--ए सत्यनउ महिमा, इसी वात विस्तरी । एकवार नारद मित्र भणी मिलिवा पर्वतक कन्हलि आविउ । तिसिइ पर्वतक छात्र आगलि 'अजैर्यष्टव्यं' ए वेदना पद मांहि अज शब्दिं बोकडा कहीइं, तेहे याग करिवउ; इसिउं कहितउ सांभली नारदिं वारिउ । जउ गुरे अज शब्दिइं त्रिवरसी अचित्त धान्य कहियां छइं । पर्वतक अहंकारि चडिउ न मानइं । पछइ इम कहइ--जे कूडउं कहितउ हुसिइ तेहनी जिह्वा छेद कीजसिइ--इसी प्रतिज्ञा करइ । वली कहइ ईणइं विषइ साषीउ वसुराजा प्रमाण । इसिइ वसुराजा पर्वतकनी माताइ जई इसिउं मनाविउ । जाउ तम्हारा बेटानउ पक्षपात करिसिउं । बीजइ दीहाडइ पर्वतक अनइ नारद बे समुदाय सहित राय कन्हलि आव्या । वसुराजाइं पर्वतकना वचननी कूडि साषि दीधी । देवताए कुपीए ते शिला सिंहासन सहित चूर्ण कीधी । वसुराजा पडिउ, मरी नरगि गिउ । देवताए रीसावे हुंते तेहना आठ पिरीआ मारिया । नारद सत्यवादी भणी पूजिउ ॥

५. ऋषे[illegible]य कथा.

एक लोकिक ऋषि कौशिक नामिइं सत्यवादी भणी लोक मांहि प्रसिद्ध थिउ। वनमांहि तप तपइ छइ। एकवार चोर गाम मुसी ऋषि आगलिइं नीकल्या वन मांहि नाठा। तेह केडइं वाहर आवी। तेहे सत्यवादी भणी ऋषि पुछिउ–चोर केहीं गिया ? ऋषिइं कहिउं–एह वनमाहि पइठा छइं। ते वात जाणी ते वाहरू सन्नद्ध बद्ध थई वनमांहि पइसी, चोर विणासी वल्या। ते ऋषि एह्वइं परपीडा करीइं वचनिइं इसिइं बोलिवइं नरगि गिउ। जीणइं वचनिइं जीव ऊगरइ तेहवउं माइउं गोइउं बोल्तां पुण्य जि हुइ। जिम एक लोकिक ऋषि वनमांहि तप तपतउ हुंतउ। आहेडीना त्रासिव्या हिरण तेह ऋषि आगलिइं गिया। केडइ आहेडी आविया। तेहे ऋषि पूछिउ–मृगला केहीं गयां। ऋषिइं दया लगइ इसिउं कहिउं–

“या पश्यति न सा ब्रूते, या ब्रूते सा न पश्यति।
अहो व्याध ! स्वकार्यार्थी किं मां पृच्छसि मुहुर्मुहुः॥”

जे आंषि देषइं ते बोलइं नहीं। जे जीभ बोलइ ते देषइ नहीं। इम कही ते आहेडी वीयारिया; मृगलां ऊगारियां। एह्वइं माइं गोइं वचनिइं बोलिवइं, जीव रक्षा हेतु भणी, ऋषि स्वर्गि पहुतउ॥

६. बे चोरनी कथा.

बेणातटि नगरि, मूलदेव राजा। एकवार लोके विनविउ–स्वामी ! को एक चोर नगर लूसइ छइ, पुण चोर जाणीइ नहीं। राजाइं कहिउं–थोडा दिहाडा माहि चोर प्रगट करिसु। तम्हे असमाधि म करिसिउ। पछइ राजाइं तलार तेडी हाकिउ। तलार कहइ–मइं अनेक उपाय कीधा पुण ते चोर धराइ नहीं। पछइ राजा आपणपइं रात्रिइं नीलउ पटउलउ पहिरी नगर बाहरि जे जे चोरने स्थानके फिरतउ, चोर जोतउ, एकइं स्थानकि जई सूतउ। तेतलइं मंडिक चोरिइं दीठउ, जगाडिउ, पूछिउ–कउण तउं ? तीणि कहिउं–हुं कापडी भीषारी। मंडिक चोरि कहिउं–आवि तउं मूं साथिइं जिम तू्हइं लक्ष्मीवंत करउं। राजा तेह केडां लागउ जाइ। मंडक चोरिइं नगरमाहि पइसी, एक सेठिनइ घरि खात्र दीधउं। सर्वस्व लेई पोटल बांधी रायनइ माथइ देई जूनउं उद्यान तेह भणी चालिउ। तिहां एक गुफानउं बार ऊघाडी मोस लेई माहि पइठउ। दिव्य रूप धारिणी आपणी बहिनिन्हइं तीणइं कहिउं–परहुणाना

पग पखालि । अन्यात कूआनइ कांठइ आसण मांडी ते रायना पग धोवा लागी । सुकुमाल लक्षणोपेत रायना पग देषी सानुराग थकी रायनइं कहइ–जइ मझरइं परिणं तु एक वात कहउं । राइं कहिउं–परणिसु । पछइ ते कहइ–आगइ जे पोटलउ ऊपाडी आवइ तेहनइं पग धोवानइं मिसिइं पाछलि तेहनइं कूइ लांषउं । ताहरइ रूपि मोही कहउं छउं–तम्हे जाउ । राजा ऊठी जावा लागउ । तीणइं स्त्रीइं वाहिविउं परहणउ नाठउ । एतलइं मंडिक चौर कंकलोहनउं खांडउं लेई केडां धाइउ । राजाइं एक ठुंठउ आपणइ वस्त्रि आच्छादी थांभउ आंतरइ देई राहिउ । ठुंठउ आहणी पाडी चोर पाछउ वलिउ । राजा नीकली पाछउ अवासि आविउ । बीजइ दीहाडइ राजाइ रवाडी जातइं तूनारानउं काम करतउ ते चोर दीठउ । रात्रिं दीठानइं अनुसारिइं ओलषिउ । राजाइं तेडावी अतिहिं मान देई बहिनि मागी । चोरिं जाणिउं हउं राजाइं लाधउं । पछइ पेलइं अवसर जाणी बहिन रायनइं परिणावी, मान्य हुई । राजाइं तेहनी बहिन पाहिइं वस्त्र आभरणादि सर्व अणाविउं । मउडइं २ सहू लेई पछइ ते मंडिक चोर अनेके विडंबनाए विडंबी २ विणासिउ । सगउ सालउ छतउ इ पणि सांसहिउ नहीं । इम अनेराइ चोरीना दोषइं सगाइ अनर्थ प्रामइं ॥

---

७. रोहीणेय चोर कथा.

राजगृह नगरि, श्रेणिक राजा, अभयकुमार मंत्रीश्वर, तिसिइ वैभारगिरि पर्वति लोहखरउ चोर रहइ । राजगृह नगरनी सर्वलक्ष्मी स्त्र्यादिक चोरी आणइ । तेहनइ रोहिणी कलत्रनउ बेटउ रोहिणीउ इसिइ नामिइं छइ । इसिइ लोहखरइं मरतां तेहन्हइं इसी शीष दीधी–जे समोसरणि बइठउ त्रैलोक्यना लोक आगलि वषाण करइ तेहनउं वचन काने म सांभलसि । रोहिणीउ ते बापनउं वचन पालतउ राजगृह नगरु निरंतर मुसइ । एकवार स्वामी श्री महावीर वैभारगिरि ढूकडा समोसरिया । रोहिणीउं राजगृह जातउ जोइ । तउ बीजी वाट एकू नही तेह भणी समोसरण आगलिइं जि कान आंगुलीए ढांकी जावा लागउ । तेतलइं पगि कांटउ भागउ । आंगुली कानतउ काढी कांटा काढतां श्रीमहावीरनउं वचन सांभलिउं । तिसिइ स्वामी देवनां लक्षणनी गाथा बोली तीणइं सांभली,–

अणमिसनयणा मणकज्जसाहणा पुप्फदामअमिलाणा ।
चउरंगुलेण भूमिं न छिबंति सुरा जिणा बिंति ॥

ते गाथा घणउं इ वीसारिवा हींडइ पुण वीसरइ नही। हिव निरंतर नगरमाहि चोरी करइं। एकवार श्रेणिक रायन्हइं नगरने लोके वीनविउं—स्वामी, चोरे नगर मुसीइ छइ। ते वात सांभली राजाइं तलार ऊपरि कोप कीधउ। तलार कहइ—स्वामी सिउं कीजइ, चोर धराइ नहीं। पछइ अभयकुमारइं तलारन्हइं बुद्धि दीधी। केतलउं इ कटक गढमाहि राषि केतलउं इ गढ बाहरि राषि—इम माहि थकउ त्रासविउ चोर बाहिरिलां सुभटइ नग्रही पडिसिइ। ते बुद्धि तलारे कीधी। तीणइं दीहाडइं रोहिणीउ गामि गिउ हुंतउ। रातिं आविउ। अजाणतउ नगर माहि पइसतउ माहिले सुभटे आकुलाविउ। किरण देई बाहिरि पडिउ। तलारे धरी अभयकुमारन्हइं आपिउ। अभयकुमार कहइ—एह कन्हलि चोरीनी वस्तु कांई दीसइ नहीं। तेह भणी अणविचारिइं निग्रह किम कराइ। पछइ पूछिउ—तउं किहांनउ, किम निर्वहइ? रोहिणीइं कहिउं—सालिग्रामि दुर्गचंद्र इसिइं नामिइं कुटंबी। काज विशेषिइं अहां आविउ। ऊसनउ भणी देवकुलि सूतउ। निद्रा आवी। घणी रातिइं जागिउ। आपणा गाम भणी जातां तलारे साही तुम्हन्हइं आपिउ। पछइ राजाइं सालिग्रामना लोक तेडाविआ। पूछिया—तेहे कहिउं अम्हारइ गामि दुर्गचंद्र कुटुंबी छइ, भलउं माणस। अभयकुमारिइं चींतविउं—ए रोहिणीउ चोर तउ एहु इ जि। देषउ केवडु एहनउ प्रपंच। जां लगइ आपणइं मुखिइं चोरी न मानइ, तां एहन्हइं निग्रह कराइ नहीं। तेह भणी मद्य पाइउ। अचेत थिकउ सप्तभूमिक आवासि दिव्य शय्याइं देवदूष्य वस्त्र आभरण पहिरावी पउढाडिउ। पाषती च्यारि देवांगना समान इसी दासी अलंकरी विभूषी राषी। बीजीइ देवलोकनी रचना कीधी। मद्य परिणमिया पूंठिइं तत्काल रोहिणीउ जागिउ। देवांगना-रूप-धारिणी दासी कहइं—अम्हारइं भाग्यइं करी इणइं देवलोकि तउं अवतरिउ। आहां इसी स्थिति छइ—पाहिलउं आपणा पाछिला भवना पुण्य पाप सहू कहीइ। पछी देवलोकनां आचार करावीइं। ते सांभली रोहिणीउ शंकाणउ। हउं देव थिउ कि ना। श्रीमहावीरनउं वचन संभारी तउ साचउं कहिसु; ईमइ नही कहउं। पछइ जोअइ, सविहुनी आंखि मेषोन्मेष करती देषइ। फूलनी माल कुरमाणी देषइ। सविहुना पग भुइं लागता देषइ। पछइ जाणिउं, सही ए अभयकुमारनउं कपट छइ। तेह आगलि कूडउं इ जि कहिवा लागउ। मइं पाछिलइ भवि सुपात्रि दान दीधां, प्रासाद कराव्यां, बिंब भराव्या, तप तपिउ इत्यादि। परिवार वली कहइ—कांई पाप कीधउं हूइ ते हू कहीइ। रोहिणीउ कहइ—जउ पाप कीधां हुइं तु एवडां सुख किम लाभइं। ते वात अभयकुमारि सांभली मंत्रीश्वर श्रेणिक राजान्हइं कहइं—ए चोर तु हुइ जि पुण प्रगट न थाइं तां निग्रह न कराइ। इसिउं नीतिशास्त्रि छइ। पछइ राजाइं रोहिणीउ छोडिउ। आपणइ स्थानकि गिउ। चींतविवा लागउ—एकइं गाहइं मून्हइं मरणादिक संकट टलिउं। अभयकुमारनी बुद्धिनइ ग्रहि न पडिउ। जइ

श्रीमहावीरनां घणां वचन सांभलत, तउ मूम्हइं घणा गुण हुअत । धिग् पडउ ! एतलउ काल ईणइं पापीइं बापिइं हुं वंचिउ । इसिउं चींतवतु श्रीमहावीरनइ समवसरणि गिउ । दसविध धर्म सांभलिउ । वैराग्य ऊपनउं । जेहनी वस्तु चोरी हती ते तेहनी वस्तु सघलीइ पाछी आपी । पछइ श्रेणिक महाराइं दीक्षानउ महोत्सव कीधउ । पछइ रोहिणीइं छमासी तप लगइ तप करी छेहडइ पादपोपगमन अणसण लेई समग्र पाप धोई देवलोकि गिउ ॥

८. सुदर्शन श्रेष्ठी कथा.

चंपा नगरीइं दधिवाहन राजा । तेहनइ अभया राणी । तिहां ऋषभदास श्रेष्ठि । तेहनइ अर्हदासी कलत्र । तेह सेठिनु भइंसिनउ चारणहार सुभग नामिइं पींडार । एकवार माहमासि बाहरि ऊघाडउ एक महात्मा काउसगि रहिउ दीठउ । तीणइं सांजइं चींतविउं एवडी टाढि रातिइं किम सहिसिइ । इम चींतवतउ पाछिली रातिइं सवाहरे महात्मा कन्हलि भइंसि लेई आविउ । तेतलइं दीस उगतइ महात्माइं काउस्सग्ग पारिउ । 'नमो अरिहंताणं' कही आकासिइं ऊपडिउ । पेलइं आकासि गामिनी विद्याभणी 'नमो अरिहंताणं' ए पद हीइ थाहराविउं । पछइ सेठिइं पूरउ नउकार सीषविउ । एकवार भइंसि चारवा ग्यां मेघ वूठउ । विचालइ नदी पूरी आवी । पाछा वलतां भइंसि नदी तरी ऊतरी अनइ सुभगि नउकार कही आकाश गामिनी विद्यानी बुद्धिइं झांप दीधी । नदीमध्य पडिउ । कादममांहि घुतउ, खीलउ एक तेहनइ मर्मि लागउ । मरी तेह जि ऋषभदास श्रेष्ठिनइ घरि सुदर्शन इसिइं नामिइं बेटउ हूउ । व्यवहारीआनी बेटी मनोरमानउं पाणिग्रहण कराविउ । सुदर्शन श्रेष्ठिनइं कपिल परोहित मित्र छइ । तीणइं आपणी कपिला कलत्र आगलि सुदर्शन श्रेष्ठिना गुण वषाणिया । रूप वर्णवतां तीणइं अनुरागि लीणी इ जि छइ । एकवार निवरइ कहइ—तुम्हारउ मित्र मांदउ छइ; मिलिवा तेडइ छइ । इसी परि माया करी आपणइ घरि ओरडामाहि घालिउ । बाहिरलां किमाड दीधां । आपणउ अभिप्राय प्रकासिउ । सुदर्शन श्रेष्ठि शील राषिवा भणी इसिउं कहिउं—हउं नपुंसक छउं । इसिउ कूडउ ऊतर करी बाहरि नीकलिउ । कपिला अपार लाजी । एकवार तीणइं नगरि इंद्रमहोत्सव हुइ छइ । तिहां अभया देवि राणी अनइ कपिला बेई सुखासणि बइठी जाइं छइं । तिसिइ सुदर्शन श्रेष्ठिनी कलत्र मनोरमा छए बेटे सहित जाती कपिलाइं दीठी । अभया राणी पूछी—ए कुण, कहिना ए पुत्र ? अभया राणीइं कहिउं—ए सुदर्शन श्रेष्ठिनी कलत्र, अनइ एहना पुत्र । कपिलाइं कहिउं-एहना बेटा किम ? सुदर्शन श्रेष्ठि नपुंसक छइ । अभयादेवी हसीनइ कहइ-ते नपुंसक पर स्त्री

आश्री छइ;स्वकलत्र आश्री ते महापुरुष छइ। तिवार पुंठिइं कपिलाइं आपणउ पाछिलउ वृत्तांत सघलुइ जणाविउ। अभया राणीइं कहिउं—बापडी तउं भोलवी वीआरी। इम कही हसिउं। कपिला विषवादी कहिउं—जइ तुं अपार डाही सुजाणि तु जाणीसिइ जउ तेहन्हइं क्षोभविसि। अभया राणीइं अहंकारि चडीइं प्रतिज्ञा कीधी—जइ तेहनइं न क्षोभवउं तउ प्राण छांडउं। एकवार कौमुदी-महोत्सवि राजा रात्रिइं वनमांहि रहिउ। सुदर्शन श्रेष्ठि रायन्हइं भेट करी चउमासा भणी तीणइ दिहाडइ परमेश्वरनी पूजा स्नात्र महोत्सव करी सांझनइ समइ पोसह लेई नगरनइ चाचरि काउसग करी रहिउ छइ। ते वात जाणी अभया राणी सीसकनउ मिस करी कौमुदी-महोत्सवि न गई, घरि जि रही। इसिइ पंडिता दासी देवतानी मूर्ति राणीन्हइं पूजाविवानइं मिसिइं वली २ लेई जाती आवतीइं पाहरीन्हइं इम त्रांस ऊपजावी। तीणी रात्रि सुदर्शन श्रेष्ठि काउसगि रहिउ आड ऊपाडी वस्त्रि आच्छादी पालषि घाती आणिउ। अभया राणीन्हइं आपिउ। तीणइं रात्रि सघलीइ अनेकपरि क्षोभविउ। रोम मात्रइ क्षुभिओ नहीं। पछी अभया राणी नखरे आपणउं हीउं विदारी आक्रंद करइ। पाहरी आविया। तेहे सुदर्शन श्रेष्ठि बांधिउ। रायनइं आपिउ। राजाइं बि त्रिणि वार पूछिउ। अभया राणीनी दया हीयामांहि आणी बोलइ जि नहीं। राजाइं तलारन्हइं आपी सूलीइं घताविउ। मनोरमाइं आपद जाणी शासन देवता उद्यसी काउसग्ग कीधउ। एतलइ सुदर्शन श्रेष्ठिनइं सूली फीटी सुवर्णमइ सिंहासन थिउं।। प्रहार फीटी हारादिक आभरण थियां। ते वात जाणी राइं आवी श्रेष्ठि क्षमाविउ। आपणइ गजेंद्रि बइसारी प्रवेश महोत्सव कीधउ। अभया राणी गला पासउ घाती मुई। वनि व्यंतरी थई। पंडिता नाठी पाडली पुरि देवदत्ता नगर नायिकानइ घरि जाई रही। सुदर्शन श्रेष्ठि वैराग्यइं दीक्षा लीधी एकल्ल प्रतिमा धरतउ आपणपइं पाडलीपुरि आविउ। भिक्षावृत्तिइं फिरतउ अजाणतउ देवदत्ता गणिकानइ घरि पहुतउ। पंडिताइं ओलषिउ। पछइ दीहाडउ सघलउ २ तीणइं देवदत्ताइं क्षोभविउ पणि क्षुभिउ नहीं। सांजइ मूकिउ उद्यान वनि गिउ। तिहां काउसगि रहिउ। अभया व्यंतरीइं दीठउ। तीणइं रात्रि सघलीइ उपसर्ग कीधा। उपसर्ग करतांइं जि शुक्लध्यान लगइ केवलज्ञान ऊपनउं। धर्मदेशना कीधी। अभया व्यंतरी, देवदत्ता, पंडिता ए त्रिणइ बूझवी ते ऋषि मोक्षि पहुतउ ॥

---

९. अभयकुमार कथा.

मगधदेसि, राजगृह नगरि, श्रेणिक राजा। तेहनउ बेटउ अनइ मंत्रीश्वर अभयकुमार। ते चतुर बुद्धिनिधान। बापनउं राज्य वृद्धिवंतउं करइ। इसिइ श्रेणिकराजा कहइ—

वत्स ! तउं राज्य लइ। अभयकुमार पापभए बीहतउ राज्य न वांछइ । इसिइ अवसरि एकवार स्वामी श्री महावीर राजगृहि नगरि समोसरिया। अभयकुमारि जई पूछया—भगवन् ! ईणइं कालि जे राज्य छांडि दीक्षा लेसिइं ते छेहिलउ राजर्षि कुण हुसिइ ?। परमेश्वरि आइस दीधउं—आ छेहिलउ राजर्षि उदयन राजा आगइ हूउ। तीणइं राज्य छांडी दीक्षा लीधी। हवइं कोई मोटउं राज्य छांडी दीक्षा नहीं लिइं । अभयकुमारि पारिणामिकी बुद्धिइं इसिउं चींतविउं—जइ बापनइं आग्रहइं हउं राज्य लेसु तउ मून्हइं दीक्षा नहीं हुइ। तेह भणी माहरइ राज्यइं कांई काज नथी । तु बापिइं इसिउं वचन लीधउं—माहरा कहिया पाषइ तइ जावउं नहीं। इसिइ माह मासना दिहाडा छइं। सांझनइ समइ श्रीमहावीरना समवसरण थिकी चिल्लणा राणी नगर भणी आवइ छइ। एक महात्मा सरोवरनी पालिइं काउसगि रहिउ दीठउ । चिल्लणा राणीइं चींतविउं— ए महात्मा आखी रातिनी ताढि किम सहिसिइ। इसिउं चींतवती घरि आवी । रात्रिइं सिय्याइं पउढी नीद्रमाहि एक हाथ सउडि बाहिरि रहिउ। तिसिइ जागी, हाथ ताढउ लागउ। तिसिइ ते महात्मा सांभरिउ । घाइंसिउं गाढइं इम कहितां आविउं— ते किम थासिइ। इसिउं बोलती श्रीश्रेणिक राइं सांभली चींतववा लागउ —एहनइ हीयइ अनेरउ कुण हुं छइ। ए अंतःपुर सघलउं इ विरूउं । इम चींतवतां पाछिली रात्रिइं अभयकुमारि आवी जुहार कीधउ । तेहन्हइं राजाइं रीसाविइं इसिउ आदेस दीधउ— वत्स ! ए अंतःपुर सघलउं इ बालि। इसिउं कही राजा समोसरणि जई आपणइं मुखिइं श्री महावीर कन्हलि पूछिवा लागउ। एतलइं अभयकुमारि चींतविउं—ए चिल्लणादिक राणी सघलीइ महासती छइं। राजा किशाइ भणी कुपिउ बलावानउ आदेश दिइ। कांइं ईहदं कीधउं जोईइ। इसिउं चींतवी अंतःपुर ढूकडी एक जूनी हस्तिशाला लगाडी । राणी सघली एक अवासमाहि घाती, तालां देई, अभयकुमार समोसरण भणी चालीउ । एतलइं श्रेणिक महाराइं श्री महावीर पूछया— भगवन् ! चिल्लणा राणी सती कइ असती ? श्रीमहावीरि आइस दीधउं—चेडा महारायनी सातइ बेटी महासती। ते वात सांभली श्रेणिक राजा पाछउ वलिउ। अभयकुमार साहमउ मिलिउ। राजाइं पूछिउं--अंतःपुर लगाडिउं ? अभयकुमारि कहिउं—हा स्वामी ! श्रेणिकिं रीसाविइं कहिउं—तउं आगिमांहि कांई न बलिउ। स्वामी ! तुम्हारउ आदेस वाट जोतउ हुंतउ। राइं कहिउं—जा बलि। हउं स्वामी ! सीली आगिमाहि पइसी आपणउं काज साधिसु। इम बोली समोसरणि जई अभयकुमारि दीक्षा लीधी । तेतलइं श्रेणिकराजा आवी जां जोइ, जूनी हस्तिशाला बली बइठी देषइ। अंतःपुर समाधिइं जि छइ। वली श्रेणिक महाराइं चींतविउं—राषे अभयकुमारि जई दीक्षा लीधी हुई। वली समोसरण भणी धाइउ। जेतलइं समोसरणि आवइ तेतलइं अभयकुमारि थोडीसी वेला चारित्र पाली सर्वार्थसिद्धि विमानि ऊपनउ । एकावतारी हुसिइ। अभयकुमार इह संतोषिइं करी इहँ लोकि सुखीउ हूउ, अनइ परलोकि इ सुखीउ हुसिइ॥

१०. चुलनीपिता श्रावकनी कथा.

वाणारसी नगरीइं जितशत्रु राजा । तिहां चुलनीपिता गृहस्थ । तेहनइ शामा कलत्र । तेहनइ घरि आठ कोडि द्रव्य निधान गत, आठ कोडि घरनइ मंडाणि, आठ कोडि व्यवसायि; एवं २४ कोडि द्रव्यनउ स्वामी । तेहनइ आठ गोकुल । एकेकइ गोकुलि दस २ सहस्र गाइ । तीणइं मानि बीजउ परिग्रह जाणिवउ । तीणइं अवसरि तीणइं नगरीइं कोष्ट वनमाहि श्रीमहावीर समोसरिया । परमेश्वर वांदिवा जितशत्रु राजा प्रमुख अनेक लोक समोसरणिपहुता । चुल्णी पिता गृहस्थ ईं वांदिवा गिउ । एक जि वार धर्मदेशना सांभली बूधउ । श्रावकनां सम्यक्त्वमूल बार व्रत पाडिवजइ । परमेश्वर वांदी घरि आवइ । शामा कलत्रन्हइं समोसरणि मोकलइ । तेह इ परमेश्वर कन्हइ बारव्रतरूप श्रावकधर्म पडिवजी घरि आवइ । चुलनीपिताइं घरनउ भार वडा बेटामाहिं मूंकी पोसह लेई घर पाछलि पोषधशालां कासगि रहइ । बि वहुर रात्रिइं एक मिथ्यात्वी देवता रौद्र रूप करी खड्ग काढी आविउ । ते इसिउं कहइ—रे एउ व्रत परहउं मूकि, नहि तउ तूं आगलि इ जि ताहरउ वडउ बेटउ मारी तेहनउं मांस तेलनी कडाइमहिं पची खाइसु । तेहनउं रुधिर पीयसु । इम एकवार-बीजीवार त्रीजी-वार कहिउं । चुलनीपिता क्षुभइ नहीं । पछइ वडउ बेटउ चोटिं धरी आणी देषाडिउ, तिम जि कीधउं । तऊ चुलनीपिता थोडउं इ क्षुभिउ नहीं । वली तीणइं देविइं कहिउं—अजी ए व्रत छांडतउ नथी ताहरउ विचिलउ बेटउ इम जि करउं छउं । इम तीणइं त्रिण्णि वार कहिउं । तऊ क्षुभिउ नहीं । विचिलउ बेटउ तिम जि विणासिउ । त्रीजउ बेटउ तेऊ तिम जि विणासिउ । तऊ ते क्षुभिउ नहीं । पछइ तीणइं दुष्टि देवि इसिउं कहिउं-हव ताहरी माइन्हइं इम करउं छउं । इम कही भद्रा इसिइं नामिइं तेहनी माता धरी रोती आणी देषाडी । देविइं इसिउं कहिउं—आ ताहरी माता, तउं देषतां मारिसु । नहींतर ए व्रत परहउं छांडि । ते वात सांभली चुलनीपिताइ चींतविउं—ईणइं त्रिण्णि बेटा आगइ दुष्ट-मारि मारिया । एतलइ ए संतुष्ट न थिउ । जो ए पूज्य वडी माता तेहन्हइं अनर्थ करइ छइ । ते राषउं । इसिउं चींतवतउ चुलनी-पिताइं कल्कलाट कीधउ । देव अदृश्य थिउ । कडाहि प्रमुख माया सघली संहरी गिउ । ते कलकल सांभली आवास माहि सूती ऊठीनइ भद्रा माता तिहां आवी चुलनीपिता प्रतिइं कहइ—वच्छ ! तइं कलकलाट कांइ कीधउ । चुलनीपिता कहइ—कूणइं दुष्टि देवताइं त्रिणि बेटा विणासिया । तूहइन्हइं अनर्थ करिवा लागउ । ते देषी मइं कलकल कीधउ । भद्रा माताइं कहिउं—कुणहइं मिथ्यात्वी देवताइं तउं क्षोभाविवानइं कारणि ए इसी माया कीधी । तइं कल २ जे कीधउ ते पोसह विराधिउ, ते विरूउं कीधउं । मिच्छामि दुक्कड दिउ । बेटा आपणे

स्थानकै समाधिइं छइं । मूह्नइं कुणहइं कांई विरूउं नथी कीधउं । ए तीणइं देवताइं तूं क्षोभविवानइं काजिइं बीक इ जि देषाडिउं । तेवार पूंठिइं चुल्नीपिताइं मिच्छामि दुक्कड देई आघउ षरउ पोसह पालिउ । पछइ तीणइं श्रावकनी इग्यारइ प्रतिमा आराधी । पछइ संलेखना करी अणसण लेई मरीनइ सौधर्म देवलोकि अरुणप्रभ विमानि बिहु पल्योपमनइ आउषइ देव हूउ । तिहां थिकउ च्यवी महाविदेह क्षेत्रि मनुष्य हुई चारित्र पाली मोक्षि जासिइ । एकावतारी हुसिइ । संसारमांहि साहसिकन्हइं आपणा सयरनउं कष्ट अनइ लक्ष्मीनी हाणि स्त्री गृहस्थनइं अनइ छोरुनउ मोह गाढउं । तेहनउ दुःख सहितां दोहिलउं । चुल्नीपिताइं आपणा त्रिणि बेटा विणासीता देषीनइ पोसह विराधिउ नहीं, ए वात गाढी दोहिली ॥

---

९. शालिभद्र कथा.

मगधदेशि, राजगृह ढूंकडउं शालिग्राम । तिहां धन्या डोकरि । तेहनइ संगमउ बालक वाछरू चारइ । एकवार किसिइ उत्सवि लोकना बालक खीर जिमता देषी माता आगलि खीरनउ आडउ मांडिउ । अणहुंति भणी माता रोवा लागी । दया लगइ पाडोसणिइं दूध सालि घी खांड परमान्ननी सामग्री मेली आपी । माताइं परमान्न रांधी संगमानइं परीसिउं । दृष्टि लागवानइं भइं माता परही थई रही । तिसिइ अवसरि एकमासोपवासी महात्मा आविउ । तेहन्हइं संगमइं हर्षिइं दान दीधउं । तेह पुण्यनइं प्रमाणिइं संगमउ मरी राजगृहि नगरि गोभद्र व्यवहारिउ सुभद्रा कलत्र तेहनइ बेटउ ऊपनउ । सालि क्षेत्रनइं सुणइं सूचित तेह भणी सालिभद्र नाम दीधउं । यौवन वय प्राप्त हूउ । व्यवहारिआनी बत्रीस कन्या परिणाविउ । गोभद्रश्रेष्ठि दीक्षा लेई अणसण पाली देवलोकि गिउ । मोह लगइ ३२ वधूसहित सालिभद्रन्हइं नवनवा भोग पूरइ । नित्य नवनवा आभरण वस्त्र माल्यादिक दिव्य भोग दिइ छइ । तिसिइ नेपाल देसना वणिजारा रत्नकंबल लेई आव्या । बहुमूल्य भणी श्री श्रेणिक महारायइं एकू न लीधउं । सुभद्राइं सवे लीधां । राजाइं एक रत्नकंबल लेवा भणी अभयकुमार मंत्रि मोकलिउ । सुभद्रानइं घरि पहुतउ । एक रत्नकंबल आपउ । सुभद्राइं कहिउं– ते फाडी पगलूहणां कीधां । जूनां रत्नकंबल घणाइं छइं । मूल पाषइ लिउ । ते वात सांभली श्रेणिक महाराय चमत्करिउ । सुभद्रानइं वचनिइं सालिभद्र देषिवा भणी अवासि आविउ । चउथी भुइं सिंहासणि बइठउ छइ । सुभद्रा सातमी भुइं शालिभद्र तेडिवा गई ।

कहिवा लागी-वत्स ! श्रेणिक महाराज आविउ छइ । तउं हेठलि आवि । शालिभद्र इम कहइ-एक एहइ क्रियाणउं तम्हे जाणउ तिम लिउ । हउं कांई न जाणउं । सुभद्रा कहिउं-श्रेणिक महाराय, ए क्रियाणउं नहीं । वत्स ! ए राजा; आपणउ स्वामी । जेहनी छत्र छायां आपणि वसीइ । तीणई वचनिइं शालिभद्रनइ मनि वैराग्य ऊपनउं । माहरां पुण्य ओछां । हउं सेवक कहिवराउं; ए स्वामी कहीइ । इसीउं चींतवतउ ऊतरी रायनइं प्रणाम करइ । राजाइं षोलइ बइसारिउ । रायनइ घाम्रिं ते कुरुमाइ सुभद्रानइं वचनिइं मूंकिउ । वली वधू सहित सातमी भूमिकां जाइ । राजा सुभद्राइं भोजन करिवा राषिउ । स्नानि हुंतइ रायनी मुंद्रडी वाविमाहि पडी । सुभद्राइं वाविनउं पाणी बाहिरलइ षालि कढाविउं । राजा जल्हलतां आभरण देषइ । तेह माहि वीहाला सरीषी आपणी मुंद्रडी देषइ । राजाइं पूछिउं-ए किसिउं । दासीए कहिउं- ए अम्हारा स्वामीनउ नीमाल । तीणइं श्रेणिक महाराय वली गाढउ चमत्करिउ । राजा भोजन करी आपणइ आवासि पहुतउ । एतलइ शालिभद्र दीहाडा दीहाडानी इकेकी कलत्र अनइ शिय्या मूंकिवा लागउ । शालिभद्रनी बहिन धना व्यवहारीयानइ घरि परिणी छइ । तिसिइ ते धनानइं स्नान करावतां अश्रुपात करती दीठी । पूछिउं-इम कांइं ? माहरउ भाई शालिभद्र दीक्षा लेसिइ । किम जाणीइ ? दीहाडइ इकेकी परिहरइ । धनइं हसतइं कहिउं-छांडवइ वात आवी तउ एकइ वारइं कांइं न छांडइ । एहुउं रांक कांइं जे इकेकी छांडइ । तेतलइं धनानी बीजी कलत्रइं कहिउं-स्वामी छांडती सोहिलउं हुइ तउ तम्हे कांइं न छांडउ । धनइं कहिउं तुम्हारउं जि वचन जोतउ हुंतउं । जउ तुम्हे इम कहिउं तउ मइं निश्चइं दीक्षा लेवी । धनउ इम कही दीक्षा लेवा चालिउ । आठइ कलत्र धना साथिइं दीक्षा लेवा चाली । श्रीशालिभद्रिइं ते श्रीश्रेणिकरायना महोत्सवपूर्वक श्रीमहावीर कन्हलि दीक्षा लीधी । बेई महात्मा छठ अठम दसम पाषषमण मास-षमण चउमासी उपवास लगइ तप करतां सयरि महाकाला दुवर्ण दुर्बल हूआ । एकवार श्रीमहावीर साथिइं मासक्षपणनइ पारणइ राजगृह नगरि पहुता । विहरवा जातां स्वामीइं आयस दीधउं-हे शालिभद्र ! आज तुम्हारी मातानइं हाथिइं पारणउं हुसिइ । ते वात सांभलीनइ ते बेई महात्मा सुभद्रानइ घरि पहुता । तिहां कुणहइं ओलष्या नहीं । ते महात्मा पाछा वल्या । नगरनी पोलिइं तिसिइ शालिभद्रनी पाछिला भवनी माता महीयारीइं धन्याइं दीठा । तेहनइं हर्ष लगइ थान आविउं । तीणइं दहीनउं दान दीधउं । बोधिबीज ऊपार्जिउं । ते बेऊ श्रीमहावीर कन्हलि आवी पूछइं-भगवन् ! माइनइं हाथिइं पारणउं किम ? परमेश्वरि आयसि दीधउं-वत्स शालिभद्र ! ए ताहरा पाछिला भवनी माता जाणि । ते वात सांभलीनइ बिहु ऋषिन्हइं वैराग्य ऊपनउं । पारणउं करी स्वामी पूछी वैराग्य लगइ वैभारगिरि पर्वत चडी सिला ऊपरि पादपोपगमन

अणसण लीधां तेहे बिहु ऋषे। तेतलइं श्रीश्रेणिक राजा अनइ सुभद्रा बत्रीस वधूसहित समोसरणि वांदिवा आव्या। वांदी स्वामी कन्हलि पूछिउं–धनउ शालिभद्र महात्मा किहां? परमेश्वरिं सघलउ वृत्तांत काहिउ। सुभद्रानइ श्रेणिक महाराय वैभारगिरि चाडिया। तेहे शालिभद्रनउं कष्ट देषी सुभद्रा वधू सहित इम किमइ रोवा लागी जिम पक्षियाइ रोयाविया। पछइ श्रेणिकि महारायि परीछवी रोती वारी। तेहे बेई ऋषि वांदी थानकि पहुंती। राजाइ पाछउ घरे आविउ। ते बेई ऋषि अणसण पाली सर्वार्थसिद्धि विमानि पहुता, एकावतारी हूआ। ए पात्रदाननउं फल॥

---

१०. कामदेव श्रावक कथा.

चंपा नगरी, तिहां कामदेव गृहस्थ। भद्रा कलत्र। तेहनइ छ कोडि सुवर्ण निधान गत, छ कोडि व्यवसायि, छ कोडि घरनइं मंडाणिः एवं १८ कोडि सुवर्णनउ धणी। तेहनइ दस गोकुल दस २ सहस्र गाइनां। तिसिइ श्रीमहावीर समोसरिया। धर्मदेशना सांभली कामदेव श्रावकिं सम्यक्त्व मूल बार व्रत पडिवज्यां। जेतलउ घरि आगइ परिग्रह छइ तेतला अधिक परिग्रह करिवा नियम लीधउ। पांचसइं हल ऊपहरां क्षेत्रनउ नियम। पांचसइं देशांतरि मोकलिवा योग्य शकट। पांचसइं घरि काजकाम करिवा योग्य शकट। परद्वीपि व्यवसाय मोकलिवा च्यारि वाहण। घरना विसाहणा आणिवा योग्य च्यारि वाहण मोकला। सुगंधगंध काषायिकादि वस्त्र टाली बीजा अगलूहणा नीम। नीला जेठी मधु टाली दातणनउ नीम। क्षीरामलक टाली बीजा फलनउ नियम। सहस्रपाक शतपाक टाली बीजा तेलनउ अभ्यंग कराविवा नीम। सुगंध गंध चूर्ण टाली बीजा ऊगटणानउ नीम। आठ ऊंविया कलश टाली अधिका स्नाननउ नियम। श्वेत पट्टकूल युग्मटाली बीजा वस्त्रनउ नियम। चंदन अगरु कुंकुम कर्पूर टाली बीजा विलेपननउ नियम। जाइना फूल अनइ अष्टदलादिक कमल टाली बीजा पुष्पनउ नियम। काननां आभरण नामांकित मुद्रिका टाली बीजा आभरणनउ नियम। सिलारस अगरुना धूप टाली बीजा धूप नियम। घेवर टाली बीजा पक्वान्न नियम। द्राक्षादिक खाद्य टाली बीजी सूखडी नीम। नीपनी काष्ट पेया टाली बीजी पेया नीम। सुगंध कलम शालि टाली बीजउ ओदन नीम। उडद मुग मसूर टाली बीजा विदल नीम। शरत्कालना घी टाली बीजा घी नीम। स्वस्तिक मंडूकी पालंक शाक टाली बीजा फलशाक नियम। वट पूरणादिक टाली बीजा धान्यशाक नीम। आकाश पाणी टाली बीजा पाणी नियम। चतुर्जातक टाली बीजा तंबोल नीम। ए इस्या

श्रीमहावीर कन्हलि नीम लेई आपणइ घरि गिउ । भद्रा कलत्र परमेश्वर कन्हलि मोकली । तीणइं श्रावकनउ धर्म पडिवाजिउ । धर्म पडिवज्या पूंठिइं पनरमइ वरसि कुटुंबनउ भार वडा पुत्र-न्हइं आरोपी आपणपइं पोसह लेई रहिउ छइ । इसिइ अवसरि मिथ्यात्वी एक देवता बिवहर रात्रिनइ समइ राक्षस सर्प्प हाथीआ सिंघना रूप करी ते क्षोभविउ पुण एकऊ रोममात्रइ क्षुभिउ नहीं । पछइ देव आपणउं रूप प्रकट करी प्रशंसा करिवा लागउ–भो ! कामदेव, धन्य तउं; जिसिउ इंद्र महाराइं वखाणिउ तिसिउ जि धीर छं । माहरउ अपराध खमि । इम कही देवलोकि गिउ । कामदेव श्रावकिइं आपणी प्रतिन्या पूंठिइं काउसग्ग पारिउ । बीजइ दीहाडइ पोसह पारी कामदेव श्रावक श्रीमहावीर वांदिवा समोसरणि पहुतउ । परमेश्वरि बार पर्षद् देषतां वषाणिउ । श्रीगौतमादिक प्रतिइं कहिउं–जउ गृहस्थ हुंता एवडा उपसर्ग सहइं तउ महात्माए निस्संग हुंते विशेषिं सहिवा । पछइ कामदेव श्रावकिं श्रावकनी इग्यार प्रतिमा आराधतां दुर्बल देह हुंतउ संलेखना करतउ अणसण लेई समाधि मृत्य हुंतुं सौधर्मइं देवलोकि अरुणप्रभि विमानि चिहुं पल्योपमनइ आउषइ देव ऊपनउ । तिहां थकउ च्यवी महाविदेहि क्षेत्रि ऊपजी मोक्षि जासिइ ॥

११. आनन्द श्रावक कथा.

वाणिजक नाम ग्रामि, जितशत्रु राजा, आणंद इसिइं नामिइं गृहस्थ । तेहनइ शवनंदा कलत्र । तेहनइ च्यारि कोडि द्रव्य निधानगत, च्यारि कोडि द्रव्य व्यवसायगत, च्यारि कोडि इम घरनइ मंडाणिः–एवं १२ कोडि सुवर्णनउ स्वामी । दस २ सहस्र गाइनां गोकुल च्यारि । ते गामथिकउ ईशान कूणना गमा कोल्लाक ग्रामि आणंदना सगासणीजा घणा कुणबी वसइं । इसिइ अवसरि एकवार श्रीमहावीर तिहां समोसर्या । दुतिपलासि वनि जितसित्रु राजा आनन्द गृहस्थ वांदिवा पहुता । धर्मदेशना सांभली आणंदि श्रावकि श्रीमहावीर कन्हलि बार व्रत पडिवज्यां । बार कोडि सुवर्ण, च्यारि गोकुल ऊपहिरउं नीम । बीजा नियम सघलाइ परिग्रह संबंधीया कामदेव सुश्रावकनी परिं जाणिवा । पछइं शवनंदा कल-त्रइं बार व्रत पडिवज्यां । आनंद श्रावक धर्म पडिवजी घरि आविउ । चऊद वरस तिसिउ श्रावक धर्म पालिउ । धर्म जागरिका करतां प्रतिमा आराधिवानउ मनोरथ ऊपनउ । कोल्लागग्रामि पौषधशाला करावी । वडा बेटान्हइं कुटुंबनउ भार आरोपी सर्व स्वजन मोकलावी

पौषधशालां जाइ महातप करतउ श्रावकनी इग्यार प्रतिमा आराधइ । ते तप करतां अपार दुर्बल देह हूउ । धर्मजागरिका करतां अणसणनउ मनोरथ ऊपनउ । पछइ संलेखना करी पोषधशालां जई चउविहार अणसण लिइ । अणसण लीधइं अवधि ज्ञान ऊपनउं । इसिइ अवसरि स्वामी श्रीमहावीर वली दूतिपलासि वनि समोसरिया । श्रीगौतमस्वामि छट्ठनइ पारणइ भिक्षावृत्तिइं ग्राममाहि पहुता । भिक्षावृत्ति करी पाछा वलतां कोल्लाग गामि घणा लोक जाता देषी पूछिउं–लोक किहां जाइं छइं ? । लोके कहिउं–आणंद श्रावकनइं अणसण छइ तिहां वांदिवा जाइं छइं । ते वात जाणी श्रीगौतमस्वामि आनंद श्रावक वंदाविवा तिहां पहुता । श्रीगौतम-स्वामि आव्या देषी आणंद अपार हर्षिउ । इसिउं कहइ–भगवन् ! हउं ऊठी सकतउ नथी, तुम्हे ढुकडा पाउधारउ, जिम तुम्हारा पग माथइं करी स्परसउं । गौतमस्वामि ढूकडां जई बइठा । आनंद श्रावकिं त्रिधा शुद्धिइं माथउं पगि लगाडी वांदिया । आनंदिइं पूछिउं–भगवन् ! गृहस्थनइं अवधिज्ञान ऊपजइ ? । श्रीगौतमस्वामिं आइस दीधउं–हा ऊपजइ । वली आनंदि श्रावकि कहिउं–तम्हारा प्रसाद लगइ मून्हइं अवधिज्ञान ऊपनउं छइ । पूर्व दक्षिण पश्चिम दिसिइं लवण समुद्रमांहि पांचसइं जोअण देषउं छउं । उत्तर दिशिइं हिमवंत पर्वत लगइ । उंचउं सौधर्म देवलोक लगइ । हेठउं पहिली नरक पृथ्वीं लोलुआ नरगावासा लगइ देषउं । एतलइं श्रीगौतमस्वामिइं घाइंसिउं इम कहिउं–गृहस्थनइं एवडउं अवधिज्ञान न ऊपजइं । हिवइं तेहभणी तुं मिच्छामि दुक्कड दइ । आणंद कहइ–साचीइ वस्तु कहियानउं मिच्छामि दुक्कड हुइ ? श्रीगौतमस्वामि कहिउं–न हुइ । पछइ आणंदिं कहिउं–तउ भगवन् ! तुम्हे मिच्छामि दुक्कड दिउ । तीणइं वातइं श्रीगौतमस्वामी शंकाणा । श्रीमहावीर कन्हलि पूछिवा गया । भात पाणी आलोई पूछिउं–भगवन् ! आणंद मिच्छामि दुक्कड दिइ कइ हुं दिउं ? परमेश्वरि कहिउं–वत्स गौतम ! तम्हे इ जि मिच्छामि दुक्कड दिउ । आणंदन्हइं एवडउं अवधिज्ञान साचउं इ जि ऊपनउं छइ । तिवार पूंठिइं श्रीगौतमस्वामि आणंद कन्हलि जाई मिच्छामि दुक्कड दीधउं ॥

योगशास्त्रान्तर्गत

गृहस्थ-धर्मना गुणोनुं वर्णन

[मूल-श्लोक-कर्ता हेमचन्द्रसूरि; गूजराती-विवेचन-कर्ता सोमसुन्दर सूरि]

गृहस्थ धर्म ये योग्य हुइ ते वात कहइ छइ । जेह भणी योग्य स्थानकिं धर्म स्थापिउ शोभा पामइ, वृद्धि हेतु हुइ । जिम ऊजलउं दूध, दक्षणावर्त्त ऊजलउ शंख तीणइं घालिउं अतिहिं शोभा पामइ, श्लाघ्य थाइ । तेह जि दूध रूडउं इ मद्यनइ भुंभलइ घालिउं लोकमाहि निंद्य थाइ, तिम धर्म इ अयोग्यनइं दीधउ श्लाघ्य न हुइ । तेह भणी धर्म स्थापिवा योग्य ये पुरुष तेहनउं स्वरूप कहइ छइ ॥ दसे श्लोके करी—

न्यायसम्पन्नविभवः शिष्टाचारप्रशंसकः ।
कुलशीलसमैः सार्द्धं कृतोद्वाहोऽन्यगोत्रजैः ॥ १ ॥

१. न्याय०–सदाचार आपणा कुलन्हइं योग्य सुवस्तनउ व्यवसाय तीणइं करी जेहनइ विभव लक्ष्मी हुइ ते धर्मनइं योग्य हुइ । जीणइं स्वामिद्रोह मित्रद्रोह विश्वासघातकी चोरी अन्यायि कुव्यवसायि करी जे लक्ष्मी ऊपार्जी हुइ, तेह लगइं लोकमाहि वध बंधादिक अनर्थ पामइ । सशंकातउ हींडइ । परलोकि इ नरकादिक दुःख पामइ । अन्यायनी ऊपार्जी लक्ष्मी आगलि परिणामिइं सोजाना मातपणानी परिं रूडी न हुइं । न्यायोपार्जित लक्ष्मीनउ धणी निःस्यंकपणइं हींडइ । दिइ, लिइ, वेचइ, वावरइ, पहिरइ, ओढइ । न्याय लगइ ते लक्ष्मी वृद्धिवंती थाइ । गृहस्थनइ जइ लक्ष्मी चोषी; तउ आहार वस्त्र सन्तानादिक सहू चोषउ । धर्म इ तेहनउ चोषउ थाइ ॥

२. शिष्टाचार०–शिष्ट उत्तम तेहनउ जे आचार–लोकापवादथिकउं बीहवउं, दीन दुस्थनी दया, पिराया उपकार, थोडाइनउं अणवीसारिवउं, दाक्षिण्यपणउं, आपद आवी धीरपणउं, प्राणांतिइं धर्मनउं अणलोपिवउं, कुमार्गनउं अणाचरिवउं, दुःखि आविइ दीणपणानउं अणकरिवउंः–इत्यादिक जे छइं सदाचार, तेहनउ प्रशंसक–अनुमोदक; तेह ऊपरि इच्छावंत ॥

३. तथा कुलशील०–जे कुल–बाप पितामहादिकनउ वंश कहीइ । अनइ शील–मद्यमांस रात्रिभोजनादिकनउ निषेधरूप ए आचार । एहे बिहु वाने करी जे समान

सरीषा हुइं । कुलिइं करी, आचारिइं करी जे सरीषा छइं । अन्यगोत्रजैः—अनेरइ गोत्रि जे छइं तेह्नासिउं । कृतोद्वाहो—एह्नासिउं जेह्नइ लोकसमक्ष विवाह कीधउ छइ । तेह्नउ धर्म योग्य कहीइ । जीणइं धर्म-कुलनी आन्याइं जे स्त्री आणी हुइं ते धर्म न छांडइं । कुलिं आचारिइं असरीषासिउं जेह्नइ विवाह कीधउ हुइ ते धर्मयोग्य नहीं ॥

पापभीरुः प्रसिद्धं च देशाचारं समाचरन् ।
अवर्णवादी न क्वापि राजादिषु विशेषतः ॥२॥

४. पाप०—इह लोकि अनर्थहेतु चोरी परस्त्री-लंपटपणउं जू-रमिवादिक; परलोकि अनर्थहेतु मद्यपान मांसभक्षण कुव्यवसायादिक; तेहथिकउ जं भीरु बीहइ, ते धर्म योग्य । जे पुण धीरठपणइं इसिउं कहइ—स्यां पाप, कुणइं दीठां । जिम एवडा लोक थासिइं तिम अम्हेऊ थाउं लगा । सातमी नरक पृथ्वी ऊपहरी आठमी तु कांई छइ नहीं । सातमी तु अम्हे आंगमी छइ । इस्या जे बोलइं, अनइ समाचरइं; ते धर्मयोग्य न हुइं ॥

५. प्रसिद्धं च देशाचारं०—जे उत्तम मनुष्यमांहि प्रसिद्ध देशनउ आचार भोजनाच्छादनादिक लोकव्यवहार जे न समाचरइं ते धर्मयोग्य नही; जे समाचरइ ते धर्मयोग्य । देशाचार उल्लंघतां देशना लोकसिउं विरोध हुइ । ते एकलउ पडइ ॥

६. अवर्णवादी०—क्वापि कहिनउ इ जघन्य उत्तम मध्यम लोकनउ, एकइनउ अवर्णवाद दोषनउं बोलिवउं न करइं । पिराया दोष बोलतां ते वइरी थाइ । अनइ नीचैर्गोत्र कर्म ऊपार्जइ । यत उक्तं—

" परपरिभव—परिवादादात्मोत्कर्षाच्च बध्यते कर्म ।
नीचैर्गोत्रं प्रतिभवमनेकभवकोटिदुर्मोचम् ॥ "

राजादि०—राजा मंत्रीश्वर पुरोहित शेठी प्रमुख मोटानउ अवर्णवाद विशेषिं न बोलिइं । ते बोलतां इहलोकि इ लक्ष्मीनी हानि, जीवितव्य विनाशादिक दोष ऊपजइं । तेहभणी कहिनउ दोष न बोलइं ते धर्मयोग्य ॥ तथा—

अनतिव्यक्तगुप्ते च स्थाने सुप्रातिवेश्मिके ।
अनेकनिर्गमद्वारविवर्जितनिकेतनः ॥ ३ ॥

७. अनति०—जेह्नउं घर गाममाहि अतिव्यक्त अतिप्रकट स्थानकि घर छतइ चोर धाडिकादिकन्हइं धुरि जि पराभवनीय ते थाइ । तथा, अतिहिं गुप्तइ प्रच्छन्न स्थानकि जेह्नउं घर न हुइं अति प्रकट न हुइं ते धर्मयोग्य । अतिगुप्तइ स्थानकि घर

छतउं इ परहुणउ पही साधु दीन दुस्थितादिक को छतउं इ न जाणइ; तिम तेहनइं लाभ कांई नहीं । पाषती चउपषेर घरे छते आगि पलेवणादिक उपद्रव ऊपनइ नीसरतां पइसतां दोहिलउं थाइ ॥

८. सुप्रातिवे०—जिहां रूडा सुसील सदाचार पाडोसी हुइं तिहां जेहनउं घर हुइ ते धर्मयोग्य । जेहनइपाडोसि वेश्या नट विट माछी वागुरी पुलिंद मातंग घणा मिथ्यात्वी—एहुउ कुपाडोस हुइ तेहन्हइं तेहनां वचन सांभलतां, तेहनी चेष्टा देषतां, तेहसिउं व्यवहार करतां, तेहना संसर्ग लगइ गुणवंतन्हइं गुणनी हाणि हुइ । ल्हुडां बालक तेह वचन चेष्टादिके करी कुमार्ग सीषइं । तेहभणी सुपाडोसि जेहनउं घरु हुइ ते धर्मयोग्य ॥

९. अनइ, अनेक घणा नीकलवाना पइसिवाना द्वार बारणां छइं एहुउं निकेतन—घर जेहनउं न हुइं । जीणइं घारि घणां बारणां हुइं तिहां अनेक दुष्ट लोकने प्रच्छन्न पइसिवे नीकलिवे करी घरनां माणस रूयादिक तणउ विणास हुइ । अनइ द्रव्यादिकनी हाणि हुइ । एह भणी थोडां बार, अनइ सुस्थानकि, सुपाडोसि, अति प्रकट नही, अति गुप्त नही, इसिउं जेहनउं घर हुइ ते धर्मयोग्य ॥

कृतसङ्गः सदाचारैर्मातापित्रोश्च पूजकः ।
त्यजन्नुपप्लुतं स्थानमप्रवृत्तश्च गर्हिते ॥ ४ ॥

१०. कृतसं०—सदाचार रूडा आचारना धणी मनुष्य उत्तम तेहसिउं संगति प्रीति मैत्री छइ जेहनइ, ते धर्मयोग्य । जेहनइ जूआरी धूर्त्त नट विट भांड भट्टादिकसिउं प्रीति हुइ तेहना छताइ गुण जाइं । जेह भणी कुसंसर्ग लागइ, पुण सुसंसर्ग लागतां दोहिलउ । पाणीनइं जिम नीचउं जाइवउं सोहिलउं, पुण उंचउं जावउं दोहिलउं । यत उक्तं श्रीआवश्यके—

" अंबस्स य निंबस्स य दुण्हंपि समागयाइं मूलाइं ।
संसग्गीइ विणट्ठो अंबो निंबत्तणं पत्तो ॥ "

एह भणी जे उत्तमासिउं संगति करइ ते धर्मयोग्य ॥

११. तथा, मातापि०—जे माइबापन्हइं भक्ति करइं, त्रिकाल प्रणाम नीपजावइं, माता पिता पाहिं धर्म करावइं, माता पितानइं आदेसिइं चालइं, रूडा आहार वस्त्रादिक माइ-बापन्हइं पहिलउं दिइं—इम जे माइबापन्हइं भक्तउ हुइ ते धर्मनइं योग्य । जेहे माए बापे जायउ लालिउ वधारिउ तेहन्हइं जे अकृतज्ञ, जे भक्तउ न हुइं ते धर्मयोग्य नहीं । जे माइबाप धर्म करावइ ते पुत्र ऊरण थाइ । ईह्लइ ऊरण न थाइ, इसिउं सिद्धान्तमांहे कहिउं छइ ॥

१२. त्यजन्नु०-जीर्णं गामि नगरादिकि उपप्लव उपद्रव देषइ,स्वचक्र परचक्रनइं भइं करी, दुर्भिक्षिइं करी, मरगीं करी, परस्परिं लोकमाहि कुमेलिइं करी, अस्वस्थ देषइ ते स्थानक छांडइ त्यजइ; ते धर्मनइं योग्य। तेहवउं स्थानक जइ न छांडइ तउ आगिला ऊपार्ज्या धर्म अर्थ सुखनउ विनाश हुइ । नवां कांई ऊपार्जाइं नहीं । तीणइं करी इहलोक परलोक बेई भव विणसइं ॥

१३. अप्रवृत्ति०—जे गर्हित निन्द्य देशआश्री कहइ—जिम सौवीरदेसि कृषिकर्म करसण करइ ते निन्द्य । लाडदेसि आसवा। जातिआश्री निन्द्य—ब्राह्मणनइ मद्यपान, तिल लूणादिकना क्रयविक्रय। कुलआश्री निन्द्य—सोलंकीनइ मद्यपान निन्द्य । तिम अनेरे कुलि जे कर्म न कीजइं ते जु करइं ते निन्द्य हुइं। तिहां जे न प्रवर्त्तइं—कुलनइं अयोग्य, देसनइं अयोग्य जे न करइं; ते धर्मयोग्य ॥ तथा—

व्ययमायोचितं कुर्वन् वेषं वित्तानुसारतः ।
अष्टभिर्धीगुणैर्युक्तः श्रृण्वानो धर्ममन्वहम् ॥ ९ ॥

१४. व्ययमायो०—जे गृहस्थ व्यय वरउ इहलोक अनइ धर्म आश्री आपणा आयोचित—आयपदनइं मानिइं व्यय करइं; ते धर्मयोग्य । जउ तेहनइ जउ व्यवसायनउ लाभ घणउ हुइ कांई धर्म वरउ न करइ, तउ केवलउं पापविभागीउ जि थाइ; अनइ लोकमांहि निन्द्य पणउं प्रामइ । अनइ उपार्ज्जन थोडी हुइ अनइ वरउ घणउ करइ तउ थोडे दीहाडे दारिद्रय आवइ। सुख धर्म सहू चूकइ। तेह भणी मूलि इसिउं कहिउं—

" आयादर्द्धं नियुंजीत धर्मं समधिकं ततः ।
शेषेण शेषं कुर्वीत यतस्तुच्छसमेहिकम् ॥ "

जेतउ व्यवसाय करतां लाभ हुइ तेहनउ अर्द्ध झाझउं धर्म वरइ वेचइ । थाकतइं संसारनउं काज करइ । जेह भणी संसारनउं काज तुच्छ थोडां दीहाडानउं छइ। केती वारइं इम करी न सकइं तउ ईम करिवउं। यतः—

" पादमायान्निधिं कुर्यात् पादं वित्ताय खट्टयेत्।
धर्मोपभोगयोः पादं पादं भर्त्तव्यपोषणे ॥ "

व्यवसाय करता जेतलउ लाभ हुइ तेहनउ चउथउ भाग पोतइ राषइ । एक भाग नवा व्यवसायनइं काराणि घातइ । एक भाग धर्म वरइ करइ, अनइ सइरनइ काजि। एक भाग कुटुंबनइ भराणि पोषणि जाणिवउं। जघन्यतउ इम करइ ॥

१५. वेषं वि०—वस्त्र आभरणादिक वेष जे आपणा वित्तनइं अनुसारिइं। वय अवस्था देश काल जातिनइं अनुमानिइं तेन्हइं योग्य वेष करइ; ते धर्मयोग्य । घरि लक्ष्मी न हुइं, अनइ वेष साडंबर करइ तउ लोकमांहि हसनीय थाइ। ते ईतर कहिवराइ । तेहनउं महत्त्व जाइ। अनइ घरि लक्ष्मी घणी इ नइ, कुचेल सामान्य वेषि हींडइ तउ लोकमांहि कृपण कहिवराइ, निंद्य थाइ॥

१६. अष्टभि०—आठ जे बुद्धिना गुण तेहे करी जे युक्त सहित हुइ; ते धर्मनइ योग्य। १. एक गुण, शुश्रूषा—शास्त्र सांभलिवा लिषिवानी हीयइ अत्यन्त वांछा। २.श्रवण—एकाग्र थई शास्त्र सांभलइ। ३. ग्रहण—शास्त्रनउ अर्थ हीयइ राषइ । ४. धारण—शास्त्रनउ अर्थ पछइ वीसारइ नहीं। ५.ऊह—वली तेह ऊर्थनउ हीयइ विचार करइ। ६.अपोह—विरुद्ध पापमय वस्तु हिंसादिक अर्थनउ निषेध करइ। ७. अर्थविज्ञानं—साचउ माग्रयाईया निस्संदेह अर्थनउ जाणिवउं करइ। ८. एतला वाना करी, तत्त्व—परमार्थनउं ज्ञान ऊह युक्तिइं करी ते विचारी ते वातनउ निश्चउ करइ—आ वात आम जि। इस्ये आठे गुणे करी सहित ते पुरुष कहीइ। यत उक्तं—

शुश्रूषा १ श्रवणं चैव २, ग्रहणं ३ धारणं तथा ४।
ऊहो ५ ऽपोहो ६ ऽर्थविज्ञानं ७ तत्त्वज्ञानं ८ च धीगुणाः॥"

केती वारइं ए आठइ गुण न लाभइं तऊ, श्रृण्वानो ध०—जेहनइं धर्म सांभलिवा सहज छइ; ते धर्मयोग्य। जेह भणी सदैव धर्म सांभलतउ गुणि चडइ, ते धर्म लहइ । एह भणी धर्म सांभलिवानउ रस जोईइ॥

अजीर्णे भोजनत्यागी काले भोक्ता च सात्म्यतः।
अन्योन्याप्रतिबन्धेन त्रिवर्गमपि साधयन्॥ ६॥

१७. अजीर्णे०—पाछिलइ जिमइ आहारि अणजारिइं परिपाकि आव्या पाषइ नवउ आहार न जिमइ, ते कहीइं मांदउ थाइ नहीं। प्राहिइं जेह भणी इम कहिउं छइ—"अजीर्ण-प्रभवा रोगाः"—रोग सघला इ अजीर्णतउ ऊपजइं। नीरोग पणउं ते धर्मनउं आंग । एह भणी ए वात कही॥

१८. काले भो०—कालि भूषनी वेले जिमइ, अनइ सात्म्यइं जिमइ । जेन्हइं आहारपाणी जे सहिता हुइं, तेह जि जिमइ। लोभि वाहिउ बीजा न जीमइ। तेहू भूषनइं मानिं थोडउं जि जिमइ। घणुं जिमिउं अमृत ऊ विस थाइ। जेहनी जे वेला भूषनी तेहनइ ते सात्म्य कहीइ॥

१९. अन्योन्य० त्रिवर्ग०—त्रिणि पुरुषार्थ धर्म अर्थ काम अन्योऽन्यइं, परस्परिइं, अप्रतिबंधिइं, जिम एकू सीदाइ नहीं तिम जे त्रिणिइ साधइं; ते धर्मयोग्य ॥

(१) जे धर्म अनइ अर्थ मूंकीनइ एकला काम सुखनी सेवा जि करइ ते आगालि धन धर्म सरीर सहूइ चूकइ।

(२) अनइ धर्म काम मूकी एक अर्थ लक्ष्मी जि ऊपार्जिवा लागइ ते लक्ष्मी अनेरा भोगवइं। आपणपइं रुली २ नइ पापजिनउ विभागीउ थाइ।

(३) अर्थनइ काम मूंकी एकला धर्म जे ऊपीर लागउ, यति जननउ धर्म गृहस्थनइ इम निर्वहइ नहीं। पछइ चिंताइं पडइ।

(४) धर्म मूंकी अर्थ काम जि ऊपरि लागइ। तउ परलोकि दुःखिउ थाइ। बीजभोजी कुणुबीनी परिं पुण्यनउं पोतउं त्रोडइ। पछइ अति दुःखीउ थाइ।

(५) लक्ष्मीनी ऊपार्जन मूंकी धर्म अनइ काम जि ऊपरि लागइ तउ दाणी घणाजि वाधइ। लक्ष्मी षूटी पूंठिइं ते दुःखीउ थाइ।

(६) काम मूंकी अनइ अर्थनी सेवा करइ तउ गृहस्थपणा मांहि ते न गिणाइ।

(७) केती वारइं कर्मनइं विशेषिइं गृहस्थन्हइं कामनउ योग टलिउ तउ तीणइं धर्म अनइ अर्थ बेई साधिवा।

(८) केती वारइं कर्मनइ विशेषि काम अनइ अर्थनउ योग टलिउ तउ धर्मनइ अर्थ बेई साधिवा।

(९) कर्मनइ योगि काम अनइ अर्थ बेई जाइं तऊ धर्मनउ उद्यम जीविइं न मूंकिवउ। धर्म थिकउ पछइं अर्थ काम सुलभ हुइं। परलोकि सुख भोगवइ। यत उक्तं—

"धर्मश्चेन्नावसीदेत कपालेनापि जीवितः। आढयोऽस्मीत्यवगंतव्यं धर्मवित्ता हि साधवः॥"

यथावदतिथौ साधौ दीने च प्रतिपत्तिकृत्।
सदाऽनभिनिविष्टश्च पक्षपाती गुणेषु च॥ ७॥

२०. यथावद०—जे सदैव धर्मानुष्ठान करइ तेहनइ तिथि दिहाडानउ विशेष कांइं न हुइं ते अतिथि महात्मा कहीइ। यतः—

"तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे त्यक्ता येन महात्मना। अतिथिं तं विजानीयाच्छेषमभ्यागतं विदुः॥"

एह्वा अतिथिन्हइं, साधुयोग्य, सदाचार श्रावकन्हइं, वली दीन अंध पांगुलादिक दयामणानइं। यथावद०—यथायोग्य उचितप्रतिपत्ति अन्न पान भोजनादिके करइ। अहंकारिं करी कहिन्हइं पराभव न करइ। औचित्य पाषइ गृहस्थ शोभा न पामइ। यशवाद न लहइ।

एतलइ सर्व कहिनइं औचित्य करइ; ते धर्मयोग्य ॥

२१. सदानभि०—सदा सदैव इ अनभिनिविष्ट अहंकार रहित जोईइ। आपणा गुणनउ अहंकार न आणइं।

२२. आपणा गुण छताइ जे देषइ नहीं । पिराया गुण नान्हाइ ऊपरि बहुमान धरइ। गुणवंतनी प्रशंसा करइ। गुणपक्षपातीन्हइं इह लोकि अनइ परलोकि रूडउं जि हुइ ॥

अदेशाकालयोश्चर्यां त्यजन् जानन् बलाबलम् ।
वृत्तस्थज्ञानवृद्धानां पूजकः पोष्यपोषकः ॥ ८ ॥

२३. अदेशा०—अदेश—स्थानक विरूआ देशनइ विरूआ पाडा, अवेलां तिहां चर्या—हींडिवउं त्यजइ; न करइ; ते धर्मयोग्य। अस्थानकि अवेलां हींडतउ पुरुषनइं शंकनीय थाइ। चोरादिकतउ उपद्रव पामइ ॥

२४. जानन्०—काज आरंभतउ आपणउं बलाबल जाणी आरंभइ । लक्ष्मी ठाकुर सखाईया कालनउं एटलानां बल जोई, तउ काज करइ। ईह्लइ काज करतां काज सीझइं नहीं, अनइ मननइं षेद ऊपजइ। साह्ली हाणि हुइ ॥

२५. वृत्तस्थ०—सदाचारस्थ जे पुरुष ज्ञानिइं जाणिवइं करी जे वडा ते पुरुष पूज्य तेन्हइं पूजा सेवा आसनदान अभ्युत्थानादिक जे करइं; ते धर्मयोग्य । सदाचारीनी ज्ञानवंतनी सेवा करतां अनेक सदुपदेशादि फल पामीइं ॥

२६. तथा, पोष्यपो०—पोष्य जेहनी अवश्यचिंता कीधी जोईइ । माइ बाप कलत्र छोरु प्रमुख तेन्हइं पोषइं। भोजन वस्त्रादिकनइं देवइं जे तेहनी चिंता करइ; ते धर्मयोग्य॥

दीर्घदर्शी विशेषज्ञः कृतज्ञो लोकवल्लभः ।
सलज्जः सदयः सौम्यः परोपकृतिकर्मठः ॥ ९ ॥

२७. दीर्घ०—जे काज करतउ आघउं दीर्घकालि अर्थ-अनर्थ ऊपजतउ विमासइ, उत्तान उत्सुकबुद्धि न हुइं; ते धर्मयोग्य॥

२८. विशेष०—वली जे माणस-कुमाणसनउ वस्तु-कुवस्तुनउ कीधा-अणकीधानउ जे विशेष विहरउ जाणइ । जे कांई विशेष न परीछइ ते गहिलउ, पशुसमान जाणिवउ। अथवा आपणा जि कर्त्तव्यनउ जे विशेष जाणइ—मइं आ काज रूडउं कीधउं, आ मून्हइं करिवा बूझीइ, आ न बूझीइ ॥

२९. कृतज्ञ०—जे पिरायउ कीधउ उपकार जाणइ, उलवइ नहीं; ते धर्मयोग्य । कृतघ्नन्हइं कहीइ ऊरण थावउं नथी॥

३०. लोकवल्लभः—विशिष्ट लोकनइं आपणा विनयादिक गुणेकरी जे वल्लभ, जे गमतु हुइ; ते धर्मयोग्य। जे लोकवल्लभ न हुइं तेहनउं धर्मानुष्ठान इहंलोकन्हइं अगमतउं थाइ ॥

३१. सलज्ज०—लाजनउ धणी धर्मयोग्य ।लाजनउ धणी वरि प्राण छांडइ, आपणा नियमनी प्रतिज्ञा कीमइ न भांजइ ॥

३२. सदयः—दयावंत हुइ; ते धर्मयोग्य । जेहन्हइं दुःखीया जीव देषी तेहनां दुःख फेडिवानी जे वांछाइ करइ ते सदय कहीइ । जेह भणी धर्ममूल एक दया जि कहीइ ॥

३३. सौम्यः—सौम्य जे हुइ; ते धर्मयोग्य। जेहनउ क्रूर आकार हुइ ते लोकनइ ऊद्वेगहेतु हुइ ॥

३४. परोप०—परन्हइं उपकार करिवानइं विषइ, जे कर्मठ—कहीइ तत्पर, जे सूरउ हुइ; ते धर्मयोग्य। ते दीठउ इ सविहुंन्हइं वल्लभ हुइ॥

अन्तरङ्गारिषट्वर्गपरिहारपरायणः ।
वशीकृतेन्द्रियग्रामो गृहधर्माय कल्पते ॥ १० ॥

३५. अन्तरङ्ग०—अरि वइरी तेहनउ षट्वर्ग-छंनउ समुदाय, तेहनउ परिहार कहीइ टालिवउं, तेहनइ विषइ परायण तत्पर हुइ । अस्थानकि प्रयुंज्य काम १, क्रोध २, लोभ ३, मान ४, मद ५, हर्ष ६ ए छइ उत्तम गृहस्थनइ अंतरग वइरी कहीइं ।

(१) पिराइ स्त्री अथवा अणपरिणी स्त्री नइ विषइ जे काम ते काम वइरी कहीइ ।

(२) जे अस्थानकि आपणपान्हइं अथवा परन्हइं आगलि ऊपजतउ अनर्थ अणविमासिउ जे कोप करिवउ ते क्रोध वइरी कहीइ ।

(३) दानयोग्यन्हइं जे आपणी लक्ष्मी न दिइं। निष्कारण जे पिराई लक्ष्मी तेहइ न दिइं। जे निष्कारण पिराई लक्ष्मी लेई रहइ। ए लोभ वइरी।

(४) जे आपणउ कदाग्रह लीधउ मूंकइ नहीं। युक्तउं वचन कहिउं जे मानइ नहीं। ते मान वइरी।

(५) आपणाकुलनउ, अथवा ठाकुराई, रूपविद्यादिकना अहंकारनउं करिवउं । बीजान्हइं हेठउडिवउं करिवउं ते मद वइरी ।

(६) निष्कारण परन्हइं दुःखनइं ऊपजाविवइं, अथवा द्यूतादिक अनर्थनइं आश्रइवइं करी जे मननउ प्रमोद ते हर्ष वइरी ।

ए छइ वइरी जे टालइ; ते धर्मयोग्य ॥

३६. तथा, वशीकृतेन्द्रियग्राम-पांचइ इंद्रिय जेहनइ वसि हुइं, स्वच्छंद न हुइं । जे आपणा पांचइ इंद्रियनइं उन्माद ऊपजतउ जे राषी सकइ; ते धर्मयोग्य। जे आपणा इंद्रिय निरतां राषी न सकइं, ते अनर्थि पडइ, धर्म चूकइ ॥

गृहधर्मा०-एहे ३६ गुणे करी सहित जे मनुष्य हुइ ते गृहस्थधर्म सम्यक्त्व मूल बार व्रत धर्मरूप ते देवानइं काराणि, कल्पते-योग्य हुइ। एह्वा गुणना धणीनइं धर्म दीधउ अपार शोभा प्रामइ ॥



पृथ्वीचंद्र चरित्र अपर नाम वाग्विलास.

[कर्ता—श्रीमाणिक्यचंद्र सूरि, विक्रम संवत् १४७८.]

या विश्वकल्पवल्लीवल्लीलया कल्पितप्रदा ।
प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥
धर्मश्चिन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।
धर्मः कामदुघा धेनुर्द्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलइ मनवांछितासिद्धि । पुण्यलगइ निर्मलबुद्धि, पुण्यलगइ घरि ऋद्धि वृद्धि । पुण्यलगइ शरीर नीरोग, पुण्यलगइ अभंगुर भोग, पुण्यलगइ कुटुंबपरिवारतणा संयोग । पुण्यलगइ पलाणीयइं तुरंग, पुण्यलगइ नवनवा रंग । पुण्यलगइ घरि गजघटा, चालतां दीजइ चंदनछटा । पुण्यलगइ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप । पुण्यलगइ आनंददायिनी मूर्त्ति, अद्भुत स्फूर्त्ति । पुण्यलगइ भला आहार, अद्भुत श्रृंगार । पुण्यलगइ सर्वत्र बहुमान, घणुं किस्युं कहीयइ पामीयइ केवलज्ञान ।

एहपुण्य ऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचंद्रतणउ कथासंबध भणीयइ । ना ईणइं राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र वर्त्तइं । तींह माहि पहिलउ जंबू द्वीप लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पाषलि लवण समुद्र द्विलक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह परइं धातकीखंड द्वीप च्यारि लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पाषलि कालोदधी समुद्र आठ लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह परइं पुष्करवर द्वीप सोल लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पाषलि पुष्करवर समुद्र बत्रीस लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । आगलि वारुणि द्वीप ६४ लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पाषलि वारुणी समुद्र एककोडि २८ लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । ईणि परि ठाण बिमणा द्वीप समुद्र जाणिवउ । कवण कवण-क्षीरद्वीप, क्षीरसमुद्र; घृतद्वीप, घृतसमुद्र; इक्षुद्वीप, इक्षुसमुद्र; नंदीसरद्वीप, नंदीसरसमुद्र; अरुणद्वीप, अरुणसमुद्र; अरुणवरद्वीप, अरुणवरसमुद्र; अरुणवरावभासद्वीप, अरुणवरावभाससमुद्र; इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात । तेहमाहि पहिलु जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिइं मेरुपर्वत जिसिउ प्रदीप । तेहनइं दाक्षिण उत्तरइं सात क्षेत्र, चउद महानदी, छ वर्षधर पर्वत, वर्त्तइं ।

किसा ते क्षेत्र-भरतक्षेत्र १, हैमवतक्षेत्र २, हरिवर्षक्षेत्र ३, महाविदहक्षत्र ४, रम्यकक्षेत्र ५, ऐरण्यवतक्षेत्र ६, ऐरवतक्षेत्र ७ । किसी महानदी-गंगा १, सिंधु २, रोहिताशा नदी ३, रोहिता ४, हरिकांता नदी ५, हरिसलिला नदी ६, सीतोदा ७, सीतानदी ८, नारीकांता ९, नरकांता १०, रूप्यकूला नदी ११, सुवर्णकूला नदी १२, रक्तवती १३, रक्तानदी १४ । किस्या किस्या वर्षधर-हिमवंतपर्वत १, महाहिमवंत २, निषध ३, नीलवंत ४, रुक्मीपर्वत ६, शिखरीपर्वत ६ । हिव जे कहिउं भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताढयपर्वत, ३२ सहस्र देश । ईहमाहि साढा पंचवीस देश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा । ऋषभदेवतणां पुत्रतणें नामिइं सयल देश जाणिवा । ते कुण कुण-काश्मीरदेश १, कीर २, कावेर ३, कांबोज ४, कमल ५, उत्कल ६, करहाट ७, कुरु ८, काण ९, क्रथ १०, कौशक ११, कोशल १२, केशी १३, कारूत १४, कारूष १५, कच्छ १६, कर्णाट १७, कीकट १८, केकि १९, कौलगिरि २०, कामरूप २१, कूंकण २२, कुंतल २३, कालिंग २४, करकूट २५, करकंठ २६, केरल २७, षस २८, षर्पर २९, षेट ३०, गौड ३१, अंग ३२, गौप्य ३३, गांगक ३४, चौड ३५, चिल्लिर ३६, चैत्य ३७, जालंधर ३८, टंकण ३९, कोडियाण ४०, डाहल ४१, तुंग ४२, ताजिक ४३, तोसल ४४, दशार्ण ४५, दंडक ४६, देवसभ ४७, नेपाल ४८, नर्त्तक ४९, पंचाल ५०, पल्लव ५१, पुण्ड्र ५२, पाड्डु ५३, प्रत्यग्रथ ५४, अर्बुद ५५, बभ्रु ५६, बंभीर ५७, भट्टीय ५८, माहिष्मक ५९, महोदय ६०, मुरुंड ६१, मुरल ६२, मेद ६३, मरु ६४, मुद्गर ६५, मंकन ६६, मल्लवर्त्त ६७, महाराष्ट्र ६८, यवन ६९, रोम ७०, राटक ७१, लाट ७२, ब्रह्मोत्तर ७३, ब्रह्मावर्त्त ७४, ब्राह्मणवाहक ७५, विदेह ७६, वंग ७७, वैराट ७८, वनवास ७९, वनायुज ८०, वाल्हीक ८१, वल्लव ८२, अवंति ८३, वह्नि ८४, शक ८५, सिंहल ८६, सुम्ह ८७, सूर्पर ८८, सौवीर ८९, सुराष्ट्र ९०, सुहड ९१, अस्मक ९२, हूण ९३, हर्मोक ९४, हर्मोज ९५, हंस ९६, हुहुक ९७, हेरक ९८, एवं देश अट्ठाणू; अनइ आदन, हाबस, मुगदि,सुंधनगिरि, सीकोत्तर, चोलनाट, पांड्य,तालीउ, त्रिहूति, भोट, महाभोट, चीण, महाचीण, बंगाल, षुरसाण, मगध, वच्छ, गाजणा प्रमुष अनेक देश वर्तइं ।

तीहमाहि वषाणीयइ मरहट्ठदेस । जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम । भलां नगर, जिहां न मागीयइं कर । दुर्ग, जिस्यां हुइ स्वर्ग । धान्य, न नीपजइ सामान्य । आगर, सोनारूपातणा सागर । जेह देसमाहि नदी वहइं, लोक सुषइं निर्वहइ । इसिउ देश, पुण्यतणउ

निवेश, गरूअउ प्रदेश । तीणि देसि पइठाणपुर पाटण वर्त्तइं, जिहां अन्याय न वर्त्तइं । जीणइ नगरि कउसीसे करी सदाकार पार्षलि पोढउ प्राकार, उदार प्रतोली द्वार । पाताल भणी धाई, महाकाय षाई, समुद्र जेहनु भाई । जे लिइ कैलासपर्वतसिउं वाद, इस्या सर्वज्ञदेवतणा प्रासाद । करइं उल्लास, लक्षेश्वरी-कोटीध्वजतणा आवास । आनंदइं मन, गरुउं राजभवन । ऊपरि अषंड सुवर्ण्णमय दंड, ध्वजपट लहलहइं प्रचंड । जेह पाटणमाहि अनेक आश्चर्य वापरइं, चउरासी चउहटां कलकलाट करइं । किस्यां ते चउहटां—सोनीहटी १, नाणावटहटी २, जवहरीहटी ३, सौगंधीयाहटी ४, फोफलिया ५, सूत्रिया ६, पडसूत्रिया ७, घीया ८, तेलहरा ९, दंतारा १०, वलीयार ११, मणीयारहटी १२, दोसी १३, नेस्ती १४, गांधी १५, कपासी १६, फडीया १७, फडीहटी १८, एरंडिया १९, रसणीया २०, प्रवालीया २१, त्रांबहटा २२, सांषहडा २३, पीतलगरा २४, सोनार २५, सीसाहडा २६, मोतीप्रोयां २७, सालवी २८, मीणारा २९, कुंआरा ३०, चूनारा ३१, तूनारा ३२, कूटारा ३३, गुलीयारा ३४, परीयटा ३५, घांची ३६, मोची ३७, सुई ३८, लोहटिया ३९, लोढारा ४०, चीत्राहरा ४१, सतूआरा ४२, कागलीया ४३, मद्यपहटी ४४, वेश्या ४५, पणगोला ४६, गांछा ४७, भाडभुंजा ४८, बीबाहडा ४९, त्रांबडीया ५०, भइंसायत ५१, मलिन नापित ५२, चोषा नापित ५३, पाटीवणा ५४, त्रांगडीया ५५, वाहीत्रा ५६, काठवीठीया ५७, चोषावीठीया ५८, सूषडीया, ५९, साथरीया ६०, तेरमा ६१, वेगडीया ६२, वसाह ६३, सांथूआ ६४, पेरूआ ६५, आटीआ ६६, दालीया ६७, दउर्ढीआ ६८, मुंजकूटा ६९, सरगरा ७०, भरथारा ७१, पीतलहडा ७२, कंसारा ७३, पत्रसागीआ ७४, घासरीया ७५, मंजीठीया ७६, साकरीया ७७, साबूगर ७८, लोहार ७९, सूत्रहार ८०, वणकर ८१, तंबोली ८२, कंदोई ८३, बुद्धिहटी ८४, कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिवा ।

जीणइं नगरि अनेक पामीयइं रत्न, जीहतणां कीजइं यत्न । किस्यां ते रत्न—अश्वरत्न, गजरत्न, पुरुषरत्न, स्त्रीरत्न, अनइं पद्मराग, पुष्पराग, माणिक, सींघलीया, गरुडोद्गार, मणि, मरकत, कर्केतन, वज्र, वैडूर्य, चन्द्रकांत, सूर्यकांत, जलकांत, शिवकांत, चंद्रप्रभ, साकरप्रभ, प्रभानाथ, अशोक, वीतशोक, अपराजित, गंगोदक, मसारगल्ल, हंसगर्ब्भ, पुलिक, सौगंधिक, सुभग, सौभाग्यकर, विषहर, धृतिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, अंजन, ज्योती रस, शुभरुचि, शूलमणि, अंशुमालि, देवानंद, रिष्टरत्न, कीटपंखि, कसाउला, धूमराइ, गोमूत्र, गोमेद, लसणीया, नीला, तृणचर, खइगइ, वज्रधार, षट्कोण, कणी, चापडी, पिरोजा, प्रवाला, मौक्तिक प्रमुख रत्न करी दीसइं भरियां हाट, अनेकसुवर्णमय घाट, पिहुली वाट, चालइ घोडां-

तणां थाट, लोकनइं नहीं किसिउ ऊचाट। जिहां पुण्य विशाल, तीसी पोसाल। जिहां छात्र पढइं चउसाल, तिसी नेसाल। जिह, अध्यात्मतणी वात दृढ, तिसां अनेक मढ। जिहां लोक जिमई अपार, तिसा सत्रूकार। जिहां पाणी पियइ सर्व, तिसी पर्व। जिहां रमलि कीजइं स्वभावि, तिसी वावि। जिहां आनंद हूआ, तिसा कूआ। पद्मवनखंडमंडित प्रवर, महाकाय सरोवर। जिहां रंगि कीजइं रयवाडी, तिसी वाडी। जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पाषलियां वन। इसुं अन्यायरहइ दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पइठाणपुर पाटण।

तीणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिइं नामिइं राज्य प्रतिपालइ, भुजबलि करी वइरी वर्ग टालइं। जीणि राजा गौडदेशनउ राउ गांजिउ, भोटनउ भांजिउ। पंचालनउ राउ पालउ पुलइं, कानडादिसनउ कोठारि रुलइं। ढोर समुद्रतउ ढोयणां ढोयइ, बाबरउ बारि बइठउ टगमग जोयइ। चौडनउ दंडि चांपिउ, कास्मीरनउ कांपिउ। सोरठीयउ सेवइ, तुडि नकरउं देवइं। अंगदेसनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिगइ। घणुं किस्युं कहीयइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल। जीणं रिपु सर्व निर्घोव्यां, दुर्ग सर्व आपणा कीधा, वयरीनइं देसवटा दीधा। इसिउं निःकंटक साम्राज्य प्रतिपालइ। तेह नरेश्वरनइं बुद्धिनिधान, परमहंसनामि प्रधान। जेउ सहिजिइं रूपिइं रूडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ। राउलउ अर्थ सारइं, लोक ऊगारइ, वयरविग्रह वारइ। पालइ दीन दुस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार, शास्त्रि शास्त्रि कुशल अपार। गुहिर गंभीर, अतिहिं धीर। मुहि मींठउं भाषइं, काज कीधां जि दाषइ। चिहुं बुद्धितणउं निधान, सविहुं अमात्यमाहि मूलिगु प्रधान। रायतणउं प्रतिशरीर, इसिउं ते मंत्रीश्वर नरेश्वररहइं, शिवमय सुषमय कल्याणमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजा रातितणइं प्रस्तावि स्वप्न एक दीठउ, जेहनउं फल छइ अत्यंत मीठउं। किसिउं ते स्वप्न? इसिउं—जाणइ नरेश्वर सुवर्णवर्णकांति, देवरहइं मन भ्रांति, पलकते नेउरि, झलकते कुंडलि, हाथि वरमाल, अर्द्धचंद्रसमभाल, रूपि विशाल, इसी बालदेवी देषइ भूपाल। जेतलइ तेहतणी वरमाला कंठ कंदलि लागी, तेतलइं रायनइं निद्रा भागी। जागिउ नरेश्वर, चींतवइ अलवेसर। किसिउ स्वप्नतणउ घटइ विचार, तेतलइ प्रभातावसरि हूउ मांगलिकशंखतणउ ओंकार, हूआ तिवलितणा दोंकार, मृदंगतणा धोंकार। भट्टतणा मांगलिक्य ध्वनि, राजा आनंदिउ मनि। शुभहेतु स्वप्नतणउ मनि विचार धरी, पालंक परिहरी। क्षणु एक राजा मल्लाषाडइ आव्या, मल्लसिउ विनोद नीपजाव्या। पछइ स्नानमज्जनादिक प्रभातकरणीय कीधुं, याचकरहइ दान दीधउं। तिवारं गणनायक, दण्डनायक, पायक, वृत्तिनायक, वहीवाहक, तलवर, माडम्बिक, कौटुंबिक, इन्द्रजाली, फूलमाली, धातुवादी, मन्त्रवादी, तन्त्रवादी, यन्त्रवादी,

कपटाइत, चपटाइत, अङ्गरक्षक, अङ्गमर्दक, मीठाबोला, सुहाबोला, कथाबोला, साचाबोला, जूठाबोला, अनइ अनेक राजराजेश्वर, मण्डलेश्वर, सामन्त, तंत्रपाल, तलवर्ग, चउरासीया, महामात्य, मन्त्रीश्वर, श्रीगरणा, वयगरणा, धर्माधिगरणा, सेनाधिपति, आगरीया, व्यवहारीया, राजद्वारिक, भण्डारी, कोठारी, कापडभण्डारी, पूगभण्डारी, रसोईया, पाणहरी, श्रेष्ठि, सार्थवाह, पीठमर्द, वारवधू, वीणकार, वंशकार, उतिकार, आउजी, पखाउजी, पटाउजी, आलवणकार, लाक्षणिक, तार्किक, छान्दासिक, मुखमाङ्गलिक, वैद्य, ज्यौतिषी, पाहरी, षड्गधर, कुन्तधर, धनुर्धर, छत्रधर, बालकहार, सेजपाल, थईयात, पण्डित, कवि, लेखक, योध, महायोध, माल, मसाहणी, पाण्डव, पउंतार प्रमुख सकल लोकि करी सश्रीक राजा राजसभां बईठा।

राजसभा किसी छइ—जीणि राजसभां कूंकुमजलि छटा दीधी छइं, विविधमुक्ताफलि चतुष्क पूरिया छइं, कर्पूरतणा शंख आलिप्या छइं, कृष्णागर जबाधितणा परिमल महमहइं छइं, मोतीतणी सिरि ल्हल्हइं छइं, फूलपगर भरिया छइं, कटीप्रमाण पायपीठ संयुक्त पुरुषप्रमाण सुवर्णमय सिंहासन मांडिउं छइं। तीणि सिंहासणि राजा बइठा। किसिउ राजा दीसइ छइं—मस्तकि श्वेतातपत्र छइं, पासइं ढलइं चामर पवित्र, वाजइं विचित्र वादित्र, मस्तकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हारार्द्धहार, महा उदार, धनदतणउ अवतार, रूपतणु भण्डार। घणउं किसिउं कहीयइ—जिसउ पृथ्वीलोकतणउ इन्द्र, जिसउ सोलकलासम्पूर्ण चन्द्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र। तिसिइ अवसरि प्रतीहार आविउ, प्रणाम नीपजाविउ। राजां साह्मी दृष्टि दीधी, पुणि वीनती कीधी। जी अयोध्यानगरीहूंतउ, दूत तम्हारइ द्वारांतारि आविउ। मनि तणइ उत्साहि, जइ हुइ आदेस तु मेल्हउं माहिं। हूउ राजातणउ आदेस, दूति कीधउ सभामाहि प्रवेश। राम रहइ कीधउ जुहार, अलंकरिउं योग्य आसण उदार। राजा दूतरहइ बहुमान दीधउं, कुशल प्रश्न कीधउं। आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिव दूत वीनवइ कार्य विशेषवन्त। जिहां लोकरहइं नही किसिउ क्लेश, जिहा नही वइरीतणउ प्रवेश, पुण्यतणउ निवेश। अनेक ग्रामनगर, सोनारूपातणा आगर, मनोहर छइ कोसलादेस।

तिहां छइं नगरी अयोध्या। किसी ते नगरी—धनकनकसमृद्ध, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध। अत्यंत रमणीय, सकललोकस्पृहणीय। पृथ्वीरूपिणी कामिनीरहइं तिलकायमान, सर्वसौंदर्यनिधान। लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतणउ आवास। अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अखंडित। सदा सुठाकुरि पालित, रमणीयराजमार्गि शोभित, उत्तंगप्राकारवेष्टित। सदा आश्चर्यतणउ निलय, वसुधावनितावलय। निरुपमनागारिकतणउं ठाम, मनोभिराम। जनितदुर्जनक्षोभ, सज्जनोत्पादितशोभ। पुरुषरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधूकल्पलतारत्नाचल। जीणइ नगरी देवगृह मेरुशिषरोपमान, धवलगृह स्वर्गविमानसमान। अनेक गवाक्ष, वेदिका, चउकी, चित्रसाली, जाली, त्रिकलसां,

तोरण, धवलगृह, भूमिगृह, भांडागार, कोष्ठागार, सत्रागार, गढ, मढ, मंदिर, पडवां, पटसाल, अधहटां, फडहटां, दंडकलस, आमलसार, आंचली, बंदरवाल, पंचवर्ण पताका दीपइं । सर्वोसर, मंत्रोसर, मांजणहरां, सप्तद्वारांतर, प्रतोली, रायंगण, घोडाहडि, अषाडउ, गुणणी, रंगमंडप, सभामंडप समूहि करी मनोहर—एवंविध आवास । जेह नगरिमाहि दोसी, नेस्ती, साह, वसाह, पटउलीया, पडसूत्रिया, पजूरीआ, बीजउरीआ, कणसारा, भणसारा, मपारा, नवकर, भोजकर, भला लामा अनेक लोक वसइ । पांचसइं व्यवसाईया व्यवसायविषइ उल्लसइ । जेह नगर पाषलीया अनेकि कूया वावि सरोवर नई नीक निरुपम उद्यान आंब नींब जांबू जंबीर बीजपूर प्रमुख वृक्षावली करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसातणी ओलि । प्रभातसमइ सूर्यतणे किरणेकरी प्रासादतणे शिषिरि धजकलश झलकइ, धजऊड ललकइ । घणउं किसूं कहीइ—जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका लंका इसी नगरी अयोध्या वषाणीइ । तीणि नगरी ईक्ष्वाकुवंशावतंस विहितवयरीकुलविध्वंस निजकुलकमलराजहंस अतुलबल-पराक्रम त्रिविक्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संभालइ, अन्याय टालइ । जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद, प्रतिज्ञा राजा श्रीयुधिष्ठिर, निर्भय भीम, आपन्न जीमूतवाहन, विद्या बृहस्पति, लावण्य लवणार्णव, रूपि कंदर्प, प्रताप मार्त्तंड, औदार्यि बलिराजा, अद्भुतदानि चिंतामणि, सेवकजन कल्पवृक्ष, चतुरंगवाहिनीसमुद्र । घणउ किशिउ कहीइ—महासासनु अरडकमल्ल जगझंपणउ प्रतापलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ । तेह राजातणउ अंतःपुरि माहि प्रधान गुणनिधान भर्त्तारतणी भक्तिविषय महासावधान स्त्री कमललोचना इसिइं नामि पट्टराज्ञी वर्त्तइ । जेह राणी, सहिजि मधुरवाणी, सीलवंतिमाहि वषाणी, गुणि करी जाणी घणूं किसइं—इंद्राणी, जिह आगलि वहिइ पाणी । तेह राणीतणइ कुक्षितउ समुत्पन्न मदनभ्रमतणी मंजरी, कुंकमि करी पिंजरी, रत्नमंजरी इसइ नामिइं कन्या वर्त्तइ । ते कन्या जइ भणिवा गुणिवा योग्य हूई तु पंडितरहिं आपी, तीणि आपणकह्वइ संस्थापी । पंडित अणसंतापी कन्या समग्रकला व्यापी । ता ते कन्या बहुत्तरि कला जाणइ, चउसठि विज्ञान वषाणइ । किसी ते बहुत्तरि कला—लिषितकला १, पठित २, गणित ३, गीत ४, नृत्य ५, वाद्य ६, व्याकरण ७, काव्य ८, छंद ९, अलंकार १०, नाटक ११, साटक १२, नखच्छेद्य १३, पत्रच्छेद्य १४, आयुधाभ्यास १५, गजारोहण १६, तुरगारोहण १७, गजशिक्षा १८, तुरंगमशिक्षा १९, रत्नपरीक्षा २०, पुरुषलक्षण २१, स्त्रीलक्षण २२, पशुलक्षण २३, मंत्रवाद २४, यंत्रवाद-तंत्रवाद २५, रसवाद २६, विषवाद २७, गंधवाद २८, विद्यानुवाद २९, युद्ध ३०, नियुद्ध ३१, तर्कवाद ३२, संस्कृत ३३, प्राकृत ३४, उत्तर ३५, प्रत्युत्तर ३६, देशभाषा ३७, कपट ३८, वित्तज्ञान

३९, विज्ञान ४०, सिद्धांत ४१, वेदांत ४२, गारुड ४३, इंद्रजाल ४४, विनयकला ४५, आचार्यविद्या ४६, आगम ४७, दान ४८, ध्यान ४९, पुराण ५०, इतिहास ५१, दर्शन-संस्कार ५२, खेचरी ५३, अमरी ५४, वाद ५५, पातालसिद्धि ५६, धूर्त्तशंबल ५७, वृक्षचिकित्सा ५८, सर्वकरणी ५९, काष्टघटन ६०, कृत्रिममणिकर्म ६१, वाणिज्य ६२, वश्यकर्म ६३, चित्रकर्म ६४, पाषाणकर्म ६५, नेपथ्यकर्म ६६, धर्मकर्म ६७, धातुकर्म ६८, यंत्ररसवतीकर्म ६९, हसित ७०, प्रयोगोपाय ७१, केवलीविधिकला ७२, ए बहुत्तरि कला जाणइ। हिव चउसठि विज्ञान किस्यां—नृत्य १, कवित २, चित्र ३, वादित्र ४, मंत्र ५, यंत्र ६, तंत्र ७, विज्ञान ८, दंभ ९, जलकर्म १०, गीतगान ११, तालवायण १२, मेघवृष्टि १३, फलकृष्टि १४, आरामरोपण १५, आकारगोपन १६, धर्मविचार १७, शकुनसार १८, क्रियाकल्प १९, संस्कृतजल्प २०, प्रासादरीति २१, धर्मनीति २२, वर्णिकावृद्धि २३, सुवर्णवृद्धि २४, सुरभितैलकरण २५, लीलासंचरण २६, गजाश्वनिरीक्षण २७, पुरुषस्त्रीलक्षण २८, वसुवर्णभेद २९, अष्टादशलिपिपरिच्छेद ३०, तत्कालबुद्धि ३१, वास्तुसिद्धि ३२, वैद्यकक्रिया ३३, कामक्रिया ३४, घटभ्रम ३५, सारिपरिभ्रम ३६, अंजन-योग ३७, चूर्णयोग ३८, हस्तलाघव ३९, शास्त्रपाटव ४०, नेपथ्यविधि ४१, वाणिज्यविधि ४२, मुखमंडन ४३, सालिषंडन ४४, कथाकथन ४५, पुष्पग्रथन ४६, वक्रोक्ति ४७, काव्यशक्ति ४८, सारवेष ४९, सकलभाषाविशेष ५०, अभिधानज्ञान ५१, आभरणपरिधान ५२, नृत्योपचार ५३, गृहाचार ५४, रंधन ५५, केशबंधन ५६, वीणानाद ५७, वितंडावाद ५८, अंकविचार ५९, लोकव्यवहार ६०, वशीकरण ६१, वारितरण ६२, प्रश्नप्रहेलिकाज्ञान ६३, धर्मध्यान ६४, ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र, वषाणइ चउसट्ठि विज्ञान।

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे प्रथमोल्लासः।



द्वितीयोल्लासः

हिव ते कुमारि, चडी यौवनि भरि, परिवरी परिकरि, क्रीडा करइ नवनवी परि। इसिइं अवसरि आविउ आषाढ, इतरगुणि संबाढ। काटइयइ लोह, घामतणउ निरोह। छासि षाटी, पाणी वींयाइ माटी। विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पंथीतणउ काल, नाठउ दुकाल। जीणिइ वर्षाकालि मधुरध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां जयढका वाजइ। चिहुं दिसि बीज झलहलइ, पंथी घरभणी पुलइ। विपरीत आकाश, चंद्रसूर्य परियास। राति अंधारी, लवइं तिमिरी। उत्तरनउ ऊनयण, छायउ गयण। दिसि घोर, नाचइं मोर। सधर, वरसइ धाराधर। पाणीतणा प्रवाह षलहलइं, वाडि ऊपरि वेला वलइं। चीषलि चालतां शकट स्खलइं, लोकतणां मन धर्म्मऊपरि वलइं। नदी महापूरि आवइं, पृथ्वीपीठ प्लावइं। नवां किसलय गहगहइं, वल्लीवितान लहलहइं। कुटुंबीलोक माचइ, महात्मा बइठां पुस्तक वाचइं। पर्वततउ नीझरण विछूटइं, भरियां सरोवर फूटइं। इसिइ वर्षाकालि राजा सोमदेवतणऊं कराविउ सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं। वधावणीउ धायउ, राजाकन्हइ आयउ। राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइवा पुहुतउ। दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर। जोसी तेडी महोत्सवतणुं मुहूर्त्त लीधउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीधउं। इसिउं करतां आविउ आसो मास, दिसि सप्रकास, कमलवन उल्लास, हंसतणु विलास। कादव सूकइं, नई निरर्गलपणउं मूकइं। विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूरइ मनतणी रली। तिसिइ आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंबरि नरेश्वर सरोवरतणी पालि पुहुता, धजपट दीसइ लहलहता।

तिसिइ समइं अनेक ब्राह्मण मिलिया। कवण कवण-दुवे, त्रिवाडी, व्यास, पाठक, देवाईत, मोषाईत, सूराईत, चंद्राईत, देवशर्म्म, मोषशर्म्म, यज्ञशर्म्म, सोमशर्म्म, श्रीधर, देवधर, गंगाधर, गदाधर, लक्ष्मीधर, श्रीवच्छ, पद्मनाभ, पुरुषोत्तम;प्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइं काराणि कलिकलिया। गले त्रागा, वेदध्वनि उच्चरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण, १८ स्मृति जाणइ। ते किस्या पुराण-भागवतपुराण १, भविष्योत्तरपुराण २, मत्स्यपुराण ३, मार्कंडेयपुराण ४, विष्णुपुराण ५, वाराह पुराण ६, शिवपुराण ७, वामनपुराण ८, ब्रह्मपुराण ९, ब्रह्मांडपुराण १०, ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११, अग्नेयपुराण १२, पद्मपुराण १३, लिंगपुराण १४, नारदपुराण १५, स्कन्दपुराण १६ कूर्मपुराण १७, गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति-मानवीस्मृति १, आत्रेयीस्मृति २, वैष्णवीस्मृति ३, हारीतकीस्मृति ४, याज्ञवल्कीस्मृति ५, शनैश्चरीस्मृति ६, अंगिरास्मृति ७, आपस्तंबीस्मृति ८, सांवर्त्तकीस्मृति ९,

कात्यायनीस्मृति १०, ब्रहस्पतीस्मृति ११, पारासरीस्मृति १२, शंखीस्मृति १३, लिखितास्मृति १४, दाक्षीस्मृति १५, गौतमीस्मृति १६, शातातपी स्मृति १७, वाशिष्टीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइं वीनती करावी, तिहां कुतिग जोइवा आवी। जेहतणइ परिवारि, सषी अनेकप्रकारि;—कस्तूरिका, कर्पूरिका, लीलावती, पद्मावती, चंद्रावती, चंद्रउली, चंपू, हंसी, सारसी, बगुली प्रमुख अनेक सषी वर्त्तइ। तीहं सहित तिहां आवी, पितारहइं प्रणाम नीपजावी। उत्संगि बइठी, दि्व्य रूप देषी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एह योग्य कवण वर, किं नर, किं विद्याधर, इसिउं चींतवतइं नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जलि, बइठा कमलि, हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि वासीइ परिमलि। कारंड कुरंज कलहंस कलगलइं, ताप टलइं। मोर वासइं, सर्प नासइं। आडि पंषींआ तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं। माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां प्रीति पमाडइं मन। देहुरी दंडकलस झलहलइं, लहरि ऊछलइं। इम जोतां राजहंस एक सरोवरहूंतउ ऊडी बइठउ राजातणइं हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रूडउ रूपवंत, रलीयामणउ, सोहामणउ, श्वेत लावण्योपेत। जिसिउं लक्ष्मीदेवतातणउ चमर, जीणइं मोहीयइं अमर। कुंदकुसुमस्तबकसमान, प्रधान। पक्षिकुलावतंस, इसिउ हंस। कुतिगकरी कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेतलइ जोअइ कुमरी, तेतलइ हंसि जिमणी पांष विस्तारी। कुमरि पांषमाहि घाती, भलीपरि साती। ऊपडिउ हंसु, तत्काल पडिउ ध्वंसु। धसमसतउ ऊठिउ राउ, कहइ धाउ धाउ, वालिउ नीसाणि घाउ। राउत पायक षलभलिया, वीर सवि मिलिया। धाइं राणा, ब्राह्मण घरभणी ऊजाणा। दुवे नाठा, सवे त्रिवाडी त्राठा। बुंब पडी राउ धायउ हंस पूठिइं जेतलइं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलइं। जे वारू, ते पइठा सरोवर माहि तारू। समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ। निश्वास मेल्ही राउ पाछउ वलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ। राणी ते वात जाणी, मूर्छा पामी सप्राणी, सचेत कीधी छांटी छांटी पाणी। राजा आवासी आव्या, कन्यातणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया।

तिसिइ आविउ बसंत, हूउ शीततणउ अंत। दक्षिणदिसितणउ शीतल वाउ वाइं, विहसइं वणराइं।

"सव्वे भल्ला मासडा पण वइसाह न तुल्ल। जे दवि दाधा रूंषडां तींह माथइ फुल्ल॥"

मउरिया सहकार, चंपक उदार, वेउल बकुल, भ्रमरकुल संकुल, कलरव करइं कोकिलतणां कुल। प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल। राता पलास, सेवंत्री वास। कुंद मुचकुंद महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइ। सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुमरेणि। लोकतणे हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा। धवल शृंगार सार, मुक्ताफलतणा हार। सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमइ भोग पुरंदर। एकि गीत गवारइं, दान दिवारइं। विचित्र वादित्र वाजइं, रमलितणां रंग छाजइं।

एकि वादिइं फूल चूटइं, वृक्षतणा पल्लव धूंटइं। हींडोलइं हींचइं, झीलतां वादिइं जलिइं सींचइं। केल्हिरां कउतिग जोअइं, प्रीतमंत होयइं। वनपालकि अवसर लही, वसंत अवतरियातणी वार्त्ता कही। राजा सोमदेव आव्या वनमांहि, तेह जि सरोवर देषी कुंअरि सांभली मनमांहि। तेतलइं पुरुषि एकइं तेह सरोवरहुंतुं एक कमल लेइ रायरहइं दीधउं, राजा हाथि लीधउं। तेतलइं तेह जि कमलमध्यहूंती नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि। दुःखतणां व्याप्त चूरिया, लोक आश्चर्य पूरिया। नगरमध्य वार्ता जणावी, राज्ञी कमललोचना आवी। दीठी बेटी, हुइ परमानंदतणी पेटी, परिवरी चेटी। तिहां मांडिया वधामणां, महोत्सवि करी सुहामणां। विचित्र वादित्र वाजिवा लागा। ते कवण कवण–वीणा, विपंची,वल्लकी, नकुलोष्ठी, जया, विचित्रिका, हस्तिका, करवादिनी, कुब्जिका, घोषवती, सारंगी, उदंबरी, त्रिसरी, झंषरी, आलविणि, छकना, रावणहत्था, ताल, कंसाल, घंट, जयघंट, झालरि, उंगरि, कुरकचि, कमरउ, घाघरी, द्राक, डाक, ढाक, धूंस, नीसाण, तांबकी, कडुआलि, सेल्लक, कांसी, पाठी, पाऊ, सांष, सींगीं, मदन, काहल, भैरी, धुंकार, तरवरा; ईणिपरि मृदंग पटु पडह प्रमुष वादित्र वाज्यां, दुःख दूरि ताज्यां। इकवीस मूर्च्छना, इगुणपंचास तान, इस्यां हुइं गीत गान; याचक योग्य प्रधान वस्त्रदान। किस्यां ते वस्त्र–सूथिला, संग्रामां, दाडिमां, मेघवनां, पांडुगं, जादरा, कालां, पीयलां, पालेवींयां, ताकसीनीयां, कपूरीयां, कस्तुरीयां, फूदडीयां, चउकडीयां, सलवलीयां, ललवलीयां, हंसवडि,गजवडि,उडसाला,नर्म, पीठ, अटाण, कटाण, झूना, झामरतली, भइरव,शुद्ध भइरव,नलीबद्ध,प्रमुख वस्त्र जाणिवां। ईणिपरि महोत्सवभरि,साथि कुमरि,नरेश्वर पहुता नगरि। मनतणइ उल्लासि, आव्या आवासि। रायरहइं कुमरीतणउ स्वरूप विमासतां ऊपनी आकाशवाणी, ए वार्त्ता कहिस्यइं केवलनाणी। राजा तां आश्चर्य धरतईं हुंतइं प्रधान तेडाविउ, तिहां आविउ। ते प्रणाम करी बइठउ, तउ राजा बोलाविउ–हे मंत्रीश्वर विचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी कुमारि। तु मंडावीयइ स्वयंवर, मेलीयइं सवे नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छाइं वरइ वर। इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सविहुं दूतरहइं आदेश दीधउ। जु को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ। तिवार पूठिइं स्वयंवरमंडप सूत्रधारपाहिं कराविवा मंडाविउ, हुं तुम्हकन्हइ आविउ। हिव तुम्हे तिहां पाउधारउ, ए वीनती अवधारउ, राजा सोमदेवतणइ मनि आनंद वधारउ।

इसी वार्त्ता सांभली दूतन्हइं बहुमान देतु कटक लेई राजा पृथ्वीचंद्र स्वयंवरभणी चालिउ, कटकभारि पातालि शेषनाग हालिउ। हाथीया घोडा, नहीं थोडा। किस्या ते हाथीया छइं–सिंहलद्वीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीक, उल्ललितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलकान, मदजल झरता, आलि करता, अतुलबल, उच्छृंखल, गलगर्जित करता

गजेंद्र सांचरिया। तरलतेजी तरवरिया। किस्या ते—हयाणा,भयाणा, कूंकणा, कास्मीरा, हयठाणा, पइठाणा, सरसईया, सींधउरा, केकाइला, जाइला, उत्तरपंथा, ताजा, तेजी, तोरका, काष्छूला, कांबोजा, भाडेजा, आरट्ट, वाल्हीकज, गांधार, चांपेय, तैतिल, त्रैगर्त्त, आर्जनेय, कांदरेय, दरद, सौवीर,क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल तरल उंचासणा परीछणा; जोयउं सहइं, बपूकारिया रहइं; वांकी द्रेठी, सभर पूठि; छोटे काने, सूधइ वानि; सइरनी ललवलाई, नीछटनी कलाई; पूछतणी आयताई, पलाणतणी सामंत्राई; वांकी तुंडवालि, बहुली पेटवालि; मुहि रूधा, आसणि सूधा; हसमंत हयहेषारवि अंबर बधिर करता। सूरवीर, साहसिक, काल्हआ, किरडिया, किहाडा, नीलडा, सेराहा, कविला, धूंसरा, मांकडा, दोरीया, बोरीया, द्वादशावर्त्तव्यंजनगुणि शोभित, शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षित। ससइं धसइं, साटि पइसइं; जुडइं, दउडइं; जिस्या सूर्यतणा रथ छूटा हुइ तिस्या अनेक तुरंगम सांचरिया। तउ पायक पहटिया । किस्या ते पायक—सूरवीर, विक्रांत, दुर्दांत, षड्ग षेडे लीधे श्रमइं, वयरीरहइं आक्रमइं। पवनवेगि पुलिइं, योधस्युं जुडइं। सेल्ल कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं। वेला लामी, न मेल्हइं स्वामी। नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां घाव दिइं। किहांई न दीसइ थाका, जीह लगइ हुइ जयपताका। जे धाइं, पुलइं, ऊच्छलइं। इस्या पायकनी मिली कोडि, जीह माहि नहीं षोडि। हिव रथ विस्तरिया। किस्या ते रथ—चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि बइठा सूता। छत्रीसे दंडायुध भरिया, वायुवेगि सांचरिया। धडहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजमाहि रविबिंब रोलइं। ऊपरि धज लहलहइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहगहइं। घांट वाजइं, वयरी भाजइं। मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरिया रथ । इणिपरि चतुरंग दल चालतां हूंतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम नगर आवइं, लोक नवनवां भेटणां नीपजावइं।

मार्गि जातां आवी एक अटवी; हिव ते किसीपरि वर्णविवी। जेह अटवीमाहि तमाल ताल हिंताल माल्हर खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक बकुल विचिकिल सहकार कांचनार जांबू जंबीर वानीर कणवीर कीर केलि कदंब निंब नारिंग नालीयरि द्राष दाडिमी देवदारु अंकुल्ल कंकिल्लि नाग पुन्नाग वल्ली यूथिका मालती माधवी जपा मरुबक दमनक पारधि केतकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवत्री राजगिरि सिरीषां सींबलि सिरघू सीसमि साग टींडूसार आक आकमंदार कपित्थ बील बहिडां करण वरण धव षदिर पलाश बड वेडस पींपल पींपरि उंबर कठंबड धाहुडी धामण षीप षेजड षीरणीं कइर करंज बाउल बीजुरी आमली आंबिली बोरि इंगोरि गोरडीया प्रमुख वृक्षावली दीसइं, बीहंतां सूर्यतणां किरण माहि न पइसइं। अनइं किहांइं सिवातणा फेत्कार, घूकतणा घूत्कार। व्याघ्रतणा घुरहराट, न लाभइं वाट नइ घाट। माहि वानरपरंपरा उछलइ, मदोन्मत्त गजेंद्र गुलगलइं, सिंहनादभयभीत मयगल षलभलइं। जिस्या

दवि दाधा षील, तिस्या भील । सूअर घुरकइं, चीत्रा बुरकइं; वेताल किलकिलइं, दावानल प्रज्वलइं; रींछ सांचरइं, विरुतणा यूथ विचरइं । इसी महारौद्र अटवी ।

तेहमाहि नरेश्वरतणां कटक न लहइं माब, न लहइ नदीतणा ताग । न सकइ चाली घोडा हाथी, न को जाणइ साथी । विषम पर्वतमाला, डाबी जिमणी दवतणी ज्वाला । जई न सकइं चडिया नइ पाला, तेतलइं दीसिवा लागा भील अत्यंत काला । तिवारइं राजा पृथ्वीचंद्र चींतविउं–आवी विषम वेला, जई थाई भील भेला; तु किम झूझीयइं, जइ परदल न बूझियइं । जेतलइं राजा इसिउं चींतविउं तेतलइं ते कटक अटवी ऊपरि हुई पारि पहुतुं, मनि गहगहतुं । आगलि नगर एक देषइ, ते हर्ष कुणतणइ लेषइ । सवे कटकीया लोक आश्चर्य धरइ, परस्परइं इसी वात करइं । कूर्णहिं काई जाणिउं, ए कटक इहां कुणि आणिउं । दैव रूठउ, पुणि देव दाणव कोइ तूठउ । जीणइं एवडुं सानिध्य कीधउं, हेलांमात्र कटक इहां लीधउं । अथवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरूउं पुण्य । जेह कारणि इस्युं कहइ–जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि । ताणीया पाणीनइ पूरि, आक्रम्या क्रूरि । चांप्या सधरि, डसिया विषधरि । धरियां राइ, भेल्या घणे घाइ । मुरडिया मोगे, दूहविया रोगे । ऊपाडिया बंदि, पडिया विछंदि । तीहं सविहुंनइं धर्मनउ आ-धार, ए साचउ विचार । लोकरहइं इसी वात करतां राजाइं तिहां आंबावृक्षहेठलि आव्या, ऊतारा नीपजाव्या । तेतलइ धातु, पुलतुः पाछउ जोतउ, कायरपणइ रोतउ; पुरुष एक नरेश्वर तणइ शरणि पइठउ । तेतलइ तरूआरि ताकता, हणिहणि भणी हाकता । केई पुरुष आव्या, तेहइ राजा बोलाव्या । आपु ए चोर, महाकठोर, जे एहनइं रापइ ते ढोर । तिवारइं राजातणे सेवके कहिउं–अरे ए कहीइं राजा पृथ्वीचंद्र, एहस्युं पहुची न सकइं इंद्र । तिवारइं ते पुरुष कहिवा लागा–नरेश्वर पहिलउं वात अवधारउ, तउ चोर ऊगारउ । अम्हे तलार, करउं नगर-तणी सार । पुणि ए चौर, दुर्दान्त अपार । ए विविधवेसि हेरइ, बोलाविउ बोल फेरइ । चडइ मालि अटालि, पइसइ परनालि षालि । कमाड ऊघाडइ, पुणि सूतु कोइ न जगाडइ । अघोर निद्रा दिइ, कानकोटना आभरण लिइ । कटारी पायबंधन वाढइ, पर्वतप्राय केकाण काढइ । चडिउ चोर पवाडई, राउला भंडार फाडइ । दीसइ दिवसि शांत, पुणि रात्रिइं साक्षात् कृतान्त । विणासीतउ न मानइं चोरी, बांधइउं वाढी जाइ दोरी । लोह सांकल त्रोडइ, घडी न रहइं षोडइ । हाकिउ ऊजाइ, रुंधिउं धसी धाइ । करि कीधइ करवालि, जाइ लोकलक्षविचालि । गढ मंदिर फाडइं, भीजि अडइ । इस्यु ए चोर गढनइ परनालि पइसतउ लाधउ, पाडी बांधउ । दांते दोर त्रोडि नाठउ, तुम्हनइं शरणइ पइठउ । पुणि ए पापी, जीणि प्रजा संतापी । ए तुम्ह म थापउ, अम्हरहइं आपउ । नहीं तु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं । अम्हारउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि न कोई राय नइ राणउ । सांभलउ ए वात–ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाविख्यात ।

तिहां छइ राजा समरकेतु, अतिसचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु। जेतलइ तेउ ए वात जाणिसिइ, तेतलइं ताहरा अहंकारतणउं अंत आणिसिइ । एह कारणि चोर आपी निर्दोष थाउ, पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ । इसी वार्त्ता सांभली आपणां सुभटसाम्हउं जोई राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उल्हस्या । ऊठिया ते वीर, ताकवा लागा तोमर तीर । नाठा तलार, नासता पूठिइं वाजइ प्रहार। नीठ ते जई नगरमाहि पइठा, तु नाभिइं सास बइठा। जइ वीनविउ समरकेतु राउ, देषाडइं आपणउ घाउ। समरकेतु राजा कीधउ कोप, हूउ दलवई निरोप। तत्काल सामहिउं दल, मिलइं सुभट सबल। वाजइं प्रयाणभेरी, बीहइं वयरी। पाटहस्ति गुडिउ, तेहऊपरि राजा चाडिउ। रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पाषरिया, पायक सांचरिया। चतुरंग दल नीकलिउं, बाहिरि एकठउं मिलिउं। दीसइं छत्रध्वज, ऊछलइं रज। तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिइं इसी वात कही। तुं पियारइ देसि पइस, अन्याय करी इहां बयस। तउ तुं अजाण, अजी मानि स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहीं तु प्रकटि प्राण। चोरदंड तुझनइ होसिइं, लोक कउतिग जोइसिइं । ईणइं वातइं दूत अपमानी बाहिरि काढी राजा पृथ्वीचंद्रि दल सामहाविउं, ए आपणइं पर्व आविउं । चाल्यां बेउ दल, ऊपडइं धूलिपडल। कोइ आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सूझइ नहीं। न जाणीइं आपणां दल, न जाणिइ पिरायुं दल। न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल। न जाणीइ पूर्व, न जाणीइ पश्चिम; एकाकार हूउ। बिहुं दल मिलते मादल वाजी, जयढक्क वाजी, रणचडण काहली वाजी, रणतूर वाजियां। त्र्यंबकतणे त्रहत्रहाटि जाणे त्रिन्हइ त्रिभुवन टलवलिवा लागा, भेरीतणे भूंभूयाटि भुहि भिलिहि फाटी, काहलतणे कोलाहले कायर कमकम्या, नीसाणतणे निनादि उच्चैः श्रवा ऊकनिउ, ऐरावण ऊमंडिउ, दिग्गज डहडहिया, ढाकबूक वाजी, बुंबारव फाटी, बिहुं दलि चालते सेषनाग सलवलिउ, कुलाचलचक्र चलिउ। कूर्म्म करोडि भाजइ। अंबर गाजइ अकालि अप्रस्तावि प्रलयकालनी शंका हुई। बाध्या क्रोध, झूझइं योध। घाय जालवइं, छत्रीस दंडायुध चालवइं। किस्यां ते—वज्र १, चक्र २, धनुष ३, अंकूश ४, षड्ग ५, छुरिका ६, तोमर ७, कुंत ८, त्रिशूल ९, भाला १०, भिंडमाल ११, मुसंढि १२, मक्षिक १३, मुद्गर १४, अरल १५, हल १६, परशु, १७, पट्टि १८, शविष्ट १९, कणय २०, कंपन २१, कर्त्तरी २२, तरवारि २३, कुद्दाल २४, दुष्फोट २५, गदा २६, प्रलय २७, काल २८, नाराच २९, पाश ३०, फल ३१, यंत्र ३२, द्रस ३३, दंड ३४, लगड ३५ कटारी ३६, वह्नि। इस्यां हथीआर झलहलइं, कायर पुलइं । रथ जूडंता दूरापाती लघुसंधानी शब्दवेधी धनुर्धर धाया, बाण मेल्हते आकाश छाया। एकि घोडे चडइ, एकि ऊतावला पडइं, कायर रडइं, सुभट भिडइं, योध जुडइं। घोडा मुह मूकी धाइं, त्रूटे पगि ऊ जाइं; हस्तीतणा सुंडादंड त्रूटइं, एकिना

शिर फूटइं । इसिइ युद्धि प्रवर्त्ततइ हुंतइ राजा पृथ्वीचंद्रतणुं दल वयरीए एकवार भागूं, नासिवा लागूं । समरकेत हूउ सानंद, पृथ्वीचंद्र हूउ निरानंद; चींतवइ ए किसी वात, माहरा दलरहइं कांइं हूउ उपघात । राजा चींतवतइ हूंतइ वीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणइं कउतिग नींपजाविउ । तीणं दीठइ वयरीना हाथतु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना कटकरहइं चाडियां । राजासमरकेतु बांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगतली आणिउ, पुण ते वीर तिवारपूठिइं कुणही न जाणिउ । तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वीचंद्रतणउ वीरवर्ग मिलिउ ।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुंदरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे द्वितीयोल्लासः

तृतीयोल्लासः

जइ मान मोडिउ, तउ समरकेतु बंधहूंतउ छोडिउ; पिहरावी बोलावीउ । तु मनि गर्व आणे, माहरी वात न जाणे । किवारइं सूर्य पूर्व छांडी पश्चिम उदय मांडइ, समुद्र मर्यादा छांडइ मेरु ढलइ, आकाशतउ नक्षत्रराशि गलइ, पापीयाघरि धर्म्म पलइ, पाणीमाहि अग्नि प्रज्व-लइं, ध्रूमंडल षलभलइं, कुलाचलचक्र चलइ, अमृतहूंतउ विष थाइ, पृथ्वी रसातालं जाइ, कृपणि दान दीजइ, पुणि मुझकन्हइ प्राणि शरणागत चोरइ किम लीजइ । तिवारइं जे आविउ छइ शरणि, ते लागु राजातणे चरणिं । स्वामी तुं धन्य जीणि तइ हुं ऊगारिउ, नहीं तु तलारे हूंतु मारिउ । पडतउ संसारि, होयत मनुष्यजन्मतणी हारि । राजा कहिउं तु किसिउ, जेहनुं मन इसिउं । विचारि ते कहिवा लागु । अंगदेशि श्रीपुरनिगर, तिहां श्रेष्ठि लक्ष्मीधर, श्रीलक्ष्मीइं सधर । तेहतणु पुत्र हुं श्रीपति, पणि विषम देवगति । दसकोडि द्रव्य हूंती, पणि बापुजीसाथि पहुती । पिता परोक्ष हूआ पूठिइं जं वाहणमाहि घातिउं, तं समुद्र सातिउं । कई वाणउत्रे ग्रसिउं, हाट चोरे मुसिउं । थलवटनउं थलवटइ रहिउं, कांई ठाकुर ग्रहिउं । घर बलिउं, समग्र मंडाण टलिउं । समग्र द्रव्य निस्तरिउं, एकलक्ष द्रव्य ऊगरिउं । पछइ अवर काजकाम छांडिउं, प्रवहण पूरिवा मांडिउं । भलइ दिवसि प्रवहण पूरिउ । त्रिन्नि सइं साठि क्रियाणां चडाव्या, सप्तविध पकवान चडाव्यां, सप्तविध करंबा लिया, पोता सपाणी भरिया, देवसमुद्र वायस पूजाव्या । षाभिल मादल वाजिवा लागां, बाबरि कोलणि नाचेवा लागी, गलेला हेलाहेल करवा लागा । कूउषंभउ ऊभउ कीधउ, नांगर ऊपाडिउ, सिढ ताडिउ, घामतीउ घामत उलीचइवा लागु, वाऊ-रीऊ तलि पइठउ, नीजामउ नालि बइटउ । आउलां पडइं, सूकाणी सूकाण चालवइं, मालिम

वाहण जालवइं, सुरवर लहलह्या, वादित्रनादि समुद्र गाजी रह्या। हिव आगलि जातां हूंता चिलीवाय वायां, आकाशि हूई मेघछाया। ऊडिउ पवन प्रबल, समुद्र हूउ उच्छृंखल। कल्लोल आकाशि ऊपडइं, बीहतां लोकरहइं डींबा चडइं। वेला लामी, वस्तु वामी। एक, हा दैव! करइ, एक देवध्यान धरइं। वाहण पर्वति आफली भागउं, श्रीपतिइ हाथि पाटीउ लागउं। तेहनइ आधारि तरतउ तरतउ, त्रिहु दिवसि पारि आविउ। वनमाहि सरोवरि जल पीउ, फलभक्षण नीपजाविउ। आगलि जाता दीठउ योगी एक, मइं साचविउ नमस्कारतणउ विवेक। जोगी कहिउं तूरहिइ एक देसु, बीजउ लेइसु। मइं कहिउं दिइ, पछइ मुज निर्द्धनकन्हइं जं देषइ तं लहिइं। जोगी बंधछोडणी विद्या देईं मस्तिक मागिउं, मइं चींतवइउं, वली पूर्वभवपातक जागिउं। जोगी धायु पूठि, मइं नासिवा बांधी मूठि। नासतु इणि नगरि आवी रात्रिइं गढतणइ षालि पयसी रहिउ, तलारके ग्रहिउ। तइं राषिउ, मोटउ उपगार दाषिउ।

> " छासिइं केरउ आफरु, दासिइ केरु नेह।
> कंबलकेरु मोलीउं, षिसत न लागइ षेव ॥ "

माहरी लक्ष्मी इहसरीषी हुई। तउ कहीइ—आभतणी छांह, कुपुरिसतणी बांह, आढनउ तूर, नदीनूं पूर, ठाकुरनउ प्रसाद, माकडनउ विषाद, वहीनउ पडीगगउं, सूपडानउ उठीगणउं, दीवानु तेज, मात्रेईनु हेज, दासीनु स्नेह, शरदकालनु मेह, थोडा मेहनउ त्रेह, वहिलु आवइ छेह। लक्ष्मीतणउं त न्याय नीपनउं, हिव वैराग्य ऊपनउं। तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदा सिव।

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचंद्रप्रतिइं शिरु नामिउ। अनइ इसी वात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही। तूरहिइ कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ। ताहरुं अद्भुत भाग्य, मुझनइ ऊपनुं वैराग्य। विमासी जोयुं तउ असार संसार। जिशिउं पींपलनुं पान, जिशिउं गजेन्द्रनुं कान, जिशिउ संध्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ मांकडनु वैराग, जिसिउ वीजनु झबकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणीनउ टबकउ, जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ संसार चंचल। तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकारि। हउं तापसी दीक्षा लेसु, तप करिसु, संसार तरिसु। पृथ्वीचंद्रि तीहं बिहुप्रति कहिउं—तुम्हे करुवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ—वन ते वर्णवीइ जे वृक्षवंत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे यूथवंत, हाट ते जे वस्तुवंत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे मूनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन ते जे सत्यवंत, शिष्य ते जे विनयवंत,

मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चायवंत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत। अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ। जेतलूं अंतर राणी अनइ दासि, जेतलूं अंतर दही नइ छासि, जेतलूं अंतर मधुरध्वनि नइ धासि, जेतलूं अंतर समुद्र नइ कूया, जेतलूं अंतर सोनईया नइ रूया, जेतलूं अंतर बाप नइ फूया, जेतलूं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलूं अंतर रूपा नइ कथीर, जेतलूं अंतर सुवर्ण नइ माटी, जेतलूं अंतर वारू भीति नइ त्राटी, जेतलूं अंतर पटउला नइ छाटी, जेतलूं अंतर पडसूत्र नइ सूतली, जेतलूं अंतर जीवता माणस नइ पूतली, जेतलूं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलूं अंतर तंदुल नइ बुरी, जेतलूं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलूं अंतर साकर नइ षारा, जेतलूं अंतर सीह नइ सीआल, जेतलूं अंतर प्रभात नइ वीआल, जेतलूं अंतर रूंगा नइ राग, जेतलूं अंतर सींबलि नइ साग, जेतलूं अंतर अलसला नइ नाग, जेतलूं अंतर हंस नइ काग, जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ षजूया नइ सूर, जेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगापूर, जेतलइ साधु नइ चोर, जेतलइ हार नइ दोर, जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा, जेतलइ कोडि नइ सवा विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस, जेतलइ मोटा वृक्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव, तेतलूं अंतर अपर देवत अनइ श्रीसर्वज्ञदेव।

एह कारणि इसिउ मनि निश्चयु आणिवउ। जिम श्री सूर्यपाषइ दिवस नही, पुण्यपाषइ सौख्य नही, पुत्रपाषइ कुल नहीं, गुरूपदेशपाषइ विद्या नही, हृदयशुद्धिपाषइ धर्म नही, भोजनपाषइ त्रिपति नही, साहसपाषइ सिद्धि नहीं, कुलस्त्रीपाषइ घर नही, वृष्टिपाषइ सुभीक्ष नही, तिम श्रीवीतराग पाषइ मुगति नही। अनइ जिहां हिंसा, तिहां नही धर्मतणी प्रशंसा। जेह कारणि इसिउं कहिइं—जिम विलंब विणसइ काज, कुठाकुरि विणसइ राज, मार्जारि प्रचारि विणसइ छाज, अणबोलिइं विणसइ व्याज, पडपि विणसइ दान, कुसंगति विणसइ संतान, स्वरपाषइ विणसइ गान, लूइं विणसइ मउपान, व्याधिइं विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवसान, कुपंडित विणसइ छात्र, क्षयणि विणसइ गात्र, पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद, आकदूधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र, चीभडी विणसइ कणकनु वाक, विषइप्रयोगि विणसइ रसवतीतणउ पाक, वरसालइ विणसइ शस्त्र, षयरी विणसइ वस्त्र, जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ धर्म। राजा पृथ्वीचंद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइं कहिइ छइ—सांभलु परमार्थ हेव, टालिउ मिथ्यात्वतणी टेव, आदरु दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव, करउ सद्गुरुनी सेव; जिम टलइ पापकर्मतणा लेव।

ए वार्त्ता सांभली तीह बिहुंरहिइं मिथ्यात्वतणी भ्रांति टली, जैनदीक्षा लेवा हुई मनि

रली। तेतलइ भाग्ययोगि दैवसंयोगिइं चारण श्रमण माहत्मा एक तिहां आविउ, नेहे सविहु तेहरहइं प्रणाम नीपजाविउ । पगि लागी, दीक्षा मागी। तीणि दीधी, वांछितवार्त्ता सीधी। तिवारपूठिइं तेहे ऋषीश्वरे राजा मोकलावी विहारक्रम कीधु, नरेश्वरि आघउ पीयाणउ दीधउ। पहिलुं पहुतु पद्मपुरि, लोक हर्ष पमाडिया भलीपरि। तिहां परमहंस प्रधान स्थापिउ, कर्णवारनु भार आपिउ। हिव राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहूंता सात पीयाणे अयोध्या नगरी पहुता, स्वयंवरि आविया दीठा राय सवे गहगहता। राजा सोमदेवि साम्हइं आवी महोत्सवि करी माहि लिया, भला ऊतारा दिया। तेतलइं सूत्रहारे स्वयंवरमंडप नीपायु, पोयणिने पाने छायु। कर्पूर कस्तूरी महमहइं, ऊपरि ध्वज लहलहइं। चंद्रूआतणी विचित्राइ, पूतलीतणी काविलाई। थंभकुंभीतणा मनोहर घाट, पठइ भाट। रत्नमई तोरण नइ मोतीसारि, अलंकरिउ कुसुमतणे प्रकरि। वादित्र वाजइं, मांगलिक्यगीत छाजइं। आरीसा झलकइं, चालतां स्त्रीना नेउर षलकइं। इसिइ मंडपि राययोग्य मांड्यां नामांकित सिंहासण, मागणहारनइं पगि पगि दीजइ वासण। तु राजा सोमदेव दूत सांचरिया, ऊतारे फिरिया। राय सविहुं योग्य आकारण नीपजाव्या; मोटे आडंबरि समग्र नरेश्वर मंडपमाहि आव्या। जिस्या देवलोकसंबंधीया हुइं देव, तिस्या दीसइं सवि नरेश्वर सिंहासणि बइठा हेव। तिसिइ अवसरि राजा पृथ्वीचंद्र, जिसिउ साक्षात् हुइ इंद्र। इसिउ आवी स्वयंवरि सभामाहि बइठउ, सविहुं रायतणे मनि इसिउ शंकाभाव पइठउ। जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अम्हारउं आविवउं किसिइ करिसिइ। राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलइं पवित्र। राजा पृथ्वीचंद्र देषी सकललोक इसिउं विमासइं–जिम अक्षरमाहि ओंकार, मंत्रमाहि ह्रींकार, गंधर्वमाहि तुंबरु, वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधवस्तुमाहि कपूर, वस्त्रमाहि पाटणनउं चीर, वीरमाहि शुद्रकवीर, गढमाहि कालिंजरु, षाणिमाहि वइरागरु, द्वीपमाहि जंबुद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप, पवर्तमाहि मेरुभूधर, जीवनहेतुमाहि जलधर, जिम हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण, तुरंगममाहि उच्चैःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग, धवलमाहि वृषभ, प्रशस्यदिशिमाहि उत्तरककुभ, अचलमाहि ध्रूमंडल, क्षमावंतमाहि भूमंडल, जिम नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग, जिम ध्यानमाहि शुक्ल ध्यान, दानमाहि अभयदान, मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागरखंडउ पान, ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सवार्थसिद्धि विमान, गरूआमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र, ग्रहगणिमाहि चंद्र, तिसिउ सविहुं रायमाहि दीसइ पृथ्वीचंद्र नरेंद्र।

तिवार पूठिइं राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारहइं तेडउ दिवराविउ, तउ सधव स्त्रीए धवलमंगलपूर्व कन्याह्नइं मांगलिक स्नान कराविउं। अंगरूक्षण अनंतर कन्या सदश श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलंकरियां। किस्यां किस्यां ते आभरण–हार, अर्द्धहार,

त्रिसर, प्रालंब, प्रलंब, कटीसूत्र, कांची, कलाप, रसना, किरीट, मुकुट, पट्ट, शेषर, चूडामणि, मुद्रिका, तबक, दशमुद्रिका, केयूर, कटक, कंकण, ग्रैवेयक, अंगुलीयक, अंगुस्थल, हेमजाल, मणिजाल, रत्नजाल, गोपुच्छक, उरस्त्रिक, चित्रक, तिलक, कुंडल, अभ्रमेचक, कर्णपीठ, हस्त-संकली, नूपुर प्रमुख आभरण जाणिवां । ईहमाहि स्त्री योग्याभरणि कन्या हुई अलंकृतगात्र, हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां सीकिरितिणां छात्र । कन्यातणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुखि तांबुलराग । आविउं नरविमान, तीणि चडी ते चाली देवांगनासमान, आगलि हुइ वादित्रध्वनि अनइ गीत गान । ईणिइं परिइं सकललोकन्हइं आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती, महोत्सवसहित कुमरि, पहुती मंडपतणइ द्वारि । ते देषी नरेश्वर सवे मकरध्वजइ मनाविया हारि, चींतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमातणइ अवतारि । तेहतणा पाणिग्रहणतणी वांछा धरइं, विविध चेष्टा करइं । एकि राय आपणा हीयानउ हार हलावइं, एकि बांहतणा बहिरषा चलावइं, एकि रत्नमय दडा ऊलालइं, एकि छुरी ऊछालइं , एकि मित्रसिउं वार्त्तालाप मांडइं, एकि दृष्टिरहइं विनोद ऊपजावइं क्षणु एकि षांडइं, एकि संभालइं कानि कुंडल, ईणिपरि त्रिविध चेष्टा करइं राजमंडल । तिसि समइ जि जोइवा आव्या आकाश देव अनइ दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव । मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या नहीं विद्याधर । हिव कन्या आभरणि तेजि उल्लसती, रंभारहइं हसती, स्वयंवरमंडपमाहि आवी, तु यशोधरा इसिइं नामिइं प्रतीहारीइं बोलावी । अहे कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्षिया हुंता आसमुद्रांतपृथ्वीतणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरइं तुं वरसि तेहना मनोवांछित पासा ढलिया, मनोरथ फलिया ।

हिव जोइ तुझ आगलि दसलक्ष मगधदेसतणउ नरेश्वर, सहिजिइं अलवेश्वर; राजगृह-नगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइ नामि दीसइ । जेह राजातणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्वती उल्लसइ । तूठउ दारिद्र्य हरइ, दीठउ आनंद करइ । रणांगणि गयवरतणी गुडि गांजइ, शत्रुभट भांजइ । इस्यु भूपाल, एहतणइ कंठि घाति वरमाल । अथवा ए जोइ वाणार-सीतणउ राउ, भांजइ वयरीतणउ भडिवाउ । ए सरागदृष्टि अवलोकि, जेहतणउ प्रताप प्रसिद्धउ त्रिहुं लोकि । जेहतणइ गजदलि चालतइ हुंतइ इंद्रन्हइं सपक्षपर्वततणी शंका नीपजइं । जेहतणइ तरलतुरंगमि प्रसरतइ हुंतइ वइरीरहइ प्रलयकालोद्धतसमुद्रकल्लोलतणी शंका नीपजइं । इसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल; अकल, सकल; कर्मचंद्रनामा नरेश्वर वरि, माहरुं कहिउं करि । अथवा विदर्भदेस कुंडिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विषमकालि; वहइ कर्णदाने-श्वरतणउ अवतार, धनुर्धरपणइं हरइ अर्जुनतणउ कार्तिप्राग्भार, जेहतणइ अतुल भंडार, प्रबल कोठार, झूझारतणउ नही पार, करइ शत्रुसंहार, करइ भट्ट कइवार, मलाइवार, महाउदार, कंठि

वरमाल घाती ए मकरध्वज राजा अंगीकरि भर्त्तार । अथवा गौडदेस हंसपुरपाटणनु स्वामी सिंहरथराजा जोइ, जीणि दीठइ आणंद होइ। जेह राजा संबंधीयइ कुंद-मचकुंद-कुमुद-केतकी-कर्पूरधवलि कीर्ति मंडलि प्रसरतइ हुंतइं नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलास-पर्वततणी पदवी आपी। यमुनातणइ स्थानकि कीधउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र नइ राहु। सरीषा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं बग नइ काग। ईश्वरऱ्हइं नीलकंठपणउं टालिउं, विष्णुऱ्हइं कृष्णपणउं पखालिउं, बलदेव बांधवपणउं उजुआलिउं । ईणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि फेरी, तेहनी किसी वात वषाणीयइ अनेरी । इसिउ अलवेश्वर, सिंहरथ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीवितेश्वर। ईणिपरि तीणइं प्रतीहारियइं राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मरथ वीर्यबाहु सुवर्णबाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुबाहु रत्नांगद हेमांगद हेमरथ मणिरथ मणिशेषर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभ प्रमुख नरेश्वर वर्णव्या वषाण्या, पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आण्या ।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ मुषचंद्र। ऊलटिउ आनंद-सागर, मनि चींतवइ एउ सही गुणतणउ आगर । तिवारइं प्रतीहारीयइं कहिउं—हे कुमरि सांभलि, पुरा-पूर्वइं सगर चक्रवर्ति हूउ विख्यात वसुधातलि । जेह सगरचक्रवर्तितणइ चउरासी लाष हस्ती, जीहतणि गति महाप्रशस्ती। चउरासी लाष तुरंग, ऊललता जिस्या हुइं कुरंग; चउरासी लाष रथ सहिजिइं सुरंग। चउरासी लाष नींसाण वाजइं, वयरीना भडवाउ भाजइ । अत्यंत अभिराम, छन्नू कोडि ग्राम। गाम घोडउं काढतां छन्नू कोडि साहण मिलइं, छन्नू कोडि पायक कलकलइं। चऊद सहस्र संबाध, चऊद सहस्र अमात्य अत्यंत साधु। जेहनइ चउद रत्न, देवता करइ यत्न। नव निधान, बहुत्तरि सहस्र नगर प्रधान। अन्यायरहइं दाटण, अडतालीस सहस्र पाटण। जेहे वसइं अनेक कुटुंब, इस्या चउबीस सहस्र मडंब। जीहना वर्णनतणी कीजइ छेड, इस्या सोलसहस्र षेड। जेह चक्रवर्तितणइ सवाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत सारी। चरणि रुणझुणइ नेउर, इस्या चउसट्ठि सहस्र अंतेउर। विहितोल्लासं, अट्ठावीसउ लाष पिंडविलास। बत्तीससहस्र राय, प्रभाति प्रणमइं पाय। प्रत्यक्ष पंचवीससहस्र यक्ष। वीस सहस्र सोनारूपातणा आगर, नवकोडि ध्वजाधर। छत्रीस लाष दीवटीया उदार, त्रिन्निसइं साठि सूआर। एवंविध प्रचंड भुजदंड, साधित भरतक्षेत्रषट्षंड। निरुपमस्फूर्त्ति, अद्भुतमूर्त्ति, इसिउ हूउ सगर चक्रवर्त्ति । हिव भगीरथ राजा हूउ सगरतणउ पुत्र, जिणइं गंगा समुद्रि घाती राषिउ आपणउं चरित्र। तीणइं राज्य पालिउ अनेक कोडिवरस, तेहनइ पुत्र हूआ दस । तेहमाहिइ एकरहइं कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहइं दीधउं मरहठदेसि ठाम। तेह कुंतलतणइ वंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीक प्रमुख राय हूआ, तेहना

प्रघट्टक कुणइ वर्णवाइं जूजुया । देवानीकतणउ पुत्र हूउ राजा पृथ्वीशेषर । जीणि पुहिठाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउं दर्शन प्रत्यक्ष आपिउं । हिव मधुरवाणि, तेहतणउ राजा पृथ्वीचंद्र जाणि । एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि साक्षात् सुरेश्वर, धैर्यगुणि मेरु महधिरु, दानिगुणि नवीन जलधर, गांभीर्यगुणि क्षीरसागर । निर्मलपणइ गंगाजल, सौम्यपणइ शशिमंडल । रूपिगुणि अश्विनीकुमार, परकलत्रपरिहरणगुणि गांगेयतणउ अवतार । विवेकगुणि राजहंस, चातुर्यगुणि बृहस्पतितणीपरि लब्धप्रशंस । पृथ्वीभारवहणि शेषनाग, एह ऊपरि धरि तु अनुराग; इहां अछइ ताहरउ लाग । घणउं किसिउं कहींई—एह राजा विक्रमाक्रांतक्षोणीमंडल, शौर्यश्रीवदनारविंद-प्रद्योतन, सकलमहीपाललीलाललितशासन, पालितश्रीजिनशासन, तुज वरिवा योग्य छइ । ते रत्नमंजरी कुमारि प्रतीहारितणां इस्यां वचन सांभली अंगि रोमांच धरती, नेउरतणा झमझम-कार करती, हर्षभर वहती, राजाढूकडी पुहती । लाज ठेली, कंठकंदलि वरमाल मेल्ही । तत्काल जयजयारव ऊछलिया, लोक कलकल्या । विद्याधर पुष्पवृष्टि करइं, भट्ट जयजयशब्द उच्चरइं । गंधर्व गीत गाइं, वादित्रीया वादित्र वाइं । वापरइ धवलमंगल, हुइं महामहोत्सव विपुल ।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे तृतीय उल्लासः ।

चतुर्थ उल्लासः

हिव तिसिइ अवसरि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेहरहइं धूमकेतु-देवतणउ मंत्र स्फुरइ, तीणइं जं चींतवइ तं करइ । धूमकेतुदेव अठ्यासीग्रहमाहिलउ जांणि-वउ । कवण कवण—अंगारक १, विकालिक २, लोहितांक ३, शनश्चर ४, आधुनिक ५, प्राधुनिक ६, कण ७, कणकणक ८, कणक ९, वितानक १०, कणसंतानक ११, सोम १२, सहित १३, अश्वासन १४, रुत १५, कार्योपग १६, कर्बुरक १७, अजकरण १८, दुंदुभक १९, शंख २०, शंखनाभ २१, शंखवर्णाभ २२, कंस २३, कंसनाभ २४, कंसवर्णाभ २५, नील २६, नीलावभास २७, रुप्य २८, रुप्यावभास २९, भस्मक ३०, भस्मराशि ३१, तिल ३२, तिलपुष्पवर्ण ३३, दक ३४, दकवर्ण ३५, काय ३६, वंध्य ३७, इंद्राग्नि ३८, धूमकेतु ३९, हरि ४०, पिंगल ४१, बुध ४२, शुक्र ४३, बृहस्पति

४४, राहु ४५, अगस्ति ४६, माणव ४७, कामस्पर्श ४८, धुर ४९, प्रमुख ५०, विकट ५१, विसंधिकल्प ५२, प्रकल्प ५३, जटाल ५४, अरुण ५५, अग्नि ५६, काल ५७, महाकाल ५८, स्वस्तिक ५९, सौवस्तिक ६०, वर्द्धमान ६१, प्रलंब ६२, नित्यालोक ६३, नित्योद्योत ६४, स्वयंप्रभु ६५, अवभास ६६, श्रेयंकर ६७, क्षेमंकर ६८, आरंभकर ६९, प्रभंकर ७०, अरजा ७१, विरजा ७२, अशोक ७३, वीतशोक ७४, वितप्त ७५, विवस्त्र ७६, विशाल ७७, शाल ७८, सुव्रत ७९, अनिवृत्ति ८०, एकजटी ८१, द्विजटी ८२, कर ८३, करिक ८४, राजा ८५, अर्गल ८६, पुष्प ८७, भावकेतु ८८ । इह अठ्यासी-ग्रहमाहि धूमकेतु जाणिवउ ।

जिवारइ पृथ्वीचंद्रराजातणइ कंठि वरमाला पडी, तेतलइ धूमकेतुराजान्हइं रीस चडी । रोसें हूउ विकराल, धूमकेतुदेवतातणउ मंत्र स्मरीनइ ऊछालिउं करवाल । ते खड्ग फीटी हूउ वेताल, जे उंचउ नवताल, कंठावलंबितरुंडमाल, करतलि कपाल, बुभुक्षाभिभूत, जिसिउ यमदूत, कान टापरा, पग छापरा, आंषि ऊंडी, पेटि कूंडि, आंषि राती, हाथि काती, विकराल वेश, मोकला केश, हडहडाटि हसइ, धरामंडलि धसइ। मस्तकि अंगीठउ बलइ, भैरव जिम कलकलइ । इसिउं रूद्र रूप, केतलूं वषाणीयइ तेहनूं स्वरूप । इसिउ वेताल देषी सहू भयभ्रांत हूउ । तेतलइं धूमकेतुराजा ऊठीं कन्या उपाडी रथि घातिवा लागउ । तेतलइं राय राणा धसमसिवा लागा । तेतलइं तेह जि वेतालहूंतउ अंधकार प्रसरिउं । जीणइं अंधकारि प्रसरतइं हुंतइं अवर कवण लेखइ, कोई आपणी छांह न देषइ । गजेंद्र गलगलारवि जाणीयइं, रथचक्र चीत्कारपणइं जाणीयइं, चिंधपताका किंकिणीक्वाणि करी जाणीयइं, तूर्य शब्दि करी जाणीयइं, नींसाण द्रहद्रहाटि जाणीयइं । इसिउ अंधकार बिपहर दिवसतणा, च्यारि प्रहर रात्रितणा; छप्रहर गर्ब्भवास सरीषुं प्रवर्तिउं ।

हिव हूउं प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकारव्रात, अदृश्य नक्षत्रपटल, गगन उज्ज्वल, निःशब्द घूककुल, निर्मल दिग्मंडल, आश्रितपूर्वाचल, हूउं रविमंडल, विहसइं कमल, विस्तरइं परिमल, वायु वाइं शीतल, प्रसन्न महीतल, जिस्यां रातां पारेवातणा चरण, तिस्यां विस्तरइं सूर्यतणा किरण । इसिइ प्रभाति हुंतइ दीसइं घोडा हाथीया, दीसइं पूरिया साथीया । दीसइं रायराणापरिवार, पुणि न दीसइं रत्नमंजरी कुमारि सार । तिवारइं सोमदेव राजा हूउ सचिंत, परिवार हूउ शोकवंत, पृथ्वीचंद्र राय हूउ विछाय । स्वजनवर्गसंबंधीया राइराणा, तिसिइ अवसरि [आपइं] उल्हाणा। ते मंडप रत्नमंजरीपाषइ निःश्रीक दीसिवा लागउ । जिम लवणहीन रसवती, व्याकरणहीन सरस्वती; गंधरहित चंदन, घृतरहित भोजन; खांड रहित पकवान, मानरहित दान; छंदरहित कवि, शक्ररहित पवि; विवेकरहित मणु, वेदरहित

ब्राह्मणु; स्वर्गरहित ऐरावण, लंकारहित रावण; शस्त्ररहित पायक, न्यायरहित नायक; फलरहित वृक्षु, तपोरहित भिक्षु; वेगरहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम; नासिकारहित मुखमंडल, कर्णपालिरहित कर्णकुण्डल; वस्त्ररहित शृङ्गार, सुवर्णरहित अलंकार; तांबूलरहित भोग, प्रसिद्धिरहित प्रयोग; कंकणरहित बाहुदंड, पणिछरहित कोदंड; चरणरहित बाल, राज्यरहित भूपाल; स्तंभरहित प्रासाद, दानरहित प्रसाद; मुष्टिरहित कृपाण, ठउलीरहित बाण; अणीरहित छुरी, लोकरहित नगरी। जिम पाणीरहित सरोवर, तिम रत्नमंजरीपाषइ ते न शोभइ लोकतणउ व्यतिकर। ते सभा हुई निष्प्रभा। रीझइ हुंते जेहरहइं दीजइं मोतीतणा त्राट, तीह भाट बोलतां न जोइ कोइ वाट। जीह रीझइ चीत, ते कोइ न गाइ गीत। जेहे ऊपजइं चित्र, ते न वाजइं वादित्र। जीणं धूणीइ मस्तक, ते कोइ न वांचइ पुस्तक। जीहनउं वषाणीयइ औचित्य, तिसिउं न होइ नृत्य। इसिइ दुःखि स्वयंवरमाहि पर्वततइ हुंतइ पृथ्वीकंप विछूटउ। धूजइ थंभ, धूजइ कुंभ, धूजइ रायराणा आसणपीठ, बइठे रहीइं नीठ। एकि धूजतां पडइं, कायर रडइं। इम धूजि विछूटी, पछइ सभाविचालि पृथ्वी फूटी। विवर नीपनुं। तेह ज माहि तेज प्रगट हूउं। जोतां हूतां तेह विवरमाहि दिव्यरूपधारिणी सिंहासणि बइठी स्त्री एकि दीसिवा लागी। तेह स्त्रीतणइ उत्संगि शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सहू आश्चर्यपूरित हूउ। तीणें स्त्रीइं बिहुं हाथि कुंअरि ऊपाडी बाहिरि मेल्ही, आपणपइं माहि गई, पृथ्वी वली तिसीइ जि हुई। असमाधि फेडी, राजा कूंअरि आधी तेडी।

तिवार लोकतणा मेला, वात पूछिवातणी नही वेला। हिव हर्षिइ लोक कलकलिया, विशेषतु उच्छव ऊकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र सहित आवासि पहुता। राय ऊतारे हूया। भोजन मंडपऊपरि धज लहलहिया, विवाहमहोत्सव गहगहिया। हुइं धवलगान, नीपनां पक्वान, केलवीयइं धान, स्वजनन्हइं बहुमान, वापरइं पान, जिमाडीयइं जान। कामकाजना धणी पलवटि बांधी हींडइ आकुला, मेल्हइं चाउरी चाकुला। मेल्हइं आडणी, हिव भोजनतणी मांडणी। बइठी पांति, जिमणहार परसिणहार बिहुरहइं षांति। पहिलउं परीस्या फलावली, खंडखाद्य, पक्वान्न; पछइ परीस्यां उण्हा अन्न। तां विशालस्थालि, परीसी शालिदालि, घृततणी नालि, पाषलि शाकतणी पालि। ऊपरि कूर करंबा दहीं वापरइं, ईणिपरि लोक भोजन करइं। आचमनअनंतर दीधां कपूरमिश्र बीडां, लक्ष्मीवंततणे सवे वस्तु संपजइ क्रीडां। हिव वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रन्हइं कराविउं मंगलस्नान, विवाहयोग्य पहिरियां वस्त्र प्रधान। सर्वांग शृंगार धरिउ, जाणे इंद्र अवतरिउ। गरुउ गजेंद्र आविउ, उत्तिम स्त्री वधाविउ। गजेंद्रहूंतउं ऊतरी डावइ पगि सिरावसंपुट चांपतउ माहि पहुतु। आचारविचार हूआ। चउरीमाहि च्यारि मांगलिक वर्त्यां, हाथमेलावणइं दान प्रवर्त्यां। राजा सोमदेवि वरन्हइं गजरथ तुरंगम दान

दीधउं, राजा पृथ्वीचंद्रि महोत्सवसहित रत्नमंजरीतणउं पाणिग्रहण कीधउं। पछइ विशेषवंत उत्सवसंयुक्त ऊताराभणी चालिउ, सकललोक जोइवा मिलिउ। एकि वषाणइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि वषाणइ रत्नमंजरीतणउं रूप। एकि वषाणइ भाग्य, एकि वषाणइ सौभाग्य। एकि वषाणइ शरीरतणा शृंगार, एकि वषाणइ परिवार। एकि वषाणइ ऊहतणा कुल, एकि वषाणइ बिहुंतणां शील निर्मल। एकि वषाणइ लावण्य, एकि वषाणइ पुण्य। इसीपरि वषाणीतु स्थानकि आविउ, विश्वऱ्हइं आनंद ऊपजाविउ। राजा सोमदेवि सविहुं रायऱ्हइं आवर्जन कीधी। कुणऱ्हइं घोडउ, कुणऱ्हइं हाथिउ, कुणऱ्हइं आभरण, कुणऱ्हइं पटकूल–ईणिपरि भक्ति कीधी। राय सवे आपणे आपणे नगरि पहुता। राजा पृथ्वीचंद्रऱ्हइं सोमदेवनरेश्वरतणइ आवासि नितु नवनवे गौरवि शिवमय सुखमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजा पृथ्वीचंद्र अनइ राजा सोमदेव राजसभां एकठा बइठा। किसी ते राजसभा–जीणि सभा पात्र नाचइं, विद्वांस बइठा पुस्तक वांचइं, माल मल्लविद्या मांडिवा माचइं, रागज्ञ रायऱ्हइं रंग रहाविवा राचइं, सुहाबोला शुभ बोली स्वामकिन्हे पसाउ याचइं, कूडा झागडू चिरकाल विवाद करी स्वयमेव पाचइ। इसी सभा, बिहुं नरेश्वरि करि वली वाधी प्रभा। तिसिइ अवसरि, हर्ष प्रसरि। पहुतउ वनपाल, तीणि वीनाविउ श्रीसोमदेव भूपाल स्वामिन्! आपणइ उद्यानवनि श्रीधर्मनाथ तीर्थंकरदेव पाउधारिया, जीणि परमेश्वरि त्रिभुवन आनंद वधारिया। हिव अवसरि आविउं, श्रीधर्मनाथतणउ कहिवउं, चरित्र महापवित्र। ईणि भरतक्षेत्रि प्रवरगुणि करी मनोहर, रत्नपुर नामिइं नगर। तिहां ऐश्वर्यनिर्जितसुरेश्वर, भानुनामा नरेश्वर। तेहतणइ पट्टराणी, सुव्रता इसिइं नामिइं जाणी। अन्यदा प्रस्तावि तीणि राज्ञी आपणइ आवासि, मनतणइ उल्हासि। पल्यंकि पउढी हुंती बिपहुर रात्रिसमइं निद्राभरि वर्त्तमान हूंतीइं चऊद महास्वप्न दीठां। किस्यां ते महास्वप्न–गज १, वृषभ २, सिंह ३, लक्ष्मी ४, पुष्पमाला ५, चंद्र ६, सूर्य ७, ध्वज ८, पूर्णकलस ९, सरोवर १०, समुद्र ११, विमान १२, रत्नराशि १३, निर्धूम वैश्वानर १४। ईह चतुर्दश महास्वप्नतणउं सांभलउं जूजूउं वर्णन व्यतिकर। राणी प्रथम दीठउ गजद्र। किसिउ गजेंद्र–चतुर्दंत, विनयवंत, सप्तांगप्रतिष्ठित, गजेंद्रगुणि अधिष्ठित; विशालकुंभस्थल, विलोलकर्णांचल; उद्दंडशुंडादंड, तेजि करी प्रचंड; मदजलवासित कपोलमूल, भ्र रकुल अनुकूल; परित्यक्तसकलदोष, उत्पादितसकलजननयनसंतोष, प्रधान, ऐरावणगजसमान; महाकाय, पर्वतप्राय; भद्रजातीय, अद्वितीय; जेहतणी गति प्रशस्ती, एवंविध दीठउ हस्ती। १। तउ दीठउ वृषभ। किसिउ ते वृषभ–निर्जलधाराधरधवल, विकसित काशकुसुमसमुज्ज्वल, विशालककुद, चंदकिरणतणीपरि विशद; सूक्ष्मसुकुमालरोमराजिविराजमान, स्निग्धकांतिदेदीप्यमान; अभंगश्यामलशृंग, सुंदर समस्त अंगोपांग; विशुद्धदंत, पंक्तिशोभित; प्रमुखप्रदेश, चारुचरण-

संनिवेश; प्रसन्न वदन, दुग्धधौतधवललोचन; जिसिउ चालतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतस्युं लिइ वाद; इसिउ अत्यंत शुभ, दीठउ वृषभ । २ । तउ राणीयइ दीठउ सीहु । किसिउ ते सीह–रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुत प्रभाडंबर; रक्तोत्पलसुकुमालताल, तालूइ लागी आरक्त जिह्वा जिसिउं हुइ अशोकप्रवाल; विस्तीर्णकेशरसटाशोभितस्कंध, वज्रसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदाढाविडंबितवदन, पराक्रमतणउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीतलोचनि भूमिकांति निहालतउ; मूषागतसुवर्णसमान फिरतां पिंजरनेत्र, शौर्यवृत्तितणउं क्षेत्र; अकल अगंजित, सबल अपराजित; अबीह, एवंविध दीठउ सीह । ३ । तु दीठी देवी लक्ष्मी । ते किसी–हिमवंतपर्वततणइ शिषरि, महाप्रखरि; पद्मद्रहमाहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमान वदन, कमलसमान लोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारप्रलंबितहार, अद्भुतश्रृंगार; दिग्गजेंद्रे अमृतकलसि करी अभिषिच्यमान, पगतलि चांपी रही नवनिधान; एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी । ४ । तदनंतर अशोक चंपक नाग पुन्नाग प्रियंग पाडल सेवत्री जाइ जूही वेउल बउल श्रीदमणा मरूआ मंदार मचकुंद केतकीप्रमुख वनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न भ्रमरभरभुज्यमानपरिमल एवं विध दीठउ मालायुग्म । ५ । तउ दीठउ चंद्रमा । ते किसीउ चंद्रमा–रात्रितणइ समयि उदयि करी, सकल ताप हरी; रोहणीरमण, यामिनीजीवितेश्वर, अमृतमयमूर्त्ति, उज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवंविध चंद्रमंडल । ६ । तउ दीठउ श्रीसूर्य । किसिउ ते सूर्य–प्रभाततणइ समइ जेह श्रीसूर्यतणइ उदइ प्रासादतणां द्वार ऊघडइं, देवन्हइं पूजा चडइं; पंथ सवे वहइं, मुनीश्वर धर्मकथा कहइं; लोक वाटविशेष लहइं, मेघ मल्हार गाइइं; मांहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी कोमल विहसइं, चक्रवाक उल्हसइं; एवंविध प्रखरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर । ७ । तउ दीठउ ध्वज । किसिउ ते ध्वज–कृताह्लाद, कोई एक गरूउ प्रासाद; प्रखरि, तेहतणइ शिषरि; अखंड, सुवर्णमयदंड; तेजि करी अंकुश, कनकमय कलश; भली, रत्नमय पाटली; तिहां जिसी स्वर्गतउ ऊदाली, इसी फाली; निरूपम स्वरूप, तिहां सीहतणउं रूप; इसिउ घंटागाणि गहगहतउ, वाइ लहलहतु, निर्मल नीरज, राणीइं दीठउ ध्वज । ८ । तउ दीठउ पूर्णकलस । किसिउ ते पूर्णकलस–सुवर्णघटित, रत्नमय पडघीयां स्थापित, कंठि पुष्पमाला व्यापित; माहि अमृतपूरित, घटजुगलीविराजमान, आम्रफलप्रधान; मांगलिक लक्ष्मीप्रदानतणइ विषइ अनलस, दीठउ पूर्णकलस । ९ । तउ दीठउं सरोवर, वृक्षतणउ परिकर; पालिनउ विस्तर, देहरीनउ समहर, पाणीनउ आकर, चउकी चउषंडी झलहलइं, षरइ वाइ लहरि ऊच्छलइं; ऊपर जाण भरीयइं, षड कूइ तरीयइ; अमृतोपम नीर, दीठइं ठरइ शरीर; सारस कुरल कपिंजल कलहंस कलगलइं, तापतणा व्याप टलइं; राजहंस रमइं, भ्रमर भमइं; चकोर चक्रवका

कूजइं, जलकेलिनां कोड पूजइं; मोर वासइं, सर्प नासइं; आडि पंखीया तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; आस्तिक लोक नित्य सारइं, कश्मल निवारइं, संध्याविधि साधइं, अघमर्षणमंत्र आराधइं; धोतीयां धोयइं, कमंडल ढोयइं; सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवतातणउ निवास; देहरी दंडकलस आमलसारा झलकइं, जलहारिणीकुलवधूतणां नूपुर घलकइं; तडि कीर्त्तिस्तंभ दीसइ, हीयउं विहसइ; बग थलइ जाइइ, मेघ मल्हार गाइइ; माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामइं, देवता जिहां क्रीडा कामइं; एवंविध उदार, वृत्ताकार; अत्यंतसार; महामनोहर; दीठउ पद्मवनखंडमंडित सरोवर । १० । तउ दीठउ समुद्र । किसिउ ते समुद्र—अनंतजलु अनंतकल्लोलकोटीसंकुल; माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र चक्र पाठीन पीठ तिमिंगिलितणां कुल पडइ, एकि ऊपडइ; लहरि वाजइं, पाणी गाजइं; दक्षिणावर्त्तशंखतणां यूथ फिरइं,माहि अनेक प्रवहण सांचरइं। एक पूरी[य]इं एकि नांगरीयइं,वाहण वाहणरहइं एकि मिलितां आफलइं; मोतीप्रवाला आगरथकां लीजइ, किहां एकइ मेघिइं पाणी पीजइं; इसिउ आश्चर्यतणउ निलय, पृथ्वीपीठन्हइ वलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर; समुद्र, राणीयइ दीठउ समुद्र । ११ । तउ दीठउं विमान । किसिउं विमान—सुवर्णमयभित्ति, रत्नमयविच्छित्ति; प्रशस्यकलशि करी शोभमान, गगनलक्ष्मीन्हइं कुंडलसमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमलि करइं, एकि श्रुति धरइं; एकि गीत गायइं, एकि वादित्र वाइं; हीयइ हर्ष न माइं; अनेककुसुमतणा प्रकर, चंद्रूआतणा निकर, मोतीतणी सरि लहकइं, कपूरकस्तूरीतणा परिमल बहकइं; ध्वजा लहलहइं, मन गहगहइं, एवंविध विबुधवधूजनक्रीडास्थान, तेजःपटलि निर्जितभानुप्रधान, दीठउं विमान।१२। तउ दीठउ रत्नराशि। किसिउ ते रत्नराशि—अनेक वज्र वैडूर्य चंद्रकांत जलकांत पुष्पराग पद्मराग मरकत कर्केतन चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अपराजित गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ लोहिताक्ष प्रमुखरत्नतणउ राशि, विरचितविश्वप्रकाश, देषइ राणी मनतणइ उल्लासि । १३ । तउ दीठउ निर्धूम वैश्वानर । किसिउ ते वैश्वानर—कांतिभरकमनीय, प्रदक्षिणावर्त्तज्वाला करी रमणीय; मधुघृतघनपरिषिच्यमान, कूर्चरहितदेवतामुखसमान; धूमरहित, तेजसहित; मांगलिक्यमूल, विश्वानुकूल; प्रवर, एवंविध दीठउ वैश्वानर । १४ ।

ए चतुर्दश स्वप्न देषी राणी जागी, निद्रा भागी, मनि विमासिवा लागी । मइं तां ए चऊद सुमिणां दीठां, इहतणां फल हुसिइ अत्यंतमीठां। तउ स्वामीकन्हइ जाइसु, निःसंदेह थाइसु । इसिउं विमासी, कइ न बोलावी दासी; सखी महिली सवि पाली, राणी स्वयमेव चाली । हंसगति हरषिइं गहगहती, जिहां राजा तिहां पहुती, जयविजय करती । रायन्हइं निद्रा टाली राजा तणइ आदेसि भद्रासनि बइठीं । स्वप्नवार्त्ता सांभली राजा फलु कहिउं; राज्ञी हृदयि ग्रहिउं । तिवार पूठिइं आपणइ स्वस्थानकि आवी, पल्यंक बइसी सखीसहित धर्मजाग

रिका नींपजावी । प्रभाति नरेश्वरि सभामाहि स्वप्नपाठकपाहिइं विचार कहाविउ, दान देउं निमित्तीवर्ग अदरिद्र नींपजाविउ । संपूर्ण दिवस अतिक्रमे हुंते परमेश्वरतणउ हूउ अवतार, देवता करइं जयजयकार।

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे चतुर्थोल्लासः।

पञ्चमोल्लासः

तत्काल मनतणी रली, छप्पन्न दिक्कुमारिका मिली । ते कवण कवण—भोगंकरा १, भोगवती २, सुभोगा ३, भोगमालिनी ४, तोयधारा ५, विचित्रा ६, पुष्पमाला ७, आनंदिता ८, मेघंकरा ९, मेघवती १० सुमेघा ११, मेघमालिनी १२, सुवत्सा १३, वत्समित्रा १४, वारिषेणा १५ बलाहका १६, नंदोत्तरा, १७, नंदा १८, आनंदा १९, नंदवर्द्धिनी २०, विजया २१, वैजयन्ती २२, जयंती २३, अपराजिता २४, समाहारा २५, सुप्रदत्ता २६, सुप्रबुद्धा २७, यशोधरा २८, लक्ष्मीवती २९, शेषवती ३०, चित्रगुप्ता ३१, वसुंधरा ३२, इलादेवी ३३, सुरादेवी ३४, पृथ्वी ३५, पद्मावती ३६, एकनाशा ३७, नवमिका ३८, भद्रा ३९, सीता ४०, अलंबुसा ४१, मितकेशा ४२, पुंडरीका ४३, वारुणी ४४, हासा सर्वप्रभा ४६, श्री ४७, ह्री ४८, सुतारा ४९, चित्रकनका ५०, चित्रा ५१, सौत्रामणी ५२, रूपा ५३, रूपांसिका ५४, सुरूपा ५५, रूपवती ५६, एवं अधोलोकनिवासिनी ८, ऊर्ध्वलोकनिवासिनी ८, रुचकपर्वतचतुर्दिशिनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, विदिसिनिवासिनी ४, मध्यरुचकनिवासिनी ४, ईणिपरि छप्पन्नदिक्कुमारिका आवी। तेहे सूतिकर्मतणी समग्रीति नींपजावी। तदनंतर सौधर्मादिकदेवलोकइंद्रहइं आसनप्रकंप नीपनउ। पहिलउं इंद्रन्हइं कोप ऊपनउ। वज्र ऊलालिउं, ज्ञानदृष्टि निहालिउं। जाणिउं परमेश्वरतणउ अवतार, ऊलटिउ भक्तिभार। इंद्र मनि गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडे थई मस्तकि हाथ जोडी शक्रस्तव कहिउ। इंद्रि आसणि बइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, तत्काल आविउ। इंद्रतणइ आदेसि सुघोषा घंटा आस्फालीनइ देवलोकि जणाविउं। इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालंकि विमाने चडी पंचरूपि परमेश्वर लेउं मेरुपर्वति आविउ। चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हर्षि कलकलिया। आठ सहस्र चउसाठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीधउं। तदनंतर

अंगरूक्षण १ करी; विलेपन २, वस्त्रयुगल ३, वासपूजा, पुष्पारोहण ५, माल्यारोहण ६, वर्णारोहण ७, चूर्णारोहण ८, ध्वजारोहण ९, आभरणारोहण १०, पुष्पग्रह ११, पुष्पप्रकर १२, अष्टमंगलकरण १३, धूपोत्क्षेप १४, गीत १५, नृत्य १६, वादित्र १७, सत्तरभेदपूजा-तणउं करणीय सीधुं।

तीणि अवसरि गगन गाजियां, इगुणपंचासभेदि वाजित्र वाजियां। कवण कवण परिइं- "उद्धमंताणं शंखाणं संगीयाणं खरमुहीयाणं परिपरियाणं अहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जंताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं मुरवाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगाणं घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पंताणं दुंदुक्कीणं चिंषाणं वाइज्जंताणं करडाणं डिडिंमकाणं उत्तालिज्जंताणं तलाणं तोलाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिंकिसिकाणं सुंसरिकाणं दुंदुक्कीणं फूमिज्जंताणं वंसाणं वेणूणं एवमाईणं एगूणवन्नाए पवाइज्जंताणं।" ईणि युक्तिइं, भावभक्तिइं, आत्मशक्तिइं, परमेश्वरन्हइं स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरूपिइं इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं। बत्रीस बत्रीस स्थाल सिंहासनादिक बत्रीसकोडि सुवर्णरत्नतणी वृष्टि करी, स्वामतिणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी अमृत संचारी, वस्त्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेल्ही इंद्र स्वस्थानकि पहुतु।

हिव प्रभाति दासीमहिलीए राउ वधाविउ—स्वामी! तम्हारे पुत्र आविउ। राजा वधामणी दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवतणी पद्धति कीधी। अलंकरिउ प्राकार, शृंगारिया प्रतोलीद्वार। मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीतणी शोभा लई। ध्वजपताका लहकइं, पुष्पपरिमल बहकइं। नाचइं पात्र, राजाभवनि आवइं अक्षतपात्र। सोमाई भणतां आवइं छात्र, लोक अलंकरइं आभरणि गात्र, उत्सव करिवा एहइ ज वात। तीणि वेलां नऊइं कोरण, बांधीयइं तोरण। बांधीयइं वंदरवाल, उत्सव विशाल। गुलघीउ लाहीयइं, मन ऊमाहीयइ। ईणि युक्ति जन्ममहोत्सव हूआ। नामगरणतणइ अवसरि मातान्हइं डोहलइ धर्म बुद्धि हुई, एहभणी धर्म इसिउं नाम दीधउं, परमेश्वरि रमलि करतां बालपणुं लीधउं, यौवनवयि राजकन्यातणउं पाणिग्रहण कीधउं। अढई लाष वरस कुमारपणउं पाली, पंचासवरस (?) राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ विरक्तियुक्त हूउ स्वामी। नवविध लोकांतिकदेवतणी वीमतीलगइ सांवत्सरिक दान दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं। बि वरस छद्मस्थ काल अतिक्रमी, केवललक्ष्मी पामी। विहारक्रम करइं, भव्यलोक तारइं।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरहइं साढाबारलाख सुवर्णदान देई, समस्तपरिवारसाथिइं लेई। परमेश्वर नमस्करिवा सांचरिया, सकललोक ऊलटि भरिया। पृथ्वीरहइं अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण। किसिउं ते—समग्र देव आवइं, समोसरण

नीपजावइं । तां पहिलुं वायुकुमारदेवतानिर्मित संवर्त्तक वायु विस्तरइं, ते तृण काष्ठ कचवर दूरइं, आकासि मेघपटल पसरइं, गंधोदकि वृष्टि करइं, फूलपगर भरइं, गरूअउं रत्नमय पीठ बांधी ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम वरसइं, चिहुं दिसि दिव्य परिमल विलसइं । रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिन्नि प्रकार, रूपि करी उदार, अनेक प्रकार । मणिरत्नसुवर्णमय कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीद्वार । तिहां बिहु पासे उच्चैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ । इंद्रधनुषमानमूरण, रत्नमय तोरण । प्रत्यक्ष जिसी मांगलिक्यनी पालि, इसी वंदरवालि । अनेकि विचित्र, विशाल छत्र । उदारस्वरूप, कनकमय पूतलीतणां रूप । जेहे लिषित सिंह शार्दूल गज, इस्यां निर्मल नीरज पंचवर्ण ध्वज । इस्या समोसरणविचालि, मणिबद्धपीठि विशालि । सकलमांगलिक्यमुख्य, गरूउ अशोकवृक्ष । जिसिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष, इसिउ बारगुण चैत्यवृक्ष । तेहतणी छायां रत्नमय सिंहासण, जगन्नाथन्हइं बइसण । तेजिइं जोई सकीयइ नीठ, इसिउं रत्नमय पादपीठ । जिस्या विकसित सहस्रपत्र, तिस्यां पनर छत्रातिछत्र । अमर, देवन्हइं ढालइं चमर । अधरीकृतआदित्यमंडल, तीर्थंकरलक्ष्मीकर्णकुंडल, पूठइं झलकइं भामंडल । जेहतणइ दर्शनि मिथ्यात्वपटल टलइं, इसिउ आगलि धर्मचक्र झलहलइं । दिव्य दुंदुभि वाजइ, तीणि निर्घोष गगनांगणि गाजइं, परतीर्थिकतणउ भडवाउ भाजइ । सहस्रप्रमाणयोजन इंद्रधज लहलहइं, धूपतणा परिमल महमहइं, वादित्रतणी कोडि द्रुहद्रुहइं । मनुष्यतणी कोडि आवइं, मनि रहरहइं । ईणि इसिइ समोसरणि परमेश्वर जगदीश्वर नवसुवर्णकमलि पाय स्थापतउ, पूछिया ऊत्तर आपतु, प्रभाइं दसइ दिसि व्यापतउ, भविकलोकन्हइं पाप मूंकावतउ; पूर्वदिसितणइ द्वारि पइसइ, पूर्वाभिमुख सिंहासनि बइसइ । चतुर्मुख होई, भविकसंमुख जोई । संपूरी,बार परिषद पूरी, मिथ्यात्वमान मूरी, पापपटल चूरी । सर्वसत्त्वसाधारिणी, अमृतानुकारिणी, मधुरवाणी, लाभ जाणी; वखाण करइ, धर्ममार्ग विस्तरइ ।

हिव बेउ नरेश्वर मनि गहगहता, समोसरणिमाहि पहुता । श्रीधर्मनाथन्हइं प्रदक्षिणा देउ, आगलि बइठा नरेश्वर बेउ । तिवारे राजा पृथ्वीचंद्रि आपणइं विशेषवंतइं रूपि लावण्ये करी देवदानवइंद्रन्हइं आश्चर्य कीधुं, श्रीधर्मनाथि तीर्थंकारि उपदेश दीधउ । किस्यु ते—

सद्वंशजन्म गृहिणी स्पृहणीयशीला लीलायितं वपुषि पौरुषभूषणा श्रीः ।
पुत्राः पवित्रचरिताः सुहृदोऽपदोषाः स्युर्धर्मतः खलु फलानि पचेलिमानि ॥१॥

अहो भव्य जीव ! ए इस्यां धर्मनां फल जाणिवां । कवण कवण—पहिलुं तां उत्तिमकुलि अवतार, ए धर्मतणां फल सार । जइ जीव नीचकुलि अवतरइ, तु किसिउं पुण्य करइ । एह विश्वमाहि एक माछीतणां कुल, भीलतणां कुल, कोलीतणां कुल । ईणिपरि थोहरी आहेडी वागुरी घाटकी मद्यप घांची चोर वेश्या बाबरी मेय डुंब पाणपेरणीयांतणां पापतणां

कुल जाणिवां। जीव एहे कुले अवतरी पाप करी नरकि जाइ,लाधु मनुष्यजन्म निरर्थक थाइ । पुणि जीवन्हइं उत्तिम कुल दुर्लभ । कुण तेउ उत्तम कुल—

वंसाणं जिणवंसो सव्वकुलाणं च सावयकुलाइं ।
सिद्धिगई य गईणं मुत्तिसुहं सव्वसुक्खाणं ॥२॥

वंश ते प्रशंसि जेहे जिणतणउ अवतार। वंशतणउ कवण विचार—इक्ष्याकुवंश,सूर्यवंश, चंदिल्ल, चाहूआण, सोलंकीवंश, वालावंश, वाघेला, वाघरोलावंश, गुलवंश, गुलबरवंश, सोभटा, भाटीया, सीदा, वांदा, दाहिणमा, कच्छवाह, कणवाहा, हूणवंश, हरीयड, शकट, सिलार, धान्यपालवंश, अनंगपाल, राजपाल, दधिपाल, कलाप, परमार, मोरीवंश, यादव, सैंधव, निकुंभ, गुहिलउत्त, डोडीवंश, डोडीयाणवंश, मंकूआणा, खइरवंश, सीलणवंश, बोडाणवंश, दहीयावंश, प्रमुख वंश जाणिवा । अनइ ब्राह्मणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष जाणिवा । जिम कालिकाल प्रवर्त्तमानि चउरासी ज्ञाति बोलीयइं । किसी ते ज्ञाति—श्रीश्रीमाली, उसवाल, वाघेरवाल, डींडू, पुष्करवाल, डीसावाल, मेडतवाल, भाभू, सूराणा, छत्रवाल, दोहिल, सोनी, षडवड, षंडेरवाल, पोरूआड, गूजर, मोढ, नागर, जाल्हरा, षडाइता, कपोल, जांबू, वायडा, वाव, दसउरा, करहीया, नागद्रहा, मेवाडा, भटेउरा, कथरा, नरसिंहउरा, हारल, पंचमवंश, सिरषंडला, कमोह, रोतकी, अगरवाल, जिणाणी, बांभ, घांघ, पाल्हाउत, उचित, बगडू, अहिछत्रवाल, श्रीगउड, वाल्मीकि, टाकी, तेलटा, तिसउरा, अठवग्री, लाडीसाखा, बधनउरा, सुहडवाल, वीघू, पद्मावती, नीमा, जेहराणा, माथुर, धाकड, पल्लीवाल, हरसउरा, चित्रउडा, गोला, गहिबरिया, लोहाणा, भाटीया, नागउरा, आणंदउरा, सतला, कडकोलापुरी, रायकवाल, पेसीया, पेरूया, गोमित्री, नारायणा, टींटू, गजउडा, गोषरूआ, अजयमेरा, कंडोलीया, कायत्थ, सगउडा, सीहउरा, जेसवाल, नादेवा, जाइलवाल, चावेल, ए सविहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वषाणीइ सुश्रावक कुल। जीणि सुश्रावकतणइ कुलि जीववधु टालीयइ, जीवदया पालीयइ। मिथ्यात्व परिहरीयइ, सम्यक्त्व अंगीकरीयइ । पांणी भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ । अथाणूं न राषीइ, अणंतकाई न चाषीइ । चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ, सुतीर्थि वित्त वावी लाभ लीजइ । आलोअण लेई पाप धोईइ, परिग्रहप्रमाणि पुण्यवंत होईइ । उभयकाल सामायक त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यभंडार भरीइ । बावीस अभक्ष, बत्रीस अणंत काय टालीयइं, आठमि चऊदसि पूनिम अमावास चउमासी पजूसण पर्व पालीयइं, पुण्यमार्ग उजूआलीयइ । इसुं श्रावकतणउं कुल, तउ पामीयइ जइ पोतइ पुण्य हुइ विपुल । उत्तिमकुलि लाधइ हूंतइ गृहस्थरहइं जय हुइ कुकलत्रतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग । किसी ते कुकलत्र— जे चालती कउयछि, साची अलछि । आत्मकुटुंबभंजकि, परचित्तरंजकि । कपटविषयि पहिष्ठ,

अतिहिं अनिष्ट । बोलती खउड ऊतारइ, रीसइं छोरू मारइ । जीभइं जव छोलइ, अलविइं असंबद्ध बोलइं । बगाई करती गोदडु गिलइ, घरि वित्रोड करी बाहिरि मिलइ, बोलावी बिसइं हाथ ऊछलइ । फूफूती सापिणी, चालती चीत्रिणी । पुण्यद्वारतणी आगल, नगरतणी भागल । घणूं किसिउं कहीयइ–जिसी मिरीतणी ऊगटि, जिसिउं चालतउं पलेवणउं, जिसी दाघज्वरतणी बहिनि, इसी संतापकारि तुं संपजइ नारी, जउ जीव पापकर्मि भारी । अनइ तु हुइ सुकलत्र, जइ पोतइ हुइ पुण्यपवित्र । किसी ते–सुशील सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विवेकवंती पुत्रवंती बोलवंती सुजाणि, मधुरवाणि । देवगुरुतणइ विषइ भक्त, पुण्यतणइ विषइ आसक्त । सहजि सलावण्य, इसी सुकलत्र तु संपजइ जइ पोतइ पुण्य । अनइ जं शरीरि संपजइं लीलावंतपणूं, तं पुण्यतणउं प्रमाण । जं मधुरगति चालइ, पापबुद्धि पालइ । सहजि विचक्षण, शरीरि बत्रीसलक्षण, अलिकुलकज्जलश्यामल केशपाश, अष्टमीचंद्रसमान भालस्थल, कामदेवकोदंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान वदनमंडल, आदर्शतलसमान कपोलयुग, मौक्तिकश्रेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल, प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अखंड, तु संपजइ जइ पोतइ प्रचुरपुण्यपिंड । अनइ जे द्रव्य ऊपार्जिवातणइ कारणि एकि लोक देव-देवता आराधइं, मंत्रविद्या सधरपणइं साधइं । राजसभा बुद्धिवंत भणी बइसइं, रणक्षेत्रि पहिलां पइसइ । व्यापारकला केलवइं,धूर्त्तपणइं भलारहइं भोलवइं । जलमार्ग स्थलमार्ग आदरि आक्रमइं,भूमंडलि भूजाबलि भमइं । जोगीपूठिइं लोभिं लुबधा लागइं । एकि मोटा ठाकुर मागइं । एकि पाला पुलता पंथि चालइं। एकि हा दैव! भणी वइरागरि घाउ घालइं । एकि हल षेडइं,उलग करइं लागा ठाकुरकेडइं । रसकारणि रसकूपिका पडइं, एकि कलकलतइं समुद्रि चडइं । एकि त्रिन्निसइं साठि क्रियाण वहुरइं, पिरायां कवित्व वहरइं । कष्ट सहइं विपुल, पुणि लक्ष्मी तु पामइं जइ पोतइ हुइ पुण्य परिघल । घरि सुवर्ण मणिरत्न प्रवाल, प्रधान मुक्ताफल, गजरथतुरंगमादिक जाणिवा लक्ष्मीतणा विलास सकल ।

हिव जं संपजइ सत्पुत्र, एहू पुण्यतणउं चरित्र । एकइं तणइ एकि कुपुत्र हुइं जे बालपणि पालीइं लालीइं पणि जेतलइ यौवनभरि जाइं, तेतलइं मावीत्रसाम्हां थाइं । कृत्य अकृत्य न गिणइं, वडातणां वचन निहणइं । मावीत्रसाम्हां नीठुर बोल भणइं, अहंकारि हणहणइं । लक्ष्मीमदि कुपात्रि वरसइं, कुस्थानकि विलसइं,पिराई भूमि प्रसइं, चाडूए वचनि उल्लसइं, रूडी वात कहतां साम्हां धसइं, स्वाननी परि भसइं, अपरम्हइं हसइं, पापकरी ऊससइं; धर्मवार्ता हियइ न वसइं । इस्यां जं पुत्र अभक्त अजाण, ए पापतणूं प्रमाण । अनइ जं पुत्र विवेकीया विचारवंत, सहजिइं संत सौभाग्यवंत,गुरुआंप्रति भक्तिवंत गुणवंत,देवगुरुधर्मतणइं विषइ तत्पर, सुपुत्र पामियइ जइ, पोतइ पुण्यतणउ भर ।

हिव तु पामीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम । एक जीव सहजइं दुर्जनप्रकृति, पापतणइ विषइ मोटी आकृति । मुहि मींठउ, चित्ति विणठउ । पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोई । उपगारि केतलइं न लीजइं, परप्रशंसा मनमाहि षीजइं । आपणपउं घणुं देषइ, अवर नहीं किसिइं लेखइ । सजन संकटि पाडइ, परदोष ऊघाडइ । राउलइ वानइ, देवगुरु अपमानइ । मूर्त्तिवंत अधर्म, बोलइ पिराया मर्म । जिसिउं विषवृक्षनउं वन, इसिउ जाणिवउ दुर्जन । एकि जीव, सहजिइं उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव । उपगार करइं, परमर्म हीयडइं धरइं । परदोष न प्रकासइं, असत्य न बोलइं हासइं । उन्मार्गि न चालइं, पापवार्त्ता टालइं, गुरूपदेश झालइं, धर्मतउ न हालइं । नवे क्षेत्रे वेवइं धन, जिसिउं बावनुं चंदन, इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहीयइ सज्जन । संपजइ सुमित्र सज्जन सुजाण, तं पुण्यतणउं प्रमाण । इस्यां धर्मफल देषी, प्रमाद ऊवेषी; आलस परिहरी, आदर करी; पूण्यतणइ विषइ भावनासहित लाभ लेवउ । जेह कारणि इसिउं कहीइ-जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय शोभइं हारि; जिम गृह शोभइं उत्तिम नारि; जिम मस्तक शोभइ केशप्राग्भारि, जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शीलश्रृंगारि, सरोवरि शोभइ कमलि, पूष्प शोभइ परिमलि, मुष शोभइ निर्मलि नेत्रयुगलि, रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ कूरि, उत्सव शोभइ तूरि, नदी शोभइ पूरि; जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रभावना, तिम धर्म शोभइ भावना । एह कारणि भावनासहित पूण्यवंति लाभ लेवउ । जिसिइं पुण्यप्रभावि सकलश्रेयकल्याण संपजइं ।

इसिउ उपदेश सांभली, मनतणी रुली, परमेश्वरप्रतिइं बिहुं नरेश्वरि वीनती कीधी वली । हे जगन्नाथ ! संदेह भांजिवानइं ऊभउ हाथ; तुझ टाली अपरि संदेह न भाजइं, संदेह भंजन बिरुद तूंरहइं छाजइं । जेहि कारणि इसिउं कहीइं—समुद्रि उलंघीयइ भारंडि, न मसइ; गजेंद्र विडारीयइ सीहि, न ससइं । विषधरतणां विष जीरवियइं गुरुडि, न कुकडइं; वृक्षसिहर तणां फूल लीजइं तडवडइं, न ढूंकडइं । संग्रामभूमिइं भिडीयइ राउति, न दयामणइ; भंडारीतणा भार झालियइ अभीष्टि, न अलषामणइं । पर्वततणां टोल ताणीयइं नदीतणइ पूरि, न वाहलइं; रायतणइ मनि रंगि रहावीयइं मधुरस्वारि,न पाहलइं । समुद्रि सेतुबंध बांधीइ पर्वते, न काकरइं; दढगढतणी पोलि भांजियइ गजेंद्रि, न बाकरइं । याचकजननां दरिद्र टालीयइं दातारि लक्ष्मीवंति, न आजन्मदुस्थि; सकलसंदेह भांजीइ केवलीए, न छद्मस्थि । तेह कारणि तउं हे स्वामिन् ! अम्हारा संदेह टालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि;एक ऊपनउ अटवीठामि; एक संग्रामि; एक स्वयंवरि; ए सवे संदेह अपहारि । इसी वीनती सांभली जगन्नाथ कहइ छइ—अहो नरेश्वर ! सांभलउ; हिव कहीइ छइ पूर्वभव, जिसिउ हूउ अनुभव । ईणइ क्षेत्रि

भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी प्रवर । प्रौढ धवलगृह, लोक पुण्यविषइ सस्पृह । जीणि नगरि महाधर मंडलीक सेल्हत्थ वरवीर राउत डबइत भाथाइत ऊडणाइत फलहकार छुरीकार नलीकार कुंभकार सींगडीया साबलीया जेठी यंत्रवाहा भंडारी कोठारी प्रभृति राजलोक वसइं, सर्वज्ञभवन देषी मन उल्लसइं । जिहां पद्मश्रीनामि सरोवर, महामनोहर, जिहां राज्य पालइं द्रोणनामा नरेश्वर । तेहतणइ सागर अनइ पूरण इसिइ नामि पवित्रचरित्र, बि पुत्र । ते बेउ नर्मदानदीमाहि बेडी चडी मत्स्य विणासिवा प्रवर्त्तिया । तिसिइ अवसरि मत्स्य एक साम्हउ जोई तीह प्रतिइं बोल्उि—रे दुराचारउ ! म करउ पाप, नरकि इस्यां हुसिइ संताप, नहीं छूटउ करताइ विलाप, जइ न मानउ तउ पूछउ आपणउ बाप । ए वात सांभली बेउ कुमर भयभ्रांत हूआ । तिसिइ नदीनइ कंठि एक दीठउ मुनीश्वर । तेहे बेडीतउ ऊतरी नमस्करिउ । वच्छउ ! तुम्हे म्हारा पौत्र, हूं पालऊं चारित्र, तुम्हे करउ अक्षत्र । तीणइं सोनइं किसिउं कीजइं जीणइं त्रूटइं कान । तीणइं उपाध्यायि किसिउं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान । तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं जीणइं पामीइ पगि पगि अपमान । तीणइं धर्मि किसिउं कीजइ जीणइं वाधइ मिथ्यात्ववाद । तीणइं वयरइं किसिउं कीजइं जीणि पाछइ ऊपजइ विषवाद । तीणि मित्रि किसिउं कीजइं जीणइं थाइं प्रमाद । तीणिइं घरि किसिउं कीजइं जेहमाहि फूफूइ साप । तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहतु नितु संताप । तीणइं रामतिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप । वत्स मुझ भक्त व्यंतरि, मत्स्यमुखि अवतरी; तुम्हे जगाडिया, पुण्यमार्गि लगाडिया । हिव पाप परिहरउ, पुण्य करउ । तीणइं ऋषीश्वरि पुण्यतणी परठ कही, तेहे बिहुं ग्रही । आव्या आपणइ घरि, करइं पुण्य नवनवीपरि । दिइं दान, धरइं अरिहंततणउं ध्यान । करइ सुगुरुभक्ति, जाणइं विवेकयुक्ति । करावइं प्रासाद, पडावइं सत्रूकारि साद । पालइ सम्यक्त्व, जाणइ नव तत्त्व । करइं सामायक सार, स्मरइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, बे कुमार इसीपरि भरइं पुण्यभंडार ।

अन्यदा प्रस्तावि द्रोणि राजां तीह बिहुंन्हइं राज्य दीधउं, आपणपइं राज्ञीसहित चारित्र लीधउं । निर्मल चारित्र पाली, भावविशेषि पातालि, बलीन्द्र अवतरिउ, राणीइं इंद्राणि थइनइं तेहू जि अणसरिउ । हिव पूरणतणइ पद्मश्री इसिइ नामि हुइ कलत्र, जे महासच्चरित्र । ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी पहुता देवलोकि, सौख्य भोगवी अवतरिया मनुष्यलोकि । सगरतणउ जीव हूउ तूं सोमदेव नरेन्द्र, पूरणनउ जीव हूउ पृथ्वीचंद्र । पद्मश्री ईहां रत्नमंजरी अवतरी । पूर्वतणउ धर्म फलिउ सर्वसंयोग मिलिउ ।

बिहुं नरेश्वरि इणिपरि उपदेश सांभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थंकरि वली कहिउं—हिव सांभलउ जे पूछिया संदेह, तेहनु कीजइ छेह ! जिसिइ समइ रत्नमंजरी सरोवरतणी पालिइं पितातणइ उत्संगि बइठी, कुणरहइं देवातणी चिंता पइठी । तिसिइ अवसरि, बलींद्रदानवेश्वरि;

ज्ञानि प्रमाणि पूर्व जाणी; पुत्रपृथ्वीचंद्रनिमित्त राषिवा रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणइ कन्हइ आणी । छमास पातालि स्थापी, पछइ अवसरि पाछी आपी । राजा पृथ्वीचंद्रन्हइं स्वप्न दीधउं, अटवी अनइ संग्रामांगणि महासान्निध्य कीधउं । अनइ स्वयंवरि जेतलइ धूमकेतु राजां वेतालांधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रथि घाती, तेतलइं बलींद्रतणी इंद्राणी ते मेल्हिउ निपाती । छ प्रहर पातालि राषी, प्रभाति प्रकट करी दाषी । उहे दिषाडिउ पूर्वभवस्नेह, एतलइं टलियां सवे संदेह । अहो पृथ्वीचंद्र ! ताहरुं विशेषवंत छइ भाग्य, अद्भुत सौभाग्य । जेह कारणि गृहस्थवेषि हाथियइं चडतां ईणइ जि भवि ऊपजिसिइ केवलज्ञान, एह भणी ए भाग्य प्रधान । सोमदेवन्हइं त्रीजइ भवि मुक्ति, इसी छइ युक्ति । ए वार्त्ता मनि धरी, श्रावकयोग्य धर्म आदरी, परमेश्वर नमस्करी; बे नरेश्वर सपरिवारि स्वस्थानकि आव्या, परमेश्वरि विहारक्रम नीपजाव्या ।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र सुसरउ राउ मोकलावी रत्नमंजरीसहित आपणइ पुहिठाणपुरि पाटणि आव्या, प्रधानि प्रवेश महोत्सव कराव्या । सकल पाटण लोक हाट काज काम परिहरी आभरण त्रूटते, वेणीदंड छूटते; पटउले फाटते, घाटडे विणसते; धसमसाटि जोइवा धाइउ, राजा महोत्सवसहित आपणइ आवासि आइउ । रत्नमंजरी पट्टराणी स्थापी, कीर्त्तिइं जगत्त्रयी व्यापी । राज्यसौभाग्य भोगवतां अवसरि रत्नमंजरी महीधर इसिइं नामिइं पुत्र जन्मिउ । ते सर्वांगसुंदर, रूपिइं पुरंदर, विवेकबंधुर राज्यधुरंधर सत्पुरुषसिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ । राजापृथ्वीचंद्रन्हइं राज्य करतां नवलाष नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां । तिसिइ अवसरि कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अकस्मात् पुहिठाणपुरि पाटणि ऊपरि चडी आविउ, लोकन्हइं आतंक ऊपजाविउ । तत्काल चरपुरुषि पृथ्वीचंद्रन्हइं जणाविउ । ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ऊलालतु सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ । भंभा वाजी, गगनांगण रहिउ गाजी । राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं मनि विमासण पडिउ । रे आत्मन् ! हुं बाह्यवइरी पूठिइं धाउं, अंतरंगवइरी पूठि न धाउं । कुण ए बुद्धि, किसी शुद्धि । जीतउ जोईयइ क्रोध, जेहतउ चालइ विरोध । जीतु जोईयइ मान, जेहन्हइं पर्वतनउं उपमान । जीती जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ स्त्रीतणी काया । जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समयक्षोभ । जीतु जोईयइ काम, जेहतु फेडइं पुण्यतणउं ठाम । ईणिपरि नरेश्वरन्हइं चींतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान, तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान । आव्या देव, करइं सेव । वइरी समिउ, आवी नमिउ । वाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र । देवे वेष दीधउ, राजऋषि लीधउ । हंसजमलि, बइठउ सुवर्णकमलि । दिइ उपदेश, हूउ पुण्यतणउ निवेश । एके आदरिउं सम्यक्त्व, एके श्रावकत्व । एके संयम, एके नियम । ईणिपरि लोकन्हइं लाभ देई पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी

पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य लीधउं, तेहतणइं पुत्रि महीधरि पुहिठाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कीधउं। पृथ्वीचंद्रनरेश्वरतणउं चरित्र सांभली, मनतणी रली,वलीवली, विवेकवंति पुण्यवंत लाभ लेवउ। जिसिइं पुण्यतणा प्रभावतउ सकल श्रीसंघन्हइं श्रेयकल्याण ऋद्धिवृद्धिपरंपरा संपजइं।

श्रीमदञ्चलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसूरिणा।
पृथ्वीचन्द्रनरेन्द्रस्य चरित्रं चारु निर्मितम्॥

संवत १४७८ वर्षे श्रावण सुदि ५ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पुरुषपत्तने निर्मितं समर्थितम्।

मावन्मेरुर्मही यावत् चन्द्रदिवाकरौ।
वाच्यमानो जनैस्तावद् ग्रन्थोऽयं भुवि नन्दतात्॥

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुंदरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे वाग्विलासे पञ्चम उल्लासः।



नमस्कार बालावबोध

[कर्त्ता हेमहंसगणी; वि० सं० १५००]

श्रेयांसि श्रीमहावीरः सश्रीसंघस्य यच्छतात् ।
यस्याज्ञा कल्पवल्लीव मनोवाञ्छितदायिनी ॥ १ ॥
श्रीवर्द्धमानशासनराज्यनेता विश्वत्रयादभुतचरित्रयुगप्रधानः
श्रीसोमसुन्दरगुरुर्गुरुचक्रवर्ती भूयादमेयमहिमा मम सुप्रसन्नः ॥२॥
तत्पट्टनायकाः श्रीमुनिसुन्दरसूरयो जयन्त्यधुना ।
जयचन्द्रसूरिजिनकीर्तिसूरिपरिवारपरिकरिताः ॥३॥
स्वान्ययोरुपकाराय लिख्यते लेशतो मया ।
षडावश्यकसूत्राणां व्याख्या बालावबोधिनी ॥ ४ ॥

पहिलउं सकलमंगलीकनउं मूल,श्रीजिनशासननउ सार, इग्यार अंग चऊद पूर्वनउ उद्धार, सदैव शाश्वतउ श्रीपंचपरमेष्ठि महामंत्र नउकार—

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥

एसो पंच नमुक्कारो ६, सव्वपावप्पणासणो ७ । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥८॥

एहनउ अर्थ—नमो अरिहंताणं—नमोऽर्हद्भ्यः । अरिहंत जेहे रागद्वेष कषायादिक अंतरंग अरिवइरी हणिया छइं । ते श्री अरिहंत चउत्रीस अतिशय, पांत्रीश वाणीगुणे करी सहित समवसरणि बइठा विहरमाण छइं । तेहंन्हइं, नमो कहीइ—माहरउ नमस्कार हओ । अरिहंत चंद्रमंडलनीपरि श्वेतवर्ण ध्याईइं । एतलइं एकपद तथा एक संपद हुई । जेतलइ अर्थ समाप्तिनउ अधिकार हुइ, तेतलइ संपद जाणिवी । उच्छ्वास ए बीजउं नाम । तिहां वीसामउ लीजइ । इम सर्वत्र जाणिवउं ।

हवइ, नमो सिद्धाणं—नमः सिद्धेभ्यः—सिद्ध जे आठ कर्मनिर्मुक्त हुई अनंतसौख्यमयमोक्षि पहुता सिद्धसिला ऊपरि जोअणनइ चउवीसमइ भागिं वर्त्तइं । तेह श्री सिद्धन्हइं नमो नमस्कार हउ । श्री सिद्ध ऊगता सूर्यनी परि रक्तवर्ण ध्याईइं । एतलइं बि पद, बि संपद हुई ।

नमो आयरियाणं—नम आचार्येभ्यः—आचार्य जे ज्ञानाचारादिक पंचविध आचार आपणपें पालइं अनेरान्हइं पलावइं । शिष्यनइं द्वादशांगीनउ अर्थ कहइ । ते श्री आचार्यन्हइं नमो नमस्कार हउ । आचार्य सुवर्ण वर्णे ध्याईइं । एतलइं ३ पद, ३ संपद हुई ।

नमो उवज्झायणं—नम उपाध्यायेभ्यः—उपाध्याय जे द्वादशांगीनउं सूत्र मुखाधीतगुणइं, शिष्यऱ्हइं पढावइं। ते उपाध्यायऱ्हइं नमो नमस्कार हउ। उपाध्याय मरकतमणिनी परिं नीलवर्ण ध्याईइं। एतलइं ४ पद, ४ संपद हुई।

नमो लोए सव्वसाहूणं—नमो लोके सर्वसाधुभ्यः—लोके मनुष्यलोकमाहिं जे सर्वसाधु मोक्षमार्गसाधक जिनकल्पी प्रमुख घणे भेद ऋषीश्वर छइं। ते सविहुंऱ्हइं नमो नमस्कार हउ। महात्मा आसाढना मेघनी परि श्यामवर्ण ध्याईइं। एतलइं ५ पद, ५ संपद हुई।

एतलइं पांत्रीशे अक्षरे श्री नउकार मूलमंत्र कहीइं। हवइं आगलि चिहुंपदनी चूलिका-माहिं एह मूल मंत्र-प्रभाव कहइ छइ। "एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो—एष पंच नमस्कारः सर्वे पापप्रणाशनः"। ए पांचहं परमेष्टिनउ नमस्कार ते किसिउ छइ—सव्व पाव०—सर्व पाप तणउ प्रणाशन फेडणहार छइ। एतलइं छट्ठउं अनइ सातमउं बि पद हूआं। बि संपद हूई छट्ठी सातमी। तथा—"मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं—मंगलानां च सर्वेषां प्रथमं भवति मंगलं।" सर्व मंगलीक जे लोकीक दधि दूर्वा अक्षत चंदनादिक; लोकोत्तर तप नियम संयमादिक; तेह सवि हुं मंगलीकमाहिं, पढमं—प्रथमं कहीइ—पहिलउं उत्कृष्टउं मंगलीक ए श्रीनउकार कहीइ। एतलइं आठमउं अनइ नवमउं बिहु पद हूआं। बिहु पदे करी संपद एकजि आठमी हुई। एह चूलिकामाहि 'हवइ' नइ स्थानकिं 'होइ' इसिउंहु कहता केतलाइ बत्रीशजि अक्षर मानइं, पुण मूलिं तेत्रीस अक्षर छइ।

यत उक्तं—महानिशीथसिद्धांते—"तहेव इक्कारसपयपरिच्छिन्नत्ति" 'इग्यार पदि परिच्छिन्न कहतां सहित छै। "इक्कारसपयपरिच्छिन्नत्ति आलावगे तित्तीसअक्खरपरिमाणं। एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥ इति चूलं॥ तेणेव कमेण छट्ठसत्तमट्ठमादिणेसु आंबिलेहिं अहिजिज्जा।

प्रवचनसारोद्धारेप्युक्तं—

पंच परमिट्ठिमंते पए २ सत्त संपया कमसो। पज्जंतसत्तरक्खरपरिमाणा अट्ठमी भणिआ॥
गाथा ६८॥

यद्यपि 'हवइ' अनइ 'होइ' कहतां अर्थनउ बिभेद कांइ छइ नही। तथापि 'हवइ' इसिउ जि कहिवउं। जेह भणी नमस्कार चूलिका ग्रंथमाहिं कहिउं छइ—जिवारइं कार्यविशषि ऊपनइ चूलिकातणउं ध्यान करीइ, तिवारइं बत्रीसदल कमल रची एकेकउ अक्षर एकेकी पांखुडीइं स्थापी तेत्रिसमउ अक्षर मध्यकर्णिकाइं स्थापी ध्यान करिवउं। हवइ जउ 'होइ' इसिउं कहीइ तउ चूलिकां बत्रीस जि अक्षर पहुचइ; बत्रीसे अक्षरे बत्रीस पांखुडीइ जि पूराइं, मध्यकर्णिका ठाली जि रहइ। इत्यादिक अनेक श्री सिद्धांतयुक्तिछइं। मध्यस्थ पणइं

विचारिवउं । एवं श्रीनवकारमहामंत्रि ९ पद, ८ संपद, ६८ अक्षर, तेहमाहिं ७ भारे, ६१ लघु अक्षर । जे बि अक्षर एकठा मिल्या हुइं ते भारी कहीइ । जे एकेकलउ अक्षर ते लघु हलुउ; इम सर्वत्र जाणिवउं । एह श्री नउकारनउ महिमा इम कहि छइ—

नवकार इक्कक्खर पावं फेडेइ सत्त अयराणं। पन्नासं च पएणं सागरपणसयसमग्गेणं ॥१॥
जो गुणइ लक्खमेगं पूएइ विहीइ जिणनमुक्कारं । तित्थयरनामगोअं सो बंधइ नत्थि संदेहो ॥२॥
अट्ठेव अट्ठसय अट्ठसहस अट्ठलक्ख अट्ठकोडीउ। जो गुणइ भत्तिजुत्तो सो पावइ सासयं ठाणं ॥३॥

श्रीनउकार भावसहित विधिइं जपतां, श्रीगुरुदत्त आम्नाय अनइं आस्थानइं विशेषिइं करी; इहलोकि अनइ परलोकिं सकल वांछित फल सीझइं। इह लोकि तां देवता सान्निध्य करइं। जिम श्रावकनी पुत्रिकान्हइं कीधउं । **अत्र कथा—**

[१] भरतक्षेत्रि पोतनपुर नगर। तिहां सुगुप्त नामिइं व्यवहारीउ श्रावक, तेहनइ श्रीमती नामिइं बेटी धर्मवंति छइ । एकवार कोएक मिथ्यात्वी श्रेष्ठिनउ बेटउ श्रीमतीनउं रूप देषी व्यामोहिउ । परणिवा वांछइ । पिता कन्हलि मगावइ । पिता मिथ्यात्वी भणी दिइ नही। पछइ कपट श्रावक हुई श्रीमतीनउं पाणिग्रहण कीधउं । आपणइ घरि लेई गिउ । तेहनउं कुटुंब सहू मिथ्यात्वी छइ । श्रीमती घरनां सर्व काज काम करइ, पुण एक मिथ्यात्व किमइ न करइ । जिनधर्म करतां भणी सासू नणंद ते ऊपरि पगि २ खीजइं। पेली आपणा कर्मजिन्हइं दोस दिइ । किमइ धर्मथकी चूकइ नही । भरतार श्रीमती ऊपरि द्वेष वहतउ तेहन्हइं विणासीनइ बीजी स्त्री परिणेवा हींडइ । एकवार तीणइं कालदारुण सर्प घडामाहिं घाती, ढांकी घरमाहिं मूंकिउ । अवसरिं वास भवनमाहिं शिय्याइं बइठउ श्रीमतीन्हइं कहइ· जा घरमाहिं अमुकइं स्थानकिं घडामाहिं फूल मूकां छइं ते आणि। पेली स्त्री महाविनीत तत्काल तिहां गई। नवकार जपीतीइं जि ढांकणूं ऊघाडी घडामाहिं हाथ घाल्यो। नउकारनइ प्रभाविइं तूठी शासनदेवताइं सर्प फेडी सुगंध फूलनी माला कीधी । श्रीमतीइं ते फूल आणी भरतारन्हइं आप्यां । पेलउ चमकिउ । ए किसिउं हूउं । तिहां जई ते घडउ जोअइ । देषइ तउ माहिं साप नहीं, अनइ घडउ परिमलिं महमह छइ । पछइ जाणिउं—सही एहन्हइं देवता साहाय्य करइं । हुं अभागिउ एहन्हइं पाडुउं चीतवउं । पछइ स्वजनवर्ग मेली तेह आगलि आपणउ वृत्तांत कहि श्रीमतीन्हइं खमावइ । तेहना गुण ऊपरि अनुराग धरइ । एकवार अवसर देखी श्रीमती भरतारन्हइं जिनधर्मना मर्म कहइ । कर्मविवरनइं योगिइं प्रतिबोध लागउ । महामर्ज्जादी जैन श्रावक हूउ । यावज्जीव धर्मपाली सुगतिइ पुहुतउ ॥ कथा एक ॥

वली नउकारनइं प्रभाविइं अनेक संकट भाजइं, लक्ष्मीनी प्राप्ति हुइ; जिम श्रावकना बेटान्हइं हुई । **अत्र कथा—**

[२] रत्नपुर नगर, यशोभद्र श्रेष्ठि-श्रावक तेहनउ बेटउ शिवकुमार महाव्यसनीउ। पिताइं घणउंइ सीषवी जोइउं धर्म किमइ न करइ। पिताइं प्रांतकालि मान मागी कहिउं—वच्छ! एतलउं करिजे; जिवारइं तूंन्हइं गाढउं संकट आवइ तिवारइ ए नउकार जपेइ। दाक्षिण्य लगइं मांनिउं। पिता दिवंगत हूउ। शिवकुमार सात व्यसन पोषतइं हुंतइं लषमि सघली नीगमी। निर्द्धन भणी किहाइं मान महत्व न लहइं। एकवार तेहन्हइं त्रिदंडीउ मिलिउ। तेह आगलि प्रीति लगइं निर्द्धन पणानउ विषाद प्रकाशिउ। त्रिदंडीउ कहइ—जउ माहरउं कहिउं करें तओ तूहन्हइं लक्ष्मीइं करी धनद समान करउं। पछइ शिवकुमार पासइं एक मृतक अणावी काली चउदसिनी रात्रिइं मसाणनी भूमिकाइं गिओ। मांडल मांडिउं। मृतकहाथिं ऊघाडउं खड्ग आली शिवकुमारन्हइं कहिउं—तू एहनां पगनां तलां उल्हांसि। आपणपइं मंत्रनु जाप होम करइ छइ। तिसिइ शिवकुमार संकटि पडिउ चींतवइ—आहा सही, ईणइं मायावीइं त्रिदंडीइं ए सघलु मुझ मारिवानउ उपाय मांडिउ। मृतक ऊठीनइ सही मुजन्हइं खड्गि करी आहणिसिइ; तउ हिवं किसिउं करउं। ईहां थकउ हवडां नसाइं नहीं। इम करतां पितानउं ते वचन सांभरिउं। एकाग्र हुई नउकार जपवा लागउ। त्रिदंडीयाना मंत्रनइं बलिइं करी ते मृतक लगारेक सलसलीनइ ऊठिवा लागउं। वली पाछउं जि पडिउं। त्रिदंडीउ चींतवइ—सही कांई माहरा जापमांहि दोदलउओ हूओ। वली विशेषिइं एकाग्रपणइं करवा लागउ। मृतक ऊठी बीजीइ वार वली तिम जि पाछउं पडिउं। तिवारइं त्रिदंडीउ चमकिउ। शिवन्हइं पूछइ—कांई मंत्र तूंन्हइं आवडइं? । शिव कहइ—ना। पुण हिआमाहिं नउकारनउ महिमा जाणिउ। पछइ त्रिदंडीउ अनइ शिवकुमार बेहू जणा वली आपणउं आपणउं मंत्र स्मरवा लागउ। वेतालनउं अधिष्ठिउं मृतक ऊठिउं। शिवन्हइं नउकारनइं प्रभाविइं करी पुहची शकइ नहीं। पछइ रीसाविइं मृतकिं ऊपाडी त्रिदंडीआनुं मस्तक खड्गिं करी छेदिउं। मंत्रनइ महिमाइं करी तत्काल त्रिदंडीउ फीटी सोनातणुं पुरिसउ हूउ। शिवकुमार चमत्करिउ। रात्रिभणी तिवारइं ते सहू भुइं माहिं सातिउ। प्रभाति दमितारि राजान्हइं सघलु वृत्तांत कहीउ। राजानु आदेश पामी महोत्सवपूर्वक सोनानउ पुरसउ शिवकुमरि आपणइ घरि आंण्यो। लक्ष्मी अखूट हूई। दीहइं पुरसाना मस्तकनइ कोठो टाली बीजां सघलां अंगोपांगनउ सोनउं कापी २ वावरीइ। रात्रि वली दिव्यानुभाविं तिस्यांइ जि थाइ। थोडे जि दिहाडे प्रौढ श्रीवंत व्यवहारिउ थिउ। अनुक्रमिं गुरुनइं योगिं धर्मना मर्म जाणी साव सुवर्णमय प्रासाद करावी, माहिं मणिमय प्रतिमा मंडावी, धर्म पाली सुगतिं पहुतु ॥ कथा २ ॥

वली श्री नउकारनइं प्रभावि मरणांत संकटइ थिकु छूटीइ। जिम जिनदास श्रावक छूटउ। **अत्र कथा—**

[३] क्षितिप्रतिष्ठित नगर, बलराजा। एकवारे नवइ मेघि घूठइ नवी पूरिं आवी। लोक जोवा ग्या। पाणीमाहिं तरतुं एक मोटउं पाकुं बीजोरू दीठउं। तलारिं माहिं पइसी लीधउं। जई राजान्हइं आप्यो। सुगंध मधुर सरस ते बीजपूर अस्वादिउं। हर्षिउ राजा पूछइ–ए किहां लाधउं? तलार कहइ–स्वामी! नदीना पूरमाहिं आविउं तरतुं। राजा कहइ नदीनइ तटिं २ जाउ, एहनूं मूल जोउ। कहिनी वाडिथिकुं ए आविउं। पेला जोता २ तिहां घणीक लगइ ग्या। दीठी वाडी पइसवा लागा। तिसइं ढूकडे लोके कहिउं–अहो ईह म पइसु। जि कोएकै एहनूं फल फूल लेशइ ते तिहां ठाम जि रहइ, मरइ। पेला पाछा जई राजान्हइं कहइं। राजा रसलंपट थकु कहइ–जाउ तो नगरमाहिं सर्व मनुक्षना वारा करउ। रायना आदेश भणी तलारे सर्वनगरलोकनां नामनी चीठी लिषी एक घडामाहिं घाली प्रभाति कुमारिका पाशइ चीठी कढावीइ। जेहनी चीठी नीकलइ ते जीवतव्य निरास थई धूजतुं कांपतुं तीणइ वाडीइं जाइ। बीजउरुं त्रोडी नदीमाहिं वहितूं मूकइ। तलार नगरद्वारि रही ते काढी लिइं। पेलउ आपणपुं तिहां जि मरइ। नगर सघलुं विषाद प्राप्त हूउं। राजाना मनइमाहिं नहीं। इम करतां एकवार जिनदास श्रावकनी चीठी नींसरी। पेलउ महानिर्भयपणइ घरि तथा देहरइ देवपूजा करी, सर्व कुटंब षमावी, सागारिअणसण ऊचरी वनभणी पुहतु। ऊंचइं सादिं नुकार कहितुजि वनमाहिं पइठउ। वननइं अधिष्ठायकिं व्यंतरइं नउकार सांभलिउ। चींतवइ–ए अक्षर किहांइ आगइं सांभल्या छइं। ज्ञाननु उपयोग देई पाछलिउ भव जोइ देखइ तु, सिउं–पाछिलइं भवि मइं दीक्षा लेई विराधी तेह भणी मरी विंतर थिउ। अहा जीणइं दीक्षाइं एकइ दीहाडउ सूधी पालीइं हूतइ वैमानिक देवतानी पदवी लाभइ; ते दीक्षा प्रमाद लगइ ते मिं हारी; अहो!–इम पश्चात्ताप धरतु आवी जिनदास श्रावकन्हइ प्रत्यक्ष हूउ। बे हाथ जोडी आगलि ऊभु रहिउ। पगि लागी कहइ–मूहन्हइ धर्म बूझविउ, तूं माहरइ गुरु; कांई वर मागि। श्रावक कहइ–वरदेसि तु सर्व जीव मारिवा नियम लिइ; अनइ स्थानाकि जि बइठा दिन प्रति एक बीजउरउं आणी आपवउं। व्यंतरइं मानिउं। श्रावक अखंड पाछउ आविउ। राजान्हइं वृत्तान्त कहिउं। एकेकउं बीजोरो श्रावकरहइ व्यंतरउ सदैव आणी आपइ। श्रावक जई राजारहइं आलइ। राजा हर्षिउ; नगरलोक हर्षिउ। सहू को जिनदास श्रावकनी प्रशंसा करइ। घणु काल धर्म पाली सुगतिं पहुतु॥ कथा ३ पूरी॥

ए इहलोकिं नउकारना फल ऊपरि त्रणि दृष्टान्त कह्या। हवइं परलोक ऊपरि कहीइ छइ ३ दृष्टान्त॥ परलोकिं नउकारनइ प्रभाविं राज्यपदवी पामीइ। जिम चंडपिंगल चौरइ पामी। **अत्र कथा**—

[४] वसंतपुर नगर, जितशत्रु राजा, भद्रा रानी। चंडपिंगलनामइं चोर छइ। तीणइं

चोरी करी करी नगरलोक ऊदेगिउं छइ । एकवार रायनु भंडार फाडी राणीनु अमूलिक हार चोरिउ । एक कलावती नामिं तिहां गणिका छइ । कांई श्राविका कांई मिथ्यातिणि । तेहनइ विषइ ते चोर उलधउ छइ । ते हार लेई गणिकान्हइ आपिउ । इम करतां मयण-तेरासिनुं पर्व आविउं छइ । सघली गणिका आपणा २ शृंगार पहिरी उद्यान वनमाहिं क्रीडा करिवा गई । कलावतीइ ते हार पहिरी तिहां आवी । तिसिं राणीनी दासीए ते हार तेहनइ कंठि दीठउ । ओलषिओ, जई राणीनइ कहिउं । राणीइ राजान्हइ कहिउं । राजाइं प्रतीहार पाइं जोवरावी चंडपिंगल कलावतीना घरमाहिंथिकु साही महाविडंबनापूर्वक सूलिइं दिवराविउ। कलावती ते वात जाणी तिहां गई । चिंतवइ—अहो ! माहरइ कीधइ एहरइं इसी अवस्था आवी; तु आजतू एह पुरुष टाली बीजा सर्वपुरषनु नियम । एहरहइं नुंकार दिउं । पेली नुंकार देई । छेहडइ चोर मरी पट्टराणीनु बेटउ हूउ । राजाइ महामोह लगइ महोत्सव करी पुरंदर कुमार नाम दीधउं । कलावतीइं दीहाडानी तकताक जोई जाणिउं सही ए तेह जि माहारो भरतार । राजानइ आवासि आवइ । पुरंदर कुमार बालकन्हइं हुलावइ । जिवारइं रुदन करइ तिवारइं पाछिला भवनइं नामिं बोलावइ । हे चंड पिंगल ! म रोइ । बालकरहइं ते नाम सांभ-ली जातिस्मरण ऊपनुं । नुकारनु महिमा जाणिउ । पिता दिवंगत हूआ पूठिं पुरंदर कुमार राजा हूउ । कलावतीनउ उपगार जाणी तेह ऊपरि अत्यंत स्नेहथिकु निरंतर नुंकारनुं स्मरण करइ । राज्य अनइ धर्मपाली सुगतिं पहुतु ॥ कथा चौथी ४ ॥

वली परलोकि नउकारनइं प्रभाविं महापापनु करणहार मरी देवतानी पदवी लहइ । जिम हुंडिक चोरिं लाधी ॥ **अत्र कथा—**

[५] मथुरां नगरी, शत्रुमर्दन राजा । तिहां हुंडिक चोर सदैव चोरी करइ । एकवार कहिएक व्यवहारीआनइ घरि खात्र पाडी घणउं सुवर्ण चोरिउं । कुटुंबनें माणुसे कलकल कीधउ । तलार धाया । सोना सहित चोर साहिउ । बांधी प्रभाति राजा आगलि आण्यो । राजाइ नगरमाहिं चहुटइ २ फेरवी अनेक प्रकारि विडम्बना करावी, बापडउ सूलीइं दिवराविउ । नगरमाहिं सघले उदघोषणा करावी—अहो लोको ! इसिउं फल देषी बीजउ को चोरी म करसिउ । अनइ एहनी चिंता कूणहिं न करिवी । पछइ सूली कन्हलि राउला चर मूंक्या । जि को एहनी चिंता करइ ते आवी कहिज्यो; जिम तेहरहइं एह जि दंड कीजइ । तिसिइ बापडा ते चोररहइं तावडइं अनइ रुधिरनइ नींकलवइ करी अपार गाढी तृषा लागी । जि को ढूकडु जाइ तेहन्हइ पाणी मागइ । राजाने भए करी कुणहू पाणी पाइ नहीं । तिसिइं जिनदत्त श्रावक आविउ । पेलइं पाणी मागिउं । श्रावकि कहिउं—पाणी लेई आवुं तेतलइ तूं नुकार गुणि । ' नमो अरिहंताणं ' मुषि ऊचारि । श्रावक घरि जई करवडउ पाणी भरी जेतलइं आवइ तेतलइं ' नमो अरिहंताणं ' कहितां जि चोरमा प्राण ग्या । मरी

महर्द्धिक यक्ष देवता ऊपनउ । तिसिं चरे जई जिनदत्त श्रेष्ठिनु वृत्तांत राजा आगलि कहिउ । राजाइं तेहरहइ सूली घालवानु आदेश दीधउ । रासभि चडावी तीणइं भूमिकां लेई ग्या । तिसइं तीणइं हुंडिकयक्षइ नवइ ऊपनइ अवधिज्ञान प्रयुंजिउं । आपणा गुर जिनदत्त श्रावकन्हइं तिसी अवस्था दीठी रीसाविउ । आवी नगर ऊपरि महाकाय शिला विकुर्वी, आकाशि वाणी बोलवा लागो—अरे राजा अमात्य प्रमुष सर्व नगरलोक पापी ! आओ हवडां जि ईणइं शिलाइं करी तुम्ह सविहुंन्हइं चूर्ण करउं । ए दयानु समुद्र सुश्रावक माहरु स्वामी श्रीजिनदत्तश्रेष्ठी; तेहन्हइं तुम्हे एवडी विडंबना करु छउ । एकवार देषु माहरुं कीधुं । तीसइं राजा प्रमुष सहू को भयभ्रांत हूतुं पुष्पादिकनी पूजा करी वीनयइ—अजाणिवा लागइ कीधउं ए अपराध खमि । अहो देवता आज अम्हन्हइं जीवितव्य दिइं । देवता कहइ—तु जीवता मूंकुं, जउ एह श्री जिनदत्त श्रेष्ठिनइ सरणइ पइसउ; अनइ पूर्वदिसि माहरउ प्रासाद करावु । माहिं सूलिइ घालिउ चोर अनइ नुकार देतु श्रेष्ठि ए विहुंनी मूर्त्ति करावी पूजउ तु मूकुं । राजाइं सहू मानिउं । पछइ श्रेष्ठिनइ अन्याय खमावी पट्टहस्तीइं बइसारी मोटे उत्सवे नगरमाहिं पइसारु कीधउ । ते यक्षना प्रासादमाहिं तिसी बि मूर्त्ति सहू कराविउं । यक्ष उपशांत हूउ । स्थानकि पहुतु ॥ कथा पांशमी ॥

तथा श्रीनुकारनइं प्रभाविइं मोक्षइनी पदवी लाभइ । राजसिंह कुमारनी परि । **अत्र कथा**—

[६] त्रीजउ पुष्करवरद्वीप, तिहां भरतक्षेत्रमाहिं सिद्रावट ग्राम । तिहां ढूकडी पर्वतनी गुफाइं एक दमसार ऋषीश्वर चउमासी उपवास तप करतु चउमासुं रहिउ छइ । तिहां एक पुलिंदिउ नइ पुलिंदी आव्या । ऋषि वांदिउ । भद्रपरिणाम देषी ऋषिं नुंकार सीषवीनइ कहिउं—ए त्रिकाल सदैव सावधान थई जपिवउ । पेलां बेहू सदैव जपइं । ऋषिं चउमासा पूठिं गुरुकन्हलि पहुता । कालिं बेहू परोक्ष हूआं । पुलिंदानु जीव मरी जंबूद्वीप मणि मंदिरि नगरि राजा मृगांक राजा विजया राणी, तेहनइ गर्भि अवतारिउ । राणीइं सीहनुं स्वप्न लाधउं । अनुक्रमिं पुत्रजन्म हुउ । महोत्सव करी राजसिंह कुमार नाम दीधउं । मउडइ २ बहुत्तरि कला पारीण हूउ । रूप लावण्य सौभाग्यनउं निधान यौवन वय प्राप्त हूउ । मतिसागर मुहतानउ बेटउ सुमतिकुमार । तेहसिउं राजासिंहनइ मित्राई छइ । एकवार राजसिंह कुमार मित्रसहित वनमाहिं तुरंगमनी क्रीडा करिवा गिउ । घणी वेला तुरंगम षेलावी थाकु एक आंबानी छायाइं वीसमइ छइ । तिसइ एक वटेवाहू तिहां मिलिउ । कुमरिं पूछिउं—कहु किहां थकी आव्या, किहां जासिउ ? । किहांइं कांई आश्चर्य दीठउं हुइ ते कहु । पेलउ कहइ—पद्मपुर नगर थकु हूं आविउ । सकलतीर्थनु ठाकुर श्री शत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करवा जाउं छउं । हवइं आश्चर्यनी वात सांभलि । तेणइ पद्मपुरि नगरि पद्मराजा, हंसी राणी, तेह तणइ रत्नवती नामिं बेटी चउसठि कलाकुशल महा-

रूपपात्र यौवनवय प्राप्त हुई । पितानिं मनि वरचिंता ऊपनी । अमात्यन्हइं कहइ–एह कन्यान्हइ गुणे करी अनुरूप योग्यवर किहां थिकु मिलशइ । महुंतु कहइ–स्वामी ! म करु चिंता । एहनां भाग्य छइ ते स्वयमेव समानयोग मेलशइ । एकवार राजा आगलि एक नटवउ पुलिंदानइ वेषि नाचतु देषी कन्यान्हइं मूर्छा आवी जातिस्मरण ऊपनुं । आपणु पाछिलु भव पुलिंदानु दीठउ । पूर्वभवनी भार्या रत्नवती प्रतिं अतिसानुरागथिकु वली पूछइ–कहु आपुं किसिउं हूउं ? । वटेवाहू कहइ–पछइ ते कन्यातणी प्रतिज्ञानी वात देसि विदेसि विस्तरी । अनेक राजाना कुमार ते कन्या परिणवानइ लोभइं आवी २ कूडुं जि कहइ । अम्हे पाछिलइ भवि पुलिंदा हूता । पछइ कन्या कहइ–अहो जु तुम्हे पुलिंद हूता तु कहउ तम्हे सिउं पुण्य कीधउं हूतउं जेणइ करी एवडी राज्यरिद्धि लाधी ? पेला ते वात न जाणइ, कूडा पडिआ । तंहींअ लगइ ते कन्या पुरुषद्वेषिणी थई । ए पुरुष सघलाइ कूडा बोला जि हुइ । तेह भणी एह पुरषतणूं मुख नहीं जोउं । इसिउं चींतवई स्त्रीइजिना वृंदमाहिं थिकी रहइ । तु अहो राजकुमर ! पुरुषमाहिं तूं रत्न छइ अनइ स्त्रीमाहिं तु ते कन्या रत्न । तुम्ह बिहुंन्हइ जइ योग मिलइ तु अपार जडतुं हुइ । इसिउं सांभली कुमार हर्षिउ, आनंदिउ; सर्व अंगलग्न आभरण ऊतारी तेहन्हइं आपी विसर्जी आपणइ घरि आविउ । रत्नवतीन्हइं मिलवाना उपाय चिंतवइ । तिसइं नगरलोके मिली राजान्हइ एकांतिं वीनवइ–स्वामी ! अम्हे किम करूं ? ए राजसिंह कुमार नगरमाहिं जीणइ २ सेरीइं सांचरइ तिहां २ आपणां बालकइ रोव्यतां मूंकी मूंकीनइ सौभाग्यना व्यामोहिआ स्त्रीना वृंद गमे २ जोइवा धाइ । अह्मारां घरनां काज-काम सघलाइ सीदाइ छइ । तेह भणी स्वामी ! कुमर नगर माहिं फिरतु वारु । राजाइं प्रती हार पाइं कुमाररहइं कहिंवराविउ । वच्छ ! तूं सदैव आवासमाहिं जि थिकु रहिजे, कला अभ्यसजे, बाहिरि हींडतां पुरुपनी कला विकला थाइ । ते सांभली कुमर दूहवाणउ । चिंतवइ–तातिं इम तु कहाविउं, जु कांई माहरु उ(अ)पराध तातनइ मनि प्रतिभासिउ । पछइ सुमित्रइ वातनु परमार्थ कहिउ । तू दूहवण फीटी । पछइ कुमर कहइ–मित्र ! ए तातनी आज्ञा तु गाढी दुष्कर; सदैव घरमांहि पइसी रहिवूं; अनइ ते पवारायनी बेटीनु घणउं कूतिग छइ तु चालउ तेह देशांतर भणी जईइ ।। यतः—

दीसइ विविह चरिअं जाणिज्जइ सुज्जण दुज्जण विसेसो।
अप्पाणं च कलिज्जइ हिंडिज्जइ तेण पुहवीए ।। १ ।।

इसिउं विमासी बेहूजण पञ्च हाथि लेई तिहां भणी नींकल्या । ठामि २ अनेक आश्चर्य जोअता २ जाइ छइ । एकवार अरण्यमाहिं सूनइ देवकुलिं सूते कहिएक पुरुषनु करुणस्वर सांभलिऊ । कुमार ऊठी पञ्च हाथि लेई तेहभणी चालिउ । आगलि गिउ देषइ तु विकराल

राक्षसइं पुरुष एक कक्षामाहिं चांपिउ छइ । ते आक्रंद करइ छइ । कुमरइं राक्षसन्हइ कहिउं –ए बापडउ मूकि । ईणइं ताहरुं सिउं विणासिउं ? पेलउ कहइ–ए मूंहन्हइ वशि करतु हूतु । मइं कहिउं–तु वसि थाउं जु आपणउं महामांश कापी मूंहन्हइ दिइ। ए तु देई सकइ नहीं। हूं तु भूषिउ । तु हव ए माहरु भक्ष, ए किम मूंकुं। कुमार कहइ–एहन्हइ मूंकि । हूं माहरुं महामांश तूंहन्हइ यथेष्ट आपुं । इम कही षड्ग काढी जेतलइ मांस कापवा लागउ तेतलइ राक्षस हर्षिउ कहइ–अहो साहसीक परोपकारी सत्पुरुष ! ताहरइ साहसिं तूठउ हूं । कांई वर-मागि । कुमर कहइ–जु तूं तुठो छे तु एह बापडानउं मनवांछित पूरि । राक्षस कहइ–ताहरा कहिआ भणी ते करिसु । पुण देवतानुं दर्शन निष्फल न थाइ । तेह भणी आ चिन्तामणि रत्न लिइ । इम कही चिंतामणि रत्न आपी राक्षस अदृश थिउ । कुमार पाछउ गिउ । मित्रनइं ते वृत्तांत कहिउ । आघा चाल्या । कुमारिं मार्गि मित्र आगलि पूर्वभवनउं स्वरूप कहिउं। मित्र हसी कहइ–अहो मित्र ! तूं रत्नवती परिणीवा जाइं छइं; अनइ ते तु पुरुष द्वेषणी छइ । ईणइं पुरुषमइ वेषिइं तेहनुं दर्शनइ करवा नही लाभइ; संभाषणनी वातइ किहां । कुमार कहइ–मित्र चिंता सी कीजइ । हिव भाग्य ज फलइ । यतः–

अघटितघटितानि घटयति, सुघटितघटितानि जर्जरीकुरुते ।

विधिरेव तानि घटयति यानि पुमान्नैव चिन्तयति ॥ १ ॥ कूमारनइ मनिं पूर्वभवनउ वृत्तांत जाणिआ लगइ एक नउकार जि नी एकांत आस्था अनइ ध्यान छइ । एकवार अर-ण्यमाहिं एक सरोवरनी पालिं आंबानी छायाइं कुमार सूतु छइ । ढूकडा वनगहनमाहिं सुमन फल चूंटइ छइ । तिशइ तु आकाशि एक विद्याधर जाइ छइ । तीणइं जातइ सूतो राजसिंह कुमारनउं रूप देषी चिंतविउं–मझ केडइ जि माहरी भार्या आवइ छइ ते जउ एह पुरुषनउं रूप देषिशइ तो माहरु स्नेह मूकी एह जि ऊपरि अनुराग धरशइ । इसिउं विमासी तेह जि वनगहनमाहिं थिकी किसीइ ऊषधी लेई पाणीइंसिउं घसी ललाटिं सूक्ष्म तिलक कीधउं । तत्काल कुमार स्त्रीरूपि हूउ । विद्याधर आघउ चाल्यो । लगारेकइ तेहनी भार्या विद्याधरी आवी । तीणइ ते स्त्रीरूप देषी चिंतविउं–सही वलतो आवतो माहरो स्वामी जउ एह स्त्रीन्हइं देषिसिइ तो एहनइ विषइ रातु मुझ साह्मुं न जोइ । इसिउं विमासी तेह जि वनगहनमाहिंथी अनेरी एक ऊषधी लेई घसी तिम जि तिलक कीधउं । तत्काल स्त्रीरूप टाली पुरुषरूप थिउं । विद्याधरी आघी चाली । ते सघलउ वृत्तांत सुमतिं वृष्यनइ आंतरइ रहिं दीठउ । ते बिन्हइ ऊषधी वनमाहिंथी लेई गांठिं बांधी । कुमारन्हइं जगाडी सघलउ वृत्तांत कहिउ । अनुक्रमि पद्मपुरि पहुता । तिहां सुवर्णमय जिन प्रासाद ढूकडा रहइ छइं । चिंतामणिनइ प्रभावि सकल मनो-वांछित सुष पहुचइ छइ । तिमइं जि स्त्रीनइ समूहि वीटी सुषासनि बइठी रत्नवती कन्या प्रसादिं

आवी । आगलि थिका कांबडीआ पुरुष तलार पुरुषनइं पाछा करइ छइ । तिसिइं ते बिन्हइ कारिमी स्त्री थई ढूकडेरी प्रासादमाहिं आवी ऊभी रही । रत्नवतीइं परमेश्वरनइ आठ प्रकारि पूजा कीधी । पाछी वलतीइं कुमार स्त्री दीठी । देवांगनासमान रूप देषी हर्षि पूछिउं—महानुभागि ! तुम्हे अपूर्वस्यां दीसउ । किहां तां आव्यां ? तिसइ मित्र स्त्री कहइ—ए माहरी सषी मणिमंदिर नगरथिकी आवी । रत्नवती कहइ—ए तम्हारी सषी मझनइ देषतां मनि अपार उल्लास थाइ छइ । तुम्हे माहरइ जि परहुणा थाउ । आपणइ घरि लेई गई । अनेकभक्ति करइ । बेहू घणु काल तिहां रहिआं । एकवार रत्नवती प्रतिं कुमारश्री कहइ—देषउ अजीतां ताहरइ पूर्वभवनुं भरतार पुलिंदउ किहांइं जाणीइ नहीं, अनइ योग्यवर पाषइ रुडीइ कन्या कांई शोभइ नहीं । पछइ एकिसिउ मेली स्वयंवर मंडप मंडावी आपणा मनगमता कहिएक वरनउ पाणिग्रहण करइ कां नहीं । पछइ रत्नवती कहइ—जोइ, नर भरतार तां मननी रतिनइ काजिइं कीजइ । ते तु तुझ साह्मउं जोऊतां मझन्हइ ऊपजइ छइ । तु बीजइ कुणहिं माहरइ काज कांई नहीं । तिवारइ कुमार स्त्री पूछइ—ते भवांतरनु पुलिंदउ वर किम ओलषाइ । रत्नवती कहइ—जि को ते भवनुं कीधउं पुण्य माहरुं जाणशइ ते सही माहरु पूर्वभवनु पति । तिवारइं कुमारस्त्री कहइ—एतलुं जाणउं 'पाछिलइ भवि दमसार ऋषीश्वर नुंकार तूंहन्हइ सीषविउ हूतु ते स्मरवानइं प्रभावि तूं मरी रायनी बेटी हूई' । ते सांभलीनइ चमत्करी रत्नवती आपणी सषी चंद्रलेषा प्रतिं कहइ—ए किम ए वात जाणइ ? । चंद्रलेषा कहइ—स्वामिनी ! जोइतां एहनी गति, वचनचेष्टा, सहु पुरुषना सरिषुं दीसइ छइ । अनइ एह देषी तुजन्हइं रति ऊपजइ । तीणइ इसिउं जाणीए, सही ए ताहरु पूर्वभवनु भरतार । किसिइं कारणिं पुरुषनुं स्वरूप आच्छादी स्त्रीनइ रूपिं आपणपुं देषाडइ छइ । तिसइं चंद्रलेषा कुमारस्त्री प्रति कहइ—स्वामी ! हवे प्रसाद करी आपणउं स्वभावनुं रूप देषाडउ । तिसइं ऊषधीनइ योगइं बेहू पुरुषनइं रूपि थिआ । रूप देषी सहू को हर्षिया । पछइ चंद्रलेषा कहइ—स्वामी ! जिम रूप प्रकाशिउं; तिम गोत्र कुलादिक प्रकासउ । तिवारइं मित्रइ कुमारतणउं देस, कुल, गोत्र, वटेवाहूना वचननउ वृत्तांत संपूर्ण कहिउ । राजाइ वात जाणी हर्षिथिकइ शुभलग्नि मोटे महोत्सवे रत्नवतीनो पाणिग्रहण कराविउ । हस्ति मोचनि अनेक गजेंद्र तुरंगम अर्द्ध राज्य दीधउं । राजसिंह कुमार रत्नवती सहित नानाप्रकार भोगसुष भोगवइ छइ । घणउ काल हूउ । एकवार पिताइं मृगांकराजाइं प्रतीहार हाथि लेष मोकलीनइ कहाविउं—वच्छ ! हिवइ अम्हे वृद्ध हूआ । राज्य छांडी दीक्षा लेवानी उत्कंठा करुं छउं । घणाकाल लगइ ताहरा दर्शननी उत्कंठा छइ । तु वहिलु आंहां आविजे । पछइ राजसिंह कुमार सुसरानइ मोकलावी रत्नवती सहित चतुरंग कटक परिवार मणिमंदिर नगरभणी चा-

लिउ । अनुक्रमिं पुहुतुं । पिताऱ्हइं प्रणाम कीधउं । सर्व कुटुंब परिवार हर्षिया । राजा चिंतवइ छइ—कुमारऱ्हइ राज्य देई हूं आपणुं धर्मकार्य करउं । इसिइं आवी उद्यानपालकि वीनविउं —स्वामी ! उद्यानमांहि श्रीगुणसागरसूरि गुर पाउधारिया । राजा अति हर्षिउ । राजसिंह कुमार प्रति राज्य स्थापी साते क्षेत्रे वित्त वेची सपरिवारु गुरुकन्हलिं गिउ । दीक्षा लेई दुष्कर तप करी देवलोकि पहुतु । राजसिंह राजाइं रत्नवती राणीसहित सम्यक्त्वमूल बार व्रत पडिवज्यां । निष्कंटक राज्य अनइ श्रावक धर्म पालइ छइ । नुकारनइ प्रभावि मोटा २ वयरी राजा आज्ञा मनाव्या । गाम २ जिनप्रासाद कराव्या । पृथ्वी जिनमंडित करावी । चिरकाल राज्य पाली एकवार रोगाक्रांत थिकइं हूंतइ आपणा पुत्र प्रतापसिंह कुमारऱ्हइं राज्य स्थापना कीधी । आपणपइ रत्नवती राणी सहित श्रीगुरुनइ मुखिइ सविस्तरि आराधना कीधी । सर्व जीवराशि षमावी शुभध्यानि श्रीनउकार [जप]तु जि परोक्ष हूउ । मरी पांचमि देवलोकि दस सागरोपमनइ आऊषइ ब्रह्मेंद्र इसिं नामिं इंद्र हूउ । रत्नवतीइ मरी तीणइं जि इंद्र [तणी] सामानिक देवता हूई । तिहां थकु च्यवी एकभव संसारमाहिं अवतरी दीक्षा लेई सकलकर्म क्षयकरी केवलज्ञान ऊपार्जी बेहूं जणां मोक्ष लहशइ ॥ कथा ६ ॥

॥ श्रीनवकार बालावबोध ॥



३ औक्तिक प्रकरण

मुग्धावबोध औक्तिकमांनां अवतरणो

[कर्ता–कुलमंडनसूरि, विक्रम संवत् १४५०]

[विभक्ति विचार]

१. जु करइ, सुइ,[१] लिइ, दिइ, पढइ[२] हुइ[३]: इत्यादि बोलिवइ उक्तिमांहि क्रिया करिवइ जु मूलिगउ[४] हुइ सु कर्त्ता, तिहां प्रथमा–१ । २ । ३ । हुइ । चंद्र ऊगइ । ऊगइ इसी क्रिया । कउण[५] ऊगइ–चंद्र । जु ऊगइ सु कर्त्ता । तिहां प्रथमा । चंद्रः उद्गच्छति । वीतराग वांछित दिइ । दिइ इसी क्रिया । कउण[६] दिइ, वीतराग । जु दिइ सु कर्त्ता । तिहां प्रथमा । किसउं[७] दिइ, [८]वांछित । जं दीजइ तं कर्म्म । तिहां द्वितीया । वीतरागः वाञ्छितं ददाति । एवं अहं देवं[९] नमस्करोमि ॥

२. जं कीजइ, लीजइ, दीजइ, पढीइ, गुणीइ[१०]: इत्यादि बोलिवइ[११] युक्तिं[१२] क्रियां करी उक्तिमांहि जं वस्तु कर्त्ता व्यापीइ तं कर्म्म । तिहां द्वितीया । चेत्रु कटु[१३] करइ । करइ इसी क्रिया । कउण करइ, चैत्रु । जु करइ सु कर्त्ता । तिहां प्रथमा । किसउं करइ, कटु । जं कीजइ तं कर्म्म । तिहां द्वितीया । चैत्रः कटं करोति । एवं चैत्रः काष्ठं दहति । ग्रामं याति । शास्त्रं पठति ॥

३. जीणइं[१४]करी करइ, लिइ, दिइ इत्यादि युक्तिं[१५]जिहां: 'इं' कहीइं, अनइ जीणइ करी कर्त्ता क्रिया साधइ तं करण । तिहां; अनइ जेहसिउं[१६] इत्यादि बोलिवइं सहादि योगि[१७] तृतीया हुइ[१८] । जीव धर्म्मिइं संसार तरइ । तरइ इसी क्रिया । कउण तरइ, जीव । जु तरइ सु कर्त्ता । तिहां प्रथमा । किसउं तरइ, संसार[१९] । जं तरीइ[२०] तं कर्म्म । तिहां द्वितीया । किसिइं[२१] तरइ, धर्म्मि । तिहां करणि तृतीया । जीवः संसारं धर्म्मेण तरति । चैत्रु लोकसिउं वात करइ । करइ इसी क्रिया इत्यादि । कर्त्ता कर्म्म पूर्ववत् [२२] । कीणइं सिउं[२३] लोकसिउं ।

---

१ A માં આ શબ્દ નથી. २ B C માં આ શબ્દ નથી. ३ B માં આ શબ્દ નથી. ४ B માં मूलगउ; C માં मूलगु. ५ A માં कुण. ६ A માં कुण. ७ A C માં किसुं. ८ આ બંને અંક વચ્ચેનો પાઠ B પ્રતિમાં છૂટી ગયો. ९ A માં આ શબ્દ વાક્યને અંતે આપ્યો છે. १० A C માં આ શબ્દ નથી. ११ C માં નથી. १२ A માં નથી. १३ B માં चैत्र कट. १४ A માં जीणं. १५ A માં युक्तिइं. १६ B માં जेहिसिउं. १७ C માં योगि પછી तिहां શબ્દ વધારે છે. १८ B માં हुइ નથી. १९ B માં संसारु. २० C માં तरीयइ. २१ A માં किसइ. C માં किसि. २२ B પ્રતમાં આ વાક્યને બદલે 'कउण करइ चैत्र । सु कर्ता, तिहां प्रथमा । किसउं करइ, वात । जं कीजइ तं कर्म, तिहां द्वितीया । २३ A માં कीणंसिउं.

तिहां सह शब्द अनइ तेहनइ योगि तृतीया । चैत्रः लोकेन सार्द्ध—सह—साकं—समं वा वार्त्ता[1] करोति ॥

४. जेहनइं कारणि क्रिया कर्त्ता कर्म्म हुइ । अनइ जेहरहइं[1] दान दीजइ, कोप कीजइ, तिहां संप्रदानि चतुर्थी । विवेकिउ मोक्षनइं कारणि खपइ । खपइ इसी क्रिया इत्यादि । क्रिया कर्त्ता कर्म[2] पूर्ववत् । कउणनइं[3] कारणि, मोक्षनइं । तिहां तादर्थ्ये[4] चतुर्थी । विवेकी मोक्षाय यतते[5] । एवं सेवकाय प्रसीदति । लोकाय[6] नृत्यति नटी । संप्रदाने चतुर्थीयं । अत्र चतुर्थ्या हेतुः क्रिया[7] । धर्म्मु सुखनइं कारणि हुइ । क्रिया कर्त्ता पूर्ववत् । किसानइं कारणि धर्म्मु हुइ, सुखनइं । तिहां चतुर्थी । धर्म्मः सुखाय भवति । [8]एवं यूपाय दारु भवति । अत्र चतुर्थ्या हेतुः कर्त्ता । साधु मोक्षनइं कारणि तपु करइ । करइ[9] इत्यादि क्रिया कर्त्ता कर्म्म पूर्ववत । किसानइं कारणि, मोक्षनइं । तिहां तादर्थ्ये चतुर्थी । साधुर्मोक्षाय तपः करोति । द्विजाय दक्षिणां ददाति । संप्रदाने चतुर्थी एषा । मैत्राय कोपं करोति । अत्र चतुर्थ्या हेतुः कर्म्म ॥

५. जेहतउ, हूंतउ, थउ, थकउ[10]: इत्यादि बोलिवइं जेह वस्तुनइं परित्याग सूचियइं[11] ते अपादान । अनइ[12] आरंभी प्रभृति अन्यादिकनउ [13]योगु जिहां हुइ तिहां पंचमी[13] । वृक्षतउ पान पडइ । पडइ इसी क्रिया । कर्त्ता कर्म पूर्ववत्[14] । कउणतउ पडइ[15], वृक्षतउ । तिहां अपादानि[16] पंचमी । वृक्षात् पर्ण्णं पतति । एवं चौरात् नश्यति लोकः । [17]आषाढात् प्रभृति आरभ्य वा वृष्टिर्भवति । अस्ति जीवः शरीरात् अन्यः । पितुः पृथक् संजातः पुत्रः[17] ॥

६. एहनउ, तणउ, एहरहइं[18], किहिं[19]: इत्यादि बोलिवइ उक्तिमाहि जेह वस्तुरहइं[20] कारकसिउं अथवा संबंधसिउं स्व—स्वामित्वादिक[21] संबंध सूचीयइ[22]; अनइ जेहरहिं क्रिया

१ B जेहरहिं, C जेहरहीं. २ A માં कर्म નથી. ३ B कउण. ४ B संप्रदाने. ५ B खपते. ६ A सेवकाय. B માં लोकाय प्रसीदति એ વાક્ય વધારે છે. ७ B चतुर्थी हेतुक्रिया. ८ B માં આ, તથા આ પછીનાં બધાં વાક્યોને ઠેકાણે માત્ર 'साधु मोक्षनइ कारणि तप करइ । क्रिया कर्ता कर्म पूर्ववत् । साधुः मोक्षाय तपः करोति । આટલો જ ટુંકો પાઠ છે. ९ A માં ·થી. १० B जेहतउ थकउ इत्यादि; C जेहतु तउ हूतउ थकउ इत्यादि. ११ A B सूचीइ १२ A:માં નથી. १३ B योगु हुइ जिहां तिहां पंचमी; C માં योग पंचमी. આવો ખંડિત પાઠ છે. १४ C માં क्रिया कर्ता पूर्ववत् આટલા જ શબ્દો છે. १५ B C માં નથી. १६ A C अपादान. १७ B માં આ વાક્યો નથી. १८ B C एहरहिं. १९ B માં નથી. C માં कहीं. २० B C वस्तुरहिं. २१ B માં નથી, C માં स्वस्वाम्यादिक. २२ B सूचीअइ.

हेतुपणउं न हुइं[1] ते संबंध, तिहां षष्ठी हुइ[2]। चैत्रतणउं धनु गामि छइ। क्रिया कर्त्ता पूर्ववत्। धन कउण तणउं, चैत्र तणउं। तिहां कर्त्ता संबंधि षष्ठी। किहां, गामि। तिहां आधार सप्तमी। चैत्रस्य धनं ग्रामे अस्ति। गुरुतणउं वचन हउं[3] सांभलउं। क्रिया कर्त्ता पूर्ववत्। वचन कउण तणउं, गुरु तणउं। तिहां कर्मसंबंधि[4] षष्ठी। अहं गुरूणां वचनं शृणोमि। एवं काशस्य लेखन्या अक्षराणि लिखति लेखकः। [5]अत्र करणसंबंधि षष्ठी। वलभ्या ब्राह्मणाय गां ददाति। अत्र संप्रदान संबंधि षष्ठी। चैत्रस्य गृहात् चौरो नष्टः। अत्रापादान संबंधि षष्ठी। ग्रामस्य मध्ये लोको वसति। आधार संबंधि षष्ठी। तव गुणानां पारं कोऽपि न प्राप्नोति। संबंध संबंधे षष्ठी[6] ॥

७. जिहां देशि, कालि, जेहनइ विषइः इत्यादि 'इ'कारनइ बोलिवइ जे[7]कर्त्तानउ अथवा जे[8] कर्म्मनउ आधारु[9] हुइ ते अधिकरण। तिहां सप्तमी। चैत्रु[10] ग्रामि वसइ। क्रिया कर्त्ता पूर्ववत्। किहां वसइ, ग्रामि। तिहां आधारि[11] सप्तमी। चैत्रः ग्रामे वसति। एवं ग्रीष्मे तपति सूर्य्यः। लोकः स्थाल्यां धान्यं पचति। आकाशे चन्द्रं पश्यति ॥

[कृदन्त विचार]

८. करी, लेई देई, इत्यादि बोलिवइं एक उक्ति माहि पूर्व्विली क्रिया आगलि 'ई'कार जिहां बोलाइ[12] तिहां क्त्वा प्रत्यय—त्वा इसिउ आवइ, अव्यय। क्त्वानइ कर्म्मि द्वितीया। शिष्य शास्त्र पढी अर्थ पूछइ। पूछइ इसी क्रिया। कउण पूछइ, शिष्य[13]। जु पूछइ सु कर्त्ता। तिहां प्रथमा। किसउं[14] पूछाई, अर्थ। जं पूछाइ तं[15] कर्म्म। तिहां द्वितीया। किसुं करी पूछइ,[16] पढी। तिहां क्त्वा प्रत्यय। किसुं[17] पढी, शास्त्र। तिहां क्त्वानइ कर्म्मि द्वितीया। शिष्यः शास्त्रं पठित्वा अर्थं पृच्छति। एवं पुस्तकं छोटयित्वा। गुरून् वन्दित्वा[18] ॥

९. करिवा, लेवा, देवाः इत्यादि बोलिवइं एक उक्ति माहि जिहां उत्तरक्रिया आगलि 'वा' कहीयइ[19] तिहां तुम् प्रत्ययः। तुं इसिउ आवइ, अव्यय। तुम्‌नइ कर्म्मि द्वितीया। [20]कुंभकार घडा घडीवा माटी अणइ। क्रिया, कर्ता, कर्म्म पूववत्। किसुं करिवा, घडिवा। तिहां तुम् प्रत्ययः। किसा घडिवा, घडा। तिहां तुमनइ कर्मि द्वितीया[21]। कुम्भकारो घटं घटयितुं

---

१ B માં આ વાક્ય નથી. २ B માં આ શબ્દ નથી; C માં આ વ્યાકયની જગ્યાએ **ते संबंधी षष्ठी** આટલું ટુંકું વાક્ય છે. ३ B **हुं**. ४ A **संबंधे**. ५–६ આ બંને અંકો વચ્ચે રહેલાં સંસ્કૃત વાકયો B પ્રતિમાં નથી. ७ C **जेह**. ८ B C માં નથી. ९ A **आधार** १० A **चैत्र**. ११ A **आधार**. १२ A **कहीइ**; C **कहायइ**. १३ B માં આ બે વાકયો નથી. १४ A **किसुं**, B **किसूं**. १५ A **पूछीइ**. १६ B C માં આ શબ્દ નથી. १७ C **किसउं**. १८ C માં **अर्थं पृच्छति शिष्यः** આટલું વાક્ય અંતે વધારે છે. १९ A **कहीइ**; C **कहायइ** २०–२१ આ બંને અંક વચ્ચેનાં વાકયો A પ્રતિમાં પડી ગયાં છે.

मृत्तिकां आनयति । एवं गृहं कर्तुं ॥

१०. करी, लई देई:[1] इत्यादि आगलि [2]जाणइ–सकइ ए बिहुंनइ[3] योगि तुम् हुइ । उदारो दातुं जानाति; शक्नोति वा ॥

११. करतउ, लेतउ;[4]करती, लेती; करतउं, लेतउं;[5]इत्यादि घणी परि समानकालिक क्रिया शब्दनइ छेहि जिहां 'तउ'[6] बोलीयइ तिहां त्रिहुं लिंगे, साते विभक्ते, २१ वचने, शतृ प्रत्यय अन् इसिउ आवइ । अनइ शतृ विशेष्य आगलि जे लिंग विभक्ति वचन हुइं ते शतृ प्रत्यय परइं आणीयइं[7]। अनइ शतृनइ कर्म्मिं द्वितीया हुई[8]। करसणी हल खेडतउ बीज वावइ । क्रिया, कर्त्ता, कर्म[9] पूववत् । करसणी किसउं करतउ, खेडतउ । तिहां शतृ प्रत्यय । करसणीनइ पुंलिंग प्रथमा,[10]एक वचनु । किसुं खेडतउ, हलु । तिहां शतृनइ कर्म्मि द्वितीया । कर्षकः हलं खेटयन् कृषन् वा बीजं वपति । एवं नद्यः पानीयं वहन्त्यः पथिकान् प्रीणयन्ति । छात्राणि शास्त्रं पठन्ति विवेकवन्ति भवन्ति । विनयं कुर्वतः शिष्यस्य विद्या समागच्छति ॥

१२. करणहार, लेणहार, देणहारः इत्यादि बोलिवइं[11]क्रिया शब्दनइ अंति जिहां 'णहार' कहीयइ[12] तिहां त्रिहु लिंगे, ७ विभक्ते, तृच्प्रत्यय 'तृ' इसिउ [13]आवइ । अनइ तृच्ना[14] विशेष्य आगलि जे लिंग, विभक्ति, वचन हुइं ते तृच् प्रत्यय[15] आगलि आणीयइं,[16] अनइ तृचनइ कार्म्मि षष्ठी हुइ । धर्म्म करणहार जीव सुख प्रामइ[17] । क्रिया, कर्त्ता, कर्म्म पूर्ववत् । किसुं (कउण) करणहार, जीवु[18] करणहार । तिहां तृच् प्रत्यय, जीवनइ विशेषणि पुंलिंग प्रथमा एक वचन । किसुं करणहार, धर्म्म । तिहां तृच्नइ कर्म्मि षष्ठी । धर्म्मस्य कर्त्ता जीवः सुखं प्रप्नोति । एवं शीलस्य पालयित्री स्त्री स्वर्गं लभते । दानस्य दातृ कुलं याचकान् प्रमोदयति ॥

१३. कीजतउ, लीजतउ,[19]पढीतउ; कीजती; कीजतउं; इत्यादि बोलिवइ जिहां 'ईजतउ' 'ईजती' 'ईजतउं'[20] कहीयइ तिहां आनश् प्रत्यय; 'यमान' इसिउ[21] आवइ । तेहना कर्म्म आगलि जे[22] विभक्ति, लिंग हुइं ते आनश् प्रत्यय[23] परइं आणीयइं[24] । आनश् तणा कर्त्ता परइं तृतीया हुइ । सूत्रधारइ[25]कीजतउ प्रासाद; अथवा कीजती वावि; अथवा कीज-

१ A C માં આ શબ્દ નથી. २ B માં આ નથી. ३ A **बिहुंइनइ.** ४ B માં અહિં **देतउ** શબ્દ વધારે છે. ५ A C માં **करतु लेतुं.** ६ A C માં **त.** ७ A **आणीई.** ८ B C માં નથી. ९ A માં નથી. १० C **प्रत्ययमा.** ११ B **०वइ.** १२ B **कहीइ** १३ A **इसउ.** १४ A **तृच्नइ.** १५ B C માં આ શબ્દ નથી. १६ A **आणीइ.** १७ A **पामई.** १८ A C **जीव.** १९ B C માં આ શબ્દ નથી. २० B **ईत, ईजत.** C **ईंत, ईजत.** આવો પાઠ છે. २१ A **इसउ.** २२ B **जु.** २३ B C માં આ શબ્દ નથી. २४ A **आनीइ.** २५ A **सूत्रधारिं.**

तउं देहरउं; लोक देखइ। देखइ इसी क्रिया। कऊण देखइ, लोक। जु देखइ सु कर्त्ता। तिहां प्रथमा। किसउं देखइ प्रासाद। जं देखीयइ[१] तं कर्म्म। तिहां द्वितीया। प्रासाद किसउ,[२] कीजतउ। तिहां आनश् प्रत्यय[३]। प्रासादनइ विशेषणि पुलिंग द्वितीया एक वचनु[४]। कीणइं कीजतउ, सूत्रधारिइं। तिहां आनश्नइ कर्त्ता तृतीया। सूत्रधारेण क्रियमाणं प्रासादं लोकः पश्यति। एवं स्त्री लिंगे–क्रियमाणां वापीं। नपुसकलिंगे–क्रियमाणं देवगृहं। एवं निष्पद्यमानं पात्यमानं विनश्यमानं चीयमानं वा[५]॥

१४. तथा, शिष्य शास्त्र पढतउ हउं सांभलउं; इत्यादि बोलिवइं जे क्रिया शब्द आपणा कर्त्ता-नउं विशेषण हुइ;[६] तिहां शतृप्रत्यय। अथवा,[७] शिष्यिइं शास्त्र पढीतउं हउं सांभलउं। इत्यादि बोलिवइं जे क्रियाशब्द आपणा कर्म्मनउं विशेषण हुइ, अथवा शिष्यिइं[८] पढीतउं हउं सांभलउं; इत्यादि बोलिवइं भावनउं विशेषण हुइ; तिहां बिहु स्थानके आनश् प्रत्यय हुइ। शिष्यं शास्त्राणि पठन्तं अहं[१०] शृणोमि। शिष्येण शास्त्रं पठ्यमानं शृणोमि। शिष्येण पठ्यमानं शृणामि॥

[अथ उक्तिभेद]

१५. जिहां उक्तिमांहि कर्त्तानी अपेक्षां क्रिया आगलि अर्थु अनइ १।२।३ वचन हुइं ते कर्त्ता उक्ति 'पाधरी' कहीयइ। तिहां कर्त्ता आगलि प्रथमा, कर्म्म आगलि द्वितीया। क्रिया आगलि प्राहिं परस्मैपद तणां नव वचन हुइं। मैत्रः कटं करोति। मैत्रौ कटं कुरुतः। मैत्राः कटं कुर्वन्ति। त्वं कटं करोषि। इत्यादि ९॥

१६. जिहां कर्म्मनी अपेक्षां क्रिया आगलि अर्थ अनइ १। २। ३ वचन हुइं, अनइ जिहां क्रियानइ छेहि वर्त्तमानकालि 'ईयक, ईजत'[१२] बोलाइं ते कर्म्मि उक्ति 'वांकुडी' कहीयइ। तिहां कर्त्ता आगलि तृतीया, कर्म्म आगलि प्रथमा। क्रिया आगलि आत्मने पदतणां नव वचन हुइं। छात्रेण छात्रैर्वा ग्रन्थः पठ्यते, ग्रन्थौ पठ्येते, ग्रन्थाः पठ्यन्ते। लोकेन त्वं स्तूयसे। [१३]युवां स्तूयेथे। यूयं स्तूयध्वे। एवं, अहं स्तूये। आवां स्तूयावहे। वयं स्तूयामहे[१४] इति[१५] ९ वचनानि। अनइ जिहां वांकुडी उक्तिमांहि कर्म्म न हुइ ते भाविं उक्ति कहीयइ।

---

१ A देखइ. २ A किसउ छइ. ३ C માં નથી. ४ A वचन. ५ A માં वा નથી. ६ A માં નથી. ७–८ આ બે અંક વચ્ચેનો પાઠ B પ્રતિમાં નથી. ९ B C शिष्यि. १० A માં નથી. ११ A માં આ બે શબ્દો, वचन શબ્દ પછી મૂકેલા છે. १२ B માં આ શબ્દ નથી. १३–१४ B C માં આ વાક્યો નથી. १५ B, C इत्यादि.

तिहां कर्त्ता आगलि तृतीया । क्रिया आगलि आत्मनेपदनउं पहिलउं एकू ज वचन हुइ । त्वया मया महात्मभिर्वा पठ्यते । एवं उक्ति त्रिहु भेदि–कर्त्तरि १ कर्म्मि २ भावि ३; अथवा बिहु भेदि पाधरी १ वांकुडी[1] २ । अनइ जिहां कर्म्म कर्त्ता पणइं बोलाइ ते कर्म्मकर्त्ता उक्ति कहीयइ, तिहां कर्त्ता न ऊचरीयइ । कर्म्म आगलि कर्त्ता भणी प्रथमा । अनइ क्रिया आगलि आत्मनेपद । ए ग्रंथ सुखिं[2] पढायइ । अयं ग्रंथः सुखेन पठ्यते । इहां[4] सोनउं सहुंगउं वीकाइ । इह सुवर्णं समर्घं विक्रीयते । तथा प्राकृत उक्ति सकर्मक अतीत कालि कर्मिं जि बोलीयइ । श्रावकिइं[5] देवु[6] पूजिउ । श्रावकेण देवः पूजितः । एवं क्षुल्लकेन पुस्तिका छोटिता। अनइ जेह उक्ति माहि गत्यर्थ अथवा अकर्म्मक क्रिया हुइ, तिहां प्राकृत वार्त्ता अतीत कालि कर्ता बोलायइ । चैत्रु गामि गिउ । चैत्रः ग्रामं गतः, अगच्छत् वा । एवं आगतः, चलितः । तारउ ऊगिउ । तारकः उद्गतः, उदगच्छत् वा । एवं लोक ऊठिउ, सूतउ, जागिउ । लोकः उत्थितः, सुप्तः, जागरितः ।

१७. अमुकइ हुंतइ करतइ; अथवा अमुकइ हुईतइ अमुकइ कीजतइ; अथवा अमुकउ करइ इत्यादि बोलिवइ कर्त्ता कर्म भाव आगलि जिहां 'इ'कार कहीयइ, अनइ जीणइं आपणी क्रियां कैरा मूलगां कर्त्ता क्रिया सूचीयइं ते भावलक्षण त्रिहुं भेदि हुइ। तिहां सप्तमी । तिहां कर्त्तां भावलक्षण, अकर्मक, सकर्मक हुइ[7] । मेघि वरिसतइ मोर नाचइं । नाचइं इसी क्रिया । कउण नाचइं मोर । जे[8] नाचइ ते[9] कर्त्ता । तिहां प्रथमा । किसइ हुंतइ नाचइं मेघि । तिहां भावलक्षणि सप्तमी । मेघि किसुं करतइ, वरिसतइ[10] । तिहां शतृ प्रत्यय, मेघनइ विशेषणि सप्तमी । मेघे वर्षति मयूरा नृत्यन्ति । गुरि अर्थु कहतइ प्रमादीउ ऊंघइ । क्रिया कर्त्ता पूर्ववत् । किसइ हुंतइ, गुरि; तिहां भावलक्षण सप्तमी । गुरि किसउं करतइ, कहतइ[11] । तिहां शतृ प्रत्यय। गुरुनइ विशेषणि सप्तमी । किसउं कहतइ अर्थु[12] । तिहां शतृनइ कर्म्मि द्वितीया। गुरावर्थं कथयति प्रमादी निद्रायते । १ ।

१८. कर्म्मि भावलक्षण यथा–गोपालिइं[13] गाए दोहीतीए चैत्रु[14] आविउ । क्रिया कर्त्ता पूर्ववत् । किसइ हुंतइ, गाए । तिहां भावलक्षणि सप्तमी । गाए किसीए, दोहीतीए; तिहां आनश् प्रत्यय । गाइनइ विशेषणि सप्तमी । किणइं दोहीतीए गोपालिइं[15] । तिहां आनश् प्रत्ययना कर्त्ता आगलि तृतीया[16] । गोपालेन गोषु दुह्यमानासु चैत्र आगतः । एवं उपवेश्यमानासु, उत्थाप्यमानासु, चार्यमाणासु, पाय्यमानासु वा । २ ।

१ B पाधरी, वांकी. २ A सुखिइ. ३ B पढीइ. ४ A, C इहं. ५ B श्रावकि. ६ A देव. ७ B, C માં આ વાક્યને બદલે तत्र कर्ता भावलक्षणं अकर्मकं सकर्मकं च આવું સંસ્કૃત વાક્ય છે. ८ B जु. ९ B, C सु. १०. A, B वरसतइ. ११ A, B માં આ શબ્દો નથી. १२ A अर्थि. १३ B गोपालि. १४ A चैत्र. १५ B, C पींडारइं. १६ C માં આ વાક્ય ત્રુટિત છે; B માં तिहां आनशनइ कर्ता तृतीया આવો પાઠ છે.

१९. भावि भावलक्षण यथा—चैत्रिइं गाईतइ मैत्रु नाचइ। क्रिया कर्त्ता पूर्ववत्। किसइं हुंतइ, गाईतइ। तिहां भावलक्षण सप्तमी। आनश् प्रत्यय। किणइं[1] गाईतइ, चैत्रिइं[2]। तिहां आनशन्-इ कर्त्ता तृतीया। चैत्रेण गीयमाने मैत्रो नृत्यति। एवं वाद्यमाने,[3] दीयमाने, आगम्यमाने, विलोक्यमाने वा। २।

२०. एवं त्वयि कार्य्यं कुर्वति, कुर्वाणे आनश्;[4] चक्राणे कान;[5] चकृषि क्वसु। ग्रामं गते क्तः, मतवति क्तवतु। शास्त्रस्याध्यापके णक्। अध्येतरि तृच। यदि वा त्वया कार्ये कृते चैत्रः समागच्छतीत्यादि॥

[शब्द संग्रह]

ऊपरि इत्यर्थे उपरि, उपरिष्टात्।

हेठि अधः, अधस्तात्।

कन्हइ पार्श्वं, समीपं।

—एषां योगे षष्ठी।

जं तं यत् तत्।

जइ यदि।

तउ तर्हि।

जां यावत् } अनयोर्योगे द्वितीया।
तां तावत् }

पाखलि परितः पक्षतलेन वा।

—अनयोर्योगे क्रमाद् द्वितीयाषष्ठ्यौ।

पाखइ विना, अंतरेण, ऋते।

—एषां योगे द्वितीया।

ईहं इह, अत्र, अस्मिन् स्थाने वा।

तिहां तत्र, तस्मिन् स्थाने वा।

जिहां यत्र, यस्मिन् स्थाने वा।

किहां क्व, कुत्र, कस्मिन् स्थाने वा।

हवडां अधुना, इदानीं, संप्रति, सांप्रतं, एतर्हि।

तिवारइं तदा, तदानीं, तस्मिन् काले वा।

किवारइं कदा, कस्मिन् काले वा।

जिवारइं यदा, यस्मिन् काले वा।

अनेरीवार अन्यदा, अन्यस्मिन् काले वा।

सदैवइ सदा, सर्वदा, सर्वस्मिन् काले वा।

एकवार एकदा, एकस्मिन् काले वा।

किम कथं, केन प्रकारेण।

जिम यथा, येन प्रकारेण।

---

१ A, B कणइ. २ A માં નથી. ३ A कथमाने, गीयमाने. ४-५ A मां બન્ને શબ્દો નથી.

तिम तथा, तेन प्रकारेण।

इम इत्थं, एवं।

अहुण ऐषमः, अस्मिन् संवत्सरे वा।

पउर परुत्, पूर्वस्मिन् संवत्सरे वा।

पराॡ परारि।

आजु अद्य।

कालि कल्ये।

गिइ कालि ह्यः, गतकल्ये वा।

आवतइ कालि श्वः, आगामिकल्ये वा।

अनेरइ दीसि अन्येद्युः, अन्यस्मिन् दिवसे वा।

आगलि अग्रे, अग्रतः, पुरः, पुरतः, पुरस्तात्।

पाछलि पश्चात्।

—एषां योगे षष्ठी।

डावागमा वामतः।

जिमणगमा दक्षिणतः।

बिहुंगमा उभयतः।

सविहुंगमा सर्वतः, अभितः परितः।

—एषां योगे द्वितीया।

बाहिरि बहिः, बहिस्तात्।

ऊपिलु उपरितनं।

हेठिलुं अधस्तनं।

आगिलुं अग्रेतनं।

बाहिरलुं बाह्यं।

ताहरउं तव, तावकं, तावकीनं, त्वदीयं।

माहरउं मम, मामकं, मामकीनं, मदीयं।

अम्हारउं अस्माकं, आस्माकं, अस्माकीनं, अस्मदीयं।

तम्हारउं युष्माकं, यौष्माकं, यौष्माकीणं, युष्मदीयं।

तेहतणउं तस्य सत्कं, तदीयं।

जेहतणउं यस्य सत्कं, यदीयं।

अनेरातणउं अन्यदीयं।

एहतणउं एतदीयं, इदमीयं, अदसीयं।

किहतणउं किमीयं।

किसउं कीदृशं, कीदृक्।

जिसउं यादृशं, यादृक्।

तिसउं तादृशं, तादृक्।

अनेसउं अन्यादृशं, अन्यादृक्।

इसउं ईदृशं, ईदृक्।

सरीषउं सदृशं, सदृक्।

जेतलउं यावत्, यावन्मात्रं।

तेतलउं तावत्, तावन्मात्रं।

एतलउं इयत्, एतावत्।

केतलउं कियत्।

जेवडउं यावद्वृद्धं।

तेवडउं तावद्वृद्धं।

केवडउं कियद्वृद्धं।

एवडउं एतावद्वृद्धं।

जेतला यति, यावन्तः।

तेतला तति, तावन्तः।

केतला कति, कियन्तो वा।

जईयलगइ (जहींइलगइ) यदाप्रभृति, यस्मात्प्रभृति यस्मादारभ्य।

तईयलगइ (तहींयंलगइ) तदाप्रभृति, तस्मात्प्रभृति तस्मादारभ्य वा।

अजी अद्यापि।

कांई किमपि।

अईय आ, एवं, ओं, आम्।

अनइ कांई अन्यत्किं।

कु जि कांई को जानाति किं ।
किसउं किं ।
तउ किसउं ततः किम्, ततः कीदृशं वा ।
हुउ अस्तु, भवतु ।
आथ(घ?)उ इतिमुखः ।
ओथउ उन्मुखः ।
जेथउं यतोमुखं ।
तेथउं ततोमुखं ।
हेठउं अधोमुखं ।
केथउं कुतोमुखं ।
ऑरहउं अर्वाकू ।
ऑलिउ अर्वाचीनः ।
पइलउ पराचीनः ।
वरगड वराकर्षकः ।
ऊयत्र उद्यात्रा ।
जानउत्र जन्ययात्रा ।
पहिलउं प्रथमं, आदिमं, आद्यं ।
पाछिलउं पाश्चात्यं, पश्चिमं ।

आगिलउं अग्र्यं, अग्रेतनं ।
छेहिलउं अंत्यं, अंतिमं ।
माहिलउं मध्यमं ।
पूर्विलउं प्राच्यं, प्राक्तनं, पुराणं ।
दक्षिणायां दाक्षिणात्यः , एवमौत्तराहः ।
वेगलुं दूरेत्यं ।
ग्रामतणउ ग्राम्यो, ग्रामीणो वा ।
इहातणउं इहत्यं, अत्रत्यं ।
—एवं तत्रत्यं, कुत्रत्यं ।
केहागमातणउं कुतस्त्यं ।
आजूनउं अद्यतनं ।
परायुं परकीयं ।
अहुणोकउं ऐषमस्त्यं, ऐषमस्तनं ।
परोकउं परुत्तनं, परारोकं, परारितनं ।
कालूणउं कल्यतनं, ह्यस्तनं, श्वस्तनं ।
वहिलउं शीघ्रं, त्वरितं, मंक्षु, सद्यो, झटिति वा ।
मउडउं मंदं, शनैर्वा ।
गाढं अत्यर्थं, गाढतरं, अतीव ।

औक्तिक-पदानि

अथ षट् कारकाणि लिख्यन्ते—छ कारक, सातमउ संबंधु। कर्त्ता, कर्म्मु, करणु, संप्रदानु, अपादानु, संबंधु, आधिकरणु। जु करइ तु कर्त्ता। जं कीजइ तं कर्म्मु। जीण करी क्रिया कीजइ तं करणु। येह देवातणी वाञ्छा, येह रूषइ कांई, धरीइ कांई; तं कारकु संप्रदानसंज्ञकु हुइ। जेहतउ अपाय विश्लेषु हुइ, जेहतउ भयु हुइ, जेहतउ आदान ग्रहणु हुइ, तं कारकु अपादान संज्ञकु हुइ। जेह कन्हइ, जेह माझि, जेह पासि, जेह तणउ, जेह तणी, जेह तणउं, जेहरहिं इत्यर्थे संबंधु। गामि, पाद्रि, षलइ, क्षेत्रि, वनि, पर्वति, माझि, बाहिरि इत्यर्थे आधारु।

(१) कर्त्तां प्रथमा। कर्म्मि द्वितीया। करणि तृतीया। संप्रदानि [चतुर्थी। अपादानि] पंचमी। संबंधि षष्ठी। अधिकरणि सप्तमी।

(२) जउ पाधरी उक्ति तउ उक्त कर्ता। उक्ते कर्तरि प्रथमा। अनुक्तुं कर्म। अनुक्ते कर्मणि द्वितीया।

(३) जु वांकी उक्ति तउ अनुक्त कर्त्ता। अनुक्ते कर्त्तरि तृतीया। उक्तुं कर्म। उक्ते कर्मणि प्रथमा।

(४) कालि भावि सप्तमी। वेला दीसु पक्षु मासु वरसु ऋतु इत्यादि कालः, अमुकइं हुंतइं अमुकुं हौउं इत्यादि भावः।

(५) पाखइ, विना, किशा पाखइ, जेह, त्यहां, विना, योगे द्वितीया-तृतीया-पंचम्याः।

(६) यावद्योगे द्वितीया। परितो योगे द्वितीया। अनाभिप्रतियोगे द्वितीया।

(७) प्रभृतियोगे पंचमी। अर्वाक् योगे पंचमी।

(८) एक आगलि एक वचनु, बिहुं आगलि द्वि वचनु, घणां आगलि बहु वचनु।

[शब्द संग्रह]

[१]

कीधुं	कृतं
लीधुं	गृहीतं
दीधउं	दत्तं
गयउं	गतं
आव्यउं	आगतं
आण्यउं	आनीतं
पढिउं	पठितं
बोल्यउं	उक्तं
मारिउं	हतं
जाणिउं	ज्ञातं
यमिउं	भुक्तं
रहिउं	रहितं
थाकउं }	स्थितं
थ्युउं }	
दीठउं	दृष्टं
पूछिउं	पृष्टं

[२]

करतउ	कुर्वन्
लेतु	गृह्णन्
देतउ	ददन्
जातउ	गच्छन्
आवतउ	आगच्छन्
आणतउ	आनयन्
पढतउ	पठन्
बोलतउ	वदन्, जल्पन्
मारतउ	घ्नन्
जाणतउ	जानन्
जिमतउ	भुञ्जन्
अछतउ }	तिष्ठन्
रहतउ }	
देखतउ	पश्यन्
पूछतउ	पृच्छन्

[३]

कीजतउं	क्रियमाणं
लीजतउं	गृह्यमाणं, लीयमानं
दीजतउं	दीयमानं
ज(जा)ईतउं	गम्यमानं
आवीतउं	आगम्यमानं
आणीतउं	आनीयमानं
पढीतउं	पठ्यमानं
बोलीतउं	उच्यमानं
मारीतउं	हन्यमानं
जाणीतउं	ज्ञायमानं
यमीतउं	भुज्यमानं
रहीतउं }	स्थीयमानं
अछीउं }	
दीसतउं	दृश्यमानं
पूछीतउं	पृच्छ्यमानं

[४]

करी	कृत्वा
लेई	गृहीत्वा

देई	दत्त्वा
जाई	गत्वा
आवी	आगत्य
आणी	आनीय
पढी	पठित्वा
बोली	उक्त्वा
मारी	हत्वा
जाणी	ज्ञात्वा
यमी	भुंक्त्वा
रही } थे }	स्थित्वा
देखी	दृष्ट्वा
पूछी	पृष्ट्वा

[५]

करिवा	कर्त्तुं
लेवा	गृहीतुं
देवा	दातुं
जाइवा	गन्तुं
आविवा	आगन्तुं
आणिवा	आनेतुं
पढिवा	पठितुं
बोलिवा	वक्तुं
मारिवा	हन्तुं
जाणिवा	ज्ञातुं
यमिवा	भोक्तुं
रहिवा } अछिवा }	स्थातुं
देषिवा	द्रष्टुं
पूछिवा	प्रष्टुं

[६]

करणाहरु	कर्त्तुकामः
लेणाहरु	गृहीतुकामः
देणहारु	दातुकामः
जाणहारु	गन्तुकामः
आवणहारु	आगन्तुकामः
आणनहारु	आनेतुकामः
पठणाहारु	पठितुकामः
बोलणहारु	वक्तुकामः
मारणहारु	हन्तुकामः
जाणनहारु	ज्ञातुकामः
× × ×	× × ×
पूछणहारु	प्रष्टुकामः

[७]

करिवुं	कर्त्तव्यं
लेवउं	गृहीतव्यं
देवुं	दातव्यं
जाइवउं	गंतव्यं
आविवुं	आगंतव्यं
आणिवउं	आनेतव्यं
पढिवुं	पठितव्यं
बोलिवउं	वक्तव्यं
मारिवउं	हन्तव्यं
जाणिवउं	ज्ञातव्यं
यमिवउं	भोक्तव्यं
रहिवउं } अछिवउं }	स्थातव्यं
देषिवउं	द्रष्टव्यं
पूछिवउं	प्रष्टव्यं

कीधउं लीधउं दीधउं	इत्यादौ निष्ठाक्तः।
करतुं लेतुं देतुं	इत्यादौ शतृङ्
कीजतुं लीजतुं दीजतुं	इत्यादौ आनश्
करी लेई देई	इत्यादौ क्त्वा
करिवा लेवा देवा	इत्यादौ तुम्।

शक ज्ञा धातु प्रयोगे क्त्वास्थाने तुम्—

करी जाणउं	कर्तुं जानाति
पढी सकुं	पठितुं शक्नोमि

करणहारु लेणहारु देणहारु	इत्यादौ शतृ-कानशौ
करिवुं लेवुं देवुं	इत्यादौ तव्यानीयौ

———

आजु	अद्य
कालि	कल्ये
परम	परेद्यवि
अरिरम	अपरेद्यु
आजूणं	अद्यतनं
काल्हूणउं	कल्यतनं
हवडां	अधुना, इदानीं, सांप्रतं, सांप्रति
हवडांनुं	आधुनिकं, सांप्रतीनं
नहीं तनो वा	नोचेत्
लगइ	प्रभृति, आरभ्य
पाखइ	विना, ऋते
मुहीयां	मुधा
यम	यथा
तिम	तथा
किम	कथं
ईणपरि	इत्थं
जहींय	यदा
तहींय	तदा
कहींय	कदा
अनेकवार	सर्वदा, सदा
एकवार	एककृत्वः।

—एवं वारस्य संख्यायाः कृत्वस्

एकपरि	एकदा
ब्यहु परि	द्विधा, द्वैधं
तृहु परि	त्रेधा, त्रैध्यं
च्युहु परि	चतुर्धा
किहां	कुत्र, क्व
यहां	यत्र
तिहां	तत्र
ईहां	अत्र, इह
अनेति	अन्यत्र
सघले	सर्वत्र
वली	व्याहत्य

तिमइ	तत्कालं
झटकाई	झटिति
जूउं	पृथक्
ताहरुं	त्वदीयं
माहरउं	मदीयं
तम्हारउं	युष्मदीयं
अम्हारउं	अस्मदीयं
ताहरउ	तावकः, तावकीनः
माहरउ	मामकः, मामकीनः
जां	यावत्
तां	तावत्
जेतलुं	यावन्मात्रं
तेतलुं	तावन्मात्रं
एवडुं	एतावन्मात्रं
केतलउं	कियत्
केवडुं	कियन्मात्रं
एतलउं	इयत्
जु	यदि, यतः
तु	ततः
जं	यत्
तं	तत्
जइकिमइ	यदिकिंमपि चेत्
इमै	अन्यथा
इसुं	इति
होउ	एवं
हवं	अथ
हाथल	प्रत्युत
पूठिं	अनु
सामहु	अनु

डाबउ	वाम
यमणुं	दक्षिण
वांकउ	कुटिलः
पाधरु	ऋजु, सरलः
हेठि	अधः
ऊपरि	उपरि
आडउ	तिर्यक्
तिरसउ	तिरश्चीनः
आगिलुं	अग्रे, पुरः
पाछिलु	पाश्चात्यः
सरीषउ	सदृक्, समान, सदृक्षः
किसउ	कीदृग्, कीदृश,कीदृक्षः
इसउ	ईदृक्, ईदृश, इदृक्षः
यसउ	यादृक्, यादृश, यादृक्षः
तिसउ	तादृक्, तादृश, तादृक्षः
अनेसउ	अन्यसदृक्, अन्यसदृशः, अन्यसदृक्षः
तूसरीषु	त्वादृशः
मूंसरीषउ	मादृशः
तम्हंसरीषउ	युष्मादृशः
अम्हंसरीषउ	अस्मादृशः
अरहु	अर्व्वाक
परहु	पराक्
पाखलि	परितः, सर्वतः, विष्वक, समन्तात्, समन्ततः
उगउ मुगउ	अवाग्मूकः
झलझांषसउं	चलच्चाक्षं
ऊधांधलुं	उध्धूलिकं
सूगामणउं	शूकाजनकं
अहिव	विधवा

सूहव	सुधवा
ऊतरिण्यु	उत्तारिततृणं
पढू	प्रतिभू
पढूचउं	प्रतिभाव्यं
उपरीयामणु	उत्कटिकाकुलं रणरणकं वा
ओल्यिउ	अर्वाचीन
पयलु	पराचीनः
विलखउ	विलक्षः
द्रहद्रहवार	जयद्रथवेला
तांगणी	तनुगमनिका
गोई	गोसली, गोप्यसिलाका
ऊकरडी	अवकरोत्करिका
पूंजउ	अवकर

उक्ति च्यहु प्रकारि—कर्त्ता, कर्म्मि, भावि, कर्मकर्त्ता। जउ उक्ति पाधरी हुइ—उक्तिमाहि कर्त्ता कर्म्मु हुइ [?] ते उक्ति कर्त्ता जाणिवी। जु वांकी उक्ति हुइ तु माहि कर्त्ता हुइ, कर्मु न हुइं तउ ते उक्ति भावि जाणिवी। जु कर्म्म फीटी कर्त्ता आविउ हुइ, ते उक्ति कर्म्म-कर्त्ता जाणिवी। कर्त्ता परस्मै पद दीजइ। कर्म्मि भावि आत्मने-पद दीजइ।

पुरुष केता ३। कुण कुण? प्रथमु, मध्यमु, उत्तमु। नामि बोलावीय ते प्रथमपुरुष। तुं तम्हि मध्यम पुरुषु हुइ। हुं अम्हि उत्तम पुरुष।

कांलं केता ३। कुण कुण? वर्त्तमानु, अतीतु, भविष्यु। वर्त्तइ वर्त्तमानु, वर्त्यु अतीतु, वर्त्तसिइ भविष्यु। वर्त्तमान-कालि ३ विभक्ति हुइ—वर्त्तमाना, सप्तमी, पंचमी। अतीत कालि ४ विभक्ति—ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, स्म संयोगि वर्त्तमाना। भविष्यकालि ३ विभक्ति—भविष्यन्ति, आशिः, श्वस्तनी।

करइ, लिइ, दिइ; करत, ल्यथ[थथ?]; करुं, ल्युं, धुं; इसइ बोलि वर्त्तमान कालु. वर्त्तमानानुं परस्मैपदु दीजइ।

कीजइ, लीजइ, दीजइ; कीज, लीज, दीज; कीजुं, दीजुं, लीजुं; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु. वर्त्तमानानुं आत्मनेपदु दीजइ।

करिजे, लेजे, देजे; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु. सप्तमीनुं परस्मैपद दीजइ।

कीजिजे, लीजिजे, दीजिजे; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु. सप्तमीनुं आत्मनेपदु दीजइ।

करइ, लिइ, दिइ; करउ, लिउ, दिउ; इसइ बोलिवइ वर्त्तमानु कालु. पंचमीनुं परस्मैपदु दीजइ।

कीजउ, लीजउ, दीजउ; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु. पंचमीनुं आत्मनेपदु दीजइ।

करतउ, लेतउ, देतउ; करता, लेता, देता; करती, लेती, देती; करतउं, लेतउं, देतउं; इसइ बोलिवइ अतीत कालु. ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षानुं परस्मैपदु दीजइ।

कीधुं, लीधुं, दीधुं; कीधा, लीधा, दीधा; कीधी, लीधी, दीधी; इसइ बोलिवइ अतीत कालु. ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षानुं आत्मनेपद दीजइ।

करिसिइ, लेसिइ, देसिइ; करसुं, लेसुं, देसुं; करिस्यउं, लेस्यउं, देस्यउं; इसइ बोलिवइ भविष्यु कालु भविष्यन्तीनुं परस्मैपदु दीजइ।

करीसिइ, लीजसिइ, दीजसिइ; इसइ बालि भविष्यं कालु. भविष्यन्ती आत्मनेपदु दीजइ।

भविष्यकालि आशीर्वादयोगी आशीर्विभक्ति हुइ; अनइ भविष्य कालि योगि (?) श्वस्तनी विभक्ति दीजइ। भविष्यंतीनी वाणी बोलीइ।

जउ—जु करत, जु लेत, जु देत; इसिइ बोलिवइ अतीत काळु. क्रियातिपत्तीनउं परस्मैपद दजिइ।

जु कीजत, जु दीजत, जु लीजत; इसिइ बोलिवइ अतीत काळु. क्रियातिपत्तिनउं आत्मनेपद दीजइ। कर्त्तौ परस्मैपद दीजइ, कर्म्मि आत्मनेपदु दीजइ।

अथ त्यादि विभक्ति केती, १०। कुण कुण? वर्त्तमाना १, सप्तमी २, पंचमी ३, ह्यस्तनी ४, अद्यतनी ५, परोक्षा ६, श्वस्तनी ७, आशीः ८, भविष्यन्ती ९, क्रियातिपत्ती १०। अकेकी विभक्तिं १८ वचन—९ परस्मैपद तणां, ९ आत्मनेपद तणां।

ति, तस्, अन्ति; सि, थस्, थ; मि, वस्, मस्, इं नव परस्मैपद तणां। ते, आते, अन्ते; से, आथे ध्वे; ए, वहे, महे; इं नव आत्मनेपद तणां।

ति, तस्, अन्ति; इति प्रथम पुरुषः। सि, थस्, थ; इति मध्यमपुरुषः। मि, वस्, मस्; इति उत्तमपुरुषः। ते, आते, अन्ते; इति प्रथम पुरुषः। से, आथे, ध्वे; इति मध्यमपुरुषः। ए वहे, महे; इति उत्तमपुरुषः।

ति, एक वचनु. तस्, द्विवचनु. अन्ति बहुवचनु। सि, एकवचनु. थस्, द्विवचनु. थ, बहुवचनु। मि, एकवचनु. वस, द्विवचनु. मस्, बहुवचनु। एवं सर्वत्र।

जु कर्त्ता प्रथम पुरुष हुइ तु क्रियां प्रथम पुरुष हुइ। जु कर्त्ता मध्यम पुरुष हुइ तु क्रियां मध्यम पुरुष हुइ। जु कर्त्ता उत्तम पुरुष हुइ तु क्रियां उत्तम पुरुष हुइ।

जु कर्त्ता आगलि एक वचनु हुइ, तु क्रिया आगलि एक वचनु। जु कर्त्ता आगलि द्विवचनु, तु क्रिया आगलि द्विवचनु। जु कर्त्ता आगलि बहुवचनु, तु क्रिया आगलि बहुवचनु।

जु कर्त्ता उक्ति हुइ तु कर्त्तानी अपेक्षां विभक्ति दीजइ। जु कर्म्मि उक्ति हुइ तु क्रिया आगलि कर्मनी अपेक्षां विभक्ति दीजइ।

चउकीवटु	चतुष्कपट्ट
वटवालनुं	वर्त्मपालनं
बेहडउं	द्विघटं
गुढउं	गुदगूढं
खिसरहंडी	क्षिप्रसरहिंडिका
ओरसु	अवघर्षः
घरट्टु	घर्षकः
वेसरु	द्विशरीरु
अरतपरत	आकृत्या प्रकृत्या च
बापशरीषउ	पितृसदृशः
अगेवाणु	अग्रानीकं
पाछेवाणु	पश्चादनीकं
मौ (?)	मार्गौकाः, मुक्तौका
बेगडि	विकटशृंगी
मींढी	मिलितशृंगी
फाडी	प्रसतशृंगी
कुंढली	कुंडलितशृंगी
मुहपाखी	परोक्षवादः
लिपसणउं	लिप्स्यायनं
वहलि	वीतवेत्रा
पटांतरं	प्रत्यन्तरं

विज्जाहरी	विजयगृही
कोठउ	कोष्टक
डोकरु	डोल्लकरः
छींडणि	छिद्राटनी
छेकडि	छिद्रकरी
सीरामणु	शीताशनं, शरीराप्यायनकं वा
सउडि	संवृत्तपटी
सीरष	शीतरक्षा
तुलाई	तूलिका
ऊसीसउं	उपधानं
शलाटु	शिलाघटकः
मडि	मड्डिका
खंडायतु	खड्गवित्तः
भथायितु	तूणवित्तः, भस्त्रावित्तो वा
पूणी	पिचुमर्दी
आंडणु	अंगमंडनं
कागु	काक, वायसो वा
वावि	वापी
कूउ	कूपः, अंधुः
तलावु	तडाग, जलाधारः
खडोखली	दीर्घिकाः
....	पडूकरणं
बगाई	जृंभिका
चीपडीउ	चिपटः
गूंहली	गोमुखा
कोसींटउ	कोपसमृद्धः
कायिल्लु	कालिकः
व (च ?) णहडीउ	चनक प्रवर्त्तकः
लुंकडि	लोमकडिका

सवार	सवेला
मांकुण	मत्कुण
कलाखरिउ	कालाक्षरितः, दाणी
घाणिउ	घ्राणितः
दीवाली	दीपालिनी, दीपोत्सवो वा
त्रुटी	त्रिपुटी
धुलहडी	धूलिभटिका, धूलितटी, रजोत्सवो वा
थूंकु	निष्ठीव
आभूयानुं	उद्विग्यमानं
झगडउ	उद्गदः
छयकारु	गेयकारु
चिणोठी	चित्रपृष्ठा, गुंजा, कृष्णलवा
ओंडक	अपराध्या.
ढांकणउं	स्थागनकं
सूणहरउं	शयनगृहं
पथरणउं	प्रस्तरणं
ओढणउं	आच्छादनं
नणंद	ननन्दा
नणदोई	ननान्द्रिपतिः
जमाई	जामाता
नाणिद्रउ	ननान्दृसुतः
भत्रीजउ	भ्रातृजः, भ्रातृसुतः
परीयटु	निर्णेजकः
छीपउ	रजकः
कुतिगीउ	कौतुकिकः
अणगुक	अनग्निपक्वः
फिरक	स्फु[illegible]

पाटूआली	[illegible]
षाणीकणर्उ	षादनपरं
परमूणउं	परमदिव
पुरोकउं	प्राक्वर्षीयं
सरलउ	दीर्घः, प्रलंबः
ऊघडदूघडउ	उद्घटदुर्घटः
कहूआलउ	कोलाहलः
देसानी	छायाकर
मोलीउं }	मूर्द्धवेष्टनं
मोसंधीयुं }	उष्णीषं वा
निलाड	ललाट, निटिलं वा
पोठीउ	पृष्ठवाहक
अरणइ	अरति
रालगुन	राजत्कुलं [?]
किरि	किल
बिमणउं	द्विगुणं
त्रिगुणु	त्रिगुण
चउगुणउं	चतुर्गुणः
चीषलालुं	कर्दमाकुलं, पंकिलं वा
परिवारच्यं	प्रपारितं
मुडइं	मंदं मंदं
वली वली	पुनः पुनः
पालटउ	परिवर्त्तः
पालटिउ	परिवर्तितः
बापडउ	बराकः
बिहरउ	व्यतिकरः
लागु	लग्नः
लगाडिउ	लगितः
पाढलउ	पाठचारः
जुहारु	नमस्कारः

सोहिलउं	सुखावहं
दोहिलउं	दुःखावहं
रुलीयामणउं	रतिजनकं
ऊद्वेगामणउं	उद्वेगजनकं
राउताई	राजपुत्रता
राउत	राजपुत्र
द्रम्मामु	द्रम्ममय
असुणिउ	अपशकुनित
सुण	शकुन
सणउं	स्वप्नं
अंबोडउ	धम्मिल्ल
वीणि	वेणि
मांडहिय	बलात्कारेण, हठाद्वा
घायिंसउं	सहसैव
देहरासरु	देवतावसरः
आरतीयासरु	आरात्रिकावसरः
सर्वोसरु	सर्वावसरः
मोटउ	स्थूल
नान्हउ	लघु, ह्रस्व
कडब	कर्णावा
आरती	आरात्रिक
धूपधाणउं	धूपधाम, धूपदहन-पात्रं
वरांसिउ	विपर्यस्त
वरांसउ	विपर्यास
आखुडिउ	अवस्खलित
घोडाहडि	बाजिशाला, अश्वकुटी वा
रसोयि	रसवती, पाकस्थानं, महानसं वा

भंडारु	भांडागारः, कोशो वा	अभोखणुं	अभ्युक्षणं
मंत्रासरु	(मंत्रावसरः)	ऊलिचउ	उदकोल्लुंचन
हथसाल	हस्तिशाला,	पच्छोकडु	पश्चादोकस्तटं
	गजसदनं वा	पडोसु	प्रत्योकस्
श्रीगरणु	श्रीकरणं	उपवासी	उपोषित
वयगरणउ	व्ययकरणं	फुई	पितृष्वसा
घडांमंची	घटमञ्चिका	मासी	मातृष्वसा
दावडउं	जलयंत्रं	बहिन	स्वसा
अरहट्टु	अरघट्टक	मु(माउः)लाणी	मातुलपत्नी
ऊमकाव्यउं	मत्कारितं	भुजाई	भ्रातृजाया
अवाहूउ	प्रतिकूल	सासू	श्वश्रू
सवाहूउ	सानुकूलः	पीत्राणी	पितृव्यपत्नी
पडीसारउं	प्रतीसारक	पीत्रीयु	पितृव्यक
गुडिउ	गुडितः	माउलउ	मातुल
पाव(खः)रिउ	प्रक्षरितः	फुईहायी	पितृस्वस्रीय
कुजि	को जानाति	माईय (हायी) }	
बलही	बालदधि, बालहिता वा	मास्याही }	मातृष्वस्रीय
बरगडु	वराकर्षक	मालाही	मातुलीय
आनुत्र	यज्ञयात्रा	देशांतरी	देशान्तरिक
जानावासउ	यज्ञावासक	पलवटि	परिवलितपटी
एकउडउ	एकतटिक	पिराणउ	प्रतोद, प्राजिनं, तोत्रं,
घूघटिउ	अवगुंठन		प्रवयणं वा
गमाणि	गवादिनी	चंदौउ	चंद्रोदय, उल्लोच
आहारजाहर	आगमनगमानिका	परीयच्छि	तिरस्करिणी
खाजलु	खाद्यफलं	बाउलु	बुब्बूल
पीजहलु	पेयफलं	आंबिली	चिंचा, चिंचिणी वा
मसाहणी	महासाधनिक	दीवटीउ	दीपवर्तिक
आखउंडली	अक्षपटलिका	चांद्रिणानीलांप	चंद्रायलिप्सा
बलबलीउ	वाचाल, वावदूक	धातखायु	धातुखादकः
मेराथीयुं	मेराथकं	साथ (थः)	संस्था

आद्रहणु	अधिश्रयणं
आहिनाणु	अभिज्ञानं
हराविउ	पराजित
विदाणउ	वितानप्रभाव
कोटील्उ	कुट्टनक
पराल्लु	पलालं
अरडकमल्लु	अर्यटकल्ल (?)
सूआडि	सूतिकागृहं
भोल्उ	मुग्धः
पाहरी	प्राहरिकः
गउखु	गवाक्ष
नीद्रारुखउ	निद्रारुद्धक
ऊंडहणुं	उद्वहनकं
खोडउ	खंजः
पलेवल्उं	प्रदीपकं
न्युंजणउं	नियंत्रकं
गउंछणउं	गुच्छनकं
न्युंछणउं	न्युच्छनकं
छाणावालि	कारीषावली
ऊदेही	उद्वेदिका
आडाबंग	तिर्यक्सूत्रिका
ऊटाटीयुं	उद्दीकनं
कूडछी	कूर्मोच्छूयिका
जोत्रु	योक्त्रु
जूंसरु	युगं
तीन्हउं	तीक्ष्णं
कोटहउं	प्राकारं
गढु	दुर्गः

अथ क्रियाव नानि

मांजइ	परमार्ष्टि
जागइ	जागर्ति
गायइ	गायति
होमइ	जुहोति
गूंथइ	गुथ्यति
करइ	करोति, कुरुते, विदधाति, विधत्ते,
धरइ	दधाति, धत्ते, धरति, धारयति
दि	यच्छति, राति, दत्ते, दाति
लि	नयति, आदत्ते, गृह्णाति, विगृह्णाति
ऊडइ	उत्पतति, उड्डीयत
आचरइ	आचरति
पवित्रइ	पवित्रयति, पुनाति
ऊपणइ	उत्पुनाति
धूपइ	धूपायति
क्षरइ	क्षरति
वीकइ	विक्रीणाति, विक्रीते
मर्दइ	मुद्नाति (मृद्नाति ?)
मिलइ	मिलते
अडइ	अड्डते
छूटइ	छुट्यति
ऊठइ	उत्तिष्ठति
नीठइ	निस्तिष्ठति
किरागिरइ	किरगिरति
वखाणइ	व्याख्यायति
छिछ (पः)इ	छुपति, मृशति

वावइ	वपति
चोरइ	मुष्णाति, चोरयति
ऊखेडइ	उत्कीलयति
डांभइ	दम्नाति
परव	प्रपा
वारइ	वारयति, निवारयति, निषेधयति
प्रल्हालइ	प्रक्षालयति
पालुइ	पल्लवयति
थाकइ	स्थानमाहरति, स्थगयति
फूटइ	स्फुटति
पतीजइ	प्रत्येति, प्रत्ययति, प्रतीयते
पल्हथीयि	विपर्यस्यते
जाम(य?)इ	जायते
हुइ	भवति
खाजइ	कण्डूयति
उलंभइ	उपालंभते
ऊटंटइ	उट्टंकयति
क्रमइ	क्रामति
आयसिइ	आदिशति
वाधइ	वर्द्धते
निबीजइ	निर्विज्यते
कुपइ	कुप्यते, क्रुध्यति, रुष्यति
तोलइ	तूलयति
सहइ	क्षमति, तितिक्षति, सहते, क्षाम्यति, मृष्यति
मरइ	म्रियते, विपद्यते
आखुडइ	आस्खलति
फडफडइ	फटफटायते
शपइ	शपति, शप्यते इत्यादि

तिष्ठति गच्छ दृशुज्वलौ
स्पृहस् पृच्छति नी पचक् पठौ।
क्षिप् भणौ विश मुंच् षिच् कृषौ
त्यज दहौ तरति स्तु चल भ्रमौ ॥ १ ॥
लिखन् मोखन् जिघ्रति वर्षे
पिब् पतेऽथ जि जीव परस्मै।
यज् वपौ वद् वेञ् वसौ वह–
स्तुभयमाह भ्वादिगणानां ॥ २ ॥
वर्तते च रमते वृधू व्यथौ
याचते च लभते च शोभते।
कंपते च घटते सुखायते
प्रारभते सहते तथात्मने ॥ ३ ॥
अद् हन् इण् भा स्वा शास्ति वा जागृ माति
स्वप रुद वच त्राया म्नात्यदादिः परस्मै।
दुह लिह् च दा धत्ते भयं स्तुड् भीह्री
निगदित इह लोके आत्मने चूङ् धातुः ॥४
व्यध् हृष्टौ कुप् तृत्यनशो पुष
म्लिषू दुषौ क्लिब शाम्यति तुष्यति
भ्रम कुपौ चदिवादि परस्मै
तम विदौ गदौ गदितस्तु किलात्मा ॥ ५ ॥
विश् वृश् क्लिश दुश शकापौ
स्वादिगा निगदितास्तु परस्मै।
रुदभिदा छिद भुंजयुजौ वा
भुजयुता उभयं च रुधादि ॥ ६ ॥
तनोति डुकृञ् भयं तनादिः
स्तृपू ग्रह ह्री मुष लुड विक्री क्रियादयः।
पार्युभयं च चिंति लोके सभाजिश्चुरताडिभिक्षौ॥
अविकरण कर्तरि। दिवादेर्यत्। नु स्वादेः। तनादेरुः। ना क्र्यादेः। चुरादेश्च। इमानि सर्वाणि विकरणसूत्राणि ॥

परस्मैपदह्यस्तनीं यावत्। आत्मनेपदे सर्वत्र सर्वधातुके यण्।

लज्जासत्तास्थितिजागरणं
वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् ।
शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्था
धातव एते कर्मविहीनाः ॥ १ ॥

[कर्मणि वाक्य]

ईणं लाजीइ	—	अनन ह्रीयते
तइं भलइं हुईइ	—	त्वया भव्येन भूयते
मइं रहीइ	—	मया स्थीयते
पाहरीं जागीइ	—	यामकेन जागर्यते
एयु वाधइ	—	असौ वर्द्धते
एयु जीवइ	—	असौ जीवति
वयरी मरीइ	—	अरिणा म्रियते

त्वया सुप्यते । बालेन रम्यते । दानिना शोभ्यते । कर्त्तरि कर्म्मण्यपि । कर्म्म नागच्छति ।

अथ द्विकर्म्मको भावः

दुहि याचि रुधि प्रच्छि भिक्षचिञा-
नुपयोगिनिमित्तमपूर्वविधौ ।
ब्रुवि शासिगणेन च यत्सते (?)
तदकीर्त्तितमाचरितं कविना ॥१॥
जयत्यर्थयती मंथि चतुर्थो दण्डयतीत्यपि ।
एभिः सह बुधैर्ज्ञेया द्वादशैव दुहादयः ॥ २ ॥
नीवह्योर्हृकृषोश्चापि गत्यर्थानां तथैव च ।
द्विकर्म्मकेषु ग्रहणं ण्यन्ते कर्म च कर्मणः ॥ ३ ॥

असौ गां दोग्धि पयः । विप्रो राजनं गां याचते । असौ गामवरुणद्धि व्रजं । पान्थश्छात्रं पन्थानं पृच्छति । असौ [illegible]क्षमवचिनोति फलानि । विप्रः शिष्यं धर्मं ब्रूते । पण्डितः शिष्यं धर्ममनुशास्ति । काऽपि बुद्ध्या ग्रामं छात्रशतं जयति । प्रार्थयति राजानं ग्रामं गुरुः । मथ्नन्ति स्म जलधिं देवासुराः ।

[द्विकर्मक वाक्य]

एयु देवदत्तु गर्गनुं सउ दंडइ	असौ देवदत्तो गर्गान् शतं दण्डयति

ए छाली गामि लिइ — अजां नयति ग्रामं
ए कुंभतणु भारु हरइ—असौ कुंभ भारं हरते
वहति ग्रामं भारं देवदत्तः ।
कर्षति शाखां ग्रामं देवदत्तः ।

इनन्तेऽपि द्विकर्म्मा—
भोजयति पायसं छात्रं कश्चित् ।
बोधयति बटुं ग्रन्थं गुरुः ।
वाचयति श्लोकं पुत्रं पिता ।

कर्म्मण्यपि द्विकर्म्मका भवन्ति—
दुह्यते गौः पयो गोपालेन ।
याच्यते राजा गां विप्रेण ।
रुध्यते गौर्व्रजं गोपालकेन ।
पृच्छयते छात्रः पंथानं पान्थेन ।
अवचीयते वृक्षः फलानि पुरुषेण ।
अनुशिष्यते छात्रो धर्म्मं पण्डितेन ।
प्रार्थ्यते राजा ग्रामं गुरुणा ।
—एवं सर्वत्र ।

पूर्वकर्त्तरि षष्ठी, कर्म्मणि षष्ठी, करणषष्ठी, संप्रदानषष्ठी, अपादानषष्ठी, संबंधिषष्ठी, निर्द्धारणषष्ठी, कालि भावि षष्ठी, अधिकरणषष्ठी; एते षष्ठीभेदाः । सर्वत्र षष्ठीबाधकानि कारकाणि ।

तइं गामि जाइवउं	—	गन्तव्यं ते ग्रामे
मइ घरि रहिवउं	—	मम गृहे स्थातव्यम्

कृत्यानां कर्त्तरि वा षष्ठी—

एयु शास्त्र वाचणाहरु	असौ शास्त्राणां वाचयिता

एयु वेद पढणहारु—असौ वेदानामध्येता

—णक्तृचोः कर्मणि षष्ठी, इतरेषां द्वितीया ।

एयु अन्नि ध्रायु—असौ अन्नानां तृप्तः

विसनरु काष्ठि न ध्रायु-अग्निः काष्ठानां न तृप्यति

पाणी भरिउं सरोवर—जलस्य पूर्णं तडागम्

कोठउ कणि भरिउ—कणानां पूर्णोऽयं कोष्ठकः

—इत्यर्थे पूरिसुहितार्थानां करणे षष्ठी ।

एयु प्रधानरहिं लांच भइसि दि	असावमात्यस्य लञ्चया महिषीं ददाति
एयु पोष्यवर्गरहिं यावज्जीवु भरणु पोषणु दि	असौ पोष्यवर्गस्य यावज्जीवं भरणपोषणं ददाति

ऐहिकफलार्थसंप्रदाने षष्ठी, पारलोके च चतुर्थी—

यथा—कश्चित् ब्राह्मणेभ्यो गां ददाति,

असौ ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां वितरति,

—इत्यर्थे पारलौकिके निःस्पृहे चतुर्थी ।

भूतंतउ प्राणीया भला	भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः
प्राणीयां तु मतिजीवी भला	प्राणिनां मतिजीविनः श्रेष्ठाः

—इत्यर्थे अपादाने निर्द्धारणे षष्ठी, सप्तमी च भवति—

मनुष्यमाहि ब्राह्मण श्रेष्ठ	मनुष्येषु ब्राह्मणाः श्रेष्ठाः
गाईमाहि काली गाइ घणुं दूधु	गोषु कृष्णा संपन्नक्षीरा गौः

—इति सप्तमी च भवति ।

बांभणनउं घर—ब्राह्मणस्य गृहम्

व्यासनउं ग्रामु—व्यासस्य ग्रामः

—इति संबंधि षष्ठी ।

लोक विक्रमादित्यु राउ स्मरइ	लोको विक्रमादित्य-राज्ञः स्मरति
एयु बोल्या प्रयोग संभारतउ श्लोक नींपजावइ	असावुक्तानां प्रयोगानां स्मरन् श्लोकान् निष्पादयति
श्रीवासुदेव दैत्य मारइ	श्रीवासुदेवो दैत्यानां निहन्ति
राउ बांभणना वयरी मारइ	राजा विप्राणां वैरिणां घ्नाति

—इत्यर्थे स्मरणहिंसार्थानां प्रयोगे कर्मणि षठी ।

एयु देवतणइ अर्थि फूलपत्री मेलइ	असौ देवताभ्यः पुष्पपत्राणामुपस्कुरुते
एयु श्राद्धतणइ अर्थि चोषा मुग मेलइ	असौ श्राद्धाय तंदुलमुद्गानामुपस्कुरुते

—इति करोतेः प्रतियत्ने कर्मणि षष्ठी ।

एयु दोरी सापु भणी जाणइ	असौ रज्जुं सर्पस्य जानीते
एयु तेलु घीउ भणी जाणइ	असौ तैलं घृतस्य जानीते
एयु एकलउ विदेशि जातउ भयतउ पीलउ पुरुषभणी जाणइ	असौ एकाकी विदेशं व्रजन् भयात्कीलकं नरस्य जानीते

—इत्यर्थे संभ्रान्तिज्ञाने जानातेः कर्म्मणि षष्ठी ।

सुखदुःखाभ्यां करणे द्वितीया—

एयु सुखिहिं दीहाडा नींगमइ	असौ सुखं दिनानि निर्गमयति

एयु दुःखिं द्रव्यु उपार्जइ | असौ दुःखं द्रव्यमुपार्जयति

हेत्वर्थे तृतीया—

राउ लोकपाहिं करसणु करावइ | राजा लोकैः कर्षणं कारयति

ब्राह्मणु शिष्यमाहिं पोथउं लिखावइ | विप्रः शिष्येण पुस्तकं लेखयति

—इति हेतु कर्त्ता। कालाध्वभावदेशानां कर्म्मसंज्ञा—

वैष्णवु राति च्यारइ पुहुर जागइ | रजन्याश्चतुरो यामान् जागर्त्ति वैष्णवः

सात मसवाडा नइ वहइ | सप्तमासान्नदी वहति

क्वापि कृतो हीने कर्म्मणि प्रधानक्रियापेक्षया द्वितीया न भवति—

तइं वयरी आणी बांधिवउ | त्वयारिपुरानीय बध्यतां

विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्

ईणं हु व्यारीउ द्रव्यु लीधउ | अनेनाऽहं विप्रतार्य द्रव्यं गृहीतः

—गत्यर्थकर्मणि चतुर्थी वा—

ग्रामं गच्छति, ग्रामाय गच्छति असौ ।

कर्म्मप्रवचनी येश्च अनु—अभि—प्रति—एते कर्म्मप्रवचनीयाः । एषां योगे द्वितीया ।

अनुशब्दः पृष्ठे अभिज्ञाने मध्ये सन्मुखे समीपे सहार्थे—

तु पूठि — त्वामनु

पर्वतनइ अहिनाणि गामु वसइ | पर्वतमनु नगरं वसति

आंबामाहि कोइलि वासइ | सहकारमनुकोकिला कूजति

वृक्ष सामहुं आभउं — वृक्षमन्वभ्रपटलम्

देवालय कन्हलि तीर्थु वहइ | देवालयमनु तीर्थं तिष्ठति

तइसउं वात करइ — त्वामनु वार्त्तां करोति

गुरु साम्हु ऊठइ — असौ गुरुमभ्युत्तिष्ठति

ग्रामि दीहाडी प्रतिं एकु द्रम्मु लहइ | ग्रामे प्रतिदिनं द्रम्मैकं लभते

एयु ब्राह्मणप्रतिं भक्ति बोलइ | असौ प्रतिविप्रं भक्तिं जल्पति

उभयतः परितः सर्वतो योगे द्वितीया—

देवालय बिहुंगमे वड दीसइं | देवालयमुभयतो न्यग्रोधा....

घरपाषलि वाडि करइ | गृहं परितो वृतिं करोति

गाम सविहुंगमा क्षेत्र वाव्यां | ग्रामं सर्वतः क्षेत्राण्युप्तानि

उपर्यधोऽधीनां सामीप्य एव कर्म्मद्वित्वे—

ऊपरि ऊपरि गामु हेठलि हेठलि नगरु | उपर्युपरि ग्रामं, अधो अधो नगरम्

अदूरे एनोऽपंचम्या, एनप्रत्ययान्तयोगे द्वितीया—

गाम दाहिणगमइ ढूकडी वाडी | ग्रामं दक्षिणेन निकटं वाटिका

गामबिहुं विचि नदी | ग्रामद्वयमन्तरा नदी

नगरनइं उत्तर गमइं ढूकडउ पर्वतु | नगरमुत्तरेण निकषा पर्वतः

समयाहाधिगन्तरान्तरेण युक्ता द्वितीया—

तू कन्हलि — त्वां समया

एयु भुंडउ — एनं धिग्

गाम बिहुं विचि नदी—ग्रामद्वयमन्तरा नदी

तूं पाषइ — त्वामन्तरेण

मूं पाषइ — मामन्तरेण

[समास प्रकरण]

द्विगुर्द्वन्द्वोऽव्ययीभावः कर्मधारय एव च ।
तत्पुरुषो बहुव्रीहिःषट् समासाः प्रकीर्त्तिताः॥१
पदे तुल्याधिकरणे विज्ञेयः कर्मधारयः ।

(१) जीणं समासि बि पद तुल्याधिकरण हुइं सु समासु कर्मधारयसंज्ञिक हुइ.

नीलं उत्पलं—नीलोत्पलं
उत्तमः पुरुषः—उत्तमपुरुषः

[संख्यापूर्वो द्विगुरिति ज्ञेयः]

(२) जीणइं समासि संख्या गणितु पूर्वपदि बोलइ ते समास द्विगु जाणिवउ.

सप्तऋषयः । पञ्चाम्राः
पञ्चानां मूलानां समाहारः—पञ्चमूली

विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु ।
समस्यन्ते,समासो हि ज्ञेयस्तत्पुरुषस्य च ॥

(३) जीणं समासि द्वितीयालगइ छ विभक्ति आगिलइं पदि सरसी मेलीयि सु समासु तत्पुरुषु जाणिवउ.

ग्रामं गतः—ग्रामगतः
नखैर्निर्भिन्नः—नखनिर्भिन्नः
ब्राह्मणाय देयं—ब्राह्मणदेयम्
मञ्चात्पतितः—मञ्चपतितः
राज्ञः पुरुषः—राजपुरुषः
अक्षेषु शौण्डः:—अक्षशौण्डः

स्यातां यदि पदे द्वे तु, यदिवास्य बहून्यपि ।
तान्यन्यस्य पदस्यार्थे बहुव्रीहि........॥

(४) जीणइं समासि त्रि पद अथ घणां पद अनेरा पद तणइ अर्थि मेलाइं तेयु समासु बहुव्रीहि जाणिवउ; अनइ बहुव्रीहि समासि यद् शब्द छेहि प्रयुंजीइ.

(क)	घणउ गुड छइ जीण लाडू	प्रभूतो गुडो यस्मिन् मोदके स प्रभूतगुडो मोदकः
(का)	सदाचार बांभणु जीणइं गामि	सदाचारा विप्रा यस्मिन् ग्रामे स सदाचारविप्रो ग्रामः
(कि)	घणां निर्मलां पाणी जीणं नदी	प्रभूतानि निर्मलानि उदकानि यस्यां नद्यां सा प्रभूतनिर्मलोदका नदी
(की)	पामी विद्या जेहि पुरुषि	संप्राप्ता विद्या यैर्नरैः ते संप्राप्तविद्या नराः
(कु)	निर्मलबुद्धि विप्र वैद्य सुभट अछइं जीण राज भुवनि	निर्मलबुद्धिका विप्रा वैद्य, सुभटा यस्मिन् राजभुवने तत् निर्मलबुद्धिविप्रवैद्यसुभटं राजभुवनम्
(कू)	रुलीयायित कीधा जीणं बांभण	तोषिता विप्रा येन स तोषितविप्रः
(के)	ऊगिउ वृक्षु जीणइं क्षेत्रि	प्ररूढो वृक्षो यस्मिन् क्षेत्रे तत् प्ररूढवृक्षं क्षेत्रम्
(कै)	ढूकडी गंगा जीणइं देशि	आसन्ना गंगा यस्मिन् देशे स आसन्नगंगो देशः
(को)	सरीषउं नामु जेहनउं	सदृशं नाम यस्य स सनामा
(कौ)	सरीषउं गोत्रु जेहनउं	सदृशं गोत्रं यस्य स सगोत्र

द्वन्द्वसमुच्चयो नाम्नोर्बहूनां वापि यो भवेत् ।

(६)जीणं समासि बिहुं नामनउ समुच्चयु, अथ घणां नामनउ समुच्चयु ते समासु द्वंद्व जाणिवउ.

नरश्च नारायणश्च—नरनारायणौ ।
पीठं च छत्रं च उपानच्च—पीठछत्रोपानहम् ।

ब्राह्मणाश्च क्षत्रियाश्च वैश्याश्च शूद्राश्च—
ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः ।
—चकारबहुले द्वंद्वः ।
पूर्वं वाच्यं भवेद्यस्य सोऽव्ययीभाव इष्यते ।

(६) जीणं समासि अव्ययपद संयुक्त पूर्वपद वाच्यु हुइ सु समासु अव्ययीभाव जाणिवु.

गामनइ पाषइ अधिकरी प्रवर्तइ | अधिग्रामं नरः

सामीप्ये अव्ययीभावः—

घर कन्हलि वृक्षु — उपगृहं वृक्षः
वृक्ष कन्हलि घरु — उपवृक्षं गृहम्
बांभणनउ अभावु—ब्राह्मणानामभावः अब्राह्मणम्
माषीनउ अभावु—मक्षिकानामभावो निर्म्मक्षिकम्

अनुयोगः पश्चादर्थे—

बांभण पाछलि शिष्य — अनुविप्रं शिष्यः
राजा पाछलि सेना — अनुराजं सेना
वर पाछलि गीत गाती स्त्री | अनुवरं गानगायन्त्यो नार्यः
केदारसमीपि सरस्वती — अनुकेदारं सरस्वती
ये ये वडा ते ते मान लहइं | यथावृद्धं मानं लभन्ते
ये ये लहुडा ते ते यमिवा बइसइं | यथालघु भोक्तुमुपविशन्ति
एयु जेतला बांभण तेतला निर्वाप दिइ | असौ यावद्विप्रं निर्वापान् ददाति
जेतलां खांडां तेतला राजपुत्र | यावत्खड्गं राजपुत्राः
तेतला छात्र तेतलां पोथां | यावच्छात्रं पुस्तकानि
ब्राह्मणसिउं जाइ — सविप्रो याति
साकरसिउं दूध पीइं — सशर्करं पयः पिबति
पुत्रसिउं यमइ — सपुत्रो भुङ्क्ते

—अव्ययीभावे सहशब्दस्य सभावः ।

पारे मध्ये अन्ते योगे द्वितीया—

समुद्रमाहि रत्न नीपजइं | मध्ये समुद्रं रत्नानि निष्पद्यन्ते
नइमाहि माछा हींडइं | मध्ये नदीं मत्स्या विचरान्ति
पाणीनइ पारि देवाल्यु | पारेजलं देवालयानि
पाणीनइ छेहि वृक्षु — अन्तेजलं वृक्षः
तलाव विचि देहरउं —अन्तस्तडागं देवगृहम्
गाम विचि वडु — मध्येग्रामं वटः

परिशब्दो वर्ज्जने—

पाटण टाली किहां वसीइ | परिपत्तनं क्वापि नोष्यते
नास्तिक टाली कुण पापीउ | परिनास्तिकं कोऽपि न पापी

आङ् यावदर्थे मर्यादाभिविधौ—

आ गृहं — यावद्गृहम्
आ ग्रामं — यावद्ग्रामम्

एवं अव्ययीभाव समास नपुंसकलिंगीयु जाणिवउ.

अथ तद्धितप्रत्यया लिख्यन्ते

मजीठ राती साडी—माञ्जीष्ठा साटिका
हलदूआं वडां — हारिद्राणि वटकानि
—इति रागयोगात् अण् ।
मघाभियुक्ता रात्रिः दिनं मासो वा—माघी रात्रिः, माघं दिनं, माघो मासः ।

फागुण मास- तणी पूनिम	फाल्गुनी पूर्णिमा

—एवं सर्वत्र नक्षत्रयोगे अण् ।

लाष रातउ कांबलउ	लाक्षिकः कम्बलः
....	लाक्षिकी साडी

—इति लाक्षारक्तार्थे इकण् ।

कागनउं टोलउं—वायसं (काकं) वृन्दं

अंगनानउं वृंदु—आंगनं (यौवनं) वृन्दम्

पुरुषतणुं समवायु — पौरुषम्

—इति समूहे अण् ।

पुरुषात् समूहे एयण्—

पुरुषतणउ समूहु—पौरुषेयम्

स्त्रीतणउ समूहु—स्त्रैणं वृन्दम्

स्त्रीनी सभा—स्त्रैणी परिषत्

स्त्रीनुं धनु—स्त्रैणं धनम्

पुरुषनउं वृंदु—पौंस्नं वृन्दम्

—स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ ।

उष्ट्रा उक्ष राजन्य राजन् वत्स मनुष्याणां समूहेऽकण्—

ऊंटनउ समूहु—औष्ट्रकम्

वृषभनउ समूहु—औक्षकम्

रायतणउ समूहु—राजन्यकं, राजकम्

वत्सनु समूहु—वात्सकम्

मनुष्यनउ समूहु—मानुष्यकः

ग्रामजनबन्धुसहायानां समूहे तल्—

ग्रामतणु समूहु—ग्रामता

जननउ समूहु—जनता

बंधुनउ समूहु—बंधुता

सहायीयांनउ समूहु—सहायता

गजात् समूहे घटा—

हाथियांनउ समूहु—गजघटा

धेनुहस्तिशब्दात् समूहे कण्—

धेनुनउ समूहु—धैनुकम्

हाथियांनउ समूहु—हास्तिकम्

गुणतत्त्वभूतेन्द्रियविषयशब्दास्त्रकरणानां समूहे ग्रामो वक्तव्यः—

गुणनु समूहु—गुणग्रामः

एवं तत्त्वग्रामः । भूतग्रामः । इंद्रियग्रामः । विषयग्रामः । शब्दग्रामः । अस्त्रग्रामः । करणग्रामः ।

केशशब्दात् समूहे हस्तपक्षपाशा भवन्ति—

केशनउ समूहु—केशहस्तः केशपक्षः केशपाशः

तरुपद्मिनीकुमुदकमलादिभ्यः समूहे षंडो वक्तव्यः । समस्तवृक्षतृणगुल्मजातिभ्योऽपि—

तरूनउ समूहु—तरुषंडम्

[एवं] पद्मिनीषंडम् । कुमुदषंडम् । कमलषंडम् ।

कर्म्मदूर्वादितृणादिभ्यः काण्डो वक्तव्यः—

कर्मनउ समूहु—कर्मकांडम्

दूर्वानउ समहु—दूर्वाकाण्डम्

तृणानु समूहु—तृणकांडम्

आदिग्रहणात्—

अंधारानउ समूहु—तमस्काण्डम्

गणिकानां समूहे यण्—

गणिकानु समूहु—गाणिक्यम्

अश्वानां समूहे ईयः—

अश्वनउ समूहु—आश्वीयः

प्रमाणे अर्थे द्वयसट् दघ्नट् मात्रट् प्रत्यया भवन्ति—

कडिसमा गहूं—कटिदघ्ना गोधूमाः

गूडांसमी षाइ—जानुद्वयसी परिखा

कांधसमुं पाणीं—स्कन्धद्वयसं जलं स्कन्धमात्रं वा

पदन्त्यात्—इति अदितिभ्यो यण्—

दैत्यानां समूहो दैत्यं, आदित्यानां समूह आदित्यम्

प्यु व्याकरणु जाणइ—इत्यर्थे वैयाकरणः

सूत्रपुराणन्यायमीमांसेतिहासवेदेभ्यो वेत्त्यधीतेऽर्थे इकण्—

सूत्रु पढइ जाणइ—असौ सूत्रिकः

एवं पौराणिकः । नैयायिकः । मैमांसिकः । ऐतिहासिकः । वैदिकः ।

सुवर्णनां आभरण—सौवर्णान्याभरणानि

रूपानां पात्र—राजतानि पात्राणि

कर्प्पासनां वस्त्र—कार्प्पासानि वस्त्राणि

हरिणनउं चांबडउं—हारिणं चर्म्म

मृगतणउं मांसु—मार्गं मांसं

वाघतणां पद—वैयाघ्राणि पदानि —तस्येदमर्थेऽण् ।

विकृतिवाचिनःप्रकृतावभिधेयायां हितेऽर्थे ईयो यश्च—

अंगाररहिं हितूउं काष्ठ—अंगारीयाणि काष्ठानि

षीला योग्य हितूउं लाकडउं—शकव्यं दारुः

बाणरहिं हितूउ शरकड—इषव्यः शरःकाण्डः

कूडीरहिं हितूउं चर्म—कुतव्यं चर्म्म

प्रासादयोग्य हितूई ईट—प्रासादीया इष्टिकाः

भाणायोग्यु हितूउं कांसउं—भाजनीयं कांस्यम्

गाडायोग्यु हितूउं लोहडउं—शाकटीयं लोहम्

करवतरहिं हितूउं चर्म्मु ....

विसनररहिं हितूउं काष्ठ—कृशानव्यं काष्ठम्

षांड योग्यहितूई सेलडी—षंडव्या इक्षुः

इति उवर्णान्तशब्दात् यः हितऽर्थे, अन्यत्र ईयः—

वत्सरहिं हितूउ—वत्सीयः

घोडारहिं हितूउ—अश्वीयः

पुरुषु राजानीं परि दीसइ—इत्यर्थे उपमाने वति—पुरुषो राजवत् दृश्यते ।

चपलपणउं—इत्यर्थे तत्वौ भावे—

चपलता, चपलत्वं, चापल्यम् ।

अभिव्याप्तौ संपद्यतौ च सातिर्वा देये त्रा च—

राजा गामु बांभणायतु करइ	राजा ग्रामं श्रोत्रियसात्करोति

देव आयतुं करइ — देवत्रा करोति

वरुआयती कन्या संपजइ	वरत्रा संपद्यते कन्या

क्षेत्रु बिमणइ त्रिमणइ — द्विगुणाकरोति त्रिगुणाकरोति क्षेत्रं—इत्यर्थे डाच् ।

दाडिमु नींकोलइ—निःकुला करोति दाडिमम्

मृगु वींधइ—सपत्राकरोति मृगम्

महिषु बाणि आहणइ—निष्पत्राकरोति महिषं

कणनउ संचकारु आपइ	सत्याकरोति कणाम्

आंषिं ग्रहीयि रूपु—चाक्षुषं रूपम्

कानि सांभलीयि शब्दु—श्रावणः शब्दः

पाहणि पीस्या सातू–दार्षदाः सक्तवः
ऊखलि षांडचा मुग–औदूखला मुद्गाः
घोडे वहीयि रथु–आश्वो रथः
च्युहु वहीयि गाडुं–चातुरं शकटम्
चौदसि दीसइ राक्षसु–चातुर्दशं रक्षः
–इत्यर्थेऽण् ।
गामेचउ–ग्राम्यः, ग्रामेयः,ग्रामीणः
नदीनउं जलु–नादेयं जलम्
दक्षिणदिशिउ–दाक्षिणात्यः
पश्चिमीउ–पाश्चिमात्यः
पूर्वीयु–पौरस्त्यः
अहांनउ–इहत्यः
तिहांनउ–तत्रत्यः
किहांनउ–कुत्रत्यः
यहांनउ–यत्रत्यः
.... पार्वतीयानि जलानि
वर्षाकालुनउ मेघु–प्रावृषेण्यो मेघः
शरत्कालनउ तिडकउ–शारदिक आतपः
हैमंतनु वायु–हैमनः पवनः
सांझणउं–सायंतनम्
घणदीहुं–चिरन्तनम्
घणे दिहाडे आव्यु–चिरेणागतः
थोडे दिहाडे आविउ–अचिरेणागतः
वडी वार लगाडइ–विलंबते
साहइ–अवलंबते

म दीधु, म लीधु, म कीधु–आक्षेपना योगे शतृडानशौ ।

मा योगेऽन्वाक्रोशे इति सूत्रं–मा कुर्वन्, मा कुर्वाणः, मा ददत्, मा ददानः

जु करत, जु लेत, जु देत–इत्यर्थे क्रियातिपत्ति यत् यदिचेत् योगे क्रियातिपत्तिः । पाते वा सप्तमी ।

जु किमइ हुं घरि जात तु एयु मइं गामि न मोकलत	यदि अहं गृहं यायां तदयं मां ग्रामं न प्रस्थापयेत्
जु किमइ एयु गामि न जात चोरु बळद न लयेत	यदि असौ ग्रामं न गच्छेत् ततश्चौरो बलीवर्दान् हरेत्
जे किमइ एयु लेत तु द्राम न पडत	असौ गोधूमांश्चेद् गृह्णीयात् द्रम्मास्ततो न

अतीते स्मृत्युक्तौ अभिज्ञा भविष्यन्ती–

जाण अहो पुरुष आपणि लहुडा थ्या वस्त्र पहिरता	स्मरसि पुरुष वयं लघुत्वे बहुमूल्यानि वासांसि परिधास्यामः
पुरअहे दीहाडे मिष्टान्न यमता	मिष्टान्नं भोक्ष्यामः

ननु शब्दयोगे पृष्ठप्रतिवचनोत्तरे अद्यतनी पूर्वादेः उत्तरपदे वर्त्तमानाभावात् हस्तलेख्यं अकार्षीत् ननु करोमि भोः । कथं ब्राह्मणं शूद्रान्नं भोजयेत् । अन्यायमेव । क्रियासमभिहारे सर्वत्र हि–स्वौ भवतः । ब्राह्मण यमिसिं यमिसिं–ब्राह्मणा भुंक्ष्व भुंक्ष्व

तम्हि कहउ कहउ आपणी वात	यूयं कथय कथय निजां वार्त्तां
अम्हि गामि जास्युं जास्युं	वयं ग्रामं गच्छ गच्छ

कालपुरुषत्रयेऽप्येवम् । क्रियासमुच्चयेऽप्येवम् । नाम्न आत्मेच्छायायां यन् काम्य च गृहीते । गृहकाम्यति ।

दासी बहूवत् मानइ वधूयति दासं नरः ।

एयु लहडउ लघीयान् लघिष्ठः

इत्यर्थे गुणादिष्टे गुण्यंसौ वा पृथ्वादिभ्यो भावेऽर्थे इमनु वा ।

एयु अति पुहुलउ असौ प्रथीयान्, प्रथिष्ठ; प्रथिमा

एयु अति कूंअलउ असौ म्रदीयान्, म्रदिष्ठः । म्रदिमा एवं लघिमा अणिमा महिमा वरिमा गरिमा द्रढिमा । कालिमा मलिनिमा

इष्ठ ईयस ईमनु वा प्रत्यये प्रशस्यस्य श्रो[१] भवति । वृद्धस्य च ज्य[२] । अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ[३] । युवाल्पयोः कन्य[वौ][४] । स्थूलदूरयुवक्षिप्रक्षुद्राणां अन्तस्थादेर्लोपो गुणश्च[५] बहोर्लोपि भू च[६] । प्रियस्थिरस्फिरोरुगुरुबहुलतृप्रदीर्घह्रस्ववृद्धवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्गरबंहत्रपद्राघह्रस्वर्षवृन्दा[७] ।

तद्वदिष्ठेमेयस्यबहुलं प्रत्ययादिलोपश्च ।

व्याकरणनां सूत्रो उपरथी आ सूत्र जेवां वाक्यो ग्रंथकारे स्वयं बनाव्यां होय तेम लागे छे. आ वाक्योनां संवादक पाणिनिनां सूत्रो नीचे प्रमाणे छे.

१ प्रशस्यस्य श्रः । ५–३–६०.

२ वृद्धस्य च । ५–३–६२.

३ ५–३–६३.

४ युवाल्पयोः कनन्यतरस्यां ५–३–६४.

५ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः । ६–४–१५६.

६ बहोर्लोपो भू च बहोः । ६–४–१५८.

७ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रपद्राघिवन्दाः।६–४–१५७.

एयु अतिप्रशस्यु असौ श्रेयान् श्रेष्ठः श्रेमा

एयु अतिवडउ । असौ ज्यायान् ज्येष्ठः ज्यायिमा ।

एयु अतिढूकडउ असौ नेदीयान् नेदिष्ठः, नेदिमा ।

एउ अतिगाढउ साधीयान् साधिष्ठः साधिमा ।

एउ अतिलहुडउ अतिथोडउ असौ कनीयान्, कनिष्ठः, कनिमा ।

एयु अतिमोटउ असौ स्थवीयान्, स्थविष्ठः स्थविमा ।

एयु अतिवेगलउ असौ दवीयान् दविष्ठः दविमा ।

एयु अतिलहुडउ असौ यवीयान् यविष्ठः यविमा ।

एयु अतिवहिलउ असौ क्षेपीयान् क्षेपिष्ठः क्षेपिमा ।

एयु अतिक्षुद्रु असौ क्षोदियान्, क्षोदिष्ठः क्षोदिमा ।

एयु अतिघणउ असौ भूयान् ूयिष्ठः भूयिमा ।

एयु अतिप्रियु असौ प्रेयान्, [प्रेष्ठः] प्रेयनुं हुयिवुं--प्रेमा

एयु अतिस्थिरु असौ स्थेयान् स्थेष्ठः स्थेमा ।

एयु गरूउ वरीयान्, वरिष्ठः वरिमा । गरीयान्, गरीष्ठः, गरिमा ।

एयु अतिबहुलु असौ बंहीयान् बंहिष्ठः
[बंहिमा]
एयु आतिलज्जालु असौ त्रपीयान् त्रपिष्ठः
[त्रपिमा]
एयु अतिदीर्घु असौ द्राघीयान्, द्राघिष्ठः
दीर्घनउं हुवउं द्राघिमा
एयु ह्रस्वु असौ ह्रसीयान् ह्रसिष्ठः
ह्रसिमा।
अतिवृद्ध वर्षीयान् वर्षिष्ठः।

एकस्वराणामदन्तानां च आपागमः।

एयु प्रशस्यु कहइं असौ श्रापयति।
एयु वडु कहइ असौ स्थापयति।
एयु ढूकडउ कहइ असौ नेदयति।
एयु गाढउ कहइ असौ साधयति।
एयु तरुणउ कहइ असौ यवयति
कनयति।

अतिहिं हुइ बोभूयते, बोभूवीति
बोभोति।
अतिहिंजाइ, वली जंगम्यते, जंगमीति,
वलीजाइ जंगंति।
अतिहिं ज्वलइ जाज्वल्यते जाज्वलीति
जाज्वल्ति।
अतिहिं हसइ जाहस्यते, जाहसीति
जाहस्ति।
अतिहिं रहइ तेष्ठीयते, तास्थायते।
अतिहि देषइं दरीदृश्यते दरीदृशीति
दरीदृष्टि।
रीस्थाने लुकि रिरौ वा
दरिदृष्टि, दर्दृष्टि।

अतिहिं नाचइ नरीनृत्यते नरीनृतीति
नरीनर्त्ति नर्नर्त्ति।
अतिहिं वरसइ वरीवृषीति, वरीवृष्टि,
वरिवर्ष्टि, वर्वर्ष्टि।
अतिहिं पूछइ परीपृच्छयते परीपृच्छीति
परिपर्ष्टि पर्पर्ष्टि।
अतिहिं जाइ सरीसिृयते, सरीसरीति
सरीसर्त्ति, सरिसर्ति।
अतिहिं मरइ मरीम्रियते, मरीमरीति,
मरीमर्ति, मर्मर्त्ति।
अतिहिं लिइ नेनीयते, नेनेति।
अतिहिं पचइ पापच्यते, पापचीति पापक्ति।
अतिहिं पढइ पापठ्यते, पापठीति, पापट्टि।
अतिहिं भणइ बंभण्यते, बंभणीति, बंभण्टि।
अतिहिं प्रेरइ चेक्षिप्यते, चेक्षिपीति,
चेक्षिप्ति.
अतिहिं लिखइ वावश्यते, वावशीति वावष्टि.
अतिहिं मूकइ मोमुच्यते, मोमुचीति,
मोमोक्ति.
अतिहिं सींचइ सेसिच्यते, सेसिचीति
सेसेक्ति.
अतिहिं छांडइ तात्यज्यते, तात्यजीति,
तात्यक्ति.
अतिहिं दहइ दंदह्यते, दंदहीति, दंदग्धि.
अतिहिं जपइ जंजप्यते जंजपीति, जंजप्ति.
अतिहिं दोहइ दोदुह्यते, दोदुहीति, दोदोग्धि.
अतिहिं गात्रु नामइ जंजभ्यते, जंजभीति,
जंजब्धि.
अतिहिं रमइ रंरम्यते, रंरमीति, रंरन्ति.
अतिहिं नमइं नंनम्यते, नंनमीति नंनंति.

अतिहिं तरइ	तेतीर्यते, तेतरीति तेतर्ति.
अतिहिं पिसइ	शनीश्रस्यते, शनीश्रसीति, शनीश्रस्ति.
अतिहिं पडइ	पनीपत्यते, पनीपतीति, पनीपत्ति.
अतिहिं लाइ	पनीपद्यते, पनीपदीति, पनीपात्ति,
अतीहिं सूकइ	चनीस्कद्यते, चनीस्कंदीति चनीस्कन्ति.
अतिहिं वूंबइ, विणइ चिणइ	चेकीयते, चेकीयति चेकेति.

हुइवा वांछइ	बुभूषति
रहिवा थाकिवा थाइवा,	तिष्ठासति
जाइवा वांछइ	जिगमिषति
देषिवा वांछइ	दिदृक्षति
बलिवा वांछइ	जिज्वलिषति
हासिवा वांछइ	जिहसिषति
लेवा लांछइ	निनीषति
पचिवा वांछइ	पिपक्षति
पढिवा वांछइ	पिपठिषति
लाषिवा वांछइ	चिक्षिप्सति
भणिवा वांछइ	बिभणिषति
पइसिवा ,,	प्रविविक्षति
मेल्हिवा ,,	मुमुक्षति
सीचिवा ,,	सिसिक्षति
छांडिवा ,,	तित्यक्षति
दहिवा ,,	दिधक्षति
तरिवा ,,	तितीर्षति
सांभलिवा ,,	शुश्रूषति
चालिवा ,,	चिचलिषति
फिरिवा ,,	बिभ्रमिषति
लिखिवा ,,	लिलिखिषति
चरिवा ,,	चुचूर्षति
पूछिवा ,,	पिप्रछिषति
धरिवा ,,	दिधरिषति
रमिवा ,,	रिरंसति
मारिवा ,,	जिघांसति
नाहिवा ,,	सिष्णासति
कहिवा ,,	चिख्यासति
वोलिवा ,,	विवक्षति
वायिवा ,,	विवासति
आश्रयिवा ,,	आशिश्रीषति
सूयिवा ,,	शिशयिषते
दोहिवा ,,	दुधुक्षति
चाटिवा ,,	लिलिक्षति
बीहिवा ,,	बिभीषति
लाजिवा ,,	जिह्रीपति
जूझिवा ,,	युयुत्सति
सुकिवा ,,	शुशुक्षति
नमिवा ,,	निनंसति
खणिवा ,,	चिखासरि(चिखनिष)ति ?
सूंघिवा ,,	जिघ्रासति
पीवा ,,	पिपासति
पडिवा वांछइ	पित्सति
जीपिवा वांछइ	जिगीषति
जीविवा ,,	जिजीविषति
मरिवा ,,	मित्सति
देवा ,,	दित्सति
धरिवा ,,	धित्सति

आरंभिवा ,,	आरिप्सते	करिवा वांछइ	चिकीर्षति
लहिवा ,,	लिप्सति	मरिवा ,,	मुमूर्षति
सेकिवा ,,	सिसिक्षति	स्मारिवा ,,	सुस्मूर्षति
पडिवा ,,	पिपतिषति	करिवा ,,	चिकीर्षति चिकीर्षितवान् चिकीर्षन् चिकीर्षमाणः चिकीर्षिता चिकीर्षितुं चिकीर्षणाय चिकीर्षितुकामः । चिकीर्षितुमनाः । चिकीर्षिता । चिकीर्षकः । चिकीर्षितव्यं । चिकीर्षणीयं । चिकीर्ष्यं ।
पामिवा ,,	ईप्सति		
फाडिवा ,,	बिभित्सति		
जमिवा ,,	बुभुक्षते		
लेवा ,,	जिघृक्षति		
पूजिवा ,,	अर्चिचिषति		
निकोलिवा ,,	ईप्सति		
फाडिवा ,,	निश्चुकोषिषति		
रोयिवा वांछइ	रुरुदिषति		
जाणिवा ,,	विविदिषति	अतिहि होउ	बोभूयितः । बोभूयितवान् । बोभूयमानः। बोभूयते । बोभूयमानः । बोभूयिता । बोभूयितुं बोभूयितुकामः । बोभूयितुमनाः । बोभूइषति बोभूयितव्यं । एवं सर्वत्र
चोरिवा ,,	मुमुषिषति		
चिणिवा ,,	चिचीषति		
चूटिवा ,,	,,		
वीणिवा ,,	,,		
तुणिवा वांछइ	लुलूषति		
पवित्रु करवा वांछइ	पुपूषति		
स्तविवा वांछइ	तुष्टूषति		

उक्तिपदानि समाप्तानि ।

शुभं भवतु ।

प रि शि ष्ट

१४ मा सैकानुं गूजराती गद्य

बालशिक्षामांनां अवतरणो

[कर्ता–संग्रामसिंह; वि. सं. १३३६]

[संज्ञा प्रक्रममां]

स्वर केता १४, समान केता १०, सवर्ण १०, ह्रस्व ५, दीर्घ ५, नामीआ स्वरो १२, संध्यक्षर ४, व्यंजन ३३, वर्ग ५ कचटतप, अघोष १३, घोषवंत २०.

लिंगु ३ पुल्लिंगु, स्त्रीलिंगु, नपुंसकलिंगु; भलु पुल्लिंगु, भली स्त्रीलिंगु, भलुं नपुंसकलिंगु.

[स्यादिप्रक्रममां—]

सि एकवचनु, औ द्विवचनु, जस् बहुवचन.

[कारकप्रक्रममां]

अथ प्रत्येकं विभक्तिप्राप्तिमाह--करइ, लियइ, दियइ इत्यादौ वर्तमाना। १

कीजइ, दीजइ, लीजइ इत्यादौ वक्रोक्तौ कर्मणि वर्तमानाया आत्मनेपदम्।

करिजे, लेजे, देजे, इत्यादौ एकारांतवचने सप्तमी। २

करि, लई, दई इत्यादौ अनुमति(तौ) पंचमी। ३

कीजउ, दीजउ, लीजउ इत्यादौ कर्मण्यात्मनेपदं।

कीधउं, दीधउं, लीधउं इत्यादौ परोक्षा ह्यस्तन्यद्यतन्यौ च। ४–५–६

कालि कीधउं इत्यादौ ह्यस्तन्येव, न परोक्षाद्यतन्यौ।

आजु कीधउं इत्यादौ अद्यतनी, न परोक्षा--ह्यस्तन्यौ।

न कीरीस? (म करि) म लई, म दई, म करिसि, म लेसि, म देसि इत्यादौ माशब्दयोगेऽद्यतनी।

म कीधु, म लीधु, म दीधु इत्यादौ कर्मणि माशब्दयोगे।

जई करत, जई लेत, जई देत, इत्यादौ क्रियातिपत्तिः।

जई कीजत, लीजत, दीजत इत्यादौ कर्मणि क्रियातिपत्तेरात्मनेपदं।

करिसिई, लेस(सि)ई, देसिई इत्यादौ नही करई, नही लियई, नही दियई इत्यादौ भविष्यन्ती।

कीजिसिई, लीजिसिई, दिजिसिई इत्यादौ नही कीजई, नही लीजई इत्यादौ च कर्मणि भविष्यन्त्यात्मनेपदम्। कालि करिसई इत्यादौ श्वस्तनी।

शित्रु जिणिसई, वर्ष शयु(सउ)जीविसई इत्यादौ आशीर्युक्ते भविष्यतिकालः।

अथ कृत्प्रत्ययप्राप्तिमाह-

करतउ, लेतउ, देतउ इत्यादौ कर्तरि वर्तमाने शतृङानशौ।

कीजतउ, लीजतउ दीजतउ इत्यादौ कर्मण्यानश्।

करणाहरु, लेणाहरु, देणाहरु इत्यादौ वर्तमाने वुण्-तृचौ।

कीधउं, दीधउं, लीधउं इत्यादौ अतीते निष्ठा क्वसुकानौ च।

करीउ, लेउ, देउ इत्यादौ क्त्वा।

करिवा, लेवा, देवा इत्यादौ तुम्।

करी जाणुं, पढी सकउ, करिवउ, लेवउ, देवउं इत्यादौ कर्मणि तव्यानीयौ।

करणाहरु, लेणाहरु इत्यादौ भविष्यति काले तुमन्।

अथ विशेषप्रत्ययप्राप्तिमाह-

करावई, कराविवउं, कराविसई, करावतउ, करावी, कराविवा इत्यादौ इनंतात...प्रत्ययाः। —
(उक्तिप्रक्रमः षष्ठः)

शब्दसंग्रह

आजु अद्य
[कालि] कल्ये
परम परेद्यवि
अरीरम अपरेद्युः, अन्यस्मिन्नहनि, अन्येद्युः
अजूणनुं अद्यतनं
काल्हणउं कल्यतनं
हिवडां इदानीं, अधुना, संप्रति, सांप्रतं
हिवडानुं आधुनिकं सांप्रतीनं
नहीत नो वा (?) नो चेत्
लिगई प्रभृति, आरभ्य
पाषई विना ऋते
मुहियां मुधा
यिम यथा
तिम तथा
जाण (जांउ) यावत्
तांउ तावत्
एक वार एकदा
सवई वार सर्वदा, सदा
जहिंयं यदा, यथा (?)
तहिंयं तदा तदानीं
कहिया कदा
अनेरी वार अन्यदा
कीहां क्व, कुत्र
जीहां यत्र
तीहां तत्र
इहां अत्र
अनेतई अन्यत्र
सगलइ सर्वत्र
वलीउ व्यावृत्य, व्याघुट्य
तिमइ तत्काले
झटकई झटिति
जूउ पृथक्
ताहरुं त्वदीयं, भवदीयं
माहरउं मदीयं
तुम्हारुं युष्मदीयं
अम्हारउं अस्मदीयं
सरीषउ सदृशः
किसउ कीदृशः
जिसउ यादृशः
तिसउ तादृशः
ईसउ ईदृशः
यसउ यादृशः
आनेसउ अन्यादृशः
अम्ह सरीषउ अस्मादृशः
तू सरीषउ त्वादृशः
मू सरीसउ मादृशः
तुह्म(म्ह)सरीसउ युष्मादृशः
तसि तर्हि
जेतलु यावन्मात्रं
तेतलु तावन्मात्रं
एतलु एतावन्मात्रं, इयन्मात्रं
केतलु कियन्मात्रं
ओरहु अर्वाक्
परहु परतः
पाषलि परी(रि)तः
सवहि गमा समंतात्, सर्वतः
बाहिरि बहिः, बाह्यं

धुरिलुं आदिमं
छहिलउं अंतिमं
एकपरि एकधा
बिहुपरि द्विधा इत्यादि
छहिंपरि षोढा
अनेकपरि अनेकधा, बहुधा
सवेहिपरि सर्वथा
जडपणउं जडता, जडत्वं, जाड्यं
अहुणउं ऐषमः
पुरु परुत्
उगमुगउ अवाग्मुकः
झडझांसउ चलध्वांक्षकः
उधघलु उधु (द्ध) लिकं
वरगड वराघर्ष (रपक्ष)काः
जानुत्र यज्ञयात्रा
जानावासउ जन्यावासकः
एकउडउ एकते (पटि)डिकः
उसीआलुं अस्पृष्टालयं
घुघटउ अवगुंठनं
वाणिग वादिनी
अउडक अपराव्या
आहरजाहर एहिरे याहिरे
मसाहणी महासाधनिका
अषवडली अउषडली अक्षपटलिक(का)
चांद्रिणुं चंद्रिकालयं
धणीवउ धन्यावयः
छीडणि छिद्राटिनी
नीषणीयामु निक्षीणकर्मा
बलबलीउ वाचालः, वाचाटः
मेराइउ मेराद्यकं

वादलुं वारिदपटलं
अभा(भो)उष अभ्युक्षणं
उलकउ उदकोदंचनं
पछोकउ पश्चादोकः
उपवासीउ उपोषितः
झामलुं ध्यामलं
हियाविउं हृदयार्पितं
दाणी धणी ऋणितः
हेवाउ हेवाकः
फुईहाईउ पितृष्वस्रीयः
मसिहाईउ मातृष्वस्रीयः
पाटूआलि पादप्रहारिणी
अरतउपरतउ आकृत्या प्रकृत्या
बाप सरीषउ च पितृसदृशः
अगीठउं अग्निपीठं
फूटरउं स्फुटतरं
ऊघडदूघडउं उद्घटदुर्घटं
उचीफाड चित्तफाटकाः
निलषणउ निर्लक्षणः
षाणउ तुषाद(र्द)नस्थानं
अहीणउं अधेनुकं
उपरे थाई उपरिस्थाई(यी)
अंधामीची अंधमीलिका
कांकसी कचाकर्ष ॥
ओलाणि अवलंबिनी
हथीयारु हस्ताधारः
गोल गवेला (?)
रउडउ रावा
कऊसीउं कपिशीर्षकं
मुखामुखि मुखामुख्यता

गोगीडउ गोकीटः
औलउ उपालयः
निकउ निष्कः
कल्होडउ कलभोत्कटः
आलीगारु आर्द्रकिकारः
वानयतउ वर्णायत्तः
राउलवायु राजकुलायतः
[ ] पादघातः
दीहदीवी दिनदीपिका
भूराइ भूतराजः
भजवाड भङ्गपातः
पडाइ पताकिका
वाकउकूवडउं वक्रकुब्जं
ऊथूयायनुं (?) ऊचथुयमानं
थूं(धूं)बाथू (धूं)बि मुष्टामुष्टि (?)
वालालुंबी केशाकेशि
पेलावेलि प्रेराप्रेरि
वियारिउ विप्रतारितः
छेतरिउ छलांतरितः
द्रडबडाहिउ द्रवकघातितः

जिगीसा जिघृक्षा
पलकु प्रलुब्धः
अलजउ उत्कंठा
खाजहलउ खाद्यफलं
पीजहलउ पोय(पेय)फलं
लिहाच्छोह लब्धोत्साहः
आकडउ उत्कटः
वाउलउ वार्तालयः
उजाणी उद्यानिका
कडअडउ काष्ठकठिनः
भोगला भुजार्गला
असराहिउं आश्रयं
महरु महत्तरः
देषाविउ दृष्टापेक्षा
अउडीगउ अपमार्गगः
ऊचलउ अपरिचितः
फांटिउ पातितः
सासुहिउ (?) स[ ]तः
वरांसिउ विपर्यस्तः
पच्छाहियउ पश्चाद् हृदयं

इति संस्कारप्रक्रमे प्रथमस्तदक्षराधिकारः

अथ क्रिया

राषइ रक्षति, गोपायति, पाति, त्राति, त्रायते, अवति च

आरंभई आरभते

सांभरइ स्मरति वा ध्या (य)ति च

बोलई जल्पति, निगदति, वक्ति, वदति, भाषते, आह, ब्रवीति, ूते

नासइ नश्यति, पलायते

जिणइ विजयते

जाणई वेत्ति, जानाति, अवगच्छति

बूझइ बुध्यते

परीछइ परीच्छति

जिमइ भुङ्क्ते, अश्नाति, जिमति च

खाअइ भक्षयति, अत्ति, खादति ग्रसतऽपि च ४

अभ्यसइ मनति, अभ्यस्यति

भीषई भिक्षति (ते)

थोभई स्तो (–)भति) स्तभ्नाति च

सीषई शिक्षते

शीषवई अनुशास्ति

विणसइ विनश्यति

विमासइ विमृशति

विचारइ विचारयति, ऊहते

वेवई व्ययति

पडीगइ चिकीत्सति, प्रतीकरोति।

अच्छइ अस्ति, तिष्ठति, विद्यते, आस्ते।

कहइ कथयति, आचष्टे, आख्याति, शंसति।

सोहइ शोभते, भाति, राजति, राजते, चकास्ति च

जाइ गच्छति, याति व्रजति, सरति, एति, अयति वा

आवइ [आगच्छति वि०] आङ्पूर्वा एते धातवः आगमने वर्तन्ते

निकलइ निरस्तु निःपूर्वा निस्सरति

ऊगइ [उद्गच्छति वि०] उदस्तु

आथमइ [अस्तं गच्छति वि०] अस्तमस्तु

त्रासइ त्रस्यति, त्रसति

हालइ चालइ चलति

त्रुटइ त्रुट्यति, त्रुटति

पूजइ पूजयति, अर्चति, अंचति

स्तवइ नुवति, स्तौति, स्तुते, नौति, स्तवीति च।

आपइ अर्पयति

वरसइ वर्षति

नमस्करइ नमस्यति वा नमस्करोति

आराधइ आराधयति, उपास्ते

तपु करइ तपः करोति, तपस्यति वा

कुसणइ कुष्णाति

घासइ घर्षति

भेटइ सभाजयति

वीनवइ विज्ञपयति

सेवइ भजति, भजते, सेवते, श्रयति

वापरइ व्याप्रियते, व्यापृणोति

परा(?प्रा)मइ प्राप्नोति

नाहइ स्नाति

भावइ प्रतिभासते, प्रतिभासति, रोचते वा।

वीषरइ विकिरति, विक्षिपति

साम (समा)रइ समः किरति

पीठ(ड)इ पिष्टयति

परिणइ परिणयति, उपयच्छते, विवाहयति

खंडु(खंजु)हालइ ष(ख)र्जयति
हींडा(डो)लइ आंदोलयति
सरइ पूजइ अलंखलु च (?) पूर्थते
निंदइ निंदति, जुगुप्सते, गर्हते
बांधइ बध्नाति
पडिवचइ प्रतिवक्ति
बीहइ बिभेति
बीहावइ भापयते, भीषयते
उल्लींचइ उल्लंचति
लाजइ जिह्रेति, लज्जते, त्रपते, व्रीड्यति
फिरइ भ्राम्यति, भ्रमति
अणभामेइ अनुपूर्वो भ्रम [अनुभ्राम्यति]
सूंघइ सिं(शिं)घति, जिघ्रति
झाडइ उज्झति, जहाति च त्यजति
सांपडइ संपद्यते
निरषइ निरीक्षते
ऊपजइ उत्पद्यते
परषइ परीक्षते
नीपजइ निष्पद्यते
ऊवेषइ उपेक्षते
ऊभ्रकइ उभ्रकते (?)
पडषइ प्रतीक्षते, प्रतिपालयति
बुहारइ सन्मार्जयति
बालइ ज्वालयति
बलइ ज्वलति
पीअइ पिबति
समारइ समार [च]यति
मुलइ मृदु लुनाति, मृदुलयति
विढइ विध्यति, कलहायते
व्यापइ अश्नुते, व्याप्नोति च

दीषइ दीक्षते
वांछइ वांछति, कांक्षति
तूसइ तुष्यति
रुषइ रूष्यति
पूच्छइ पृच्छति, सूझ्यति
नाचइ नृत्यति
माचइ माद्यति
ऊगाइ उद्गायति
पीडइ पीडयति, बाधते, तुदति
दुमइ दुनाति, दुःखाकरोति, दुःखं करोति,
दुःखयति वा
सुहाइ सुखादेवं [सुखाकरोति, सुखयति]
सांभलइ निशाम्यति, शृणोति; आकर्णयति
विगूपइ विगुप्यति
नरनरइ नदति
थवइ स्थगयति
कडत्थइ कटिस्थ (?) यति
करडइ } कृंतति
काटइ }
लांषइ अस्यति, निरस्यति, क्षिपति
नींषइ निःक्षिपति निर्निस्यति
धोअइ प्रक्षालयति
वीछलइ वेस्तु [विक्षालयति]
घातइ निक्षिपति, प्रक्षिपति
छउंटइ आक्षिपति
खरवल (?)इ अपस्किरति
संधूषइ संधुक्षते
अमायइ अमायते (?)
पुढइ प्रौढायते
चिणइ (नुः स्वादेः ?) चिनोति, चिनुते

साचइ संचिनुते, संचिनोति
चूंटइ अवचिनोति
अउगनाइ अपकर्णयति (अवगणइ ?)
ऊजालइ उज्ज्वलयति
प्रासुइ प्रस्नुते
हुअइ भवति, जायते
छड(खुभ)इ कुप्यति, क्षोभति (?)
चूयइ श्च्योतति–ते
हूादइ हूादते
गांठइ ग्रंथते
थीजइ स्त्यायते
भीजइ क्लिद्यते
ध्यायइ ध्यायति
ऊकलइ उत्कर्षति
वाधइ वर्धते
लहइ पुंसयते
धीजइ कीलति
ऊमटइ उन्मज्जति
वीधइ विध्यति
पढइ अधीते, पठति च
मायइ माति, मिर्मीते
प्रसवइ सोति (?), प्रसवति, प्रसुवति, सूते
सूअइ निद्रायति वा शेते, स्वपिति
नांगइ न्यंगयति, अनंगीकरोति
फ(फे)डइ अपनयति, स्फटयति, अप्यस्यति ।
जुडइ युनक्ति, युंक्ते
उपयागइ वदुपात् [उपयुनक्ति, उपयुंक्ते](?)
रुंधइ रुणद्धि, रुंद्धे
उपरुंधइ उपात् [उपरुणद्धि, उपरुंद्धे]
फांतुरीइ(?) फेरि(?) स्फूजन

पसाअइ प्रसीदति, अनुगृह्णाति
उ(ओ)ढइ अवगुंठते, प्रावृणोति
ववण [वेव]इ व्ययते वो (वा ?)यतेऽपि च
पेअइ प्रात् वा [प्रवयति]
पेलइ नुदति, प्रेरयति
आलिंगइ आलिंगति वा परिष्वजति
वाअइ वादयति
वलइ पश्चाद् व्याघुटते, वलते
छायइ छादयति, आस्तृणोति, स्तृणोति-ते
विस्तरइ / विस्तारइ } विस्तारयति, तनोति, तनुते
लाडइ ललति
पंफे(फे)लइ परामृशति
बलअलइ बलाल्लति
धावइ धावति
मनावइ सान्त्वयति
दउडइ द्रुताटयति
रमइ क्रीडति, दीव्यति रमते
रोअइ रोदिति, परिदेवयति
ढीलइ शिथिलयति
वमइ वमति
लभ(भेल)इ मिश्रयति
लहइ लभते
झांपइ झाष(?)ति
निउंजइ नियंत्रयति
बूडइ बुडति, मज्जति
कुसइ क्रोशति
ऊनूआइ उत्कना(?)ति
...उनूति (?)
कींगाइ केकायते

फिणराइ स्पृहायते
घोडाअइ घंजायते
लुणइ लुनाति, ते
आंबइ प्राप्नोति, घेट(?)ति
आदरइ स्वीकरोति, आद्रियते, अंगीकरोति [अंगी-पूर्वकृतश्च]
घटइ संभवति, घटते
[विघटइ] विघटते
नींकोलइ कृश्च निःकुलापूर्वः [निःकुलयति]
सीझइ सिध्यति
सूझइ शुध्यति
मीचइ मीलति, निमीलयति
ऊपरमइ उत्प्लवते, उत्पतति
अवहसूयति (?)
ऊजाइ उद्याति
स्पर्द्धइ स्पर्धते, मिष(?)ति
वासइ वास्यते ताम्रचूडः
मानइ मन्यते
वरइ वरयति, वृणाति, वृणोति—ते
कुथइ कुथ्यति, कुथ्नाति
मथइ मथ्नाति, मथति
फरलावइ क्वणयति
अलुझइ अलमुज्झति
ढांकइ प्रच्छादयति, पिधत्ते, पिदधाति च
पहिरइ परिदधाति, संवस्त्रयति
प्रसाजइ प्रस्विद्यति
छेदइ छेदयत्ययं, छिन्ते, छिनत्ति
तीमइ तेमयति, क्लेदयति
पडइ पतति
अडवडइ अधःपूर्वः पतः [अधः पतति]

सिणमिणइ शनैर्मिनोत्यब्दः
व(ब)सबसइ बहु स्पंदति भूः
कुरमाइ म्लायति क्लाम्यति
हकारइ आकारयति, आह्वयति अपि
प्रहुइ प्रभृज्जति
छणइ क्षणाति
पइसइ प्रविशति
उंजइ उदंजयति
आसुरडइ आस्वर्दते
आंजइ अंजयति वा अनक्ति
ऊघडइ उन्मीलयति, उद्घटते
फीटइ स्फिटते
सूकइ शुष्क[य]ति, शुष्यति
पतइ समर्थयति वा समापतति
हीयाथ(?)इ हृदयाप(?)ति
ताच्छइ, च्छोलइ } तक्षति, तक्ष्णाति च
कुहइ क्वथति
षूदइ, षूटइ } क्षुन्ते, क्षुणत्ति वा
विसाहइ विसाधयति
[कीणइ] क्रीणाति, क्रीणीते
सीदाअइ सीदति
ऊगटइ उद्वर्तयत्येषः
झूंबइ लंबते
ऊकलंबइ उत्पूर्वः [उल्लंबते]
साहइ अवलंबते
भेदइ भिनत्ति, भिन्ते
सरवइ निस्यंदते, स्रवति
चाटइ लेढि, लीढे

वीआरइ विप्रतारयति
ऊलटावइ उन्मार्गयति
धूजइ कंपते
ध्राअइ तृप्यति, घ्रायत्यपि
खीजइ खिद्यते, ताम्यति
विहंचइ विभजति
षडहडइ किल खटत्पतति
पालटइ परावर्तयति पेरवों
हडहडइ हठाद्धसी (?)ति
ताणइ
काढइ } कर्षति, कृषते(?)
टलवलइ टलद्वलति
गांगिरइ गां गिरति, गां गृणाति वा
गलअलइ गलद्गलति
द्रंफोडइ द्रुतं स्फोटयति
झूझइ युध्यति
धंधालइ द्रुतं धूनयति
वींटइ वेष्टते
ऊवोढइ उद: [उद्वेष्टते]
साम (समे) टइ समः [संवेष्टते]
परीसइ परिवेषयति, परीप्साति
षासइ कासते
वीसमइ विश्राम्यति
पराक (स) इ परे परः (?)
नीसमइ नेः (?)
चडइ चटति, आरोहति
धूणइ धूनयत्येषः-धुनाति, ते, धुवति
अउलवइ अपलपति; अपह्नुते
मोकलइ मुत्कलति, विसृजति, प्रहिणोति
कलकलइ कलं क्वणति

समुहइ सज्जति, समह(?)ति
रुणझुणइ रणद्ध्वनति
तजइ त्यजति
मांजइ मार्ष्टि
डसइ डसति
[गाजइ] गर्जति
गायइ गायति
कु(?)ण इ कु(?)होति
गूच (?) इ गुवति
करइ करोति कुरुते, विधत्ते
धरइ दधाति, धत्ते, धारयति
दिअइ यच्छति; दत्ते, राति, ददाति
लिअइ आदत्ते, गृह्णाति
विग्रहइ [विग्रह्यति]
ऊडइ उड्डीयते अथवा उड्डयते
आचमइ आचमति
पवित्रइ पवित्रयति, पुनाति, पवते
उ [प]णइ उदः पूर्वः [उत्पुनाति, उत्पवते इ०]
धूपइ धूपायति
क्षिरइ क्षरति
वीकइ विक्रीणीते
मरदइ मृद्नाति
मलइ मलते (?)
ऊघडइ उद्घटयति
अडइ अड्डति
छूटइ छुटति
ऊठइ उत्तिष्ठति
नीठइ निः [नितिष्ठति]
किरगिरइ किलगिलति
वघारइ व्याजिघ्रति, [illegible]यति

वषाणइ व्याख्यानयति
वावइ वपति, वपते च
छिवइ छुपते (ति), स्पृशति च
चोरइ मुष्णाति, चोरयति
कषेलइ उत्कीलयति
दंभइ दम्नोति
सकइ शक्नोति
पखारइ प्रचारयति
वारइ निवारयति, निषेधयति
पल्हालइ पर्योर्द्रयति
लेअइ प्रापयति, नयति
पालुअइ पल्लवयति
थाहरइ स्थानमाहरति, स्थानयति
पचारइ प्रत्युच्चारयति
फूटइ स्फुटति
पतीजइ प्रत्येति, प्रत्ययति, प्रतीयते
वरांसीयइ विपर्यस्यति
जाअइ जायते
षाजूअइ कंडुयति, ते
ओलंभइ उपालभते
उच्छूढइ उद्बंधयति
क्रमइ क्रामति
आयसइ आदिशति
वाढइ वर्धयत्ययं
निवीजइ निर्विंचति (?)
लोढइ लुटयत्ययं
सहइ क्षमते तितिक्षते सहते, क्षाम्यति, मृष्यति च
मरइ म्रियते, म्रियते
कुपइ कुप्यति, कुध्यति ईर्ष्यति
आषुडइ आस्खलति

फडफडइ पटपटायते ध्वजा
शपइ शपति
कडकडइ कटकटायते चक्षुः
ऊकदइ उत्कूर्दते
कुकुदइ कुत्परः [कुत्कूर्दते]
सन्यसइ संन्यस्यति
रंजइ रंजयत्ययं
वीछोहइ विरहयति
द्रमद्रमइ द्रमद्रमति
तडइ तटत्यटति
त्रडत्रडइ (त्रुटत्त्रुटति ?)
झाषवइ तर्जयति
षु(?)सइ गा(गो) पायते(ति), लीयते
विलीजवइ वेः (?)
ऊवेगइ उद्वेजयति
हींडइ विचरति, हींडते, चलति
देषइ पश्यति
जोअइ अवलोकते, वीक्षते, अवलोकयति
लोटइ लुट्यति, लोटति
नाथइ नाथति, वृषं तु नस्तयति
धुसइ ध्वंसते
पाठवइ प्रस्थापयत्ययं, प्रहिणोति, प्रेषयत्येषः
षोत्रइ क्षतयत्यसौ
पोषइ पुष्यति पुष्णाति
पुहुंचइ प्रभवति
ससइ श्वसिति
नीससइ नेस्तु [निःश्वसिति]
वीससइ वेस्तु [विश्वसिति], विश्रंभते
फडइ फ (स्फ)टति
ऊपडइ उदः [उत्पतति]

[illegible]पडइ अभ्यंगयत्यग्रं
[illegible]टइ उद्वर्तते
नीमवइ निवर्तते
वर्तइ वर्तते
आवइ आ[illegible] [आवर्तते]
[illegible]रांपइ क्रंदति
[illegible]यति
[गुंफइ] गुंफति
झंपावइ झंपयति, झंपामाप्नोति
गाहइ गाहते
अजूआला (वगाह)इ अवात् [अवगाहते]
मां(सां)कइ मं(शं)कते
गाजइ गर्जति
भांजइ भनक्ति
आवइ [आगच्छति]
[वाइ] वाति
विहाइ विभाति
सीवइ सीव्यति
पीसइ पिनष्टि
घोषइ घोषयति
हणइ हिनस्ति, हंति, व्यापादयति एषः
मारइ मारयति
आभिडइ आभ्यटति
पलवइ प्रलुप्य(?)ति
ऊभूआ(?)इ उद्भवति
गीळगिळावइ किल गिलापयति
चांपइ संबाहयति
हिणहणइ हेषायते
वमइ वमति
बइसइ उपविशति, निषीदति
ऊलषइ उपलक्षयति
ओहटइ अपसरति, विरमति
संभोरइ विसर्जयति
मोकलावइ मुत्कलापयति, आपृच्छतेऽपि
गंधाअइ गंधायते, गंधयति
पडुच्छइ प्रतिपृच्छति
पिसइ श्रं(स्रं)सते
ओठंभइ अवष्टभ्नाति, अवष्टंभति, अवष्टभतेऽपि
सांखइ संख्याति
पलाणइ पर्याणयति
सूजइ स्व(श्व)यति(ते)
सूजवइ शोफयति
दूषइ दुष्यति
दुहइ दोग्धि दुग्धे च
वाटइ वर्तयति
परत(?)इ प्रात्तरेः [प्रतरयति]
षडषडइ षटत्करोति
उपगरइ उपात् कृः उपकरोति
निराकरइ निराकरोति
फरकइ स्फ(स्फु)रति
वाह[र]इ व्याहरति
रहइ रह(?)ति
भडहडइ कृ भटतः [भटत्करोति]
ह(!)ठुइइ कृ अधशः [अधःकरोति]
छेकइ छेतः करोति
छींकइ छीतः क्षौति (छीत्करोति, क्षुत्करोति)
हडहडइ कृ धटतः [धटत् (हट) [illegible]ति]
हाकइ हात; [हाकरोति]
फूंकइ फूत; ([illegible]करोति)

जाकइ जातः [जात्करोति]
चूकइ चूतः [चूत्करोति]
यूकइ यूतः (यूत्करोति)
थूंकइ थूतः (थूत्करोति), निष्ठीवति
चींचूइ चीसः कृ (चीत्करोति)
मेल्हइ मुंचति
छाटइ सिंचति
लोपइ लुंपति
लींपइ लींपति
मागइ (मार्गयति), याचते वा
घूमइ घूर्णते वा
धाअइ धावति, धावते च मुचादिषु

अथ कर्मकर्तरि

राचइ रच्यते
वाजइ वाद्यते
दाझइ दह्यते
खाजइ खाद्यते
घासइ घृष्यते
जणाइ ज्ञायते
फटइ विदीर्यते
कराइ क्रियते
लूणअइ लूयते

इति संस्कारप्रक्रमे द्वितीयः क्रियाधिकारः । इत्थं शब्द-क्रियोक्तिरन्याप्यूह्या ।

इति संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां संस्कारप्रक्रमः ।

आराधना

(सं० १३३० मां लखेला ताडपत्रमांथी)

ज्ञानाचारि· पुस्तक पुस्तिका संपुट संपुटिका टीपणां कबली उतरी ठवणी पाठा दोरी प्रभृति ज्ञानोपकरण अवज्ञा, अकालि पठन अतिचार विपरीतकथनु उत्सूत्रप्ररूपणु अश्रद्दधानप्रभृतिकु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्यु भक्षितु उपेक्षितु प्रज्ञाहीनत्वु जिनभुवन आसातना अधोयति देवपूजा गुरुद्रव्यग्रहणु गुरुनिंदा द्रव्यलिंगिएसउं संसर्गु बिंबआशातना स्थापनाचार्यआशातना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टि-प्रसंसा मिथ्यादृष्टिपरिचिउ ए पांच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुनपरिग्रह ए पांच अणुव्रत दिगुविरति भोगपरिभोगविरति अनर्थदंडविरति ए तिन्नि गुणव्रत । सामायिकु देसावकासिकु पौषधु अतिथिसंविभागु ए च्यारि सिक्ष्याव्रत; ईहतणइ विषइ जु कोइ अतिचारु आसेवियउं सु हुं आलोयहं । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसंक्षेपु रसत्यागु कायक्लेशु संलीनता षट्विधबाह्यतपतणइ विषइ प्रायश्चित्तु विनउ वैयावृत्यु स्वाध्यानु(यु?) कायोत्सर्ग षड्विधआभ्यंतरतपतणइ विषइ जु अतीचारु सु हुं आलोयहुं । वीर्याचारि संतइ बलि संतइ वीर्जि जु धर्म्मानुष्ठानि उद्यमु नहीं कियउं सु हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु अरिहंतु देवता सुसाधु गुरु जिनप्रणीत धर्म्मु सम्य-क्त्वदंडकु ऊचरहु,सागारप्रत्याख्यानु ऊचरहु चऊहु सरणि पइ सरहु । परमेश्वर अरहंत सरणि सकलकर्म निर्मुक्तसिद्ध सराणि संसारपरीवारसमुतरणयानपात्रमहासत्त्वसाधु सराणि सकलपापपटलकवलनकलाकलितु केवलिप्रणीतु धर्म्मु सरणि सिद्ध संघ गण केवलि श्रुत आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु व्रतिणी श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पुढविकाइ जीव आउकाइ जीव तेउकाइ जीव वाउकाइ जीव वणस्पइकाइ जीव बेइंदिय त्रैंदिय चउरिंद्रिय जलचर स्थलचर खेचर जि जंतु ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पनर कर्मभूमि जि मनुष्य त्रीस अकर्मभूमि जि मनुष्य तीहिं मिच्छा मि दुक्कडं । छप्पन अंतरद्विपतणा मनुष्य तीहं मिच्छा मि दुक्कडं । सात नरकतणा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यंतर पंचविध जोइसी द्वैविध वैमानिकदेवा किं बहुना । दृष्ट अदृष्ट ज्ञात अज्ञात श्रुत अश्रुत स्वजन परजन मित्रु शत्रु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतुरासीलक्ष योनि ऊपना चतुर्गतिकी संसारि भ्रमंता मइं हुमिया वंचिया सेहिया सीरीविया हसिया निंदिया किलामिया दामिया पाछिया चूकिया भवि भवांतरि भवसति भवसहस्रि भवलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइं तीह सर्वहइं मिच्छा मि दुक्कडं । अढार पापस्थान वोसिरावइ इहु सर्व्वू प्राणातिपातू सर्व्वू मानू सर्वइ माया सर्व्वू लोभू प्रेमु द्वेषु कलहु अभ्याख्यानु रति अरति पैशून्यु मिथ्यादर्शनशल्यु परपरिवादू अढार पापस्थान त्रिविधिहि मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमति परिहरउ । अतीतु निंदउ वर्तमानु संवरहु अनागतु पच्चखउ । पंचपर-मेष्ठिनमस्कारु जिनशासनि सारु चतुर्दशपूर्वसमुद्धारु संपादितसकलकल्याणसंभारु विहितदुरितापहारु क्षुद्रोपद्रवपर्वतवज्रप्रहारु लीलादलितसंसारु सु तुम्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतुर्दशपूर्वधर चतुर्दश-

पूर्वसंबंधिउं ध्यानु परित्यजिउ पंचपरमेष्ठि नमस्कारु स्मरहि, तउ तुम्हि विशेषि स्मरेवउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थंकरदेवि इसउ अर्थु भणियउ अच्छइ, अनइं संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ रुद्धि नमस्कार इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समाप्तेति ॥

यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । क्षन्तव्यं तद् बुधैः सर्वं कस्य न स्खलते मनः ॥

संवत् १३३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरावद्येह आशापल्ल्याम् ॥

(१) सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन ।

(संवत् १३५९ मां लखायेला कागळना पुस्तकमांथी)

पहिलउं त्रिकालु अतीत अनागत वर्त्तमान बहुत्तरि तीर्थंकर सर्वपापक्षयंकर हउं नमस्करउं ।

तदनंतरु पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्ट कालि विहरमाण हउं नमस्करउं ।

तउ पहिलइ सौधर्म्मि देवलोकि बत्रीस लाख, बीजइ ईसानि देवलोकि अट्ठावीस लाख, त्रीजइ सनतकुमारि देवलोकि बारलाख, चउत्थइ माहेंद्रदेवलोकि आठ लाख, पांचमइ ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छट्ठइ लांतकि देवलोकि पंचास सहस, सातमइ शुक्रदेवलोकि च्यालीस सहस, आठमइ सहस्रारि देवलोकि छ सहस, नवमइ आणति देवलोकि बि सइ, दसमइ प्राणति देवलोकि बि सइ, इग्यारमइ आरणि देवलोकि बारमइ अच्युतदेवलोकि बिहू दउढु दउढु सउ, अनइ हेठिले त्रिहू ग्रैवेयके इग्यारोत्तरु सउ, माहिले त्रिहू ग्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपइले त्रिहू ग्रैवेयाकि एकु सउ, पंच पंचोत्तर विमाने, एवंकारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणवइ सहस त्रेवीस आगला जिनभुवन वांदउं । अनंतरु भुवनपतिमज्झे असुरकुमारमज्झे चउसट्ठिलाख, नागकुमारमज्झे चउरासी लाख, सुवन्नकुमारमज्झे बहुत्तरिलाख, वायकुमारमज्झे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अहिहकुमार विज्जुकुमार थुणियकुमार अग्गिकुमार छहं मध्यभागे छहुत्तरि छहुत्तरि लाख, एवंकारइ पाताललोकि सातकोडि बहुत्तरिलाख जिनमंदिर स्तवउं । अथ मनुष्यलोकि नंदिसर वरि दीपि बावन्न, च्यारि कुंडलवलिग, च्यारि रुचकि बलिग, च्यारि मनुष्योत्तरि पर्वति, च्यारि इक्षार पर्वति, पंच्यासी पांच मेरे, वीस गजदंत पर्वति, दस कुरपर्वति, त्रीस सेलसिहरे, असीव, क्षारसेलसिहरे, सरिसउ वैताढ्यपर्वति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालइपडिमं, एवं आठ कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणवइ सहस च्यारि सइ छियासिया तिमलुके शास्वतानि महामंदिर त्रिकाल तीहं नमस्कारु करउं ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवनम् ।

नवकारव्याख्यानम्

(संवत् १३५८ मां लखाएला पुस्तकमांथी)

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ माहरउ नमस्कारु अरिहंत हउ । किसा जि अरिहंत; रागद्वेषरूपिआ अरि वयरी जेहि हणिया, अथवा चतुषष्टि इंद्रसंबंधिनी पूजा महिमा अरिहइ; जि उत्पन्न दिव्य विमल

केवलज्ञान, चउत्रीस अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि खेत्रि विहरमान तीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कारु हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ महारउ नमस्कारु सिद्ध हउ । किसा जि सिद्ध; दुष्टाष्टकर्मक्षउ करिउ, जि मोक्षि ग्या । आठ कर्म किसा भणियइ । ज्ञानावरणीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोत्तु ७ अंतराउ ८ ईह आठकर्म्मक्षउ करिउ जि सिद्धि ग्या । किसी ज सिद्धि; लोकतणइ अग्रविभागि पंचताळीस लक्षयोजनप्रमाणि जिसउ उत्ताणु छत्तु तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला अमलनिर्मल जलसंकासं जु अजरामरस्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियइ चउवीसमह य विभागी जि सिद्ध अनंत सुखलीण ति सिद्ध भणियइ । तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥३॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किसा जि आचार्य; पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ । किसउ पंचविधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्याचारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ । तीह आचार्य माहरउ नमस्कारु हउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ । किसा जि उपाध्याय द्वादशांगी जि पढइ पढावइ । किसी ज द्वादशांगी; आचारांगु १ सूयगडु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्म्मकथा ६ उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हवागरणु १० विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२-ए बार आंग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय भणियइ । तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ ईणिं लोकि जि केई अछइ साधु । यउ लोकु च किसउ भणियइ । अढाई द्वीपसमुद्र पनर कर्म्मभूमि । जि किसी; पांच भरत पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र ईह पनर कर्म्मभूमिमाहि जि केई अच्छइ साधु । किसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधइ । किसउ रत्नत्रउ; ज्ञानु दर्शनु चारित्रु यउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ । तीह साधु पंचमहाव्रतपरिपालक पंचमहाव्रत किसा भणियइ । प्राणातिपातु १ मृषावादु २ अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु । जि विवर्जइ ति साधु भणियइ । तीह साधु सर्वेहीं माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंचपरमेष्ठिनमस्कारु पंचपरमेष्ठि किसा । जि पूर्वोक्तभाणियां अरिहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हुंतउं किसउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥७॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुइ । ईणि जीवि चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु करतइ हुंतइ जि असुभलेश्या उपायी पापु सु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि सुमरीतइ हुंतइ क्षउ हुयउ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥८॥ ईणि संसारि दधिचंदनदूर्वादिक मंगलीक भाणियइ। तीह मंगलीक सर्वेहीमांहि प्रथमु मंगलु एहु। ईणि कारणि शुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउ, जिव ति कार्य एहतणइ प्रभावइ वृद्धिमंता हुयइ। यउ नमस्कारु अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसीआदिजिनो-कसारु, सु तुम्हे विसेषहइ हिवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु ध्येयु ध्यातव्यु गुणेवउ पढेवउ। जु किसउ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुव्वाण जो समुद्धारो।
जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ॥
अनइ एहु नमस्कारु स्मरता इहलोकतणा भय नासइ।
यदुक्तं—अडविगिरिरन्नमज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो।
रक्खइ भवियसयाइं माया जह पुत्तभंडाइं॥
वहिजलजलणतक्करहरिकरि संगामविसहरभएहिं।
नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं।
हियइगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं।
कम्मट्ठगंठिदोघट्टघट्टयं ताण परिनट्ठं॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते। ईणि नवकारि नव पद पांच अधिकार सत्तसट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु। इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सलयसंतिसुहजणओ।
नवकारपरममंतो संतियमित्तो सुहं देउ॥
अप्पुव्वो कप्पतरू एसो चिंतामणी य अप्पुव्वो।
जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम्॥

अतिचार

(संवत १३६९ मां लखेला ताडपत्रमांथी)

तेउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार पंचविधआचार विषइया अतीचार आलोउ। ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ गुणिउ विनयहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिन्हवु अनेरीकन्हइ पढिउ अनेरउ कहिउ। व्यजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववंदणइ पडिकमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदुभयकूट ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सांपडी सांपडी पति आसातना पगु लागउ थुकु लागउ पढतां गुणतां प्रद्वेषु मच्छरु अंतराइ हुउ कीधउं हुइ भवसगलाहइमांहि तेह मिच्छामि दुक्कडं। मृषावादि सहसात्कारि आलु अभ्या-

ल्यानु दीधउं, रहसमंत्रभेदु कीधइ, मृषोपदेसु दीधउ, कूडउ लेखु लेखिउ कूडी साखि थापणि मोसउ कुणहइसउ राडि भेडि कलहु विढाविढि, जु कोइ अतिचारु मृषावादि व्रति भवसगलाइमाहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं । अदत्तादानि विराइउं छानउं कीधउं लीधउं दीधउं वाव्ररिउं घरि बाहिरि खेत्रि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाइं चोर प्रति प्रयोगु कीधउ, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेल्हिउं, कूडी तूल कूडइ थापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगलाइमांहि हुउ तइ सवहइ मिच्छा मि दुक्कडु । मैथुनव्रति लुहुडपणि आपणा विराया सील खंडया सिउणइ सिउणांतरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमिचउदसितणा नीमभंगु, अनंगक्रीडा परविवाहकरणु तीव्रभिलाषु, धरिउ हुइ, अनेरा जु कोइ अतिचारु मैथुनव्रति भवसगलामांहि हुअउ तेह सवहइ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं । हव हियामाहिं सम्यक्त्व धरउ । अरिहंत देवता, सुसाधु गुरु, गुरु जिणप्रणीतु धर्मु, सम्यक्त्वदंडकु ऊचरउ । हिव अढार पापस्थानक वोसिरावउ । सर्वू प्राणातिपात, सर्वू मृषावाद, सर्वू अदत्तादान, सर्वू मैथुनु, सर्वू परिग्रहु, सर्वू क्रोधु, सर्वू मानु, सर्वू माया, सर्वू लोभु, रागु द्वेषु, कलहु, अभ्याख्यानु, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवादु, मायामृषावादु, मिथ्यात्वदरिसणसल्यु ए अढार पापस्थान मोक्षमार्ग संसर्गे विघन समान त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ, अतीतु निंदउ, अनागतु पच्चक्खउ, वर्तमानु संवरु । सागारु प्रत्याख्यानुउ ।

खमिउं खमाविउं मइं खामिउ छव्विह जीवनिकाय ।
सिद्धह दिन्ना लोयणा नइ मह वइरु न पावु ।

हिव दुकृतगरिहा करउ । जु अणादि संसारमांहि हींडतइ हूतइ ईणि जीवि मिथ्यात्वु प्रवर्ताविउ । कुतिर्थु संस्थापिउ, कुमार्ग प्ररूपिउ, सन्मार्गु अवलपिउ । हिवु ऊपार्जि मेल्हि सरीरु कुटुंबु जु पापि प्रवर्त्तिउ, जि अधिगरण हलऊ खल घरट घरटी खांडां कटारी अरहट्ट पावटा कुप तलाव कीधां कराव्यां, अनुमोधा ते सर्वे त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ । देवस्थानि द्रवि वेवि पूजा महिमा प्रभावना कीधी, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीधी, पुस्तक लिखाव्यां, साधर्मिकवात्सल्य कीधां, तप नीयम देववंदन वांदणांइ सज्याइ अनेराइ धर्मानुष्ठानतणइ विषइ जु ऊजमु कीधउ सु अम्हारउ सफलु हुओ । इति भावनापूर्वक अनुमोदउ ।

